साहित्यांक

नीरजन

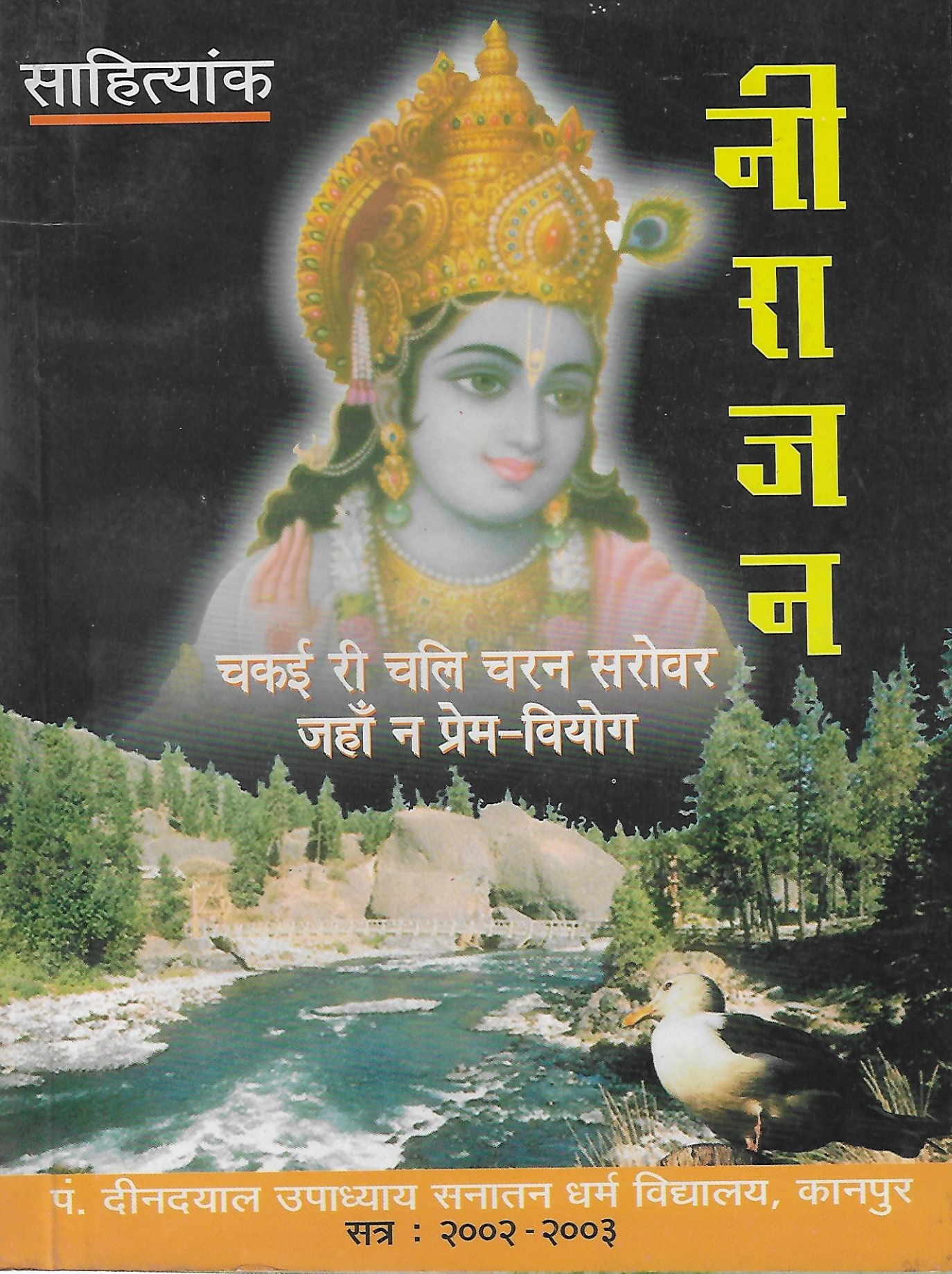

चकई री चलि चरन सरोवर
जहाँ न प्रेम-वियोग

पं. दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय, कानपुर

सत्र : २००२-२००३

आराध्या

या कुन्देन्दु तुषारहारधवला, या शुभ्रवस्त्रावृता।
या वीणा वरदण्डमण्डितकरा, या श्वेत पद्मासना।।
या ब्रह्माऽच्युतशंकरप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता।
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा।।

नीराजन

पं. दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय, कानपुर

वार्षिक पत्रिका : २००२-२००३

पाथेय

श्री ओमशंकर त्रिपाठी

संपादक

श्रीमती शारदा राव

(अंग्रेजी प्रभाग)

संपादक

श्री दुर्गेश वाजपेयी

(हिन्दी प्रभाग)

छात्र सहयोग

आलोक मिश्र, जयंत यादव, अंकित गुप्त

हमारा साध्य

प्रचंड तेजोमय शारीरिक बल,
प्रबल आत्मविश्वासयुक्त बौद्धिक
क्षमता एवं निस्सीम भाव संपन्ना
मन:शक्ति का अर्जन कर,
अपने जीवन को निस्पृह भाव
से भारत माँ के चरणों में
अर्पित करना ही हमारा परम
साध्य है ।

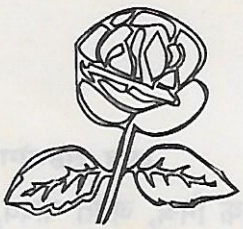

अनुक्रम

1.	संपादकीय (अपनी बात)		7
2.	सूली ऊपर सेज पिया की	— श्री वचनेश त्रिपाठी	9
3.	एक और मीरा : दीवानी मुगलानी 'ताज'	— श्री वचनेश त्रिपाठी	12
4.	सन्त न छोड़ै सन्तई	— कुमार गौरव	14
5.	दिव्य द्रष्टा सूरदास	— श्री ओमशंकर	15
6.	छायावाद के पुरोधा कवि जयशंकर प्रसाद	— डॉ. कन्हैयालाल अवस्थी	21
7.	कविवर बिहारी लाल	— श्री दुर्गेश वाजपेयी	33
8.	भारत में 'राष्ट्र' की अवधारणा	— डॉ. रमेश शर्मा	37
9.	महाकवि कालिदास एवं उनका अभिज्ञान शाकुन्तलम्	— डॉ. मनोज शुक्ल	40
10.	गोदान के परिप्रेक्ष्य में प्रेमचन्द	— श्री पिंकराज कुलश्रेष्ठ	43
11.	वार्षिक आख्या		45
12.	मैं कहता आँखिन की देखी	— आलोक मिश्र	50
13.	वैज्ञानिक विकास से पर्यावरण असुरक्षित है	— अखिल त्रिपाठी	54
14.	वैज्ञानिक विकास से पर्यावरण असुरक्षित	— जीत सिंह आर्य	56
15.	उपजे नहीं अमर्ष	— श्री सुभाष शर्मा	58
16.	क्या है मनुष्य	— अखिल मिश्र	59
17.	युग–परिवर्तन	— गौरव मिश्र	59
18.	यह देश हमारा है	— सौरभ दुबे	60
19.	यह है अपनी भारत माता	— रवि सिंह	60
20.	संकट में विश्वास	— विपिन वर्मा	61
21.	जाड़ा और गरीब	— सत्यम गुप्त	62
22.	भारत को रोते देखा है	— आशुतोष द्विवेदी	63
23.	कहाँ गया आवेश	— विवेक चतुर्वेदी	64
24.	दीनदयाल विद्यालय अपना	— पदम जी ओमर, निशीत कुमार	65
25.	दीनदयाल विद्यालय अपना	— सूर्य प्रताप, विवेक सिसौदिया	66
26.	उपवन का शोक	— प्रशान्त कुमार	67
26.	माली काका	— आयुष मिश्र	67
27.	फूलों की महक गयी, काका तुम्हारे संग	— मधुर सचान	68
28.	माली दादा	— निशान्त आनन्द	69
29.	माली दादा के न रहने पर	— श्री दुर्गेश वाजपेयी	70
30.	जहाँ सुमति तहँ सम्पति नाना	— आदर्श अवस्थी, विपिन वर्मा	71
31.	माली दादा (संस्मरण)	— रवि सिंह निरंजन	73
32.	एक अनसुलझा रहस्य 'बरमूडा त्रिकोण'	— दीपक सेंगर	74

33.	भूख (लघु कथा)	— अंकित आर्य	75
34.	पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं	— अनुराग तिवारी	76
35.	पराधीनता एक कलंक	— देवाशीष सिंह	78
36.	पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं	— अखिल कुमार त्रिपाठी	79
37.	मायावी गेंदें	— अखिल मिश्र	80
38.	भूतनी का भ्रम	— सौरभ दुबे	81
39.	मानस में निष्काम भक्ति	— स्रोत गुप्त	82
40.	रहस्यमयी बक्सा	— प्रियम सचान	83
41.	मिलन (कहानी)	— नीरज राजपूत	84
42.	भगवान क्यों नहीं दिखाई देते	— कुलदीप यादव	85
43.	श्री रामस्य चरित्रम्	— ऋषि राज त्रिवेदी	86
44.	मेरी जगन्नाथ पुरी यात्रा	— प्रफुल्ल श्रीवास्तव	87
45.	भारत को चाहिये एक तानाशाह	— अमित मयंक	91
46.	सुमुखी (कहानी)	— गौरव श्रीवास्तव	92
47.	जब मै बहने लगा	— अनुराग मिश्र	93
48.	विछोह	— निशान्त कुमार	94
49.	सृष्टि	— प्रशान्त भारद्वाज	95
50.	पं. दीनदयाल उपाध्याय : जीवन और कार्य	— संदीप शिवहरे	97
51.	दीनदयाल विद्यालय आने से पूर्व	— सौरभ द्विवेदी	99
52.	खेल में विद्यालय की कीर्ति पताकाएँ	— श्री वीरेन्द्र त्रिपाठी	100
53.	सच्चा मित्र	— अजीत सिंह यादव	101
54.	गुलबकावली का फूल	— सौरभ कटियार	102
55.	अपराध बोध	— ऋषभ श्रीवास्तव	103
56.	माँ सुशीला वात्सल्य मंदिर		104
57.	देहगाथा : विज्ञान की नजर में	— पदम जी ओमर	106
58.	आतंकवाद और उसका समाधान	— अमित गौतम	107
59.	नया भारत गढो	— अर्पित शिवहरे	108
60.	बाल चेतना शिविर	— निशीत, अंकित	110
61.	लोकमत का परिष्कार ही सच्चे लोकतंत्र का प्राण है	— निखिल सचान	111
62.	रोचक जानकारियाँ	— अमित कुमार चौधरी	114
63.	अजब–गजब	— शशांक	115
64.	डाल्फिन	— अक्षय यादव	116
65.	बाल भारती के पदाधिकारी		117
66.	हमारा आचार्य–परिवार		119
67.	वार्षिक खेलकूद	— श्री सुभाष शर्मा	120
68.	हाईस्कूल परीक्षा 2003 में प्रविष्ट छात्रों की सूची		126
69.	इण्टरमीडिएट परीक्षा 2003 में प्रविष्ट छात्रों की सूची		128

English Section

1.	Editorial	- Sharda Rao	130
2.	The Aim of Human Life	- Pt. Deen Dayal Upadhyaya	131
3.	Our Duty towards the Country	- Anand Narayan Patel	131
4.	The Examination System in India an Analysis	- Rishi Raj Trivedi	132
5.	Great Importance of Science	- Vikas	133
6.	Necessity is the Mother of Invention		134
7.	A Rendezvous with a Ghost	- Surendra Singh	134
8.	The Mysterious World of Dinosaurs	- Ashish	135
9.	The Future of English in India	- Rohit Katiyar	136
10.	Change - The Eternal Law of Nature'	- Sumit Tandon	137
11.	Need of Technical Education in India	- Abhinandan Tiwari	138
12.	The Kindness of Lincoln	- Abhishek Kumar	139
13.	Atomic Power : Boon Or Curse	- Prateek Singh	139
14.	Is Science Responsible for Pollution	- Abhinav Chib	140
15.	Art of Speaking	- Jeet Singh Arya	141
16.	Magic of Science	- Saurabh Katiyar-I	141
17.	India - The Jagadguru	- Prateek Singh	142
18.	Importance of Discipline	- Rishi Kumar Dewedi	144
19.	Cricket the Source of Unity	- Ashish Kumar	144
20.	The Struggle of Missileman	- Madhur Sachan	145
21.	Going Into Space	- Himanshu Mishra	145
22.	Military Training	- Rajeev Ranjan	146
23.	An Ideal Teacher	- Abhishek Kumar	147
24.	Mali Kaka	- Ashish Kumar	147

25.	Riddles	- Arpan Awasthi	148
26.	Mathematical Marriage	- Sudhanshu Shekhar	149
27.	India : Need for Retrospection	- Nikhil Suman	150
28.	How Do ATMs Work	- Seema Mishra	151
29.	My Hobby : Philately	- Romil Kapoor	152
30.	Position of Women in Ancient and Modern India	- Gaurav Katiyar	152
31.	Influence of the Cinema on Indian Social Life	- Shobhit Awasthi	153
32.	True Humanity	- Saurabh & Vivek	154
33.	Effect of Colours on Our Mind	- Abhinav Omar	155
34.	H.I.N.D.U.		156
35.	Bharat Mata is Greater Than My Mother	- Amit Mayank	156
36.	Failure Precedes Success	- Nitin Pratap Singh Somvanshi	157
37.	N.C.C.	- Surendra Mohan Singh	157
38.	Students & Social Welfare	- Arpan Awasthi	158
39.	Definition of Discipline	- Saurabh Katiyar	159
40.	1947 A Retrospection... Down the Memory Lane	- Sharda Rao	160
41.	India of My Dreams	- Navneet Kumar	162
42.	Kalpana We are Proud of You	- Vaibhav Dwivedi	163
43.	Friendship and Friends	- Jeet Singh Arya	163
44.	The Invincible Indian	- Army Pratush Pranjal	164
45.	The Gift of Magi	- Nikhil Suman	164
46.	Our Pt. Deen Dayal College	- Ashutosh Gupta	165
47.	My Pledge	- Prateek Singh 'Bhartiya'	166
48.	Our Vidyalaya	- Rohit Katiyar	167
49.	A Fly	- Romil Kapoor	167
50.	The Labour	- Snehdeep Mishra	168

संपादकीय

अपनी बात

नीराजन का यह साहित्य विशेषांक छात्रों को सौंपते हुए अपेक्षात्मक उल्लास है। यह अपने आप में अपूर्व है। नीराजन विद्यालय की वार्षिक पत्रिका होने के साथ-साथ यदि छात्रों के पाठ्यक्रम-गत हिन्दी साहित्य के अध्ययन में उत्कृष्ट, आकर्षक और तथ्यपूर्ण सामग्री प्रस्तुत करे तो इसका उपयोग और भी अधिक छात्रों के लिये बढ़ जाता है। नवम से द्वादश तक के पाठ्यक्रम में हिन्दी साहित्य में जो कवि और लेखक हैं; उनमें से कुछ पर हमने विद्वान लेखकों से साहित्यिक लेख प्राप्त किये हैं। ये लेख छात्रोपयोगी सिद्ध होंगे।

स्वातंत्र्य-वीर साहित्यकार पद्मश्री श्री वचनेश त्रिपाठी जी से मीरा तथा मुस्लिम कवयित्री 'ताज' पर हमने आग्रह पूर्वक लेख प्राप्त किया है। 'ताज' को अधिक लोग नहीं जानते हैं- वह मुस्लिम होते हुए भी भगवान श्रीकृष्ण की अनन्य भक्त थीं तथा अपने बारे में कहती थीं- "हूँ तो मुगलानी पै हिन्दुवानी ह्वै रहूँगी मैं" इसलिये 'ताज' को दूसरी मीरा कहा जाता है। यह हमारा सौभाग्य है कि चंद्रशेखर आजाद, बिस्मिल और दुर्गाभाभी के साथ रहने वाले क्रांतिवीर का हमको सहज स्नेह प्राप्त है। छायावाद के प्रवर्तक जयशंकर प्रसाद के बारे में एक सर्वांग, तथ्यपूर्ण तथा अध्ययनोपयोगी लेख सुहृदवर, विद्वत्-श्री- डॉ. कन्हैयालाल अवस्थी से प्राप्त कर हम स्वयं को सम्पन्न अनुभव करते हैं। डॉ. अवस्थी से हमने 'प्रसाद जी' पर कुछ लिखने का आग्रह किया था और यह 'कुछ' 'सब कुछ' के अनुग्रह के रूप में हमको प्राप्त हुआ है।

'सूरदास' पर विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री ओमशंकर त्रिपाठी का पिछले वर्षों में छात्रों को लिखवाया गया समीक्षात्मक लेख वास्तव में उच्च-स्तरीय है। छात्रों को सूरदास का साहित्यिक परिचय लिखने में इससे उत्कृष्ट कोटि की सामग्री प्राप्त होगी। वी.एस.एस.डी. कॉलेज के हिन्दी के विभागाध्यक्ष डॉ. रमेश शर्मा ने नीराजन के लिये वेदों में राष्ट्र की अवधारणा पर लिखा है। यह हमारा सौभाग्य है कि उनके ज्ञान का लाभ हमको सहज ही मिल जाता है।

कतिपय वरिष्ठ जनों के लेखों के अतिरिक्त छात्रों के निबंधों, लेखों, कहानियों-कविताओं तथा वैज्ञानिक जानकारियों का संग्रह है। नीराजन को साहित्य-समृद्ध बनाने का यह हमारा प्रथम प्रयास है। इस शृंखला में कुछ विद्वत्-जनों के लेख हैं शेष छात्रों के सुंदर प्रयास हैं। प्रश्न हो सकता है कि 'नीराजन' छात्रों की विद्यालयीय पत्रिका है तो इसका साहित्योन्मुख होने का क्या औचित्य है ? औचित्य अपरिहार्य है। साहित्य समाज का दर्पण होता है। साहित्य कालजयी और कालजीवी होता है। श्रेष्ठ साहित्य मानव-मन को प्रेरित-प्रोत्साहित और प्रफुल्ल करने वाला होता है। साहित्य से हीन होना जड़, ठूँठ और नीरस होना है। साहित्य मानव-हृदय को उदार बनाता

है । श्रेष्ठ साहित्य युग-युगांतर तक समाज का संबल और मार्गदर्शक होता है । सूर और तुलसी का साहित्य इसीलिये अमर है । यह हमारा और हमारे देश का दुर्भाग्य है कि आज छपने वाला और बिकने वाला साहित्य उन घिनौने षडयंत्रकारियों के हाथों में कैद है जो इस देश को इसके धर्म और इसकी संस्कृति से काटकर अलग कर देना चाहते हैं । हिन्दी साहित्य के द्विवेदी युग में अनेक साहित्यिक पत्रिकाओं का जन्म हुआ था । उन्हीं साहित्यिक पत्रिकाओं के क्रम में उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद ने 'हंस' पत्रिका की शुरूवात की थी । आजकल हंस के संपादक तथाकथित जाने माने साहित्यकार राजेन्द्र यादव है । यदि आप हंस नहीं पढ़ते हैं तो आप कैसे जान सकते हैं कि उसमें क्या लिखा है ? आज हंस पत्रिका राजेन्द्र यादव के विकृत और कुंठित विचारों की वाहक है। राजेन्द्र यादव के मुताबिक हिन्दुस्तानी जाहिल और गँवार थे; इन हिन्दुस्तानियों को सभ्यता अंग्रेजों ने सिखाई, उन्होंने ही रामायण और भारतीय इतिहास लिखवाया। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि जिस समय ओसामा बिन लादेन ने अमेरिका के वर्ल्ड ट्रेड सेंटर ध्वस्त करवाए थे और पूरे विश्व में इसकी चर्चा हो रही थी तब राजेन्द्र यादव ने 'हंस' के संपादकीय में लादेन की तुलना हमारे इष्ट देव हुनमान जी से की थी और कहा था कि "जैसे लादेन ने वर्ल्ड ट्रेड सेंटर ध्वस्त किया है उसी तरह से हनुमान ने लंका को ध्वस्त किया था । इसलिये दुनिया का सबसे पहला और बड़ा आतंकवादी हनुमान था ।"

अब आप विचार कीजिये कि जो छपने वाला साहित्य है उसमें क्या लिखा जा रहा है । यह गंभीर बात इसलिये है कि राजेन्द्र यादव जैसे साहित्यकारों का साहित्य पाठ्यक्रमों में लगेगा; इसे आने वाली पीढ़ी पढ़ेगी तो वह क्या धारणा बनाएगी ।

इसलिये हमको साहित्य के प्रति भी जागरूक और कर्मशील होना होगा । इसलिये ऐ मेरे प्रिय विद्यार्थियों! सिर्फ डॉक्टर और इंजीनियर बनने मात्र से काम न चलेगा । तुमको एक श्रेष्ठ विचारक और अपनी संस्कृति का स्वाभिमानी प्रचारक भी होना चाहिये । जो वामपंथी साहित्यकार भारतीयता और संस्कृति के धुर विरोधी हैं वे हमारे वाङ्मय को पढ़कर उसमें छिद्रान्वेषण करते हैं और हमारी कमी यह है कि हमने अपने ही साहित्य और धर्म ग्रंथों का अध्ययन नहीं किया होता है । मथितार्थ यह कि हमको पढ़ना-लिखना चाहिये । हम अपने साहित्य को पढ़ें फिर दूसरे विचारकों को भी जानें और अपनी बात को सबके सामने रखें । जो श्रेष्ठ साहित्य है उसका प्रकाशन और प्रसार भी बहुत आवश्यक है । हमारे बीच में तमाम ऐसे साहित्य-मनीषी होते हैं जो बहुत अच्छा लिखते हैं पर कहीं छपते नहीं। ऐसे श्रेष्ठ साहित्य के प्रकाशन के लिये हमको प्रयास करने चाहिये क्योंकि साहित्य समाज का निर्माता है । फिलहाल नीराजन पत्रिका के माध्यम से हम यह उपादेय प्रयास करते हुए प्रसन्न हैं ।

दुर्गेश वाजपेयी

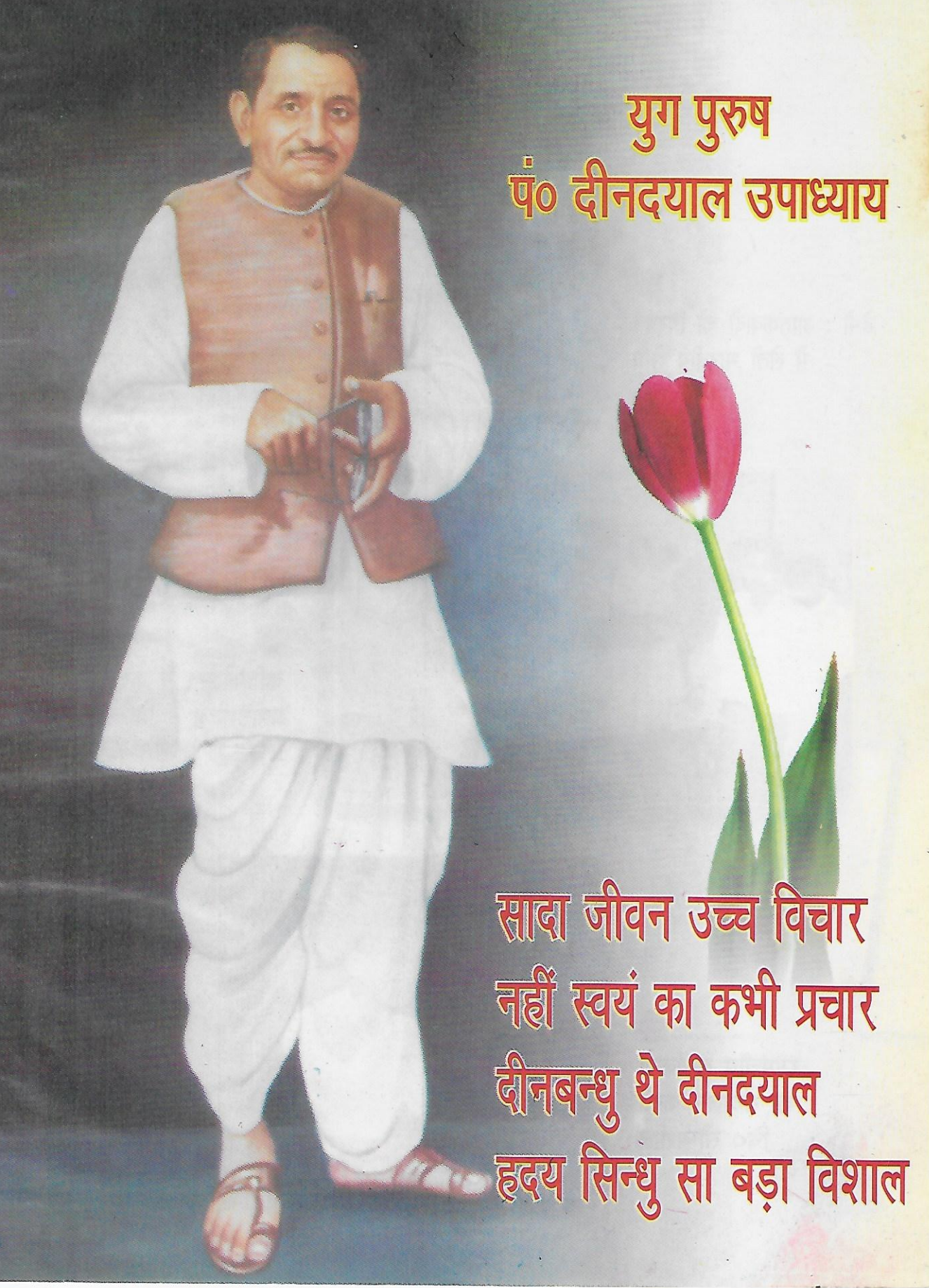
युग पुरुष
पं० दीनदयाल उपाध्याय
सादा जीवन उच्च विचार
नहीं स्वयं का कभी प्रचार
दीनबन्धु थे दीनदयाल
हृदय सिन्धु सा बड़ा विशाल

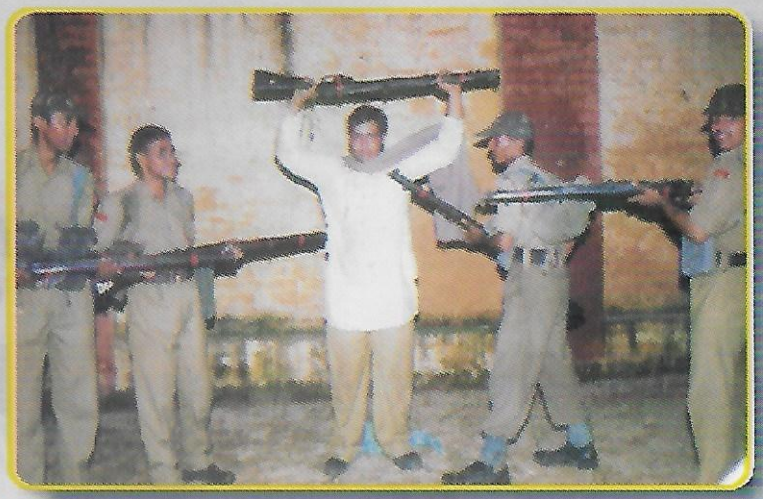

डेमो : आतंकवादी को गिरफ्त में लेती भारतीय सेना

वार्षिकोत्सव में कम्प्यूटर प्रयोगशाला में विभिन्न प्रकार के प्रदर्शन

रंगमंचीय कार्यक्रमों का संचालन करते चि० सौम्यशील

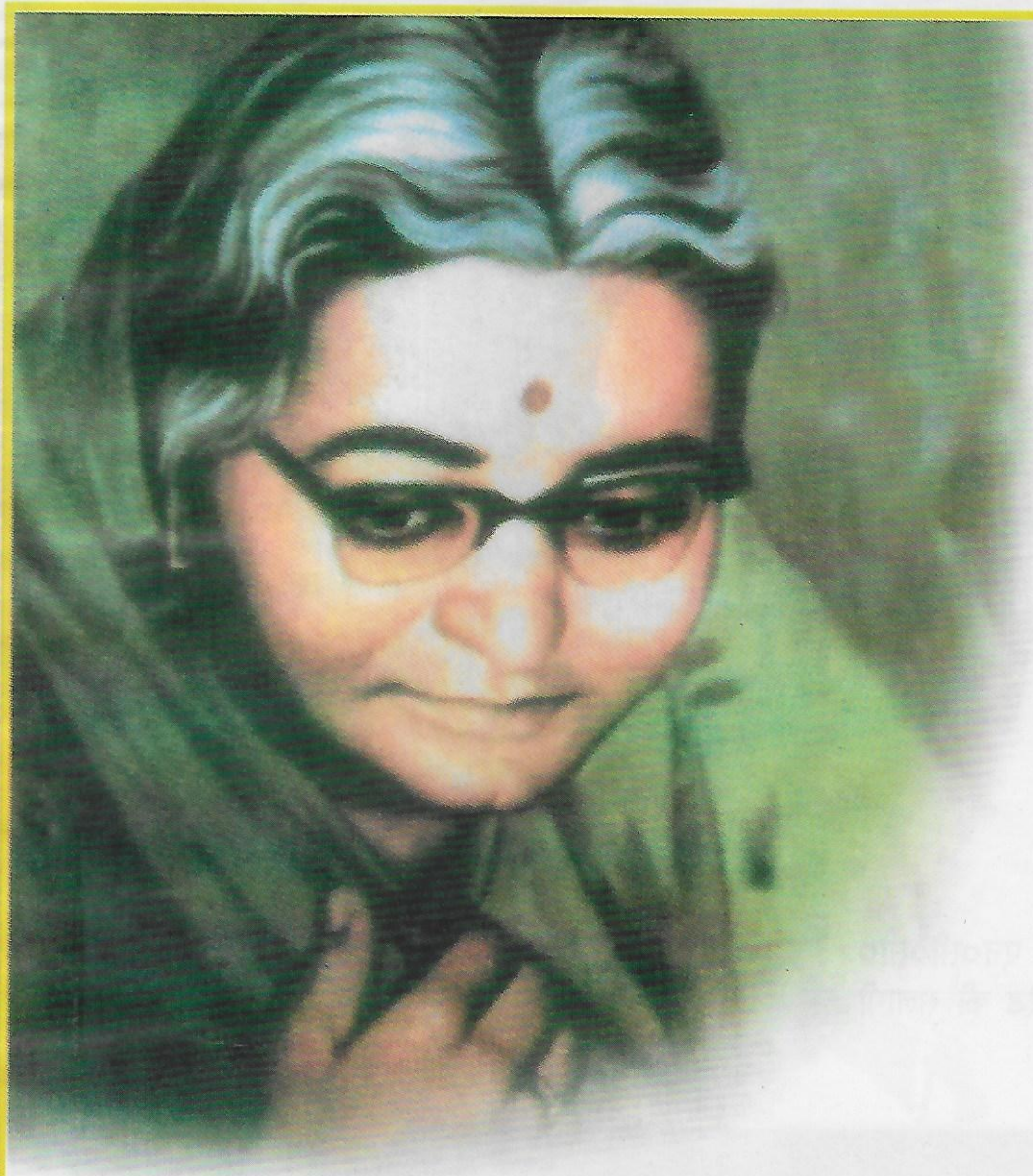

ममता-मूर्ति "बूजी"

जिन्होंने विद्यालय को मूर्त रूप दिया

छात्रों को पुरस्कृत करते हुए

एन०सी०सी० परेड की सलामी

वाद-विवाद प्रतियोगिता में विद्यालय के विजयी छात्र चि० अरविन्द प्रताप व चि० निखिल सचान वैजयंती प्राप्त करते हुए

विद्यालय का शिलान्यास करने वाले पूज्य "गुरु" जी

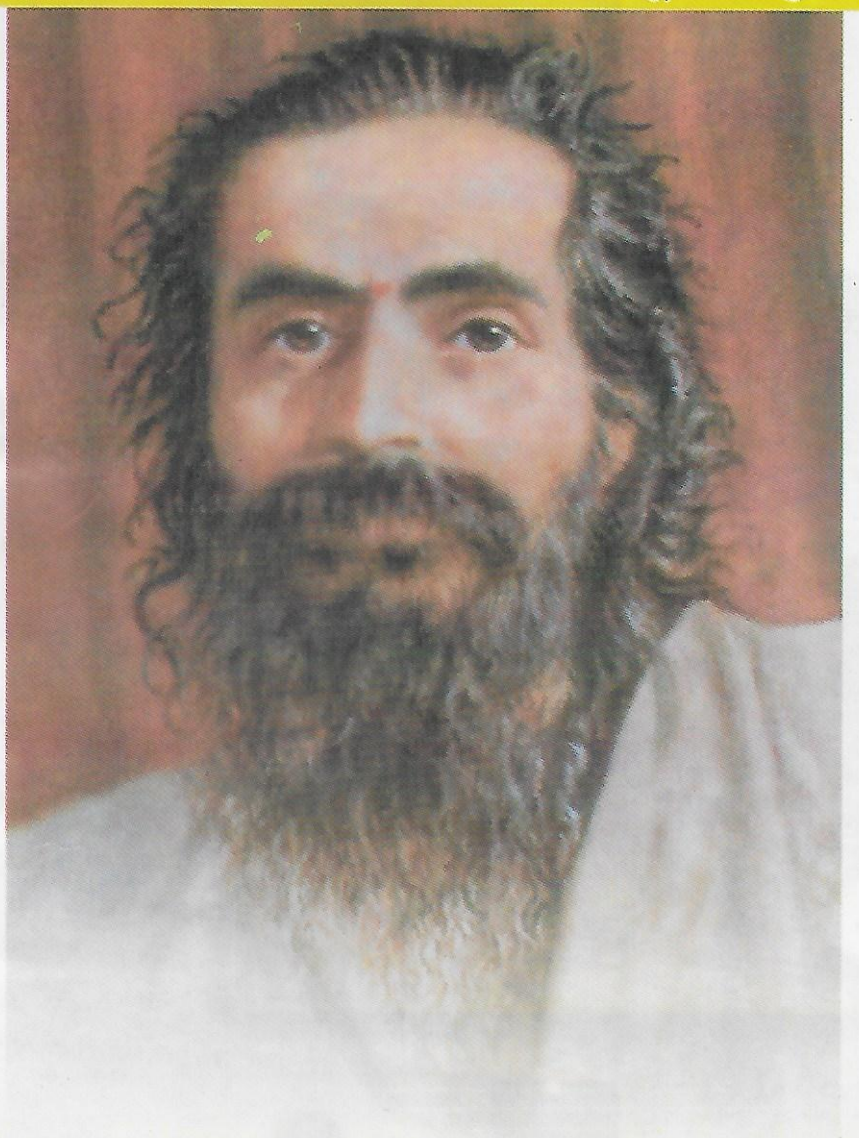

साधना प्राण हे संन्यासी, हे आत्मजयी तपसी महान
अनुदिन समष्टि ही इष्ट तुम्हें, स्वीकार करो सबका प्रणाम

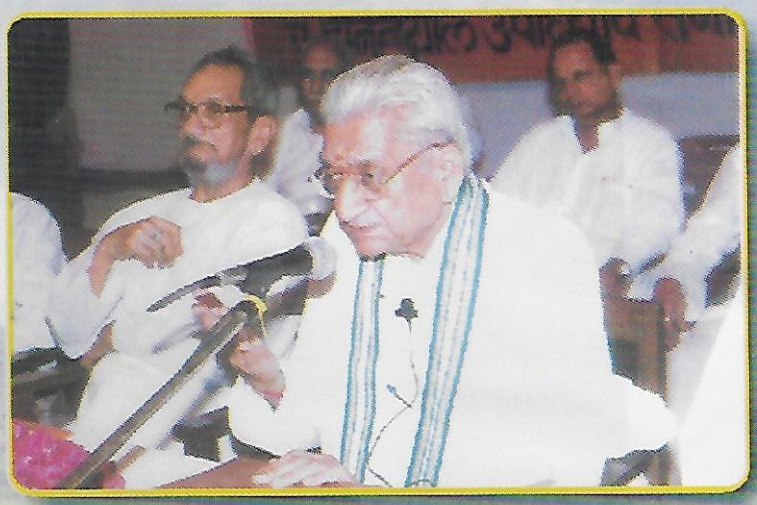

वार्षिकोत्सव में छात्रों के मध्य उद्‌बोधन

प्रेरक भाषण सुनते छात्र

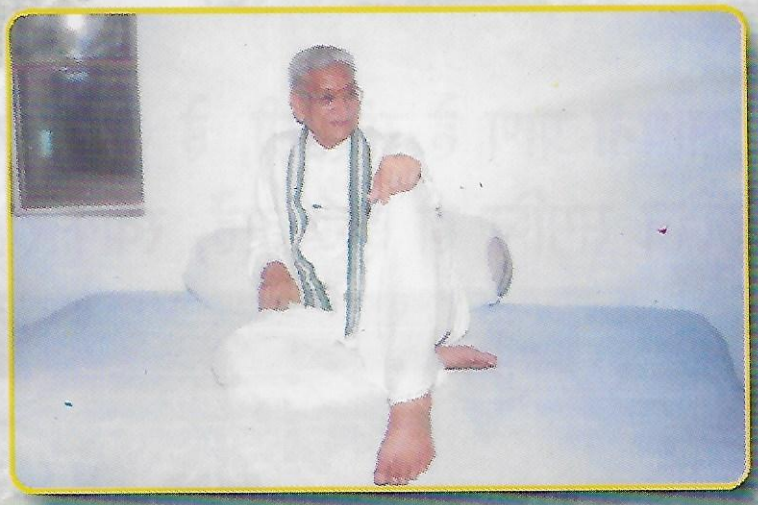

आनंद के क्षण

तप रहा केवल जीवन सत्य, प्राण का स्नेह जला हर दीप
समर्पण के अनन्य पर्याय, परम सत्ता के हुए समीप।

मा. श्री इन्द्रजीत जी जैन

जिनकी कृपा ही हमारा पाथेय है.....

पं० दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय शिक्षा और सांस्कृतिक क्षेत्र में सदा अग्रणी रहा है। अध्यापक वर्ग के द्वारा विद्यार्थियों को निरन्तर ध्यान, क्रीड़ा और साहित्यक क्षेत्र में विशेष रुचि प्रदान की जाती है। इसके लिये वे सभी स्तुति के पात्र हैं।

यह बहुत शुभ अवसर है कि विद्यालय अपनी सांस्कृतिक और साहित्यक स्मारिका निकाल रहा है जिससे आबाल, वृद्ध सबको प्रेरणा मिलेगी

इन्द्रजीत जैन (एडवोकेट)
अध्यक्ष
पं० दीनदयाल विद्यालय-प्रबन्ध-समिति

मा० श्री वीरेन्द्रजीत सिंह

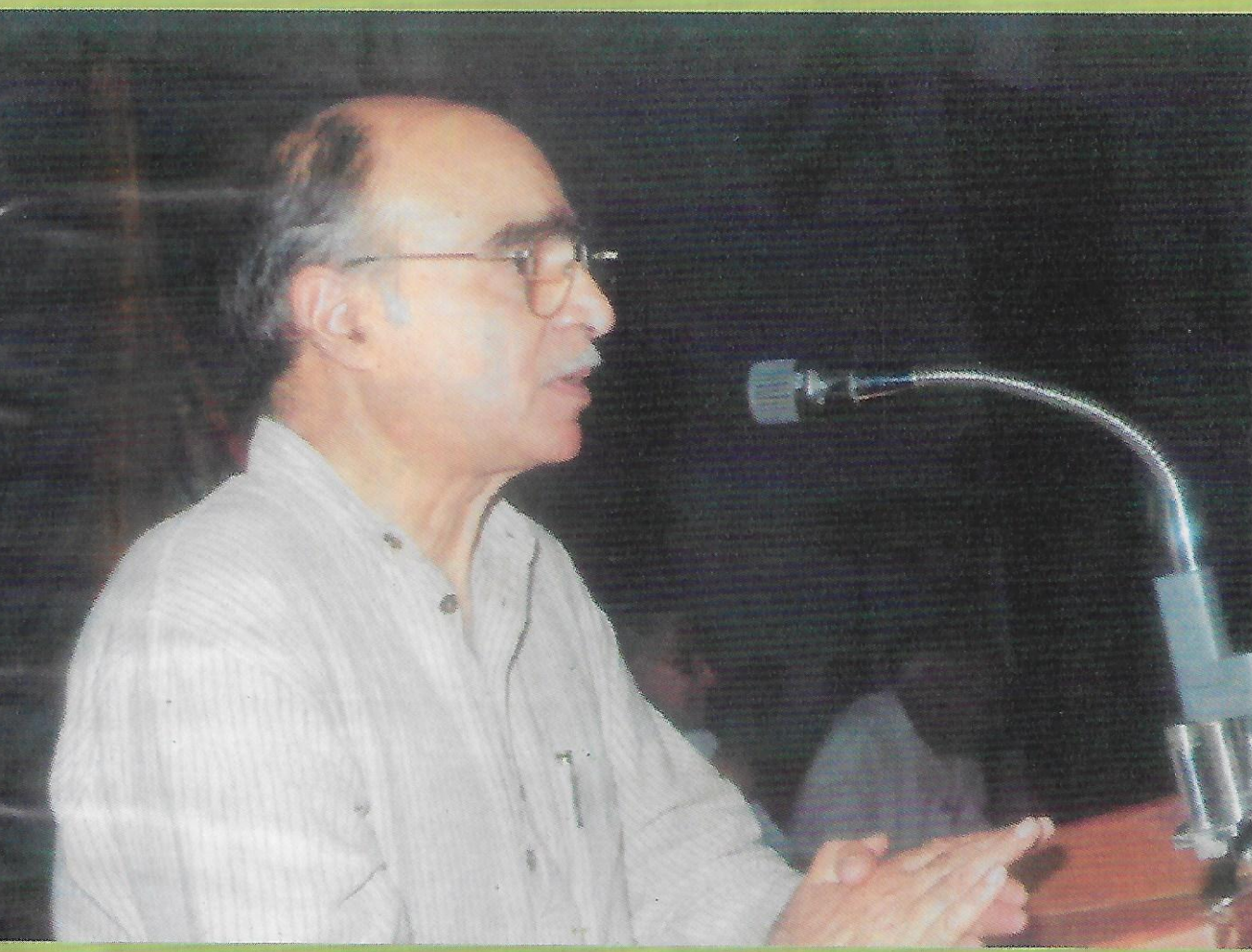

सरलता एवं विनम्रता की प्रतिमूर्ति

वार्षिकोत्सव स्थल की ओर जाते
मा० अशोक सिंहल जी

दीनदयाल जी की मूर्ति पर
पुष्पार्पण के बाद

युग-भारती के सदस्यों के साथ
प्रश्नोत्तर कार्यक्रम

सूली ऊपर सेज पिया की

पद्मश्री, वचनेश त्रिपाठी

लगभग नब्बे वर्ष की आयु के अग्निधर्मा, क्रान्तदर्शी, विद्वान, सुजन, योद्धा–संन्यासी का नाम है वचनेश त्रिपाठी। वर्षों तक पांचजन्य और राष्ट्रधर्म के संपादक रहे श्रद्धेय वचनेश जी ने लगभग चालीस अनमोल ग्रंथ हिन्दी साहित्य में दिये हैं। वे जाने–माने क्रान्तिकारी हैं । बिस्मिल, आजाद और दुर्गा भाभी के साथ उन्होंने भारत माता को फिरंगियों से मुक्त कराने के लिये लंबा संघर्ष किया है। राष्ट्र–नायक अटल जी समेत पूरा भारत उनका सम्मान करता है; और यह ईश्वरीय कृपा है कि वे मुझे स्नेह देते हैं और हमारे विद्यालय से प्रेम करते हैं, तभी तो उन्होंने मेरे आग्रह पर चिंता करके 'मीरा' पर तथा कवयित्री ताज पर लेख दिया है।

– संपादक

'गोपाल जी की मूर्ति तूने रखी है बेटी ?' विवाह–मंडप में जाने कैसे श्रीकृष्ण की भव्य प्रतिमा आ विराजी थी।

"हाँ, भाई ! मैने रखी है।" चौदह वर्षीय कुँवरी ने सत्य भाषण ही सीखा था । कल कुँवरी का ब्याह है। घर में ब्याह के राजस्थानी गीत गूँज रहे हैं। चित्तौड़ का सिसौदिया कुमार भोजराज भाँवरे डालने आ रहा है।

आज मारवाड़ के कुड़की गाँव की शोभा न्यारी है। मेड़ता के स्व. राव दूदा जी की पोती का ब्याह ठहरा, अतः गाँव का हर आदमी इस ब्याह को अपनी बेटी का ब्याह मानकर सहयोगरत है।

रात होने आई, पर ढोलक को विराम नहीं है। पथरीली मुंडेरो से ऊपर उठते जा रहे हैं मंगल–गीत और कुँवरी का हृदय बार–बार व्यथा–वेदना युक्त भावों से आलोड़ित हो उठता है। उसके रोम–रोम में अजीब सिहरन व्याप्त है, संपूर्ण शरीर में रह–रहकर एक दाहयुक्त कम्प आ भरता है और तब उत्तप्त दीर्घ श्वास छोड़ती वह विवाह –मंडप में जा खड़ी होती है, देर तक बड़ी ललक से निहारती रहती है गिरधर गोपाल जी की मंजुल मुख–छवि, उनकी मनोहरी त्रिभंगी रूप–सज्जा जिसकी मनुहार वह विगत चार वर्षों से निरंतर करती आ रही है।

आज कुँवरी को अपना कक्ष सूना लगता है क्योंकि गोपाल जी विवाह मंडप में विराज रहे हैं।

भोर की पहली किरण फूटने से पहले ही जग उठी कुँवरी और आँखे खुलते ही वह विवाह–मंडप की ओर आकुल–व्याकुल हो भाग चली, जहाँ उसके जन्म–जन्म के साथी गोपाल जी खड़े हैं, अमृताधरों पर बांसुरी धारण किये हुए हैं।

"रात में नींद नहीं आई तुझे ? आँखें क्यों लाल हैं?"

माँ को देखते ही वह जाकर उसके गले लग गयी । "क्या है बेटी ! तू रो रही है ?" ..... माँ ने उसकी भर आई आँखें पोंछ दी । "माई ! म्हाने सुपने बरी गोपाल । रोती–पीती चुनड़ी ओढ़ी, मेंहदी हाथ रसाल" बेटी रात का देखा सपना सुना रही थी और माँ सोच रही थी कि कैसी बावली सी, पगली–सी होती जा रही है उसकी लाड़ली! कहती है, उसने 'स्वप्न में गोपाल को पतिरूप में वर लिया है।' भला ऐसा भी होता है कहीं !

दिन ढला तो बारात आई। रात में भँवरों का समय भी आया परन्तु यह देखकर मेवाड़ का सिसोदिया कुमार भौंचक्का रहा गया कि रतन सिंह राठौर की बेटी उसकी होने वाली जीवन–संगिनी उसके साथ–साथ

विवाह–मंडप में स्थापित श्रीकृष्ण मूर्ति के साथ भी भाँवरे डाल रही है। भाँवरे पड़ चुकीं तो सखी–सहेलियों ने कुँवरी को घेर लिया। लगी प्रश्न पर प्रश्न करने । एक ने उसके गले से झूलकर पूछा– "सखी मीरा, तूने तो हद कर दी । अरी! तेरे गोपाल जी कहीं भागे तो नहीं जाते थे ? तू तो उन्हीं की भाँवरे घूम रही थी...?"

कवयित्री कुँवरी मीरा भाव–विभोर हो कह उठी– "ऐसे वर को के बरूँ, जो जनमैं मरि जाय । बर बरिये गोपाल जी, म्हारो चुड़लो अमर हो जाय ।" "सखी ! ऐसे वर से भाँवरे डाली हैं मैने कि मेरी ये चूड़ियाँ, मेरा सुहाग जन्म–जन्म के लिये अमर हो गया.... ।" अल्हड़ सखियाँ क्या समझती हैं भला ? बेचारी बितर–बितर चकित भाव से मीरा का मुँह ताकती रहीं ! फिर समय आया कि दहेज की वस्तुएँ सजाई जाने लगीं । माँ हाँफते–हाँफते, काँपते हाथों से विदाई की तैयारी में जुटी । सोचती जाती है– कुछ और भी होता, तो वह भी दे डालती बेटी को ।

बेटी ब्याह की चुनरी ओढ़े हैं– नई चूड़ियाँ पहने है, उसके मेंहदी रचे हाथों पर माँ की दृष्टि उलझ–उलझ जाती है। किसके होंगे ऐसे हाथ? माँ देखती है और सोचती है।

बेटी की पलकें आँसुओं से भीग उठती हैं, भौहों में कंपन आ समाता है। बहुत उदास है उसका मुखड़ा। देखकर माँ के हृदय में हूक उठती है। कहती है– "म्हारी बेटी;" गले में कुछ अटक जाता है, आगे बोल नहीं पाती।

"माई ! म्हाको मणि लाल न दे । बस अब एक गिरधारी लाल दे दे । मैं प्यारे चरण की आन करति हों" 'दे री माई! अब म्हाँ को गिरधर लाल । प्यारे चरण की आन करति हौं, और न दे मणि लाल ।' बेटी ने माँ के आँचल में आँखें छिपाकर माँग की और तब विदाई की पालकी में गोपाल जी की मूर्ति को भी विराजमान करा दिया गया।

X X X X

सिसोदिया कुमार ओछे स्वभाव का नहीं है। इतने दिनों में उसने अपनी राठौड़ी रानी का जितना कुछ परिचय पाया है, उससे उसका हृदय अमित गर्व से भर उठा है। उस दिन वह जरा भी क्रुद्ध नहीं हुआ, जब माँ ने बहू की शिकायत की कि उसने गौरी–पूजन करने से इनकार कर दिया है, कहती है–

ना म्हैं पूजाँ गौरज्याजी, ना पूजाँ अनदेव
म्हें पूजो रणछोड़ जी, सासु थे कोई जाणो मेव।।

और तब भोजराज ने महल में ही रणछोड़ जी का एक मंदिर निर्माण करा दिया कि राठौरी रानी का मन जीतने में कुछ सुविधा हो शायद ।

परन्तु वर्ष पर वर्ष बीतते गये, मीरा लौकिक रीति से पति को अपना न सकी । सिसोदिया कुमार अपनी कवयित्री रानी की भक्तिभीनी कविता का आदर करता, उसके इकतारे की ध्वनि में कभी–कभी इतना डूब जाता कि विह्वल हो पड़ता परन्तु उसकी वह विह्वलता अपनी परिणीता के पार्थिव शरीर के प्रति ही होती थी । अतः एक दिन उसने निराश हो दूसरी लड़की से भाँवरे डाल लीं । उस दिन भी मीरा वैसे ही गीत गाती रही थी अपने रण छोड़ जी के गिरिधर जी के गीत आनंदमग्न मन से । ईर्ष्या करना तो कभी उसने सीखा ही न था ।

मीरा बीमार है; दिन बीतते जाते हैं, लेकिन रोग अच्छा नहीं होता । खबर पाकर मारवाड़ से पिता रतन सिंह राठौर दौड़े आये हैं। अपने साथ ही प्रसिद्ध वैद्य भी लाये हैं वे जो बेटी की दवा करेंगे । वैद्य जी का बड़ा नाम है, निश्चय ही बेटी को आरोग्य प्रदान कर सकेंगे वे– पिता सोचते हैं और बेटी की नाड़ी देखने के लिये वैद्य जी से कहते हैं।

बेटी का शरीर सूखकर काँटा हो गया है, आँखें धँस गयी हैं। कभी–कभी चेतनाहीन हो जाती है, कभी होश में आकर अपने रचे गीत गुनगुना उठती है। वैद्य जी मीरा की नाड़ी का निरीक्षण कर रहे हैं। मीरा करवट लिये गाये जा रही है–

'नातो नाव को जी म्हां से तनिक न तोड़यो जाय ।
पाना ज्यूँ पीली पड़ी रे, लोग कहैं पिंड रोग ।
छाने 'लंघण म्हैं किया रे, राम मिलण के जोग ।
बाबुल वैद्य बुलाइया रे, पकड़ दिखाई म्हारो बाँह ।
जाव वैद्य घर आपणो रे, पकड़ म्हारो नाँव न लेय ।'

"जाइये वैद्य जी ! आप नाहक कष्ट करते हैं। काहे कूँ औषधि देय ? लाभ न होगा इससे.... देखिये तो"

'माँस गल–गल छीजिया रे, करक रह्या गल आये ।
आंगुलियाँ की मूंदड़ी म्हारी आवणा लागी बाँह ।।
छिण मंदिर छिण आंगणेरे छिण छिण ठाढ़ी होय
घायल ज्यूँ घूमूँ खड़ी, म्हारी बिथा न बुझै कोय ।।

"सो वैद्य जी, मेरी व्यथा अबूझ है। देखिये मेरी अंगुली की अँगूठी बाँह में आ जाती है।" कहते–कहते मंदस्मिति करती है मीरा । ठीक तभी एक कौआ ऊँची मुंडेर पर आ बैठता है। मीरा फिर अपने भावों में खो जाती हैं और कौए को देखते–देखते गुनगुना उठती हैं–

काढ़ कलेजो मैं धरूँ रे !
कागा तू ले जाय ।
जिण देसा म्हारो राम बसै रे
उण देखत तू खाय ।।

"कागा ! ठहर भाई, मैं अपना कलेजा निकाल रखती हूँ । इसे तू उठाकर उड़ जा और जिस देश में मेरे गोपाल जी बसते हों, वहाँ बैठकर उनके सामने इसे खा लेना कि वे भी देखें और यह हृदय भी उनके दर्शन पा ले.

"मीरा बेटी ! क्या बहुत कष्ट है.....? बाबुल पूछते हैं और उसके तवे की भाँति जलते हुए माथे पर हाथ फेरते हैं–

'म्हारो नातो नाम को रे और न नातो कोय ।'

बेटी बाबुल को अपनी बीमारी बता रही है कि "व्यर्थ ही आप किसी भ्रम में न पड़ें, शोक न करें क्योंकि मैं राम–दिवानी हूँ, राम मिलण का जोग लिया है और वह राम इन महलों में इस पार्थिविकता के बीच प्राप्य नहीं है बल्कि वह तो गगन मंडल पर रहता है, सूली ऊपर सोता है,

'सूली ऊपर सेज पिया की
किस विधि मिलणा होय
गगन मंडल पर सेज पिया की
किस विधि सोणा होय ।।

मीरा गाये जा रही है और उसका एक–एक पद, पद की पंक्ति–पंक्ति, पंक्ति का शब्द–शब्द, हर अक्षर राजस्थान की सिकता में मोती बनकर बिखरता जा रहा है कि बलुई भूमि का बाँझपन चिर उर्वरत्व में परिणत होता जा रहा है।

❋❋❋

एक और मीरा : दीवानी मुग़लानी 'ताज'

— पद्श्री वचनेश त्रिपाठी

ब्रज मण्डल की 'साँय–साँय' करती सुनसान रात । मंदिर के बाहर चबूतरे पर केशराशि छितराये एक बावली–सी अपने आप से बतिया रही है या किसी अन्य से, यह जान पाना कठिन है। कारण, वहाँ बाहर चबूतरे पर किसी तीसरे का अस्तित्व प्रकट नहीं है, परन्तु वह काव्य की भाषा में किसी से निरन्तर आत्म–निवेदन, आत्म –रोदन या कि आत्म–व्यथा निवेदन करने में दत्तचित्त है। कह रही है–

सुनो दिलजानी ! मेरे दिल की कहानी,
तुव दस्त ही बिकानी, बदनामी भी सहूँगी मैं।
देव– पूजा ठानी, मैं नमाज हूँ भुलानी,
तजे कलमा–कुरान, सारे गुननि गहूंगी मैं।।
साँवला–सलोना सरताज, सिर कुल्ले दिये,
तेरे नेह–दाघ में निदाघ ह्वै दहूँगी मैं ।
नंद के कुमार ! कुर्बान तेरी सूरत पै,
हूँ तो मुगलानी, हिन्दुवानी ह्वै रहूँगी मैं ।।

कोई उसका प्रलाप–अपलाप, आत्म–रोदन सुनकर उसके पास आया, पूछा– "अरी तू कौन है ? क्या दुःख कष्ट है तुझे ? क्यों यहाँ धरना देकर भूखी–प्यासी पड़ी है ? किसके फेर में, किसकी तलाश में तूने अपनी यह हालत बना रखी है ? बता तो आखिर !"

वह बोली– "वाह ! यह भी कोई पूछने की बात है ? क्या उसे तुम नहीं जानते ? दुनिया में कौन है जो उसे नहीं जानता ? सुनो, मेरा साहब (स्वामी) सिरताज वही है, नन्द जी का लाडला । मैं उसी को चाहती हूँ । उसी के लिए तड़प–बिलख रही हूँ और उसी की एक झलक देखने के लिए यहाँ आयी हूँ । पर यहाँ के ये पुजारी मुझे उसके मंदिर में ही घुसने से मना कर रहे हैं– उसका दर्शन नहीं करने देते । मेरी व्यथा यही है।" उसके अपने बोल हैं–

'साहब, सिरताज हुआ, नन्द जू का आप पूत,
मारा जिन असुर, करी काली–सिर छाप है।
कुन्दनपुर जाय के, सहाय करी भीषम की,
रुक्मिनी की टेक राखी, लगी नहीं खाप है।।
पाण्डव की पच्छ करी, द्रौपदी बढायो चीर,
दीन– से सुदामा की, मेटी जिन ताप है।
निहचै करि सोधि लेहु, ज्ञानी गुनवान वेगि,
जग में अनूप मित्र, कृष्ण का मिलाप है।।'

और यह वाणी उसे अति सहज रूप में, साधना के, विरह के चरम क्षणों में अलक्ष से प्राप्त हुई थी– उसके लिए उसने कभी कोई प्रयास नहीं किया । योगियों की जब कुण्डलिनी शक्ति जागृत होती है तो वे चाहने पर अप्रयास ही काव्य में छन्दोबद्ध, विविध राग रागिनियों में अपनी बात कहने की शक्ति पा जाते हैं । प्रेम–दीवानी मुगलानी 'ताज' के जीवन में भी यही घटित हुआ । उसने न कहीं कभी छन्दशास्त्र, पिंगल आदि पढा, न संगीत

की ही कही शिक्षा ली, परन्तु उसकी वाणी से छन्दोबद्ध उद्‌गार, भगवत्‌–प्रेमालाप सहज ही प्रस्फुटित होने लगा था। इस स्थिति में अनेक लोग उसे बावली, पगली, दीवानी आदि उपाधियाँ दे बैठे थे । मुसलमान उस पर कुपित थे कि इसे हुआ क्या ! परन्तु उसने कृष्ण–प्रेम में पगकर फिर किसी की आलोचना–निन्दा की कभी चिन्ता नहीं की। मुसलिम जीवन–पद्धति तो त्याग ही दी सदा के लिए ।

रसखान की बहिन

अहर्निश उसे लगन लगी थी, 'कृष्णा–मिलाप' (प्रभु–मिलन) की । पता नहीं कहाँ से उसे ये संस्कार मिले! वह बिना श्रीकृष्ण की झाँकी देखे पानी तक नहीं पीती थी । प्रातः उसका सर्वप्रथम नियम था श्रीकृष्ण–प्रतिमा के दर्शन करना । शायद यह पंजाब के किसी मुसलिम परिवार की थी । जन्मस्थान उसका किसी ने 'करौली' बताया है तो किसी ने भारत के बाहर के इस्लामी देश में उसके परिवार का होना सिद्ध किया है और 'ताज' को रसखान पठान की बहिन बताया है और लिखा है कि वह 'रसखान' के साथ ही भारत आयी थी । जन्मी थी संवत् 1600 में। जो हो, उसने अपना जीवन–सर्वस्व श्रीकृष्ण के लिए निछावर कर दिया । साध्वी बनकर वह मीरा की भाँति सर्वत्र श्रीकृष्ण–प्रेम के गीत, स्वरचित छन्द गाती फिरती । दीवानी पगली का ही ऐसे में उसे खिताब मिलना था । मुस्लिम राम–भक्त कारेबेग की भाँति 'ताज' अपना सर्वस्व कृष्ण को ही समर्पित किये थी। 'ताज' भी कहती रहती थी कृष्ण से कि,

छैल जो छबीला, सब रंग में रंगीला बड़ा, चित्त का अड़ीला कहूँ देवतों से न्यारा है।
नन्दजू का प्यारा, जिन कंस को पछारा, वह वृन्दावनवारा कृष्ण साहेब हमारा है।।

'नन्द–नंदन, कंस–निकंदन, वृन्दावन–विहारी कृष्ण ही हमारा (ताज का) साहेब (स्वामी) है।" कहती थी 'ताज'–

मेरे तो अधार एक, नन्द के कुमार हैं।

और जो दिव्य झाँकी 'ताज' की आँखो में बसी थी कृष्ण की, वह उसके लिए अवर्णनीय है, कहती है–

राधा की चटक देख, अँखियाँ अटक रहीं ।

मंझन मियाँ अपनी कृति 'मधु–मालती' में इसी राधा–कृष्ण के स्वरूप में, युगल विग्रह में 'शिव और शक्ति' को देखते हैं।

यही जगद्‌व्यापी स्वरूप 'ताज' के मन–प्राणों में बसा था । उसके दिल की दशा कौन जाने ? कौन कहे? रहीम खानखाना का कहना है–

यह स्वरूप निरखै सोइ जानै, या 'रहीम के हाल की' ।

रहीम थे तो मुसलमान ही, किंतु वे भी 'ताज' और 'रसखान' की भाँति ही राम और कृष्ण के प्रेम–रोग से ग्रस्त थे । इसी से कहते हैं– "जिसने एक बार यह सुंदर स्वरूप निरखा, वही यह पीड़ा जान सकता है।"

थाल कृष्ण के हाथ का

सो, 'ताज' प्रतिदिन की भाँति जब एक प्रभात में कृष्ण के दर्शनार्थ मन्दिर में जाने लगी तो उसे टोका–रोका गया, क्योंकि उन लोगों को पता चल गया कि यह लड़की जो दीवानी योगिन–सी दिखती है, मुसलमान है। कहा– "तुम मंदिर में कैसे जा सकती हो भला!" और 'ताज' रूक गयी । बड़ी वेदना उभर आयी उसके हृदय में। बहुत दुःखी । वहीं मंदिर–परिसर में धूनी रमा कर अड़ गयी । कहा– "मैं प्राण दे दूंगी लेकिन बिना अपने साहेब साँवले– सलोने की एक झलक पाये जाऊँगी नही ।" पड़ी रही 'ताज' वहीं भूखी–प्यासी । दिन बीता, रात आयी । पट बन्द हो गये । पुजारी चले गये, भगवान को 'शयन' कराकर । अब कहीं कोई नहीं। सब ओर नीरव सन्नाटा !

ताज निढाल–निराश–निर्जल–निराहार वहीं एकाकी पड़ी है उस चट्‌टानी धरती पर ।

रात गहराती गयी, अन्धकार गाढ़ा होता गया । पूर्ण निस्तब्ध निशीथकाल आया और फिर जाने कैसे वहाँ

दिव्यालोक कौंध उठा । एक कोमल–मधुर स्वर, प्रेमपूर्ण वाणी गूँजी । कोई कह उठा सहसा उस नीरव रजनी में–

"ताज ! अरे तूने जो आज अन्न–जल कुछ भी ग्रहण नहीं किया । ले, यह थाल तेरे ही लिए है। भोजन पा ले ।"

ताज उठ बैठी । सिहर उठी। रोम–रोम पुलकित हो उठा । प्रस्वेद और फिर अश्रुधार से नहा उठी बावली ताज । उसने हाथ बढ़ाकर थाल थाम लिया । लज्जा–संकोचवश, थाल लाने वाले की ओर दृष्टि न उठी उसकी और फिर उसने वही दिव्य–अलौकिक वाणी सुनी–

"ताज ! तू दुःख मत करना । पुजारी आयें तो मेरी ओर से उनसे यह संदेश कह देना कि वे तुझे कभी रोंके नहीं, दर्शन करने से । रोकेंगे तो मैं रुष्ट हो जाऊँगा उनसे।" और फिर वह आलोकपुंज अन्तर्धान हो गया अगले क्षण । उसी अनन्त अंधकार में विलीन हो गयी वह अमृत–वाणी, जिसे 'ताज' ने आज जीवन में प्रथम बार सुना और विभोर हो उठी–कृत कृत्य । निहाल हो गयी वह प्रेम–दीवानी । अब उसे कुछ नहीं चाहिए । जीवन रहे, चाहे जाये। जन्म लेने का सुफल पा गयी वह आज। 'ताज' पूरी थाल का भोजन खा गयी, पर उसे पता न चला कि वह खा–पी रही है। वह तो बस उसी वाणी का स्मरण, उसकी प्रतिध्वनि अब भी सुन–गुन रही थी। बाह्य संसार बिसर ही गया था उससे इस समय और फिर कब इसी मनःस्थिति में उसकी आँख लग गयी, उसे पता न चला ।

भोर वेला में पुजारियों ने आकर उसे जगाया । उनकी करुणा भी जागी, क्योंकि करुणाकर के हाथों 'ताज' को वह दुर्लभ प्रसाद जो प्राप्त हो गया था । पुजारी सोचने लगे, सहानुभूति से प्रेरित हो कि 'अरे ! यह लड़की भूखी –प्यासी यहीं पड़ी रही दिन भर, रात भर ! किंतु फिर यह सुंदर थाल कहाँ से आया यहाँ ? कौन आया ?' पूछा उससे । 'ताज' ने आँसू पोंछते हुए बताया– "वही हमारा दिलदार, सिरताज, दिलजानी, हमारा कृष्ण साहेब दे गया खुद आकर यह महाप्रसाद और कह गया आपके लिए कि ताज को आगे कभी रोकना मती, हम नाराज हो जायेंगे।"

***

सन्त न छोड़ै सन्तई

कुमार गौरव, दशम 'ख'

कबीरदास जी के इस दोहे से यह ज्ञात होता है कि सन्त पुरुष अपनी सज्जनता नहीं छोड़ते हैं।

परन्तु आप ने कभी सोचा कि ऐसा क्यों होता है ?

इसके उत्तर के लिए एक उदाहरण देकर उत्तर की पुष्टि करना अधिक उचित होगा । मैंने भी यह उदाहरण एक सन्त महापुरुष से सुना है। आप यदि सामान्य रूप से दूध को पानी में मिलाये तो दूध पानी में मिल जाता है परन्तु यदि दूध को इस विधि से पानी में मिलायें कि वह पानी में न मिले ? तो यह सम्भव कैसे है–

इसके लिए आप दूध को जमा दें । फिर उसमें मन्थन करें इसके फलस्वरूप प्राप्त मक्खन को पानी में मिलायें तो नहीं मिलता है। ठीक इसी प्रकार सन्त पुरुष तपस्या द्वारा अपने चित्त को स्थिर करता है। इसके पश्चात वह अपने आप का मन्थन चिन्तन करता है। चिन्तन व मन्थन के पश्चात वह मक्खन के समान ही समाज के अन्य सामान्य व्यक्तियों से पृथक हो जाता है। समाज की बुराइयों को न तो धारण करता है और न ही उन्हें प्रश्रय देता है यहीं कारण है कि सज्जन से सज्जनता अलग नहीं की जा सकती ।

इसलिए सज्जन (सन्त पुरुष) व्यक्ति समाज में लोगों के बीच रहते हुए भी अलग दिखाई पड़ता है।

***

दिव्य द्रष्टा सूरदास

श्री ओमशंकर त्रिपाठी, प्रधानाचार्य

साहित्य कालजयी और कालजीवी होता है परन्तु यह तथ्य वहीं सत्य सिद्ध होता है जहाँ साहित्य सत्य और शिव होता है। जब साहित्य के मूल्य भी समय के साथ बदलने लगे तो पतन हुआ । आज देश के शीर्षस्थ और छपने वाले साहित्यकार जो कुछ भी लिख रहे हैं; आने वाली पीढ़ियाँ वही सब पढेंगी क्योंकि वह पाठ्यक्रम में भी आयेगा । यह देश का दुर्भाग्य है कि छपने वाले साहित्यकार संस्कृति विरोधी और राम विरोधी हैं। वामपंथी कुत्सित मानसिकता के मठाधीश लेखकों का बड़े–बड़े प्रकाशनगृहों पर कब्जा है जो हनुमान को 'आतंकवादी' कहते हैं । यह उपेक्षा करने वाली बात नहीं है। ऐसे में ओमशंकर जी जैसे साहित्यकारों और डॉ. विद्यानिवास मिश्र जैसे साहित्य–मनीषियों की बड़ी जिम्मेदारी बनती है। एक कालजयी कलमकार की कलम जैसी होनी चाहिये, वैसी उनके पास है; पर प्रकाशकों की व्यावसायिकता, अखबारों के साहित्य–संपादकों की चाटुकारों से आवृत्त होने की वृत्ति तथा खुद उनकी भी प्रसिद्धि–पराङ्मुख मनोवृत्ति ने उनके साहित्य को प्रकाशित और प्रसारित होने से अवरूद्ध कर दिया । विद्यालय की पत्रिका का संपादक होने के नाते ऐसे साहित्यकार का एक अच्छा लेख हमने प्राप्त किया जो 'सूरदास' पर है। यह उनके वैदुष्य की एक बानगी है। — संपादक

भारतीय समाज की जीवन–दर्शन धर्म के प्रति समर्पित एक इस प्रकार का आख्यान है, जिसकी व्याख्या भावनाओं के संगीत के साथ सात्विक चेतना को भी अनुप्राणित करती है। स्थूल संसार भी चर्म चक्षुओं का सम्मोहन मात्र न होकर भारत की मनीषा को अलौकिक आनन्द प्रदान करने वाला जीवन का उपोद्घात रहा है। उसका प्रेम, मोह और उसकी ममता सब कुछ उसी अदृष्ट स्रष्टा को समर्पित हो जाती है। इसी प्रवृत्ति से अनुप्राणित होकर हिन्दी–साहित्य के भक्तिकाल में एक भक्त कवियों की लम्बी परंपरा बनी । इसी परम्परा के अन्तर्गत कृष्ण भक्तों की मालिका और प्रकाश डालते हुए आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अपने एक प्रबन्ध में इस प्रकार लिखा है– "जयदेव की देववाणी की स्निग्ध पीयूष धारा, जो काल की कठोरता में दब गयी थी, अवकाश पाते ही लोकभाषा की सरसता में परिणित होकर मिथिला की अमराइयों में विद्यापति के कोकिल कंठ से प्रकट हुई और आगे चलकर ब्रज के करील कुंजों के बीच फैलकर मुरझाये मनों को सींचने लगी। आचार्य की छाप लगी हुई आठ वीणाएँ श्री कृष्ण की प्रेमलीला का कीर्तन करने उठीं, जिनमें सबसे ऊँची, सुरीली और मधुर झनकार अंधे कवि सूरदास की वीणा की थी । ये भक्त कवि सगुण उपासना का रास्ता साफ करने लगे ।"

निर्गुण उपासना की नीरसता को उघाड़ते हुए ये भक्त कवि उपासना का हृदयग्राही स्वरूप बड़े रंजनकारी ढंग से प्रस्तुत करने लगे । सूरदास इसी परंपरा के एक प्रकाश पुंज है। उनका प्रभाव अनन्त काल तक अक्षुण्ण रहने वाला और उनका काव्य युग–युग का साहित्य बनकर संबंधित भाषा और साहित्य को अक्षय–निधि प्रदान करता रहेगा । यद्यपि उन्होंने प्रमुख रूप से वात्सल्य और शृंगार को ही अपनी वाणी का मुख्य विषय बनाया, किन्तु इस एकदेशीय वर्ण्य–विषय का जितना उद्घाटन उन्होंने अपनी बंद आँखों से किया उतना किसी और कवि से आज तक नहीं बन पड़ा । आचार्य शुक्ल के ही शब्दों में– "हिन्दी साहित्य में शृंगार का रस

राजत्व यदि किसी ने पूर्ण रूप से दिखाया तो सूर ने, उनकी उमडती हुई वाग्धारा उदाहरण रचने वाले कवियों के समान गिनाये हुए संचारियों से बँधकर चलने वाली न थी ।"

जीवन वृत्त– जैसा कि हमारे देश की परंपरा रही है कि वास्तव में जो महान है, वह अपना बखान स्वयं नहीं करता, और यह प्रसिद्धि पराङ्मुख मनोवृत्ति इन भक्त कवियों के साथ कुछ इस सीमा तक जुड़ गयी कि आज उनका यथार्थ परिचय प्राप्त करना कितना दुष्कर हो गया है यह आज के अनुसंधानकर्ता ही अनुभव कर सकते हैं। इसी कारण हम सूर के जन्मकाल, स्थान, माता–पिता तथा जीवन संबंधी अनेक घटनाओं के बारे में प्रमाणपूर्वक कुछ न कह पाने के लिये विवश हो जाते हैं। सीही, रूनकता, गऊघाट तथा सम्वत् 1520 से लेकर 1550 तक तथा रामदास सरीखे जाने कितने नाम उस महिमामंडित व्यक्तित्व को पुत्ररूप में अपनाने के लिये आज लालायित दिखाई देते हैं, किन्तु फिर भी अनुसंधित्सुओं के लिये यह एक पहेली ही रह जाती है।

महाप्रभु बल्लभाचार्य का व्यक्तित्व इतिहास की धरोहर और भक्ति–संसार की एक अलौकिक संकल्पना है। उनका शिष्यत्व ग्रहणकर सूर में जो चमक आई, कदाचित् वही कृष्ण–भक्ति की एक उदात्त उद्भावना बन गयी। उन्होंने भागवत् से मूल विषय ग्रहणकर एक अनोखे ढंग से अपने सूरसागर की अंतर्योजना की । अनोखे इसलिये कि भागवत का प्रतिपाद्य ज्ञान है परन्तु सूरसागर का प्रतिपाद्य है– विशुद्ध कृष्णप्रेम । इसके साथ ही राधा–कृष्ण की क्रीडा और भ्रमरगीत प्रसंग में सूर की सर्वथा मौलिक उद्भावना के दर्शन होते हैं।

भक्ति भावना– महात्मा सूरदास का यह विश्वास है कि अपने संपूर्ण रूप से यदि किसी के दर्शन करने हों तो श्रीकृष्ण के दर्शन करना चाहिये। उनका यह मानना है कि ब्रह्म के लिये कोई मानवीय मर्यादा का बंधन नहीं होता इसीलिये उन्होंने कृष्ण के पूर्ण अवतार की व्यंजना प्रेम तथा सौन्दर्य के माध्यम से की है। भक्ति के फलक पर सौन्दर्य के शृंगारमय सचल चित्र प्रस्तुत कर जो रमणीयता सूरदास ने उत्पन्न कर दी, वह अतुलनीय है।

इसके अतिरिक्त रहस्यात्मक कल्पनाओं के द्वारा अनेक स्थानों पर कबीर जैसी भक्ति की उद्भावना भी सूर साहित्य में खोजी जा सकती है। किन्तु विशेष बात यह है कि उनकी रहस्यात्मकता एक आदर्श लोक का संकेत करती हुई गहन शांति का शाश्वत स्थल दिखाती है। उदाहरण के लिये निम्नांकित अंश देखा जा सकता है–

चकई री चलि चरन सरोवर जहाँ न प्रेम वियोग।

कवित्व– सूरदास की भक्ति उनके कवित्व के साथ कुछ ऐसा घुलमिलकर प्रवाहित हुई है कि आचार्य शुक्ल जैसे समीक्षकों ने उन्हें महाकवि सूरदास के रूप में ही अध्येताओं के सामने प्रस्तुत करना उचित समझा। वह लिखते हैं– "हिन्दी साहित्य में शृंगार का रस राजत्व यदि किसी ने पूर्ण रूप से दिखाया तो सूर ने । उनकी उमड़ती हुई वाग्धारा उदाहरण रचने वाले कवियों के समान गिनाये हुए संचारियों से बँधकर चलने वाली न थी।"

उनकी यदि केवल एक ही कृति अर्थात् सूरसागर का ही अवलोकन करें तो उसमें गीति काव्य की संगीतात्मकता, उसकी भावान्विति तथा संक्षिप्तता तो सर्वत्र प्राप्त होती ही हैं, साथ ही कथा प्रवाह भी अविच्छिन्न रूप से चलता रहता है। इस संबंध में आचार्य नंद दुलारे बाजपेयी ने सर्वथा उचित ही कहा है कि– "हम आसानी से यह नहीं समझ पाते कि कथानक के भीतर रूप–सौंदर्य अथवा मनोगतियों का चित्र देख रहे हैं अथवा मनोगतियों और रूप की वर्णना के भीतर काव्य का विकास देख रहे हैं।"

इस विषय को यदि विस्तारपूर्वक समझना हो तो निम्नांकित बिन्दुओं को ध्यान में रखना ही होगा ।

वत्सलता– वात्सल्य जगत में बाल मनोविज्ञान का जो सूक्ष्म निरीक्षण सूर की बंद आँखों ने किया,

कदाचित् अन्य किसी भी कवि के द्वारा संभव न हो सका । शिशुओं के हाव–भाव, बालकों की क्रीड़ाएँ, उनकी मनोहरी चेष्टायें, पारस्परिक होड़ा होड़ी, एक दूसरे को बहकाना, चिढ़ाना, डराना, स्पर्धा, अमर्ष, क्षोभ, उल्लास आदि प्रवृत्तियों का जैसा वास्तविक चित्रण सूरदास ने अपने सैकड़ों पदों में किया, वह विश्व साहित्य में दुर्लभ है। निम्नांकित उदाहरण बाल मनोभावों की कैसी मिली–जुली झाँकी प्रस्तुत करता है, देखिये–

मैया बहुत बुरौ बलदाऊ ।
कहन लग्यौ बन बड़ौ तमासो सब मौड़ा मिलि आऊ।
मोहूँ कौ चुचकारि गयौ लै जहाँ सघन वन झाऊ,
भागि चल्यौ कहि गयौ उहाँ तै काटि खाई रे हाऊ ।
हौं डरपौं, काँपौं अरू रोवौं कोउ नहिं धीर धराऊ ।
थरसि गयौं नहिं भागि सकौं वै भागे जात अगाऊ ।
मोसों कहत मोल कौ लीन्हौ आपु कहावत साऊ,
'सूरदास' बल बड़ौ चबाई तैसेहिं मिले सखाऊ ।

इसके साथ ही माँ का पुत्र के प्रति वात्सल्य भी सूर साहित्य में बेजोड़ है। मातृ–हृदय की प्रतिक्रियाओं का अंकन निम्नांकित उदाहरण में देखिये, जब गायों को घेरते–घेरते बालकृष्ण के पैरों में पीड़ा होने लगती है और वह भी दूसरे ग्वालों के दबाव के कारण–

यह सुनि माइ जसोदा ग्वालन गारी देति रिसाइ,
मैं पठवति अपने लरिका कौं आवे मन बहराई,
'सूर' स्याम मेरौ अति बालक मारत ताहि रिंगाइ।

इसके साथ ही माँ का पुत्र के प्रति वात्सल्य भी सूर साहित्य में बेजोड़ है। इसी प्रकार मातृ हृदय की अभिलाषा, विह्वलता, उत्कंठा, चिंता, प्रसन्नता आदि न जाने कितनी भावनाओं के चित्र सजीव रूप में प्रस्तुत कर देना मानो सूर के बायें हाथ का खेल रहा है।

जैसा कि ऊपर संकेत किया जा चुका है कि वात्सल्य केवल बाल्यावस्था का ही नहीं, शैशव की स्वाभाविक मनोहारी शिशु–स्वभावगत चेष्टाओं का भी दिग्दर्शन करता है। इन्हीं चेष्टाओं का अंकन सूर ने जिस शक्ति के साथ किया है, अदभुत है–

चरण गहे अँगुठा मुख मेलत

तथा

जसोदा हरि पालनै झुलावै
कबहुँ पलक हरि मूँदि लेत है, कबहुँ अधर फरकाबै

तथा

कहन लगे मोहन मैया–मैया

तथा

सिखवत चलन जसोदा मैया
अरबराय करि पानि गहावत डगमगाय धरनी धरैं पैयाँ ।

आदि उदाहरणों से सूर सागर भरा पड़ा है।

प्रकृति के पारखी– सूर ने अपने काव्य में मनोभावनाओं की गहराई में पहुँचकर जिन अपरिभाषित

मनोभावों को उद्घाटित किया है वे मनुष्य के बाल, किशोर, तरुण, प्रौढ़ और वृद्ध मनों को तो सफलतापूर्वक स्पर्श कर ही सके, पशु स्वभाव भी उनकी दृष्टि से ओझल नहीं हुआ । गोचारण का एक प्रसंग देखिये–

द्रुम चढ़ि काहे न टेरौ कान्हाँ, गैयाँ दूरि गईं
भागी जात सबन के आगे, जो वृषभानु दईं ।

अंतर्दृष्टि– इस विवाद में न फँसकर कि सूर जन्मांध थे अथवा बाद में अंधे हुए, एक बात जो निर्विवाद रूप से सभी को स्वीकार्य है कि सूर ने अपने अंतर्मन में जिस सृष्टि को प्रस्थापित करके उसका सम्यक दर्शन किया, वह वही थी जिसे तुलसी ने नानापुराण निगमागमों से खोजकर निकाला और कबीर ने जिसे "सुन्नि सिषर गढ़" के भीतर देखा । सूर की इस अंतर्दृष्टि ने देवकी का दर्द, यशोदा की आतुरता और कातरता, गोपियों और ग्वालों के उद्गार तथा उद्धव की ज्ञान संपुटित मुग्धता बड़ी कुशलता से परखी है। इसी अंतदृष्टि का परिणाम है कि सूरदास का वात्सल्य से लेकर वियोग तक का जो भी वर्णन है, अपने में अनूठा है। कहीं–कहीं तो इस अंतदृष्टि ने मनोभावों को प्रस्तुत करने में कमाल ही दिखा दिया है। उदाहरण के लिये यशोदा ने कृष्ण के मथुरा चले जाने पर देवकी को दो पंक्तियों में जो संदेश भेजा है, वह वात्सल्यजनित करुणा और वेदना का दुर्लभ महाकाव्य है–

सँदेसो देवकी सों कहियो ।
हौं तो धाय तिहारे सुत की मया बनाये रहियो ।

और इसी प्रसंग में आगे की पंक्ति तो मानो भावनाओं का ज्वार ही उमड़ा देती हैं। वह कहती हैं–

तुम तौ टेंव जानतिहिं होइहौ, तऊ मोहिं कहि आवै।
प्रात उठत मेरे लाल लड़ैतेहि माखन रोटी भावै।

अनुराग

सूर ने जिस सरलता के साथ बालक्रीड़ाओं के भावचित्र प्रस्तुत किये हैं, उसी स्वाभाविकता के साथ यौवनकालीन हास–परिहास, छेड़–छाड़, कुतूहल और विनोद का भी चित्रण किया है। संयोग श्रृंगार का निम्नांकित चित्र मानो कैशोर्य चपलता का एक जाग्रत प्रतिबिम्ब है–

धेनु दुहत अति ही रति बाढ़ी ।
एक धार दोहनि पहुँचावत एक धार जहँ प्यारी ठाढ़ी ।

उन्होंने गोपियों के विरहोद्गार, उनकी पीड़ा, पश्चाताप तथा समर्पण की भावना जिस निश्छलता के साथ चित्रित की है, निस्सन्देह अप्रतिम है। कतिपय उदाहरण द्रष्टव्य हैं–

ऊधौ जोग जोग हम नाहीं

X X X

ऊधौ मन न भये दस बीस

X X X

ऊधौ हम लायक सिख दीजै

X X X

हमरे कौन जोग विधि साधै

इसी प्रकार गोपियों की प्रेम विह्वलता निम्नांकित पद में जिस नैराश्य के साथ चित्रित की गयी है, वह भी दर्शनीय है–

प्रीति कर काहू सुख न लह्यौ

तथा

ऊधो मोहि ब्रज बिसरत नाहीं

हंस–सुता की सुन्दर कगरी अरू कुंजन की छाँहीं

और

मधुबन तुम कत रहत हरे ?

विरह वियोग श्याम सुन्दर के ठाढ़े क्यों न जरे ?

तथा

बिनु गोपाल बैरिनि भई कुंजैं

सूरदास ने राधा–विरह–चित्रण में गोपियों, की विरह–वेदना–विवृत्ति की शैली से नितांत भिन्न शैली प्रयोग की है। ध्यान देने योग्य बात यह है कि उद्धव–गोपी संवाद के बीच राधा ही केवल एक ऐसी हैं जो सारी वियोग व्यथा को शांतमन से पी जाती हैं । इसी प्रकार सूर ने संयोगकाल की मानिनी राधा के स्वाभिमान की भी पूरी–पूरी रक्षा की है। राधा का यह स्वरूप अंकित करने में सूर ने एक प्रकार से समाधि भाषा का प्रयोग किया है और उसे मौन बनाकर उसकी घनीभूत वेदना को बिखरने नहीं दिया है। उदा.–

ऊधौ नैनन नेम लियौ, (राग गूजरी)

नंदनँदन सौं पतिव्रत राख्यौ, नाहिं न दरस बियौ ।

तथा

ऊधौ नैनन यह व्रत लीन्हौ । (राग कान्हरौ)

स्वाति बिना ऊसर सब भरियत, ग्रीव रंध्र मत कीन्हौं ।।

कला पक्षः कूट शैली – इतना ही नहीं, सूर का कलापक्ष भी कहीं कही इतना सशक्त प्रभावी और चमत्कारिक है कि उसकी तुलना रीतिकाल में भी बड़ी कठिनाई से खोजी जा सकती है। "सुनत जोग ऐसो लागत है, ज्यों करूई ककरी" जैसी उद्‌भावना करके सूर ने उपमा के क्षेत्र की जो मौलिकता प्रदर्शित की है, कदाचित प्रगतिवादी कवि भी इस स्तर तक कभी नहीं पहुँच सका है।

रे मन धीरज क्यों न धरै ।

एक सहस नौ सौ के ऊपर ऐसो जोग परै

मेघनाथ रावन को बेटा पूरब जनम धरै

पूरब पच्छिम उत्त दच्छिन चहुँ दिसि राज करै

हिन्दु को तेज तुरूक को नासै जैसे कीट जरै

उपर्युक्त पद में ज्योतिषियों के लिये भविष्य और कलापारखियों के लिये अर्थबहुलता स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। जहाँ तक सूर की कूट शैली का प्रश्न है, कबीर की रहस्यात्मक उलटबासियों के दुरुहपन से लेकर अर्थों के चमत्कार तक उनमें एक ऐसी अनोखी अभिव्यञ्जना है कि पाठक और समीक्षक दोनों ही इसके प्रति अविभूत हो जाते हैं। कतिपय उदाहरण देखिये–

माई री देखो दधिसुत में दधिजात
दधि पर कीर, कीर पर पंकज, पंकज के द्वै पात।

तथा

कहत कत परदेशी की बात ।
मंदिर अरध अवधि बदि हमसौं, हरि अहार चलि जात।
ससि रिपु बरष, सूर रिपु जुग बर, हर–रिपु कीन्हौ जात ।
मघ पंचक लै गयौ साँवरौ, तातैं अति अकुलात ।
नखत, वेद, ग्रह जोरि, अर्धकरि, सोइ बनत अब खात।
सूरदास बस भईं बिरह के, कर मींजैं पछितात ।।

भाषा – सूरदास के काव्य का बहुतांश उनकी मौलिक उद्‌भावना का रमणीय उदाहरण है। बोलचाल की ब्रजवाणी को काव्योमयोगी बनाकर उसमें मधुरता का समावेश करना कितना कठिन कार्य था, यह भाषा के ज्ञाता और समीक्षक ही जान सकते हैं, किन्तु सूर ने इस क्षेत्र में अद्‌भुत सफलता प्राप्त की । इसीलिये आचार्य शुक्ल ने आश्चर्य के साथ कहा है कि "चलती हुई ब्रजभाषा में यह इतनी प्रगल्भ और काव्यांगपूर्ण है कि आगे आनेवाले कवियों की श्रृंगार और वात्सल्य की उक्तियाँ सूर की जूठन सी जान पड़ती हैं।" सूर की चित्त प्रधान कल्पनाओं ने सौन्दर्य को शताधा रूपायित कर दिया है। एक उदाहरण लिखने का लोभ संवरण नहीं कर पा रहा हूँ–

मुख आँसू माखन के कनिका निरखि नैन सुख देत ।
मनु ससि स्रवत सुधानिधि मोती उडगन अवलि समेत ।।

सूरदास सौन्दर्य तथा प्रेम के अमर चितेरे हैं। कृष्ण की बालछवि, राधा–कृष्ण की चपल क्रीड़ा, विरहाकुल गोपियों के हृदयद्रावक शब्दचित्र, प्राकृतिक दृश्यों के मनोहारी चित्रांकन तथा मानव मन की सहजानुभूतियों को जिस कौशल के साथ शब्दायित करने का सफल प्रयास किया है, हिन्दी साहित्य में ऐसा कोई दूसरा कवि नहीं है और शायद इसीलिये तुलसी के प्रबल पक्षधर आचार्य शुक्ल ने अन्ततः यह स्वीकार ही किया है कि "वात्सल्य और श्रृंगार के क्षेत्रों का जितना अधिक उद्‌घाटन सूर ने अपनी बंद आँखों से किया, उतना किसी और से आज तक नहीं बन पड़ा । "उक्त रसों के प्रवर्तक रति भाव के भीतर की जितनी मानसिक वृत्तियों और दशाओं का अनुभव और प्रत्यक्षीकरण सूर कर सके उतनी का और कोई नहीं ।"

सारतः यह निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि सूरदास की वग्विदग्धता संपन्न अप्रस्तुत योजना, छवि अंकन में प्रदर्शित वर्णज्ञान, प्रसंगोद्‌भाविनी शक्ति, अदृश्य कोनों तक अपनी तीव्र किरणें पहुँचाने वाली मर्मदृष्टि तुलसी जैसे महाकवि को भी स्थान–स्थान पर पीछे छोड़ देती है। उनके सूरसागर के भीतर निर्मल सौन्दर्य वर्णन से जहाँ मोती बिखरे हैं और जहाँ यौवन के हास–परिहास के फूल झरे हैं, वहीं गोपियों के आँसुओं से काव्यभूमि भीगी भी है। अतः सूर हिन्दी साहित्य संसार के वह अम्लान सूर्य हैं जिनका प्रकाश और जिनका प्रभाव मानवता के साथ सदा ही अक्षुण्ण और अनन्त रहेगा ।

***

छायावाद के पुरोधा कवि जयशंकर प्रसाद

डॉ. कन्हैया लाल अवस्थी

डॉ. कन्हैयालाल अवस्थी नाम है एक साहित्यधर्मी विद्वान का, लेखक का और चिन्तक का। पर इस सबसे ऊपर वे हैं एक सहृदय–सरल और सच्चे मानव । वे वी.एस.एस.डी. कालेज के अवकाश–प्राप्त ख्यातनामा प्रवक्ता हैं। विद्यार्थियों के उपयोग के लिये मैंने उनसे जयशंकर प्रसाद पर 'कुछ' लिखने का आग्रह किया। यह 'कुछ' का आग्रह, 'सब कुछ' के अनुग्रह के रूप में परिणत हो गया ।

–संपादक

छायावाद, हिन्दी साहित्य के भाव एवं कला क्षेत्र का महान् आन्दोलन है। इसकी प्रधान भावना आधुनिक औद्योगिकता से प्रेरित व्यक्तिवाद है। साहित्य की यह काव्यधारा पूर्ण रूप से मौलिक तथा स्वतंत्र है। इसका प्रादुर्भाव द्विवेदी युगीन बहिर्मुखी स्थूल चेतना की प्रतिक्रिया के रूप में हुआ । इस दृष्टि से इसे 'स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह' कहना नितान्त सार्थक है। इसके अन्तर्गत द्विवेदीयुगीन इतिवृत्तात्मकता तथा स्थूल–सरल–पदावली का तीव्र विद्रोह हुआ, जिसके फलस्वरूप हिन्दी काव्य अन्तर्जगत् की ओर उन्मुख होकर सूक्ष्म, वक्र तथा सांकेतिक पदावली को ग्रहण करके चला ।

काव्य–रचना की इस पद्धति का नामकरण 'छायावाद' कब और कैसे हुआ, यह कहना कठिन है। कुछ भी हो इस शब्द का प्रयोग स्वच्छन्दतावाद की नवीन रचनाओं के लिए किया गया । इसकी भावप्रवण व्याख्या करते हुए प्रसाद ने लिखा–

"छाया भारतीय दृष्टि से अनुभूति व अभिव्यक्ति की भंगिमा पर निर्भर करती है। ध्वन्यात्मकता, लाक्षणिकता, सौन्दर्यमय प्रतीक विधान तथा उपचार वक्रता के साथ स्वानुभूति की विवृत्ति छायावाद की विशेषताएँ हैं।"

कवयित्री महादेवी वर्मा ने भी "सृष्टि के बाह्याकार पर इतना लिखा जा चुका था कि मनुष्य का हृदय अभिव्यक्ति के लिए रो उठा । स्वच्छन्द छन्द में चित्रित उन मानव अनुभूतियों का नाम छाया उपयुक्त ही था और मुझे तो आज भी उपयुक्त लगता है।" इतना लिखकर इस नाम पर अपनी मुहर लगायी । क्रमशः दो महायुद्धों के बीच (1918–1939) रचित कविता के लिए 'छायावाद' नाम रूढ़ हो गया । इस काव्य को स्वच्छन्दतावादी काव्य, रोमांटिक काव्य तथा रहस्यवादी काव्य के नाम से भी जाना जाता है।

छायावादी काव्यधारा के आदर्शों को हृदयंगम करने के लिए उस युग के जीवन मूल्यों एवं तत्वों को भी ध्यान में रखना परमावश्यक है। इसके लिए स्वाधीनता की भावना, राष्ट्र प्रेम, अहिंसा आदि तत्वों, तत्कालीन अतीतोन्मुखी मूल्यपरक दृष्टि को आत्मसात् करने के साथ–साथ सतत परिवर्तन प्रस्तुत करने वाली मानवीय चेतना, तत्सम्बन्धी क्रिया–प्रतिक्रिया एवं नवीनस्थितियों के प्रभाव का आदान करने वाले सांस्कृतिक विकास के परिदर्शन के प्रति जागरूक रहना अपेक्षित है। कविवर जयशंकर प्रसाद इस काव्यधारा के अग्रणी रचनाकार एवं प्रवर्तक माने जाते हैं।

महाकवि प्रसाद का जन्म काशी के प्रतिष्ठित परिवार में माघ शुक्ल दशमी सवंत् 1946 वि. (सन् 1889 ई0) में हुआ था । उनके पितामह श्री शिवरत्न साहू तथा पिता श्री देवी प्रसाद साहू थे । शिवरत्न साहू अत्यन्त उदार प्रवृत्ति के दानी व्यक्ति थे । दान देना उनकी दैनंदिन क्रिया में सम्मिलित था । काशी में वे सुँघनी साहू के नाम से विख्यात थे । सुँघनी तम्बाकू का व्यवसाय करने के कारण यह परिवार काशी का सुँघनी साहू घराना बन गया था। इस समृद्ध परिवार में प्रसाद का बचपन अत्यधिक सुखमय रहा ।

प्रसाद जी दो भाई थे। उनके बड़े भाई का नाम श्री शंभूरत्न था । प्रसाद जी की शिक्षा काशी के क्वींस कालेज में चल रही थी, परन्तु विपरीत परिस्थिति वश उन्हें सातवीं कक्षा से ही पढ़ाई छोड़नी पड़ी और वे घर

पर ही पं. दीनबन्धु ब्रह्मचारी से वेद–उपनिषद् की शिक्षा ग्रहण करने लगे । घर पर ही उनकी अंग्रेजी शिक्षा का भी प्रबन्ध किया गया ।

संवत् 1957 वि. में (सन् 1900 ई.) प्रसाद जी ने अपनी माता के साथ धारा क्षेत्र, ओंकारेश्वर, पुष्कर, उज्जैन, ब्रजमंडल, अयोध्या, जयपुर आदि विविध रमणीक स्थानों की यात्रा की । अमरकंटक पर्वतश्रेणी के मध्य नर्मदा की धारा में संपन्न नौकायात्रा उन्हें जीवन पर्यन्त स्मृत रही । लेकिन इस यात्रा के कुछ समय बाद उनके पिता का तथा तदनन्तर उनकी माता का भी निधन हो गया । इसके बाद उनके जीवन में अकल्पनीय परिवर्तन आ गया ।

प्रसाद जी का पारिवारिक जीवन अधिक सुखमय नहीं रहा । बड़े भाई की अकालमृत्यु ने उनके जीवन को अस्त–व्यस्त कर दिया । स्वयं उनकी दो पत्नियाँ थोड़े अन्तराल में ही काल–कवलित हो गयीं। दूसरी पत्नी की मृत्यु के बाद वे तीसरा विवाह नहीं करना चाहते थे । परन्तु विधवा भौजाई के प्रबल आग्रह के सामने उन्हें झुकना पड़ा। तीसरी पत्नी से उन्हें एक पुत्र रत्नशंकर की प्राप्ति हुई, जो उनकी वंश परम्परा के वाहक हैं।

प्रसाद जी जनवरी सन् 1937 ई0 में लखनऊ में – प्रदर्शनी देखने गये । वहाँ से लौटने पर 28 जनवरी से उन्हें ज्वर आने लगा । 22 फरवरी को जाँच से ज्ञात हुआ कि उन्हें राजयक्ष्मा हो गया है। जलवायु–परिवर्तन के लिए चिकित्सकों की स्थान परिवर्तन की सलाह को उन्होंने ठुकरा दिया । चिकित्सा चलते रहने पर भी कोई लाभ न हुआ और 15 नवंबर सन् 1937 ई. को उनका निधन हो गया । छायावाद का प्रवर्तक यह अप्रतिम काव्यशिल्पी मूर्द्धन्यकवि अपनी पाँच भौतिक काया से तो शून्य में विलीन हो गया परन्तु वह अपनी यशः काया से अमर है।

प्रसाद जी अपूर्व प्रतिभा सम्पन्न, असाधारण व्यक्तित्व वाले कवि थे । उनका कद सामान्य, रंग गोरा तथा शरीर सुगठित था । उनकी वेशभूषा खद्दर का कुर्ता और धोती थी, परन्तु रेशमी कुर्ता, रेशमी टोपी और बारीक खद्दर की धोती उनके प्रिय परिधान थे । वे मितभाषी, गम्भीर किन्तु विनोदी प्रकृति के व्यक्ति थे । उन्मुक्त अट्टहास उनके स्वभाव में सम्मिलित था । अपने यौवन में वे खूब कसरत करते तथा मुग्दर का भी अभ्यास करते थे, जिसके कारण उनका शरीर हृष्ट पुष्ट एवं मुखमंडल अत्यन्त तेजस्वी था । उनके बाह्य व्यक्तित्व का निरुपण करते हुए श्री रामनाथ 'सुमन' ने लिखा है– "गोरा चिट्टा मझोला कद, गठी हुई देहयष्टि, भव्य ललाट, राजकुमारों–सा चेहरा–मोहरा। आँखों में एक विनोद, एक जादू, एक रहस्य । सामने देखती हुई भी मानों दूर का कोई दृश्य देखती–सी आँखें । यही थे प्रसाद जी ।"

जीवन के कठोरतम संघर्षों में प्रसाद जी के व्यक्तित्व का निर्माण हुआ । उनके विचारों में तलस्पर्शी गाम्भीर्य आया, गहन–गम्भीर अध्ययन ने उन्हें दार्शनिकता प्रदान की । उनकी रचनाओं में ये समस्त तत्व प्रतिफलित हुए हैं। वे एक मृदुभाषी, हँसमुख, मिलनसार, सहृदय और व्यवहार कुशल व्यक्ति थे । उनके व्यक्तित्व का काव्यात्मक आकलन करते हुए वरेण्य समीक्षक डॉ. नगेन्द्र ने लिखा है–

"शान्त–गम्भीर सागर, जो अपनी आकुल तरंगों को दबाकर धूप में मुस्करा उठा है या फिर गहन आकाश, जो झंझा और विद्युत को हृदय में समाकर चाँदनी की हँसी हँस रहा है– ऐसा ही कुछ प्रसाद का व्यक्तित्व था।"

प्रसाद जी के साहित्यिक मित्रों में रामकृष्णदास, विनोदशंकर व्यास, मुंशी प्रेमचंद और पं. केशव प्रसाद मिश्र प्रमुख थे । उस समय हिन्दी साहित्य संसार में दलबन्दी व्याप्त थी । पं. बनारसीदास चतुर्वेदी तथा श्री दुलारे लाल भार्गव, प्रसाद विरोधी दल का नेतृत्व करते थे ।

प्रसाद जी की काव्य रचना का शुभारम्भ सन् 1900 ई. के आस पास ही हो गया था । दस वर्ष की अवस्था में ही उन्होंने अपने गुरु 'रसमयसिद्ध' को अपनी पहली रचना 'कलाधर' उपनाम से रचकर दिखलाई थी । परन्तु पन्द्रह वर्ष की अवस्था से तो वे नियमित रूप से रचना करने लगे थे । इसके पश्चात प्रायः बत्तीस वर्ष तक अनवरत रचना करते हुए उन्होंने हिन्दी साहित्य को तेरह नाटक, तीन उपन्यास, सत्तर कहानियाँ, आठ निबन्ध एवं सात काव्यकृतियों का अमूल्य उपहार प्रदान किया । उनका विविधता युक्त साहित्य गुण एवं परिमाण दोनों की दृष्टि से अप्रतिम है।

अनेक प्रकार की बहुमूल्य कृतियों की सृष्टि करते हुए भी प्रसाद जी का रचनाकार व्यक्तित्व मूल रूप से कवि का ही था । इस सम्बन्ध में डॉ. नगेन्द्र का यह अभिमत सर्वथा सार्थक है–

"कविवर प्रसाद कवि, कहानी लेखक, नाटककार, उपन्यास प्रणेता, सभी कुछ थे और सबसे पहले थे कवि। उनकी कहानियाँ कटी छँटी आख्यामयी कविता ही तो हैं, उनके नाटक और उपन्यास भी कवित्व से परिपूर्ण हैं।"

प्रसाद जी अपनी मित्रमंडली में ही कविताएँ सुनाते थे । सार्वजनिक सभाओं में व्याख्यान देना, कवि सम्मेलनों में काव्य–पाठ करना उन्हें पसन्द नहीं था । उनके अभिन्न मित्र श्री विनोद शंकर व्यास ने केवल एक बार कवि सम्मेलन में उनके काव्य पाठ का उल्लेख किया है। यह अवसर नागरी प्रचारिणी सभा के एक उत्सव का था, जिसमें प्रसाद जी ने 'आँसू' की कुछ पंक्तियों का लय समन्वित पाठ किया था, जिसमें उनके मोहक स्वर एवं विशिष्ट शैली की भूरि–भूरि प्रशंसा हुई थी ।

प्रसाद जी ने अपनी अल्हड़ युवावस्था में किसी से प्रेम भी किया था । यह प्रेम किससे था, यह बात तो रहस्य ही रही, परन्तु इसने उनके जीवन में अपूर्व सरसता उत्पन्न की थी । 'आँसू' काव्य के आलंबन' की खोज–पड़ताल करने वाले अनेक लोगों ने स्वयं कवि से कुरेद–कुरेद कर इस सन्दर्भ में पूछताछ की थी । ऐसे प्रश्नकर्ताओं से ऊबकर कवि ने ऐसे लोगों के लिए ये चार पंक्तियाँ तख्ती में लिखकर लटका दी थीं–

"ऐ मेरे प्रेम बता दे तू नारी है कि पुरुष है,
दोनों ही पूछ रहे हैं, तू कोमल है कि परुष है।
कैसे समझायें इनको तेरे रहस्य की बातें,
जो तुझको समझ चुके हैं, अपने विलास की घातें ।"

वास्तव में 'आँसू' गीतिकाव्य का प्रणयन उन्होंने अपनी सुदर्शना एवं विदुषी प्रथम पत्नी के वियोग में निःसृत आँसुओं को काव्य में अमर बनाने के लिए किया था । दस–बारह वर्ष के दाम्पत्य जीवन के बाद अचानक उनका निधन हो गया था और कवि प्रसाद के लिए यह वियोग व्यथा असह्य थी । वे वेदना–विह्वल थे, तब राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त ने उन्हें अपनी विराहनुभूति को काव्य रूप प्रदान करने की प्रबल प्रेरणा इन शब्दों में दी थी–

"यदि ऐसी बात है तो उनकी स्मृति में निकलने वाले इन आँसुओं को अमर कर दो और उनकी याद को चिरस्थायित्व प्रदान करो । इससे तुम्हें सन्तोष होगा और उनकी आत्मा को शान्ति मिलेगी ।" 'आँसू' काव्य के प्रणयन की इस आधारभूमि के अनुसार कविवर पंत के इन शब्दों की सत्यता सर्वाधिक 'आँसू' से ही प्रमाणित होती है–

"वियोगी होगा पहला कवि, आह से उपजा होगा गान ।
निकल कर आँखों से चुपचाप, बही होगी कविता अनजान।।"

प्रसाद जी ने अपनी काव्य–साधना का श्रीगणेश ब्रजभाषा और रीतिपरम्परा के अनुसार किया था । उनके 'चित्राधार' संग्रह में संकलित रचनाएँ उनकी इसी रूचि की परिचायक हैं । इसमें प्रकाशित रचनाएँ पहले इनकी 'इन्दु' मासिक पत्रिका में प्रकाशित होती थीं। बाद में उन्हीं प्रारम्भिक कविताओं का संकलन 'चित्राधार' संवत् 1969 वि. (सन् 1912 ई.) में प्रकाशित हुआ । 'चित्राधार' कृति पाँच खंडों में विभाजित है और इसमें प्रसाद जी की गद्य–पद्यात्मक सभी प्रकार की रचनाएँ संकलित हैं । प्रथम खंड में कवि की लम्बी कविताएँ हैं, जिनमें 'उर्वशी' तथा 'बभ्रुवाहन' चम्पू काव्य हैं, शेष तीन– अयोध्या का उद्धार, 'वनमिलन' और 'प्रेमराज्य' – पद्यात्मक रचनाएँ है।

'चित्राधार' के दूसरे खंड में – 'प्रायश्चित्त और 'सज्जन' नाटक संकलित है। तीसरे खंड में दो कहानियाँ और तीन निबन्ध है, जिनके शीर्षक–ब्रह्मार्षि, 'पंचायत' और 'प्रकृति सौन्दर्य', 'सरोज' और 'भक्ति' हैं।

चतुर्थ खंड में मुक्तक पद्य और पाँचवें खंड में भक्तिरस परक रचनाएँ हैं। भक्ति परक रचनायें कवित्त, सवैया या पद शैली में विरचित हैं। इस प्रकार यह संकलन विविधविषयक है।

'चित्राधार' में प्रेम तथा प्रेमी की स्थिति का निरुपण करते हुए कवि ने यह छन्द लिखा–

प्रेम की प्रतीति पर उपजी सुखाई सुख,
जानियों न भूलि यहि छलना अनंग की ।
खैचि मनमोहन ते काट–पेंच कौन करै,
चली अन ढीली बाढ़ प्रेम के पतंग की ।
मूँदै 'हम खोलैं कि न छाई छवि एक तैसी,
प्यासी भरी आँखें रूप सुधा के तरंग की ।
उन ते रह्यो न भेद बिछुरे मिले में,
भई, बिछुरनि मीन की औ मिलनि पतंग की।"

प्रसाद जी के द्वितीय काव्य संग्रह 'कानन–कुसुम' का प्रकाशन भी 1912 ई. में हुआ । इस संग्रह में उनचास रचनायें हैं । यह कृति विविध विषयक भाव–रस से ओत प्रोत है। कवि ने स्वयं इसके विषय में लिखा है–

"जो उद्यान से चुन–चुन कर हार बनाकर पहनते हैं, उन्हें कानन–कुसुम क्या आनन्द देंगे ? पर तुम्हारे लिए इसमें रंगीन और सादे सुगन्धवाले और निर्गन्ध मकरन्द से भरे हुए, पराग में लिपटे हुए सभी तरह के कुसुम है।"

इसमें सौन्दर्य, प्रेम विरह, प्रकृति तथा भक्ति आदि अनेक विषयों पर आधारित रचनायें हैं।

ऋतुराज वसन्त के सन्दर्भ की प्रकृति–सुषमा का एक चित्र इस प्रकार है–

"पूर्णिमा की रात्रि सुषमा स्वच्छ सरसाती रही,
इन्दु की किरणें सुधा की धार बरसाती रहीं ।
युग्मयाम व्यतीत हैं, आकाश तारों से भरा,
हो रहा प्रतिबिम्ब पूरित रम्य यमुना जल भरा ।
कूल पर कानन–कुसुम भी महा कमनीय है,
शुभ्र प्रासादावली की भी छटा रमणीय है।
है कहीं कोकिल सघन सहकार को कूजित किए,
और भी शतपत्र को मधुकर कहीं गुंजित किए।।"

'प्रेमपथिक' प्रसाद जी की तीसरी लघुकाम काव्यकृति है। उसका परिष्कृत प्रकाशन सन् 1913 में हुआ। यह एक तुकविहीन या अतुकान्त कविता है। इसमें एक काल्पनिक कथा का आधार लेकर कवि ने सौन्दर्य, प्रेम, प्रेमपथ और प्रेमादर्श के सम्बन्ध में अपने भावों की अभिव्यक्ति की है। रचना की प्रारम्भिक पंक्तियों में कवि का मंतव्य इस रूप में प्रकट हुआ है–

"सन्ध्या की हेमाभ तपन की, किरणें जिसको छूती हैं।
रंजित करती हैं देखो जिस नई चमेली को मुद से ।
कौन जानता है कि उसे तम में जाकर छिपना होगा ?
या फिर कोमल विधुकर उसको मीठी नींद सुला देगा ।"

प्रसाद जी के प्रेम का आदर्श अत्यन्त व्यापक है। उसकी सीमा असीम से जा मिलती है–

"इस पथ का उद्देश्य नहीं है श्रान्तभवन में टिक रहना,
किन्तु पहुँचना उस सीमा तक जिसके आगे राह नहीं ।
अथवा उस आनन्दभूमि में जिसकी सीमा कहीं नहीं,
यह जो केवल रूप जन्य है मोह न उसका स्पर्धी है।"

'झरना' प्रसाद जी की पहली छायावादी कृति है। यह केवल अड़तालीस शीर्षकों में निबद्ध रचनाओं का संकलन है, जिसका प्रकाशन सन् 1918 में हुआ । जो छायावादी भाव 'झरना' में अंकुर रूप में दृष्टिगोचर होते हैं, उनका क्रमिक विकास 'आँसू' तथा 'कामायनी' में पूर्ण परिणति प्राप्त करता है। 'झरना' के द्वितीय संस्करण में इस कृति में कुछ नयी रचनायें भी सम्मिलित की गयीं। 'झरना' की रचनायें कवि प्रसाद के गहन अनुभव से प्रसूत सुख–दुःखात्मक, मधुर–कटु सभी प्रकार के आस्वाद वाले उद्‌गारों को अभिव्यक्त करती है। इन भावों के मूल में प्रसाद की प्रेमभावना निहित है। इस कृति की 'झरना', 'खोलोद्वार', 'विषाद', 'प्रियतम', 'तुम', विन्दु आदि रचनायें विशेष चर्चित रही हैं। इस संकलन की कुछ पंक्तियाँ यहाँ प्रस्तुत हैं–

"शिशिर कणों से लदी हुई, कमली के भीगे हैं सब तार,
चलता है पश्चिम का मारुत, लेकर शीतलता का भार ।
भीग रहा है रजनी का वह, सुन्दर कोमल कवरी–भार,
अरुण किरण सम, कर से छू लो खोलो प्रियतम ! खोलो द्वार। *(खोलो द्वार)*

कौन, प्रकृति के करुण काव्य सा,
वृक्ष–पत्र की मधु छाया में ।
लिखा हुआ सा अचल पड़ा है,
अमृत सदृश नश्वर काया में ।

X X X

निर्झर कौन बहुत बल खाकर,
बिलखाता ठुकराता फिरता ।
खोज रहा है स्थान धरा में,
अपने ही चरणों में गिरता ।
किसी हृदय का यह विषाद है,
छेड़ो मत यह सुख का कण है।
उत्तेजित कर मत दौड़ाओ,
करुणा का विश्रान्त चरण है।" *(विषाद)*

प्रसाद जी की काव्यकला के विकास में 'झरना' का महत्वपूर्ण स्थान है इसके अन्तर्गत उनकी ब्रजभाषा छोड़कर खड़ी बोली की ओर बढ़ती हुई रूचि का सजीव परिचय मिलता है। इसमें उन्होंने अपनी उस गीतिकाव्य शैली का भी श्रीगणेश किया है, जो आधुनिक काव्य की मनोरम निधि है।

इसी क्रम में प्रसाद जी की एक अन्य कृति 'लहर' भी है, जिसमें उनतीस शीर्षक विहीन रचनाओं के साथ–साथ अन्त में चार अन्य कविताएँ– 'अशोक की चिन्ता', 'शेरसिंह का शस्त्र समर्पण', 'पेशोला की प्रतिध्वनि', और 'प्रलय की छाया' – शीर्षकों में आबद्ध रूप में संकलित हैं। 'लहर' संग्रह की 'अरी वरुणा की शान्त कछार', 'ले चल वहाँ भुलावा देकर', 'बीती विभावरी जागरी', 'तुम्हारी आँखों का बचपन', 'वे कुछ दिन कितने सुन्दर थे', 'चिरतृषित कंठ से तृप्त विधुर', 'अन्तरिक्ष में अभी सो रही है ऊषा मधुबाला', आदि रचनाएँ चिर चर्चित एवं लोकप्रिय रही हैं। 'लहर' की कुछ रचनाओं की पंक्तियाँ प्रस्तुत हैं–

"तुम हो कौन और मैं क्या हूँ ?
इसमें क्या है धरा, सुनो ।
मानस जलधि रहे चिर चुम्बित–
मेरे क्षितिज ! उदार बनो ।"

'छोटे से जीवन की कैसे बड़ी कथाएँ आज कहूँ ?
क्या यह अच्छा नहीं कि औरों की सुनता मैं मौन रहूँ ?
सुनकर क्या तुम भला करोगे– मेरी भोली आत्मकथा ?
अभी समय भी नहीं – थकी सोई है मेरी मौन व्यथा ?'

'ले चल वहाँ भुलावा देकर,
मेरे नाविक ! धीरे धीरे ।
जिस निर्जन में सागर लहरी,
अंबर के कानों में गहरी–
निश्छल प्रेम कथा कहती हो,
तज कोलाहल की अवनी रे ।'

'बीती विभावरी जाग री !
अम्बर पनघट में डुबो रही–
तारा घट ऊषा नागरी ।'

वे कुछ दिन कितने सुन्दर थे ?
जब सावन–घन–सघन बरसते–
इन आँखों की छाया भर थे ।'

प्रसाद की कृति 'आँसू' का प्रथम संस्करण 1925 तथा द्वितीय संस्करण 1933 में प्रकाशित हुआ। यहाँ तक आकर प्रसाद के काव्य का यथोचित विकास संपन्न हो चुका था । इस रचना में कुल एक सौ नब्बे छन्द हैं। यह कृति मुक्तक होते हुए भी वस्तु एवं व्यंजना से सुगठित लम्बी कविता है, जिसमें गीतात्मक प्रबन्धात्मकता दिखलाई पड़ती है।

यह रचना कवि द्वारा अनुभूत प्रेम–विरह, तज्जन्य स्थिति एवं परवर्ती दशा का मनोरम वर्णन है। इस काव्य में वर्णित प्रेम का आलम्बन लौकिक है, अथवा अलौकिक, यह विवाद का विषय रहा है। वस्तुतः यह प्रेमकाव्य है, जिसके अन्तर्गत विरही हृदय के सहज स्वाभाविक उच्छ्वास को प्रस्तुत किया गया है । कथानक की रूपरेखा न होते हुए भी अतीत की अभिव्यंजना योजनाबद्ध ढंग से हुई है, जिसमें प्रणयगाथा के सूक्ष्म संकेत उपलब्ध हैं। इसमें पहले तो वह प्रिय के निष्ठुर हृदय को पिघलाने का प्रयत्न करता है परन्तु उसके निष्फल होने पर कवि ने व्यापक धरातल पर पहुँचकर वेदना को भुलाने तथा उसे लोक कल्याणकारी रूप देने का प्रयास किया है।

'आँसू' में प्रेमनुभूतियों की व्यंजना, सौन्दर्य चित्रण, उपालम्भ, वेदनानुभूति का विस्तार तथा तत्व चिन्तन का अनूठा रूप देखने को मिलता है। आँसू प्रसाद जी की लोकप्रिय एवं बहुचर्चित कृति रही है। 'चित्राधार' से 'आँसू' की रचना तक प्रसाद कई सोपान पार कर छायावाद के शिखर 'कामायनी' की ओर अग्रसर हो जाते हैं। उनके कविकर्म का विकास क्रमिक रूप में है, पंत, निराला या महादेवी की भाँति नहीं । इस सम्बन्ध में डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी की यह टिप्पणी सार्थक है– "जैसे मनुष्य के बच्चे को अन्य प्राणियों की तुलना में वयस्क होने के लिए सबसे अधिक समय लगता है वैसे ही अपने समकालीनों के बीच कवि बनने में प्रसाद को लगा । पर एक बार कवि बनकर वे वैसे ही शीर्षस्थ रहे ।"

'आँसू' की वस्तु की ओर स्पष्ट संकेत करने वाली अत्यधिक लोकप्रिय कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार हैं–

मानस सागर के तट पर, क्यों लोल लहर की घातें ।
कलकल ध्वनि से हैं कहती, कुछ विस्मृत बीती बातें ?

ये सब स्फुलिंग हैं मेरी, उस ज्वालामयी जलन के ।
कुछ शेष चिह्न है केवल मेरे उस महा मिलन के ।

जो घनीभूत पीड़ा थी, मस्तक में स्मृति सी छायी ।
दुर्दिन में आँसू बनकर, वह आज बरसने आयी ।

गौरव था नीचे आये, प्रियतम मिलने को मेरे
मैं इठला उठा, अकिंचन, देखे ज्यों स्वप्न सबेरे ।

प्रतिभा में सजीवता–सी बस गयी सुछवि आँखों में ।
थी एक लकीर हृदय में, जो अलग रही लाखों में ।

लावण्य शैल राई–सा, जिस पर वारी बलिहारी ।
उस कमनीयता कला की सुषमा थी प्यारी–प्यारी ।

चंचला स्नान कर आवे, चन्द्रिका पर्व में जैसी ।
उस पावन तन की शोभा, आलोक मधुर थी ऐसी ।

मानव जीवन वेदी पर, परिणय हो विरह–मिलन का ।
दुख–सुख दोनों नाचेंगे, है खेल आँख का मन का ।

सबका निचोड़ लेकर, सुख से सूखे जीवन में ।
बरसो प्रभात हिमकन–सा, आँसू इस विश्व सदन में ।

'कामायनी' महाकवि प्रसाद की तपः पूत वाणी का विलास है। इस महाकाव्य में, कवि ने, मानवता की विकास–गाथा, प्रगाढ़ चिन्तन की विस्तृत पीठिका पर अत्यन्त भावतन्मय होकर प्रस्तुत की हैं। कवि का जीवन–दर्शन अपनी समग्रता में यहाँ प्रतिफलित हुआ है। क्रान्तदर्शी कवि ने आधुनिक मानव का उद्‌बोधन करने के लिए, जो दिव्य शंखनाद किया है, वह जगती के कर्णकुहरों में गुंजायमान होकर एक अनुपम प्रसाद (आनन्द) वितरण कर रहा है। छायावादी–गरिमा–मंडित 'कामायनी' महाकाव्य आधुनिक साहित्य की श्रेष्ठ तथा महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

अंग्रेजी में 'एलिगरी' एक प्रकार का कथा–रूपक–काव्य होता है, जिसमें प्रायः एक द्वयर्थक कथा होती है। इसका एक अर्थ प्रत्यक्ष और दूसरा अर्थ गूढ़ होता है। भारतीय काव्यशास्त्र में इस प्रकार की रचना को 'अन्योक्ति' कहते हैं । परन्तु रूपक के उक्त अर्थ को वहन करने के लिए संस्कृत के 'रूपक' तथा अन्योक्ति' दोनों अलंकारों का योग अपेक्षित है। इसमें एक ओर साधारण अर्थ के साथ–साथ गूढ़ अर्थ भी रहता है, वहाँ अप्रस्तुत अर्थ का प्रस्तुत अर्थ पर अभेद आरोप भी रहता है। रूपक–अलंकार तथा रूपक–कथा में मुख्य भेद यह है कि जहाँ रूपक में एक वस्तु का दूसरी वस्तु पर अभेद आरोप रहता है, वहाँ कथा–रूपक में एक कथा का दूसरी कथा पर अभेद आरोप होता है। इसमें भी एक कथा प्रस्तुत और दूसरी अप्रस्तुत रहती है।

'कामायनी' महाकाव्य की कथा में प्रस्तुतार्थ के साथ किसी सैद्धान्तिक अप्रस्तुतार्थ की अन्तर्धारा विद्यमान है या नहीं इस प्रश्न के उत्तर का संकेत स्वयं प्रसाद जी ने कृति के 'आमुख' में इस प्रकार दिया है–

"यदि श्रद्धा और मनु अर्थात् मनन के सहयोग से मानवता का विकास रूपक है, तो भी बड़ा भावमय और श्लाघ्य है। यह मनुष्यता का मनोवैज्ञानिक इतिहास बनने में समर्थ हो सकता है।

यह आख्यान इतना प्राचीन है कि इतिहास में रूपक का भी अद्‌भुत मिश्रण हो गया है। इसलिए मनु, श्रद्धा और इड़ा इत्यादि अपना ऐतिहासिक अस्तित्व रखते हुए, सांकेतिक अर्थ की भी अभिव्यक्ति करें तो मुझे कोई आपत्ति नहीं । मनु अर्थात् मन के दोनों पक्ष हृदय और मस्तिष्क का सम्बन्ध क्रमशः श्रद्धा और इड़ा से सरलता से लग जाता है।

इन सभी के आधार पर कामायनी की सृष्टि हुई है।"

कवि के इस कथन से यह स्पष्ट है कि रचनाकार ने इसे ऐतिहासिक महाकाव्य के रूप में लिखते हुए भी रूपक की संभावना को अस्वीकार नहीं किया अतः इसमें रूपक तत्व की स्थिति असंदिग्ध है।

कामायनी के मुख्य पात्र श्रद्धा, मनु और इड़ा हैं। गौण पात्रों में श्रद्धा–मनु का पुत्र कुमार, असुर पुरोहित आकुलि और किरात हैं। काम और लज्जा अशरीरी हैं और उनकी स्थिति यहाँ सांकेतिक ही है।

'मनु'–मन का– मनोमय कोश में स्थित जीव की प्रतीक है। इसका स्थायी आधार अहंकार है–

"मैं हूँ, यह वरदान सदृश क्यों, लगा गूँजने कानों में ।
मैं भी कहने लगा, 'मैं रहूँ' शाश्वत नभ के गानों में ।"

इस अहं के विस्फोट में वह अपनी सीमाओं को भूलकर इन्द्रियासक्ति को ही जीवन का चरम सुख मानने लगता है–

"किन्तु सकल कृतियों की, अपनी सीमा हैं हम ही तो ।
पूरी हो कामना हमारी, विफल प्रयास नहीं तो ।"

उसे अपने अधिकारों की सीमा में किसी का भी हस्तक्षेप स्वीकार्य नहीं । वह 'अहं' को इस सीमा तक पहुँचा देता है कि सांसारिक भोगविलास की चरम परिणति में शरण ग्रहण करता है–

"यह जलन नहीं सह सकता मैं, चाहिए मुझे मेरा ममत्व।
इस पंच भूत की रचना में, मैं रमण करूँ बन एक तत्व।"

वस्तुतः यह आधुनिक व्यक्तिवाद की पराकाष्ठा है।

'श्रद्धा' को प्रसाद जी ने हृदय का प्रतीक माना है। 'कामायनी' में अनेक बार उसके इस रूप की विवृति मिलती है। उसका एक चित्र इस प्रकार है–

"हृदय की अनुकृति बाह्य उदार, एक लंबी काया, उन्मुक्त
मधु पवन क्रीड़ित ज्यों शिशु साल, सुशोभित हो सौरभ संयुक्त।"

'कामायनी' (श्रद्धा) को ऋग्वेद, शतपथ तथा पुराणों में काम गोत्रजा माना गाया है। 'छन्दोग्योपनिषद्' तथा 'त्रिपुरा–रहस्य' में इसकी भावमूलक व्याख्या की गयी है । संसार में उसका अवतार प्रेमकला का सन्देश देने के लिए हुआ है–

"यह लीला जिसकी विकस चली, वह मूल शक्ति थी प्रेम कला।
उसका संदेश सुनाने को, संसृति में आई वह अमला ।"

'इड़ा' बुद्धि की प्रतीक है। इसका स्वरूपांकन प्रसाद जी ने इडा सर्ग में किया है, जिसमें प्रतीकात्मक पक्ष का सफल निर्वाह किया गया है–

"बिखरी अलकें ज्यों तर्क जाल।
वह विश्वमुकुट सा उज्ज्वलतम शशिखंड सदृश या स्पष्ट भाल ।
दो पद्मपलाशचषक से दृग देते अनुराग विराग ढाल ।।
गुंजरित मधुप से मुकुल सदृश वह आनन जिसमें भरा गान ।
वक्षस्थल पर एकत्र धरे संसृति के सब विज्ञान ज्ञान ।।

था एक हाथ में कर्म कलश वसुधा जीवन रस सार लिए ।
दूसरा विचारों के नभ को था मधुर अभय अवलम्ब दिए ।।
त्रिबली थी त्रिगुण तरंगमयी, आलोक वसन लिपटा अराल ।
चरणों में थी गति भरी ताल ।।"

यह व्यवसायात्मिका बुद्धि है, जो मनुष्य में वैयक्तिक भावना का संचार करती है। इसके प्रति मनु का झुकाव बुद्धिवाद की ओर मानव के आकर्षण को व्यंजित करता है। इसके आश्रय का परिणाम एवं मनु की दुर्दशा का चित्रण भी कवि ने किया है।

'कामायनी' के इन प्रमुख पात्रों के अतिरिक्त गौण पात्रों में श्रद्धा–मनु का पुत्र कुमार नव मानव का प्रतीक है। उसका कोई नामकरण नहीं किया गया । वह अपनी माता श्रद्धा से हार्दिक गुण, पिता मनु से मननशीलता एवं इड़ा से बुद्धिग्रहण कर पूर्णता को प्राप्त करता है। असुर–पुरोहित आकुलि किरात आसुरी वृत्तियों के प्रतीक हैं । वे मनु (मन) को दुष्प्रेरणा देकर उसे दुष्कर्म में प्रवृत्त करते हैं।

इनके अतिरिक्त देव, श्रद्धा का पशु, वृषभ और सोमलता के भी सांकेतिक अर्थ हैं। देव इन्द्रियों के प्रतीक, श्रद्धा का पशु सहज जीव दया, करुणा आदि का प्रतीक है।

वृषभ तो प्राचीन काल से धर्म का प्रतिनिधि माना जाता रहा है–

"था सोमलता से आवृत, वृष धवल धर्म का प्रतिनिधि ।"

सोमलता का सांकेतिक अर्थ है भोग । शेष तीन–चार प्रतीक बचते हैं, जिनमें 'जलप्लावन' पृथ्वी के इतिहास की अत्यन्त प्राचीन घटना है इसे अबाध इन्द्रिय लिप्सा में मग्न होने की स्थिति माना जा सकता है। 'त्रिलोक' – भावलोक, कर्मलोक तथा ज्ञानलोक चेतना की तीन अंगभूत प्रवृत्तियों – भाववृत्ति, कर्मवृत्ति तथा ज्ञानवृत्ति का प्रतीक है। जब तक ये तीनों वृत्तियाँ पृथक् पृथक् अपना कार्य करती हैं, मन अशान्त और उद्विग्न रहता है–

"ज्ञान दूर कुछ क्रिया भिन्न है, इच्छा क्यों पूरी हो मन की;
एक दूसरे से न मिल सके, यह विडम्बना है जीवन की ।"

'मानसरोवर' मनोरवसर्पण या मानस समरसता की अवस्था का प्रतीक है। मानस कैलास–शिखर पर स्थित है। कैलास पर्वत आनन्दमय कोश का प्रतीक है। जब श्रद्धा के द्वारा भाव, कर्म एवं ज्ञान वृत्तियों का समन्वय हो जाता है तो मन समरसता को प्राप्त कर लेता है–

"स्वप्न स्वाप जागरण भस्म हो, इच्छा, क्रिया, ज्ञान मिल लय थे।
दिव्य अनाहत पर निनाद में, श्रद्धायुत मनु बस तन्मय थे ।"

'कामायनी' परम्परागत महाकाव्यों से अलग, ऐहिक जीवन प्रधान न होकर मानव चेतना का महाकाव्य है। इस सम्बन्ध में डॉ. नगेन्द्र की यह टिप्पणी सर्वथा सार्थक है–

"वह ऐहिक जीवन का महाकाव्य नहीं है, मानव चेतना का महाकाव्य है– अतएव– रूपक तत्व जो सामान्यतः महाकाव्य में बाधक होता है, यहाँ साधक बनकर आया है, इसीलिए प्रगीत–तत्व भी यहाँ बाधक न होकर साधक ही हुआ है। मानव–चेतना के विकास का यह महाकाव्य अथवा मानव–सभ्यता के विकास का यह विराट रूपक साहित्य के इतिहास में एक नवीन प्रयोग है– एक अद्भुत उपलब्धि है।"

कामायनी की कथा का संयोजन प्रकृति की पीठिका पर हुआ है। प्रकृति के उपासक होने के कारण उन्हें अपनी भावाभिव्यक्ति के लिए समुचित सन्तुलित अवकाश मिला है। कल्पना–प्रवण कवि होने के कारण उन्हें प्रकृति पर मानवीय चेष्टाओं का आरोप करने में पूर्ण सफलता प्राप्त हुई है। प्रसाद जी अपने प्रकृति–चित्रण में केवल उसके बाह्य रूप–रंग पर मोहित न होकर उसके अभ्यन्तर में प्रवेश करते हैं।

प्रसाद की 'कामायनी' में प्रकृति का आलंबनगत या संश्लिष्ट चित्रण मिलता है। इसके शुद्ध भावक्षिप्त रूप को शरत्कालीन वन्य प्रकृति के इस चित्र में देखा जा सकता है–

"स्वर्ण शालियों की कलमें थीं 'दूर–दूर तक फैल रहीं;
शरद इन्दिरा के मन्दिर की मानों कोई गैल रही ।"

X X X X

अचल हिमालय का शोभन तम, लता कलित शुचि सानु शरीर।
निद्रा में सुख–स्वप्न देखता, जैसे पुलकित हुआ अधीर ।।"

'दर्शन–सर्ग', में चन्द्रविहीन रात्रि का यह वर्णन भी आकर्षक है–

"उजले उजले तारक झलमल, प्रतिबिम्बित सरिता वक्षस्थल,
धारा बह जाती बिम्ब अटल, खुलता था धीरे पवन पटल;
चुपचाप खड़ी थी वृक्ष पाँत, सुनती जैसे कुछ निजी बात ।"

प्रकृति–चित्रण के उद्दीपनगत रूप की 'कामायनी' में बहुलता है, परन्तु उन्होंने सर्वत्र अपने हृदय के अनुभव तथा वास्तविकता को प्रकट करने वाले तथ्यों का अंकन किया है। परम्परा के अनुसार केवल प्राकृतिक व्यापारों का प्रस्तुत करना मात्र उनका ध्येय नहीं रहा । यहाँ एक चित्र दृष्टव्य है–

"देवदाह निकुंज गह्वर सब सुधा में स्नात,
सब मनाते एक उत्सव जागरण की रात ।
आ रही थी मदिर भीनी माधवी की गंध,
पवन के घन गिरे पड़ते थे बने मधु अंध ।।"

अपने प्रकृति–चित्रण में अव्यक्त सत्ता का स्वरूप निरखते हुए प्रसाद जी ने उसे रहस्यात्मक रूप भी प्रदान किया है–

"महानील इस परम व्योम में अन्तरिक्ष में ज्योतिर्मान, ग्रह–नक्षत्र
और विद्युत कण किसका करते से संधान ।
छिप जाते हैं और निकलते आकर्षण में खिंचे हुए,
तृण वीरुध लहलहे हो रहे किसके रस से सिंचे हुए ।"

'कामायनी' में प्रकृति का अलंकृत वर्णन भी अत्यन्त मोहक है। हिमगिरि में मानसरोवर का यह दृश्य उत्कृष्ट बन पड़ा है–

"मरकत की वेदी पर ज्यों रक्खा हीरे का पानी ।
छोटा सा मुकुर प्रकृति का, या सोयी राका रानी ।
दिनकर गिरि के पीछे अब, हिमकर था चढ़ा गगन में।
कैलास प्रदोष प्रभा में, स्थिर बैठा किसी लगन में ।
सन्ध्या समीप आयी थी, उस सर के, वल्कल वसना।
तारों से अलक गुँथी थी,पहने कदंब की रसना ।।"

प्रकृति मानवीकृत रूप 'कामायनी' के अनेक स्थलों पर आकर्षक एवं भव्य बन पड़ा है। इस प्रकार का एक चित्र देखें ।

"पगली हाँ सम्हाल ले कैसे छूट पड़ा तेरा अंचल ।
देख विखरती है मणिराजी अरी उठा बेसुध चंचल ।।"

'कामायनी' में प्रकृति अपने सौम्य एवं उग्र दोनों रूपों में विद्यमान है।

प्रत्येक महाकवि द्रष्टा होता है और इसीलिए दर्शन से प्रभावित भी होता है। परन्तु वह कोरा शास्त्रकार नहीं होता, क्योंकि शास्त्र एवं काव्य एक–दूसरे से सर्वथा भिन्न होते है। काव्य का दर्शन भी शास्त्र के दर्शन से भिन्न होता है।

शास्त्र में दर्शन के तत्व तर्कप्रवण एवं विचारमूलक होते हैं, जबकि काव्य में अनुभव तथा कल्पना की प्रमुखता के कारण उन्हें अनुभूति का विषय बनना पड़ता है। काव्य में दर्शन के विवेचन या निरुपण का रंचमात्र अवकाश नहीं होता, वहाँ तो दर्शन भी भावित या व्यंजित होता है।

प्रसाद जी ने काव्य के अन्तर्गत दर्शन का आग्रह रखने वाले कवियों को इसे कविकर्म में आवरण या अवरोध उत्पन्न करने वाला मानते हुए छायावादी तेवर में लिखा है–

'सब कहते हैं खोलो खोलो, छवि देखूँगा जीवन धन की ।
आवरण स्वयं बनते जाते, है भीड़ लग रही दर्शन की ।'

इन पंक्तियों को पढ़कर महाकवि गोस्वामी तुलसीदास जी की यह उक्ति, जो उन्होंने 'विनय पत्रिका' में प्रस्तुत की है, स्मृतिपटल पर उतर आती है और काव्य में दर्शन को सन्तुलित–स्वानुभूतिपरक– अभिव्यक्ति का संकेत देती है। वे लिखते हैं –

'कोउ कह सत्य झूठ कह कोऊ जुगल प्रबल कोउ मानै।
तुलसीदास परिहरै तीनि भ्रम, सो आपुन पहिचानै ।।'

प्रसाद जी की कामायनी का आधारभूत दर्शन कश्मीरी शैव दर्शन या प्रत्यभिज्ञादर्शन है। आत्मा, जीव, जगत् आदि के स्वरूपों में प्रयुक्त प्रचुर शब्दावली से इसकी सहज पुष्टि होती है।

कामायनी की मुख्य घटना मानसरोवर की यात्रा है, जिसका प्रतीकार्थ मानव–मन की आनन्द साधना है। इसमें निहित जीवन–दर्शन का चरम साध्य–आनन्द है और कामायनी का प्रतिपाद्य है, आनन्दवाद । यह आनन्द सांसारिक आनन्द से भिन्न लोकोत्तर या दिव्य आनन्द है।

इसका शुभारम्भ करते हुए प्रसाद जी ने सर्वप्रथम उस सांसारिक विडम्बना का उल्लेख किया है, जिसे समाप्त करना मानव का चरम लक्ष्य है। वे लिखते हैं–

'ज्ञान दूर कुछ क्रिया भिन्न है, इच्छा क्यों पूरी हो मन की।
एक दूसरे से न मिल सके, यह विडम्बना है जीवन की ।'

प्रसाद जी ने आनन्दवाद के जिस रूप की प्रतिष्ठा की है, इच्छा, क्रिया और ज्ञान के सामंजस्य से संपन्न मनः स्थिति इसकी भूमिका है; दूसरे शब्दों में आनन्द समरसता का परिचायक है–

'स्वप्न, स्वरूप, जागरण भस्म हो, इच्छा क्रिया ज्ञान मिल लय थे;
दिव्य अनाहत पर निनाद में,श्रद्धायुत मनु बस तन्मय थे ।'

यह अखंड आनन्द चैतन्य के विलास की स्थिति है–

'समरस थे जड़ या चेतन, सुन्दरसाकार बना था;
चेतनता एक विलसती, आनन्द अखंड घना था ।'

इस अखंड आत्मानुभूति या अभेदमय आत्मास्वाद में विश्व की बाह्य द्वयता दुःख और सुख, जड़ और चेतन–सामरस्य में अन्तर्लीन हो जाते हैं–

'सब भेदभाव भुलवाकर दुख सुख को दृश्य बनाता;
मानव कह रे! 'यह मैं हूँ' यह विश्व नीड़ बन जाता।'

'कामायनी' जीवन के प्रति अदम्य आस्था का महाकाव्य है और इसकी प्रवृत्ति परकता असंदिग्ध है। उसमें निहित संदेश इस बात के सबल प्रमाण हैं–

"जिसे तुम समझे हो अभिशाप, जगत की ज्वालाओं का मूल;
ईश का वह रहस्य वरदान, कभी मत जाओ इसको भूल।

X X X X X X

तप नहीं केवल जीवन सत्य, करुण यह क्षणिक दीन अवसाद;
तरल आकांक्षा से है भरा, सो रहा आशा का आह्लाद।"

'कामायनी' की महत्ता इस बात में भी है कि बीसवीं सदी के तीन महाकवियों– पंत दिनकर एवं मुक्तिबोध ने उसके सम्बन्ध में स्वतंत्र विचार प्रस्तुत करते हुए महाकाव्य–रचना के प्रति परोक्ष रूप में अपनी लालसा की ही अभिव्यक्ति की । कविवर पंत ने पहले **'यदि मैं कामायनी लिखता'** लेख द्वारा जो आकर्षण महाकाव्य के प्रति प्रकट किया था, उसे 'लोकायतन' जैसा बृहत्काय महाकाव्य लिख कर पूर्ण किया । उसमें यह उद्घोषणा भी की–

"कैसे कह दूँ इड़ा लुब्ध युग मनु से, श्रद्धासँग वह करे मेरु नग आरोहण।
आत्मबोध की निष्क्रिय स्थिति को, जन भू पथ पर करना सक्रिय विचरण।।"

सुकवि दिनकर ने **'कामायनी दोषरहित दूषण सहित'** लेख लिखकर उसके प्रति अपनी रूचि दिखलायी और बाद में 'उर्वशी' लिखकर अपनी सर्जन–लालसा की पूर्ति की । कविवर मुक्तिबोध ने कामायनी को फैंटेसी (स्वैरकल्पना या हवाई कल्पना) सिद्ध करने के लिए **'कामायनी पुनर्विचार'** पुस्तक लिखी ।

'कामायनी' के विषय में इस तरह की चर्चाओं के चलते वर्चस्वी समीक्षक डॉ. नगेन्द्र की यह टिप्पणी महत्वपूर्ण है–

"हिन्दी में ऐसे विज्ञ आलोचकों और काव्य मर्मज्ञों की कमी नहीं है, जो कामायनी के प्रतिपाद्य, जीवनदर्शन, वस्तु–कल्पना और शैली–शिल्प में अनेक दोष देखकर उसके उपलब्ध गौरव के प्रति वास्तव में सन्देहशील हैं। फिर भी कामायनी का गौरव अनुदिन बढ़ रहा है। कामायनी के अध्येताओं विशेषकर अध्यापक को इस विषमता का समाधान करना होता है।

पन्त और दिनकर जैसे काव्य–मनीषियों के लेख पढ़ने के बाद हिन्दी का प्रबुद्ध विद्यार्थी प्रश्न करता है कि इन दोषों के रहते हुए भी कामायनी आधुनिक काव्य की सर्वोच्च उपलब्धि क्यों है, तो अध्यापक के लिए उसका परितोष करना सर्वथा सरल नहीं होता । कामायनी के दोषों की उपेक्षा नहीं की जा सकती । उसके प्रतिपाद्य, जीवन दर्शन और वास्तु कौशल आदि में निश्चय ही अनेक छिद्र है; किन्तु उसकी समग्र परिकल्पना इतनी उदात्त और उसका आयाम इतना विराट है कि अपूर्व प्रातिभ ऐश्वर्य के बिना वह सम्भव नहीं हो सकता था ।"

अतः यह निर्विवाद है कि गरिमामय चिन्तन के परिपाक, अनूठी काव्यभाषा तथा आकर्षक काव्य–शिल्प से प्रसूत 'कामायनी' महाकाव्य कविवर प्रसाद की ऐसी उदात्त कृति है, जिसके समकक्ष आधुनिक युग की कोई भी प्रबन्ध रचना न ठहर सकी । कदाचित् उसकी छाया भी न छू सकी । यह न केवल शीर्षस्थ एवं अनुपमेय कृति है अपितु प्रसाद को आधुनिक युग का श्रेष्ठ महाकवि सिद्ध करने वाली बेजोड रचना भी है।

***

ऋषि वरतन्तु का आश्रम :
चि० आशुतोष,
अभिनव, अंकित

दिलीप का दान :
चि० स्नेहिल,
अभिनंदन व रवि

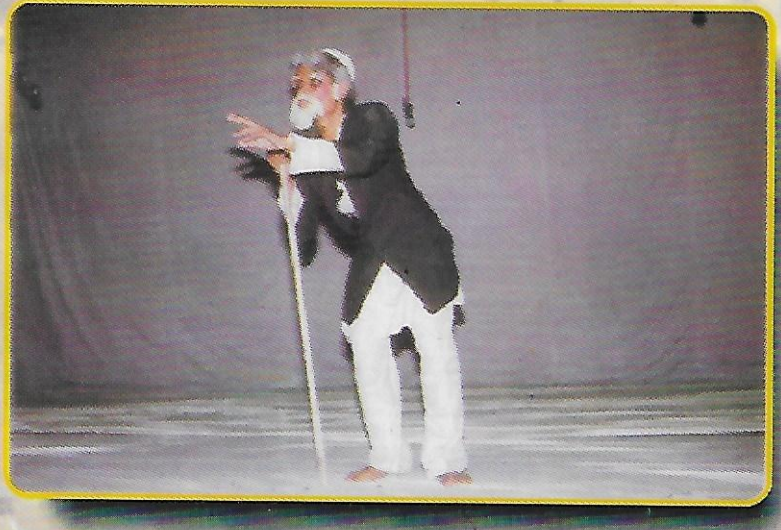

भावपूर्ण एकल अभिनय
करते चि० गौरव

विद्यालय की भित्ति-पत्रिका प्रयास में :

कल्पना के रंग

चित्र :
अंकुर कटियार
अष्टम "क"

चित्र :
आयुष कटियार
अष्टम "क"

कविवर बिहारी लाल

दुर्गेश वाजपेयी, आचार्य

यद्यपि संस्कृत समीक्षकों के 'विशिष्टापदरचनारीतिः' के अनुसार रीतिकाल काव्य के वैशिष्ट्य का द्योतन करता है, किन्तु मध्यकालीन परिवेश में राजाओं, बादशाहों, नवाबों और मनसबदारों के आश्रय में पला–बढ़ा साहित्य वासना का परिपोषण करता, हुआ भारतीय समाज को प्रमाद और शैथिल्य ही प्रदान कर सका । चूँकि भारतीय संस्कृति धर्म का आँचल कभी भी छोड़ नहीं सकती अतः इन भारतीय साहित्यकारों ने भी अपनी इन कामुक अनुभूतियों को धार्मिक भावना के आवरण में ढककर, 'राधा–कन्हाई के सुमिरन' के बहाने रतिरहस्य का सविस्तार चित्रण किया है। साथ ही रीति शब्द को सार्थक करने के लिये इन कवियों ने कला–पक्ष को पुष्ट करते हुए अलंकार, छंद, रस, ध्वनि, गुण आदि सभी को सांगोपांग अतिरंजित स्वरूप में प्रस्तुत किया ।

इसी परंपरा में उत्कृष्ट कोटि के रीतिबद्ध कवि बिहारी लाल हिन्दी काव्य–संसार के एक ऐसे प्रतिष्ठा प्राप्त कवि माने गये जिनका रचना संसार अत्यन्त सीमित होने के बाद भी अपने क्षेत्र की गहराई में सचमुच अथाह है। रीतिकालीन काव्य की चरम परिणति बिहारी की कविता में प्राप्त होती है, और इसी कारण उनके प्रशंसक आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने उन्हें 'रीतिसिद्ध' कवि की संज्ञा दी है। हमारा अभिप्रेत आज उसी रीतिबद्ध शाखा के रीतिसिद्ध कवि का साहित्यिक परिचय प्रस्तुत करना है।

जीवन–वृत्त

चमत्कारवादी कवि बिहारी लाल का जन्म संवत् 1660 के लगभग मध्य प्रदेश के ग्वालियर राज्य के अन्तर्गत बसुआ गोविंदपुर ग्राम में हुआ, किंतु इनके जीवन का अधिकांश अपनी ससुराल मथुरा में ही बीता । बिहारी जयपुर नरेश के दरबारी कवि थे । कहा जाता है कि जयपुर नरेश जयसिंह अपनी नवागता रानी के प्रति आसक्ति के कारण कई दिन दरबार में उपस्थित नहीं हुए, तब बिहारी ने एक श्रृंगारिक अन्योक्ति के माध्यम से उन्हें सचेत किया–

नहिं पराग नहिं मधुर मधु, नहिं विकास यहि काल
अली कली ही सों बिंध्यो, आगे कौन हवाल

यद्यपि उनके बहुत से दोहे 'आर्यसप्तशती' और 'गाथासप्तशती' के छायानुवाद हैं, लेकिन उनके वर्णन का ढंग इतना विशिष्ट है कि इन ग्रंथों की उक्तियाँ मानो बिहारी का हीन अनुवाद सा प्रतीत होती हैं। इस प्रकार बिहारी ने दूसरों की विषयवस्तु को छीनकर अपने कथन को अपनी कला के माध्यम से मार्मिक तो बनाया ही, उसको उत्कृष्टता भी प्रदान की ।

विषय–निरुपण

जैसा कि रीतिकालीन काव्य के संबंध में भूमिका में बताया जा चुका है कि इस युग का काव्य सामासिकता के साथ–साथ विषय वस्तु की गूढ़ अभिव्यंजना से ओतप्रोत है। यह गूढ़ अभिव्यंजना निर्गुण काल की दार्शनिक रहस्यात्मकता न होकर सांसारिक विषयों के आस पास ही घूमती रही, भले ही खींच घसीट कर उस संसारी भाव को अलौकिक बनाने का प्रयास किया गया हो । जहाँ तक बिहारी की कविता का प्रश्न है, उनके विषय प्रमुख रूप से भक्ति (अत्यल्प), नीति और श्रृंगार के त्रिकोण में ही चक्कर लगाते हैं।

भक्ति

भक्ति के क्षेत्र में भी बिहारी ने अपने कलात्मक परिवेश को त्यागने का मोह नहीं छोड़ा, इसीलिये उनकी भक्ति तुलसी और सूर जैसी भाव–विगलित भक्ति न होकर, बौद्धिक भक्ति ही कही जायेगी, जिसमें चमत्कार अधिक भाव कम हैं।

उदाहरणार्थः

मेरी भव बाधा हरौ राधा नागरि सोइ ।
जा तन की झाँई परै स्याम हरित दुति होई।।

तथा

करौं कुबत जग कुटिलता तजौ न दीनदयाल।
दुखी होउगे सरल चित, बसत त्रिभंगी लाल।।

तथा

सघनकुंज छाया सुखद शीतल मंद समीर।
मन ह्वै जात अजौं वहै वा जमुना के तीर ।।

नीति : इसी प्रकार नीति के क्षेत्र में भी यद्यपि बिहारी उतने संकुचित नहीं रहे जितने भक्ति में, फिर भी श्रृंगार की अपेक्षा नीति के दोहों की संख्या परिमाण में कम है। चूँकि रीतिकाल एक ऐसा युग था जिसमें साहित्यिक कल्पनाओं की उडान व्यवहार जगत से बँधकर भी बहुत ऊँचे तक पहुँच सकती थी , इसीलिये बिहारी की चमत्कारप्रियता, अर्थबहुलता और विषयगत अर्थवत्ता नीति के दोहो में पर्याप्त सफल और प्रभावी बन पडी है।

जिन दरबारों में इस साहित्य का सम्मान उन दिनों हो रहा था, उन गुणग्राहक राजाओं की वाहवाही भी चमत्कारों से ही बँधी रहती थी । स्वाभाविक ही उन राजाओं को प्रसन्न करने के लिये या तो दरबार की रूचि देखकर श्रृंगार निसृत होता था अथवा नीति की बातें कहकर उनको सिद्धांतो तथा नैतिक आदर्शो से परिचित कराया जाता था । इन नीतिगत दोहों में प्रायः अन्योक्ति के सहारे दूसरों पर व्यंग्य अथवा प्रकारांतर से सहयोग या विरोध प्रकट होता रहता था । कुछ उदाहरण नीचे लिखे जा रहे हैं–

करि फुलेल को आचमन मीठो कहत सराहि ।
ऐ गंधी मति मंद तू अतर दिखावत काहि ।।
आवत जात न जानियतु तेजहिं तजि सियरान ।
घरै जवाईं लौ घट्यौ खरौ पूस दिनमान ।।

श्रृंगार

यद्यपि श्रृंगार अध्यात्म की गहराइयो में उसी भक्ति का एक रसाप्लावित अंग बनकर रह जाता है, जिसके लिये बड़े–बड़े विरक्त महात्मा जीवन को शुष्क साधना में गलाया करते हैं । किन्तु रीतिकालीन श्रृंगार, विशेष रूप से बिहारी आदि रीतिसिद्ध कवियों की दृष्टि में केवल संसार के चर्म–चक्षुओं द्वारा सुख प्राप्त करने का साधन ही माना गया, और इसीलिये उन्होंने सुंदरता को स्त्री रूप के अतिरिक्त प्रकृति में भी उतने मनोयोग से नहीं निहारा। उनका नखशिख वर्णन अपने क्षेत्र में अद्वितीय स्थान रखता है। उदाहरण के लिये–

लिखन बैठि जाकी सबी, गहि–गहि गरब गरुर ।
भये न केते जगत के चतुर चितेरे कूर ।।

क्षण–क्षण परिवर्तित होने वाली रूप–सम्पदा का इससे उत्तम उदाहरण मिलना कठिन है। श्रृंगार में अपरिपक्व किंवा अल्हड़ रूप का किशोर श्रृंगार किस प्रकार प्रस्तुत किया गया है देखिये–

ललन सलोने अरु रहे, अति सनेह सो पागि ।
तनक कचाई देत दुख, सूरन लौं मुँह लागि ।।

परस्पर श्रृंगारिक अभिव्यक्तियों को संकेतों के माध्यम से जिस चतुरता के साथ बिहारी ने दर्शाया है, वह अप्रतिम है–

कहत नटत रीझत खिझत मिलत खिलत लजियात।
भरे भौन में करत है, नयनन ही सौं बात ।।

कहीं–कहीं बिहारी काव्य का श्रृंगार इतना मर्यादित और गभीर है कि उसकी प्रशंसा किये बिना समीक्षक रह नहीं सकता । उदाहरणार्थ–

कागद पर लिखत न बनत, कहत संदेस लजात ।
कहिहै सब तेरो हियो, मेरे हिय की बात ।।

अलंकार–बहुलता : बिहारी जैसे प्रातिभ कवि के लिये अत्यन्त छोटे छंद में गहन उद्भावनाओं की अभिव्यक्ति जिस प्रकार सर्वत्र प्राप्त होती है, उससे कहीं अधिक उनमें अलंकारों की छटा प्रदर्शित होती रहती है। मात्र 48 मात्राओं में 6–7 अलंकारों का समावेश जिस सहजता से बिहारी के द्वारा संभव हो सका, कदाचित् संपूर्ण हिन्दी साहित्य में ऐसा किसी से नहीं बन पड़ा–

हौं. रीझी लखि रीझिहौं, छबिहि छबीले लाल ।
सोनजुही सी होति दुति, मिलत मालती माल ।।

इस दोहे में अनुप्रास, उपमा के अतिरिक्त दीपक, परिकर, तद्गुण आदि अलंकार सहज ही देखे जा सकते हैं।

भाव–सम्पदा : एक ही दोहे में अनेक मनोभावों को एक ही साथ गुम्फित कर अर्थ की प्रभविष्णुता को बढ़ा देना बिहारी का सहज व्यापार है। इस सम्बन्ध में उदाहरणों का भण्डार प्रस्तुत किया जा सकता है। कतिपय उदाहरण देखिये–

ललन चलन सुनि पलन में अँसुवा झलके आय ।
भई लखाय न सखिनहूँ, झूठें ही जमुहाय ।।

तथा

बतरस लालच लाल की मुरली धरी लुकाय ।
सौंह करै भौंहनि हँसै, दैन कहै नटि जाय ।।

तथा

अहै दहेड़ी जिनि धरै जिनि तू लेहि उतारि ।
नीके हौ ठीके छुवै, ऐसे ही रहि नारि ।।

ऊहात्मक अभिव्यंजना – यद्यपि अतिशयोक्ति का प्रयोग हिन्दी साहित्य को संस्कृत की परम्परा से प्राप्त हुआ है, किन्तु अतिशयोक्ति को चमत्कारिक चरम तक पहुँचाना कदाचित फारसी साहित्य का प्रभाव माना जा सकता है। यदि यह कहें कि बिहारी के काव्य में फारसी साहित्य की नकल पर आधारित अतिशयोक्ति को ऊहा तक पहुँचाया गया है तो इसमें किसी को कोई विरोध नहीं होगा, फिर भी बिहारी की प्रतिभा इस क्षेत्र में

भी अपना मौलिक स्वरूप छिपा नहीं सकी । विरह सम्बन्धी अत्युक्ति के अखाड़े में तो बिहारी उर्दू फारसी के शायरों को भी आसमान दिखा देते हैं । उर्दू कवियों का 'आशिक' तो 'इन्तहाए लागरी' से मौत को सिर्फ नंगी आँखों से नहीं दीख पड़ा था, मगर बिहारी की नायिका की कृशता इतनी बढ़ी चढ़ी है कि चश्मा लगाने पर भी वह नहीं देखी जाती–

करी बिरह ऐसी तऊ, गैल न छाँड़त नीचु ।
दीने हूँ चसमा चखनि, चाहे लहै न मीचु ।।

कुछ अन्य उदाहरण भी दृष्टव्य हैं–

सुनत पथिक मुँह माँह निसि लुवै चलति उह गाम।
बिनु बूझै बिनु ही कहे, जियत बिचारी बाम ।।

तथा

अंग–अंग नग जगमगति, दीपशिखा सी देह ।
दिया बढ़ाये हूँ रहौ, बड़ौ उजेरो गेह ।।

भाषा–सौष्ठव : बिहारी की भाषा, बल्कि यूँ कहें शैली, अद्‌भुत व्यंजनापूर्ण है। उन्होंने भाषा को व्यवस्थित एक रूपता देने का अत्यन्त सफल श्लाध्य उपक्रम किया है। अन्य रीतिकालीन कवियों की भाषा में ब्रज तथा अवधी रूपों के अनियमित मेल से मनमाने प्रयोगों का प्राचुर्य है। इसी कारण उनकी भाषा प्रायः विकृत, अस्थिर और अव्यवस्थित है। यद्यपि महाकवि केशव ने इस दिशा में कुछ प्रयत्न किया अवश्य, किंतु उसमें भी वह एकरूपता नहीं ला सके। बिहारी ने ही सर्वप्रथम भाषा का एक आदर्श स्वरूप सामने रखा । काव्य कला एवं काव्य भाषा, दोनों ही दृष्टियों से बिहारी का स्थान महत्वपूर्ण है। बुंदेलखण्ड के निवासी होने के कारण बिहारी की भाषा में भी केशव की ही भाँति, किंतु उनकी अपेक्षा बहुत कम, बुंदेलखण्डी शब्दों– जैसे – लखबी, करबी, पायबी आदि के प्रयोग मिलते है। यत्र तत्र अवधी का भी प्रयोग किया गया है। विदेशी शब्दों के व्यवहार में बिहारी ने कुछ अधिक ही स्वच्छन्दता बरती है। उनकी 'सतसई' में अहसान, चश्मा, कबूल, निसान, फौज तथा पायंदाज जैसे फारसी में प्रचलित शब्दों के साथ बदराह, सबी, ताफ्ता जैसे अप्रचलित शब्द भी अनायास मिल जाते हैं, यद्यपि इन शब्दों को उन्होंने ब्रजभाषा की प्रकृति के अनुसार ही ढालने का प्रयास किया है।

यद्यपि कुछ समीक्षकों के अनुसार उनकी भाषा में समास–बहुलता के कारण व्याकरण का शैथिल्य यत्र तत्र अवश्य दिखाई दे जाता है, फिर भी यह इतना नगण्य और सकारण है कि उसको महत्व देना उचित नहीं है और शायद इसीलिये 'सतसैया के दोहरे' नावक के ऐसे धारदार तीर हैं जो छोटे होने के बाद भी मर्म पर गंभीर चोट करने से नहीं चूकते ।

इस प्रकार हम देखते हैं कि बिहारी में एक रीतिवादी कवि का आचार्यत्व, श्रृंगार सम्बलित भक्ति भावना, माधुर्य गुण का सर्वांगपूर्ण चरम बिंदु, भाषा का सुष्ठु स्वरूप व उसकी ध्वन्यात्मक अभिव्यंजना, अलंकार धर्मिता और एक उत्कृष्ट कवि का साहित्य–बोध बड़े ही चमत्कारी रूप में समाहित है। उनके काव्य में भावुकों का अर्थगाम्भीर्य, चतुरों का वैदग्ध्य, कलाविदों का नैपुण्य और कवि की मर्मस्पर्शिता सहज ही प्राप्य है। निस्सन्देह वह हिन्दी के सुंगधित और आकर्षक साहित्य–सुमन हैं।

***

भारत में 'राष्ट्र' की अवधारणा

डा. रमेश शर्मा, विभागाध्यक्ष हिन्दी,
वी.एस.एस.डी. कॉलेज

बड़े वात्सल्य–भाव के साथ डॉ. शर्मा ने हमको यह ज्ञान–गुंफित लेख सौंपा है । ऐसे 'आचार्य' पर संपादकीय टिप्पणी न करना ही संपादकीय मर्यादा है । – संपादक

भारत के तथाकथित प्रगतिशील विचारक (?) प्रायः यह कहते सुने जाते है कि भारत पहले कभी एक राष्ट्र नहीं था । राष्ट्र को साक्षात्कार तो सर्वप्रथम अंग्रेजों ने कराया । स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् देश के शासन की बागडोर सँभालने वाले नेताओं ने भी नेशन इन मेकिंग' कहकर एक भ्रम का निर्माण किया । राज्याश्रयी एवं राज्याश्रय–आकांक्षी बुद्धिजीवियों ने उनके स्वर में स्वर मिलाकर (असत्य का समर्थन कर) समाज को दिग्भ्रमित करने में सहयोग प्रदान किया । उक्त भ्रम का परिहार करने हेतु वैदिक वाङ्मय से कतिपय उद्धरण देकर यह सिद्ध करने की चेष्टा की जा रही है कि राष्ट्र शब्द तथा राष्ट्र की अवधारणा अत्यन्त प्राचीन काल से भारत में प्रचलित व अस्तित्व में थी । यथा–

आब्रह्मन् ब्राह्मणे ब्रह्मवर्चसी जायतामाराष्ट्रे राजन्यः
शूरऽईषव्योतिव्याधी महारथी जायताम् दोग्ध्री
धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धीर्योषा जिष्णू
रथेष्टाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां
निकामे निकाम नः पर्जन्योवर्षतु फलवत्यो नऽओषधयः
पच्यन्तां योगक्षेमों नः कल्पताम् ।। – यजुर्वेद

(परमेश्वर ! हमारे राष्ट्र में ब्राह्मण ज्ञान सम्पन्न हो, क्षत्रिय लोग शूर महारथी और अच्छे शस्त्रास्त्रों से युक्त हों। गायें खूब दूध देने वाली हों, अच्छे बैल, चपलगति अश्व, शीलवती नारियाँ हों । यजमान शूर तथा विजयीपुत्रवाला बने । समय पर वर्षा हो और वृक्ष वनस्पयिाँ फलों से भरपूर हों । हम सबका योगक्षेम चलता रहे।)

इस सूक्ति के अनुसार वह जनसमूह जो एक सुनिश्चित भूमिखण्ड में रहता है, संसार में व्याप्त और इसको चलाने वाले परमात्मा अथवा प्रकृति के अस्तित्व को स्वीकार करता है जो बुद्धि को प्राथमिकता देता है और विद्वज्जनों का आदर करता है और जिसके पास अपने देश को बाहरी आक्रमण और आन्तरिक, प्राकृतिक आपत्तियों से बचाने और सभी के योगक्षेम की क्षमता हो वह एक राष्ट्र है।

उपर्युक्त उद्धरण में हिन्दू समाज की राष्ट्रीयता का परिचय तो मिलता ही है साथ ही देशवासियों की समष्टि–चेतना भी उजागर होती है । इसी प्रकार निम्नलिखित अवतरण में राष्ट्र भक्ति का संदेश मुखरित हो रहा है–

यास्ते प्राची प्रदिसो या उदीचो, यास्ते भूमे अधराद्य च पश्चात् ।
स्योनास्ता मह्यं चरते भवन्तु, या निपप्तं भुवने शिश्चियाण।। – अथर्ववेद

(हे जगदीश्वर ! तेरी उषाकालीन स्वर्णिम किरणें मेरी आत्मा में आध्यात्म ज्ञान की ज्योति प्रज्जवलित करें और सांध्यकालीन प्रकाशमान मेघ मेरे श्रांत–मन को स्फूर्ति से ओतप्रोत करें । हमारी मातृभूमि की विस्तृत चारों ओर की सीमायें सदैव सुरक्षित रहे । ये सीमायें सदैव दुर्लध्य एवं कठोरतम बनी रहे । हम स्वयं सुरक्षित एवं बलवान बने रहें और जगत के शाश्वत कल्याण एवं शान्ति के लिए सतत प्रयत्नशील रहें ।)

मातृभूमि की सुरक्षा तथा विश्वकल्याण कामना से युक्त उपर्युक्त अवतरण में राष्ट्र, राष्ट्रीयता तथा राष्ट्रीय–चरित्र का प्रकटीकरण सहज में होता है। यह हिन्दू राष्ट्र केवल अपने लिए नहीं जीता वरन् विश्व

कल्याण की चिन्ता भी करता है । ऐसा उदात्त चरित्र अन्यत्र कहाँ देखने को मिलेगा । यही अन्तर है हमारे राष्ट्रवाद में तथा विदेशी (पाश्चात्य) राष्ट्रवाद में । हमारा राष्ट्रवाद 'उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्' का आदर्श अपने राष्ट्रवासियों के समक्ष उपस्थित करता है। सर्वभूत हिते रतः यहाँ के प्रत्येक प्राणी का संकल्प है।

एक और उद्धरण समीचीन होगा –

समह मेषां राष्ट्र स्यामि समाजोवीर्य बलम् ।
वृश्चामी शत्रूणां बाहुनानेन हविषा हम् ।। – अथर्ववेद

(हम राष्ट्र की मान–मर्यादा की रक्षा करने की प्रतिज्ञा करते हैं । हमारी समस्त सम्पदा, शक्ति एवं बुद्धि उसकी सेवा में समर्पित है। हम अपने बाहुबल एवं पौरूष से शत्रु के उद्धत् अहंकार को धूलधूसरित कर देंगे। विजय हमारी होगी क्योंकि हम सत्य एवं न्याय के लिए संघर्ष करते हैं तथा इस पुनीत कार्य के लिए अपने सर्वस्व का बलिदान करते हैं ।)

उपर्युक्त उद्धरणों से स्पष्ट है कि जब यूरोपीय तथा अन्यान्य जातियाँ अज्ञानता में थीं तब भारत के हिन्दू समाज का हृदय राष्ट्रीयता, विश्वकल्याण तथा मातृभूमि–भक्ति से अनुप्राणित था । उस समय भारतीय समाज पृथ्वीसूक्त जलसूक्त, नदीसुक्त आदि के द्वारा राष्ट्र के लिए आवश्यक उपकरण व उपादानों की चिन्ता कर रहे थे। वे देश की नदियों, देश के तीर्थाशयों के प्रति श्रद्धानत होते थे । वे निजी अभ्युदय के साथ राष्ट्र का भी अभ्युदय चाहते हेतु राष्ट्र के लिये उपयोगी मानवों (जनशक्ति), प्राणियों (गोधन, गजधन, अश्वधन आदि) वृक्षों व वनस्पतियों सहित भूमि के कल्याण व रक्षण की कामना करते थे । स्वराष्ट्र के साथ–साथ वे विश्व का हित–चिन्तन भी नहीं भूले थे ।

'माताभूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्यां – की वैदिक ऋषियाणी को हृदयगम कर यहाँ का निवासी नित्य प्रातः काल धरती पर पैर रखने के पूर्व मातृभूमि की वंदना करता है– समुद्र वसनेदेवि, पर्वतस्तनमण्डले, विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्शक्षमस्व में । यह है उसकी अखण्ड देशभक्ति का सहज संस्कार जो पीढ़ी दर पीढ़ी अनवरत, अबाध–गति से प्रत्येक भारतवासी के अन्दर बद्धमूल होता जाता है। समय आने पर प्रत्येक भारतीय की सहज अभिलाषा इस रूप में व्यक्त हो जाती है–

तन समर्पित मन समर्पित और यह जीवन समर्पित।
राष्ट्रहित की साधना में हम करें सर्वस्व अर्पण ।

इस देश के प्रत्येक पुत्र ने यहाँ की सदानीरा नदियों, पर्वतों, पुरियों, नगरों, ग्रामों, संतों, प्रजारंजक सम्राटो, परिव्राजकों, महापुरुषों आदि का स्मरण करते हुए इसे अपनी पुण्यभूमि, कर्मभूमि और जन्मभूमि का आदर देते हुए 'भारतमाता' के रूप में सदा वन्दना की है। इस सुजला सुफला मलयज शीतलाम्, शस्यश्यामल, सर्वकालिक सुखदां भारतभूमि में महान पुण्यवान का ही जन्म होता है–

स्वर्गापवर्गास्पद हेतु भूते, भवन्ति भूयः पुरुषा सुरत्वात्।।

पुराणकारों ने इसका गुणानुवाद सकारण किया है। यह भूमि परमात्मा सहित यहाँ के वासियों के लिए 'कर्मभूमि' है–

उत्तरयत्समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम्, वर्ष तद भारतं नाम भारती यत्र संततिः।
अन्नापि भारतं श्रेष्ठ जम्बूद्वीपे महामुने, तोहि कर्मभूरेषा हतोन्याभोगभूमयः ।।
रत्नाकराधौतपदां हिमालय किरीटिनीम, ब्रह्मराजर्षि रत्नाढयां वन्दे भारतमातरम्।।

उपर्युक्त सारे भाव 'राष्ट्र' की चिन्तन परम्परा से जुडकर ही व्यक्त हुए है। भूमि के प्रति इतनी अगाध निष्ठा, इसके अंग–प्रत्यंग के प्रति भक्ति देशवासियों की चिन्ताधारा की ही फलश्रुति है।

पाश्चात्य राजनीतिशास्त्री सर्वश्री हालकोम्ब, बरजेस, गैटल आदि की मान्यताओं का समाहार करते हुए निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त किये जा सकते है जो एक राष्ट्र के लिए आवश्यक तत्व माने जा सकते है–

(1) प्राकृतिक सीमाओं वाली भूमि
(2) उस भूमि पर बसने वाली जाति या जन–समाज
(3) एक समान संस्कृति
(4) एक समान भाषा
(5) एक समान धर्म या पंथ

इसी क्रम में रेनन नामक राजनीति–शास्त्री ने 'मानव के हृदय में एक होने की अनुभूति और चेतना, को राष्ट्रीयता का मूल आधार बताया । इस आन्तरिक चेतना को राष्ट्र की आत्मा कहा तथा इसका महत्व बाहरी समानताओं की अपेक्षा अधिक होता है– ऐसा स्पष्ट किया ।

ब्रिटिश राजनीति–शास्त्री सर अरनसट बार्कर ने आत्मा और शरीर का रूपक बांधते हुए कहा– 'जैसे जीवित व्यक्ति के लिए आत्मा और शरीर का होना अनिवार्य है, इसी प्रकार राष्ट्र के लिए देश–रूपी भूमि और संस्कृति–रूपी आत्मा का होना अनिवार्य है।

भारतीय चिन्तकों ने भी राष्ट्र और राष्ट्रीयता के लक्षणो का विशद् विवेचन किया है। इन चिन्तकों का मान्यताओं का समाहार करते हुए कहा गया है कि–

'धर्मोभाषतिहासश्च संस्कृतिश्च परम्परा ।
वंश एकात्मवृत्तिश्च राष्ट्रीयस्य लक्षणम् ।।

अर्थात् धर्म, भाषा, इतिहास, संस्कृति, परम्परा, वंश, एकात्मवृत्ति राष्ट्रीयता के लक्षण होते हैं।

राष्ट्र और राष्ट्रीयता के उपर्युक्त देशी व विदेशी विद्वानों के मान्य विचारों से प्राप्त मूलतत्व व लक्षणों की कसौटी पर जब हिन्तुस्थान/भारत/India को परखते हैं तो हमें ज्ञात होता है कि यहाँ प्राकृतिक सीमा युक्त विशाल भूभाग रूपी भौतिक शरीर तथा आध्यात्मिक और सांस्कृतिक परम्परा रूपी आत्मा भी है। संसार में ऐसे देश विरले हैं जिनकी भौगोलिक सीमाएँ इतनी स्पष्ट और सुनिश्चित है। इसके भौगोलिक मानचित्र और सांस्कृतिक मानबिन्दु सारे देश में फैले हैं और इनके प्रति देशवासियों के मनों में समान अनूभूति है । इस देश का सारा साहित्य और वांगमय यहाँ प्रवहमान पवित्र नदियों, सप्त पुरियों व नगरों, पावन पर्वतो के उल्लेख व वर्णनों से ओतप्रोत है । इन नगरों, पुरियों, तीर्थों, नदियों व पर्वतो आदि का दर्शन करना, पावन सरोवरों व नदियों में स्नान करना इस देश के लोगों की युगों से आकांक्षा रही है। इसके फलस्वरूप इस देश के जनसाधारण में भी देश की भौगोलिक और सांस्कृतिक एकता और देश की विशालता और विविधता की अनुभूति है। इस देश के महापुरुषों व धर्मप्रमखों या पथ–प्रवर्तकों ने अपने मठ, बिहार, पीठ, आश्रम, मंदिर, गुरुद्वारा आदि की स्थापना सारे देश में करके इस एकता के भाव और अनुभूति को स्थूल आधार देकर सृदृढ किया है। फलस्वरूप सारे हिन्दू मात्र के मानस पटल पर हिन्दुस्थान मातृभूमि और पुण्य भूमि के रूप में अंकित हो चुका है।

इस देश के राजनीति–शास्त्रियों ने आसेतु हिमाचल हिन्दुस्थान को एक सूत्र में राजनीतिक दृष्टि से बाँधने की चिन्ता की है। यद्यपि यह देश सांस्कृतिक एकता पर अधिक जोर देता रहा है परन्तु चाणक्य जैसे विचारकों ने राजनीतिक दृष्टि से भी केन्द्रीय शासन की चिन्ता की । यहाँ 'चक्रवर्ती' शासक की अवधारणा व महत्वकांक्षा का जागरण ये विचारक इस देश के शासकों में करते रहे ताकि देश एक सूत्र में राजनीतिक दृष्टि से भी बँधता रहे ।

देशभक्ति व राष्ट्रप्रेम का भाव भी इस देश के वासियों में अति प्राचीन काल से लेकर अब तक जागरण करने का प्रयत्न वैदिक ऋषियों से लेकर कवि व संत–प्रभृति करते रहे हैं । अथर्ववेद की ऋषि वाणी है–

'भद्र मिच्छन्तऋषयः स्वर्विदः तपो दीक्षामुपासे दुरग्रे ।
तपोराष्ट्रं बलमोजश्च जातं तदस्मै देवा उपसंनमन्तु ।।

अर्थात् 'आत्मज्ञानी ऋषियों ने जगत का कल्याण करने की इच्छा से सृष्टि के प्रारम्भ में जो दीक्षा लेकर तप किया उससे राष्ट्र निर्माण हुआ, राष्ट्रीय बल और ओज उत्पन्न हुआ । इसलिए सब देवगण इस राष्ट्र के सामने विनत होकर इसकी सेवा करें ।'

बाल्मीकि रामायण के 'राम' लंका विजय के पश्चात जन्मभूमि की विशेषता या तुलना करते हुए कहते हैं–

'अपि च स्वर्णमयी लंका न में लक्ष्मण रोचते
जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।

***

महाकवि कालिदास एवं उनका अभिज्ञान शाकुन्तलम्

डॉ. मनोज शुक्ल, आचार्य

डॉ. मनोज शुक्ल हमारे विद्यालय में संस्कृत के आचार्य हैं । नीराजन के साहित्य–विशेषांक होने के कारण हमने उनसे कालिदास पर लिखने को कहा । थोड़े में ही कालिदास पर बहुत कुछ लिखने का उन्होंने सत्वर–सार्थक–श्लाघ्य प्रयास किया है जो सहज है । प्रसन्नवदन मनोज जी मनोजरि त्रिभंगीलाल की लीला के मधुरिम प्रवक्ता भी हैं । — संपादक

'भासो हासः कविकुलगुरुः कालिदासो विलासः ।' अठारह पुराणों के रचयिता व्यास सर्वश्रेष्ठ है तो कवियों में गुरुश्रेष्ठ कालिदास विलास है। कालिदास की समता शेक्सपीयर से करना सूर्य को दीपक दिखाने की तरह है।

कालिदास के विषय में कई जनश्रुतियाँ हैं । पहली जनश्रुति के अनुसार कालिदास को काली के वर से ज्ञान तथा कवित्व जगा । दूसरी जनश्रुति के अनुसार इन्हें अपनी स्त्री से कविता शक्ति प्राप्त हुई । अन्त समय लंका जाकर एक वेश्या के शिकार बने । ये किंवदन्तियाँ जैसी हों, पर यह निश्चित है कि कालिदास राजा विक्रमादित्य के दरबारी कवि थे । इनका समय ईस्वी पूर्व प्रथम शताब्दी से चतुर्थ शतक गुप्त काल तक माना जा सकता है।

'साहित्य संगीत कलाविहीन' । साहित्य सर्वप्रथम तदनन्तर संगीत और कला की गणनी की जाती है। कालिदास द्वारा रचित अनेक ग्रंथ है पर संस्कृत में लिखे उनके निम्नलिखित ग्रन्थ निश्चित हैं।

1. **रघुवंशम** – महाकाव्य है जिसमें श्रीरामचन्द्र के पूर्वजों का वर्णन है। तदनन्तर रघुवंश वर्णन है। यह महाकाव्य अन्य ग्रन्थों से अधिक ग्राह्य है।
2. **कुमार सम्भवम्**– काव्य में शिव–पार्वती की कथा और उनसे कुमार कार्तिकेय के जन्म का वर्णन है।
3. **मेघदूतम** – खण्डकाव्य है। विरह पीडित यक्ष का सन्देश मेघ को दूत बनाकर भेजा गया है।
4. **ऋतुसंहारम्**–खण्डकाव्य है। ऋतुओं का वर्णन अत्यन्त मनोहारी है।
5. **मालविकाग्निमित्रम्**– इस नाटक में मालविका एवं अग्निमित्र के विवाह का वर्णन है।
6. **विक्रमोर्वशीयम्**– इस नाटक विक्रम एवं उर्वशी के चरित्रों का बड़ा ही मनोहारी चित्रण है।
7. **अभिज्ञान शाकुन्तलम्**– यह नाटक है। भारतीय नाटकों में यह सर्वश्रेष्ठ है।

काव्य श्रव्य होता है । नाटक श्रव्य एवं दृश्य दोनों होता है जो प्राणियों को अधिक प्रभावित करता है क्योंकि इसमें नेत्र तथा श्रवण दोनों इन्द्रियों का प्रयोग मनुष्य द्वारा किया जाता है। कालिदास के नाटकों से भारतवर्ष के ही लोग प्रभावित नहीं हैं, वरन् समग्र विश्व प्रभावित है। पाश्चात्य जगत् में जर्मनी के सुप्रसिद्ध महाकवि गेटे ने भी इनकी प्रशंसा की है।

कालिदास के रघुवंशम् एवं कुमार सम्भवम् दोनों महाकाव्यों में शिव की प्रार्थना की गई है। अतः स्पष्ट होता है कि ये शैव थे । एक किंवदन्ती के अनुसार विद्योत्तमा नामक राजकुमारी का विवाह इनसे मन्त्रियों ने करवाया। विद्योत्तमा सभी को शास्त्रार्थ में परास्त कर देती थी, अतः पराजित व्यक्ति का विवाह उस विद्योत्तमा से नहीं हो पाता था । विद्योत्तमा ने प्रतिज्ञा की कि जो उसे शास्त्रार्थ में पराजित कर देगा, उसी के साथ वह अपना विवाह करेगी। जितने व्यक्ति आते हारकर चले जाते । राज्य के मन्त्रियों ने एक उपाय सोचा कि चलें किसी व्यक्ति को ले आयें और सांकेतिक भाषा द्वारा शास्त्रार्थ करवाकर राजकुमारी को पराजित कराकर विवाह करा दिया जाए ।

सभी मन्त्री बाहर निकले । घूमते–घूमते एक ऐसे व्यक्ति को देखा कि जिस वृक्ष की डाली पर वह बैठा था, उसी डाल को स्वयं काट रहा था । मन्त्रियों ने विचार किया कि इससे मूर्ख और कोई व्यक्ति नहीं मिलेगा क्योंकि शाखा के कटते ही वह नीचे गिर पड़ता । इन लोगों ने उतारकर समझाया और राजकुमारी के यहाँ ले गए । विद्योत्तमा से कहा कि ये मौन रहते हैं, अतः सांकेतिक रूप में प्रश्न करें, जिसका उत्तर संकेत में ही देंगे ।

विद्योत्तमा ने एक अंगुली दिखाई, अर्थात् परमात्मा एक है। कालिदास ने समझा कि यह हमारी एक आँख फोड़ना चाहती है। उन्होंने दो अँगुली दिखा दीं । उनका भावार्थ तो था कि वे उसकी दोनों आँखें फोड़ देंगे परन्तु मन्त्रियों ने कहा कि परमात्मा प्राणियों के हृदय में वास करता है। आत्मा स्वरूप परमात्मा दो हुए । विद्योत्तमा ने अब पाँच तत्वों के आधार पर पाँच अंगुलियों को दिखाया । कालिदास ने सोचा कि यह हमें थप्पड़ मारना चाहती है, अतः उन्होंने पाँचों अँगुलियों की मुठठी बाँधकर घूँसा दिखाया कि वे उसे थप्पड़ के बदले घूसा लगा देंगे । मन्त्रियों ने राजकुमारी को बताया कि पाँचो तत्व मिलकर एक हो जाते हैं तो शरीर की रचना होती है। इस पर विद्योत्तमा को अपनी हार माननी पड़ी । अन्ततः मन्त्रियों ने कालिदास का विवाह विद्योत्तमा से करा दिया ।

रात्रि में एक दिन कालिदास ने विद्योत्तमा से कहा उट्र बोल रहा है। विद्योत्तमा को इनकी मूर्खता पर दुःख हुआ । ऊँट को संस्कृत में उष्ट्र कहते हैं । विद्योत्तमा ने इन्हें ढकेल दिया । ये नीचे चले आये । इनका सिर पत्थर की देवी प्रतिमा से फूट गया और रूधिर प्रवाहित होने लगा । ये विद्या–विद्या कहकर चिल्लाने लगे, अर्थात् विद्योत्तमा ने ऐसा किया । देवी ने प्रकट होकर उन्हें पूर्ण विद्याओं में पारंगत होने का वरदान दे दिया। कालिदास सम्पूर्ण शास्त्रों में निष्णात होकर घर लौटे। द्वार का किवाड़ उस समय बन्द था । कालिदास ने कहा (अनावृत्तं कपाटं द्वारं देहि) अर्थात् किवाड़ खोल दो । विद्योत्तमा ने कहा– 'अस्ति कश्चिद् वाग्विशेषः' अर्थात् वाणी में विशेषता आ गई है। विद्योत्तमा के इन्हीं तीनों शब्दों पर (अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा) से कुमार सम्भवम् की रचना, (कश्चित्कान्ता विरहगुरुणा स्वाधिकारत्प्रमत्तः) से मेघदूतम् की रचना तथा (वागर्थाविव सम्पृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये) से रघुवंशम् महाकाव्य की रचना कालिदास द्वारा की गई है जो उनके प्रौढ पाण्डित्य का परिचायक है। तीनों काव्य अति प्रसंशनीय हैं । अभिज्ञान शाकुन्तलम की कथा वस्तु इतनी लोकप्रिय है कि सभी आबाल वृद्ध जानते हैं। इतना कहना पर्याप्त है कि–

'काव्येषु नाटकं रम्यं, तत्र रम्या शकुन्तला ।
तत्रापि च चतुर्थोऽङ्कः, तत्र श्लोक चतुष्टयम् ।।'

अर्थात् काव्यों में नाटक रमणीय होता है, नाटकों में शकुन्तला नाटक रमणीय है। इसमें चौथा अंक मनोहर है। चौथे अंक में चार श्लोक अति सुन्दर हैं । यह अंश प्रभावपूर्ण, सरस तथा सुबोध है। इसमें अश्लीलता का लेशमात्र भी नहीं है। आजकल कतिपय ऐसे नाटक हिन्दी में हैं, जिनमें अश्लीलता का अंश झलकता है।

अप्सरा मेनका तथा विश्वमित्र से उत्पन्न बालिका की रक्षा पक्षी गणों ने की, अतः बालिका का नाम शकुन्तला ऐसा नाम महर्षि कण्व ने रख दिया । तभी से ऋषि आश्रम में पली और बड़ी हुई । प्रियंवदा और अनुसूया उसकी दो सखियाँ थीं । राजा दुष्यन्त शिकार खेलने के लिए आये थे । शकुन्तला से प्रेम हो गया । उन्होंने अपने नाम की अँगूठी शकुन्तला को पहना दी । कण्व ऋषि प्रवास से आये तो उन्हें ज्ञात हुआ कि शकुन्तला गर्भवती है। इसके पूर्व एक दिन शकुन्तला दुष्यन्त की चिन्ता में मग्न थी तभी दुर्वासा ऋषि आये । उनका अतिथि सत्कार उसने नहीं किया, अतः ऋषि ने शाप दिया कि जिसकी चिन्ता में हो, वह तुम्हें स्मरण कराने पर भी नहीं जानेगा और विस्मृत हो जायेगा । अनुसूया ने कहा कि दुष्यन्त राजा ने शकुन्तला के प्रति अनुचित आचरण किया । कण्व ने शकुन्तला को राजा के पास शिष्यों के साथ भेजने को कहा । प्रियंवदा प्रसन्न हुई । आश्रम के वृक्षों ने रेशमी वस्त्र, महावर आदि शकुन्तला के लिए प्रदान किए । काश्यप (कण्व) ऋषि ने कहा कि आज शकुन्तला पतिगृह जायेगी । हृदय विषाद से भरा है, आँसू रोकने पर भी नहीं रूकते हैं । गला रूँध गया है । चिन्ता के कारण दृष्टि कुण्ठित हो गयी है। मुझ जैसे वनवासी की यह दशा स्नेह के कारण हुई है तो गृहस्थ कन्या वियोग के दुःख से क्यों न दुःखी होंगे। (यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं संस्पृष्टमुत्कण्ठया) । इसमें पिता–पुत्री का स्नेह प्रदर्शित है, जो स्वाभाविक है।

शकुन्तला की पति भक्ति तथा काश्यप के तपोबल का उचित सामजस्य है। कालिदास द्वारा किया गया प्रकृति वर्णन अत्यन्त सरस है। कण्व की पालिता पुत्री रूप शकुन्तला रही । आश्रम के अनुरूप उसका श्रृंगार हुआ है। कण्व ने शकुन्तला को भावी सम्राट पुत्र प्राप्त करने को कहा । गौतमी ने कहा– यह तो वरदान है। शारहत और शांख शिष्य शकुन्तला को उसके पति के यहाँ पहुँचाने जाते हैं।

कण्व कहते हैं कि शकुन्तला बिना वृक्षों के सींचे जल नहीं, पीती थी । स्नेह के कारण पत्तों को नहीं तोड़ती थी । पहले फूल फूलने पर उत्सव मनाती थी । वह पति के घर जा रही है । सभी जाने की आज्ञा दें। गौतमी शकुन्तला मृग के मुख के घाव भरने हेतु इंगुदी का तेल लगाती थी । मुठठी भर उसे साँवा खिलाकर पालती थी। शकुन्तला का वन वृक्षों और पशुओं से बहुत लगाव था । शकुन्तला को ले जाने वाले शांगख से कण्व कहते हैं कि शकुन्तला को आगे कर राजा दुष्यन्त से कहना कि वे शकुन्तला को अपनी स्त्रियों में समभाव से रखेंगे । अधिक सम्मान पाना तो भाग्य के अधीन है। जिसके लिए वधू के बन्धुजनों को नहीं कहना चाहिए।

ऋषि कण्व ने शकुन्तला को शिक्षा दी कि गुरुजनों की सेवा करना। अपनी सपत्नियों के साथ प्रिय सखी का व्यवहार करना । सेवकों के प्रति उदारता का व्यवहार करना । पति अपमान भी कर दें तो क्रोध से उनके विरुद्ध आचरण न करना । भव्य अनुकूल होने पर अभिमान न करना । इस प्रकार के व्यवहार से युवतियाँ सुन्दर गृहिणी होती हैं । इसके विपरीत आचरण करने वाली तो कुल के लिए विपत्ति हैं।

दोनों सखियाँ शकुन्तला से कहती हैं कि यदि राजा तुम्हें पहचानने में असमर्थ हो उ.,यें तो उनके नाम की अंकित यह अँगूठी दिखा देना । शकुन्तला का हृदय काँप उठता है। सखियाँ उसे भयभाती न होने के लिए कहती हैं। वस्तुतः दुर्वासा का शाप उन्हें ज्ञात था । दुर्वासा से प्रार्थना करते प्रियवंदा सखी को ज्ञात हुआ कि अभिज्ञान के लिए अँगूठी दिखाने पर राजा को पुनः स्मरण हो जायेगा । दुर्वासा क शाप का अन्त हो जायेगा। शकुन्तला पिता तुल्य काश्यप से पूछती है कि कब पुनः तपोवन को देखेगी । कण्व कहते हैं कि बहुत काल तक समस्त भूमि की सपत्नी बनकर दुष्यन्त से एक पुत्र उत्पन्न करके उसी पर राज्य का भार समर्पित करके पति के साथ पुनः इस आश्रम में आओगी ।

राजा दुष्यन्त शकुन्तला को पहचानते नहीं हैं। शकुन्तला उन्हें उनके नाम की अँगूठी दिखाना चाहती है परन्तु वह अँगुली में नहीं है, कारण कि वह अँगूठी सरोवर में गिर गयी थी, जिसका ध्यान शकुन्तला को नहीं था । शकुन्तला वापस आती है। वन मे निवास करते समय उसे एक पुत्ररत्न की प्राप्ति होती है। इस पुत्र का नाम भरत रखा जाता है। यह बालक अति शूखी था तथा सिंह के बच्चों के साथ खेलता था । दुष्यन्त के नाम की अँगूठी राजा को मिल जाती है। वे आश्चर्यचकित हो जाते हैं। कहा जाता है कि यह अँगूठी मछली के पेट से मिलती है, जिसे मछुवारा ले गया था ।

दुखी दुष्यन्त राजा भ्रमण करते हुए उसी वन में पहुँचते हैं, जहाँ शकुन्तला अपने पुत्र के साथ निवास करती थी। भरत को सिंह के शावकों के साथ खेलते देख राजा यह जान लेता है कि यह राजपुत्र होगा । अन्त में ससम्मान लिवा जाते हैं। इसी भरत के नाम पर हमारे देश का नाम भारवर्ष पड़ता है। इस नाटक की परिणति सुखान्त है। भरत ने पर्याप्त काल तक देश पर राज्य किया । रस, छन्द, अलंकार, ऋतु, प्रकृति, स्वभाव, तपोवन, ऋषि राजा, रानी, पति, पत्नी, कुल, दास आदि तथा अनेक भावों का सामजंस्य है। अभिज्ञान शाकुन्तलम् में मर्यादित वर्णन समस्त विषयों से सम्बद्ध होकर प्राप्त होते हैं। राजनीतिक तथा सामाजिक और आध्यात्मिक परिवेश का समन्वय है, जो युगानुरूप है। इसी कारण महाकवि कालिदास सर्वश्रेष्ठ एवं विश्ववन्द्य हैं।

***

गोदान के परिप्रेक्ष्य में प्रेमचन्द

पिंकराज कुलश्रेष्ठ

प्रेमचंद हिन्दी के श्रेष्ठतम उपन्यासकार हुए हैं। उनके सर्वश्रेष्ठ उपन्यास गोदान में गरीब किसान की विवशताओं तथा सामन्तवादी व्यवस्था में होने वाले सर्वहारा वर्ग के शोषण का मार्मिक चित्रण हुआ है। लेखक ने गोदान के संदर्भ में प्रेमचंद को समीक्षात्मक दृष्टि से देखा है। पिंकराज साहित्य–प्रेमी हैं और रचनाधर्मी भी। समय–समय पर लखनऊ और उन्नाव में कवि सम्मेलनों का आयोजन करवाते रहकर वे साहित्यिक संस्कृति को जीवंत रखने का प्रयास कर रहे हैं।

– संपादक

प्रेमचन्द ने 1900 ई. के लगभग उपन्यास लिखना आरम्भ किया और उनका अन्तिम उपन्यास 'गोदान' सन् 1936 में प्रकाशित हुआ । प्रेमचन्द उन उपन्यासकारों में हैं जिनकी कला निरन्तर विकासमान होती रही है। गोदान में प्रेमचन्द की कला संवेदना, यथार्थ की पहचान और प्रस्तुति–शिल्प तथा भाषा–शैली सभी दृष्टियों से अपने उत्कर्ष पर अवस्थित है।

उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचन्द के पदार्पण से उपन्यास साहित्य की रिक्तता की पूर्ति हुई । इनके उपन्यासों में प्रथम बार जन–सामान्य को वाणी मिली और कला केवल मनोरंजन का खिलवाड न रहकर जीवन मर्मों को उद्घटित करने वाली बनी । उनके उपन्यासों में विशाल जन–जीवन और विशेषतः भारत के किसान तथा मध्यवर्गीय जीवन की अनेकमुखी समस्याएँ कलात्मक रूप में चित्रित हुई हैं। अगर आप उत्तर भारत की समस्त जनता के आचार–विचार, भाषा–भाव, रहन–सहन, आशा–आकांक्षा, दुःख–सुख और सूझ–बूझ जानना चाहते हैं तो प्रेमचन्द से उत्तम परिचायक आपको नहीं मिल सकता । झोपड़ियों से लेकर महलों, खोमचे वालों से लेकर बैंकों, गाँवों से लेकर धारा–सभाओं तक आपको इतने कौशल पूर्ण और प्रामाणिकता से कोई नहीं ले जा सकता ।

'गोदान' का रचना सन्तुलन ऐसा बेजोड़ है कि उसमें अनवरत संघर्ष, करुणा, सहानुभूति और ट्रैजिक अन्त के बावजूद कहीं किसी एक के प्रति कड़ुवाहट नहीं आती; गहरा असन्तोष उमड़ता–घुमड़ता है– तंत्र के प्रति । गाँधी और मार्क्स को जैसे प्रेमचन्द ने फेंटकर मिलाया हो । गोदान में किसान एवं मजदूर के शोषण की करुण कथा है। गोदान मुंशी प्रेमचन्द का ही नहीं, बल्कि हिन्दी साहित्य का सर्वश्रेष्ठ उपन्यास है। गोदान और निर्मला को छोड़कर बाकी उपन्यासों में प्रेमचन्द आदर्शोन्मुख यथार्थवादी रहे हैं, वे समस्या को उठाकर गाँधीवादी ढंग से उसका कोई न कोई समाधान भी प्रस्तुत कर देते हैं, किन्तु निर्मला और गोदान में वे एकदम यथार्थवादी दृष्टिगोचर होते हैं। कदाचित् यहाँ तक पहुँचते–पहुँचते गाँधीवाद से उनकी आस्था उठ चुकी थी । वास्तव में गोदान यथार्थोन्मुख आदर्शवाद का उपन्यास है। इसमें भारतीय किसान की त्रासदी की महागाथा है। 'होरी' एक प्रतीकात्मक चरित्र है, उपन्यास का यह वर्गगत चरित्र है। चूँकि वर्गगत पात्रता महाकाव्यात्मकता का लक्षण है अतः गोदान को महाकाव्यात्मक उपन्यास की संज्ञा दी जाती है। महाकाव्यात्मक उपन्यास का उद्देश्य भी सामान्य नहीं, बल्कि सीमातीत व कालातीत होता है। प्रेमचन्द का इसमें महत्व विषय– 'ग्रामीण चेतना' है। होरी गोदान का प्रमुख पात्र है, वह जन्म से ही निर्धन नहीं था वरन् उसकी महत्वाकांक्षा ने उसे यहाँ तक ला दिया । वह जीवन भर विपत्तियों से जूझता रहा, उन्हें भोगता हुआ अन्त में मृत्यु को प्राप्त होता है, उसका अन्त सामान्य आदमी का सामान्य अन्त सा लगता है किन्तु यह सामाजिक व आर्थिक विषमता दिखाने का प्रयत्न है।

होरी के मन में गाय की आकांक्षा होती है और वहीं से त्रासदी का आरम्भ हो जाता है। 'गऊ' उसके लिये केवल श्रद्धा की वस्तु नहीं, सजीव सम्पत्ति भी थी । वह उससे अपने द्वार की शोभा और अपने घर का गौरव बढ़ाना चाहता था । प्रेमचन्द कहते हैं– "बैंक के सूद से चैन करने या जमीन खरीदने अथवा महल बनवाने की विशाल आकांक्षाएँ उसके नन्हें से हृदय में कैसे समातीं ।"

होरी एक छोटी सी गाय पालने की इच्छा रखता है और उसके जमीन में दुर्घटनाओं का ताँता लग जाता है। गोदान उपन्यास की त्रासदी यही है कि राजतन्त्र, जमींदार और साहूकार के त्रिकोणीय पंजो से घिरा किसान अपने शरीर और पेट की रक्षा नहीं कर पाता । गाय की इच्छा करना उसका सबसे बड़ा दुर्गुण बन जाता है। गोदान के व्यग्य की व्यापकता इसमें है कि "एक सामान्य किसान ने गाय पालने की इच्छा ही क्यों की"? इससे तत्कालीन किसानों के शोषण और उनके साथ होने वाली अमानवीयता की व्यंजना हुई है।

ऐसी बात नहीं कि होरी एक बहुत अच्छा व्यक्ति था सच तो यह है कि वह एक अत्यन्त सामान्य मनुष्य के रूप में चित्रित हुआ है। उसमें कुछ दुर्गुण भी हैं किन्तु पूरे उपन्यास के सन्दर्भ मे ये दुर्गुण नगण्य है; फिर भी दुर्भाग्य उसका लगातार पीछा करता है। किसी भी तरह से गाय का घर में आगमन विपत्तियों की लम्बी कतारें साथ लाता है। दुर्भाग्य का एक और आयाम सामने आता दिखायी देता है–

खेतों में लगी ईख की फसल से बैल खरीदने की इच्छा जागृत होती है पर सभी के द्वारा उसकी सारी कमाई हड़प लेने के बाद उसकी सारी इच्छाएँ समाप्त हो जाती हैं और वह किसान, मजदूर हो जाता है। होरी जानता है कि किसान का मजदूर बनना उसकी मर्यादा धूमिल होना है। किन्तु उसके मन में 'मरजाद' पालन भाव भरा है जो उसके जीवन की त्रासदी का कारण बनता है।

गरीब किसान मजदूर के सामने बेटियों के विवाह की समस्या सामान्य समस्या नहीं है। 'सोना' के विवाह के लिये ईख की फसल के बल पर 'दुलारी' के द्वारा 200 रुपये देने का वादा करना, 'पटेश्वरी' द्वारा 'गोबर' के चिढ़ने के कारण 150 रु. में ही फसल तुलवा देना तथा सोना का विवाह तो नोहरी द्वारा कर्ज लेकर किसी तरह हो जाता है पर ईख के लिये बीज के पैसे न होने के कारण खेत खाली पड़े रहते हैं।

कुछ समय पश्चात जीवन का सबसे घिनौना समझौता होरी के जीवन को तोड कर रख देता है। तीन साल से लगान न देने के कारण 'नोखेराम' द्वारा जमीन से बेदखली का दावा, जमीन को बचाने के लिये 'प. दातादीन' के प्रस्ताव से शर्मनाक समझौता– 40 वर्ष के 'राम सेवक' के साथ 200 रु. लेकर अपनी किशोरी लडकी का ब्याह, होरी के जीवन की सबसे ज्यादा त्रासद स्थिति है। वह सोचता है कि आज उसके ऐसे दिन आ गये हैं कि उससे लड़की बेचने की बात कही जाती है और उसमें इनकार करने का साहस भी नहीं है। वह पसीने–पसीने होकर काँपते हाथों से 200 रुपये पकड़कर सोचता है, आज तीस साल से जीवन से लड़ते रहने के बाद वह परास्त हुआ है और ऐसा परास्त हुआ कि मानो उसे नगर के द्वार पर खड़ा कर दिया गया है और जो आता है उसके मुँह पर थूक देता है। प्रेमचन्द 'रूपा' के विवाह पर टिप्पणी करते हुए कहते हैं कि रूपा के विवाह के दो दिन तक घर में धूमधाम रहती है पर होरी घर से नहीं निकलता मानों उसके मुँह में कालिख लगी हो, यह पराजय उसकी त्रासदी को अत्यधिक मार्मिक बनाती है।

प्रेमचन्द ने होरी के जीवन के अन्तिम क्षणों में 'डूबते को तिनके का सहारा' दिखलाकर अन्त में एक बार पुनः भयंकर मृत्यु के मुँह में झोंकते हुए दिखलाया है। यह मृत्यु साधारण किसान की साधारण मृत्यु जैसी अवश्य लगती है, सामाजिकता, राजतन्त्र, कानून व्यवस्था, पूँजीवादी सामन्ती अर्थव्यवस्था में यह एक आम आदमी की आम मृत्यु भी कही जा सकती है; परन्तु प्रेमचन्द ने इसे जिस औपन्यासिक रचना के स्तर पर जिया है, जिस संघर्षशीलता की नग्नता को दिखाया है उसे भारतीय किसान मजदूर और तथाकथित घिनौनी व्यवस्थाओं का पर्दाफाश करने में सक्षम बताया है, इस अर्थ में 'गोदान' की रचना निश्चित और स्वाभाविक रूप में कृषक जीवन की महान और रोमांचकारी त्रासदी को प्रभावशाली रूप में, पाठकों के अन्तः बाह्य को झकझोर कर रोंगटे खडे करके तिलमिला देने वाली सफलता में चित्रित करना 'प्रेमचन्द' जैसे उपन्यास–शिखर पुरुष का ही कार्य था ।

ऐसा लगता है, मानो प्रेमचन्द अपनी प्रत्येक रचना में यथार्थ की वैज्ञानिक दृष्टि और उपन्यास के सही रूप तथा भाषा की तलाश के लिये संघर्ष कर रहे थे । यह तलाश 'गोदान' तक अनवरत चलती है और कदाचित् उसके बाद भी चलती रहती यदि काल ने उनकी लेखनी को विराम न दिया होता । उनका अधूरा उपन्यास 'मंगलसूत्र' इसका प्रमाण है। चूँकि गोदान ही प्रेमचन्द का अन्तिम पूर्ण उपन्यास है, अतः इसी के आधार पर उनकी उपन्यास –कला का मूल्यांकन किया जा सकता है।

***

(श्री ब्रह्मावर्त सनातन धर्म महामण्डल, कानपुर द्वारा संचालित)

पं. दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय, कानपुर

वार्षिक आख्या- २००२-२००३

स्थापना

"तेरा वैभव अमर रहे माँ, हम दिन चार रहें न रहें" का जीवन-मंत्र लेकर चलने वाले इस आर्ष परम्परा के ध्वजवाहक ने भारत माता के चरणों में अपना जीवन न्योछावर कर दिया । सामान्य जनमानस के लिए यह वाक्य एक रूढ़ शब्दावली हो सकती है; किन्तु हम उनके वंशज अपनी पूरी आस्था के साथ कहते हैं कि पण्डित जी का जीवन हमारे राष्ट्र की अनुपम थाती है और उनकी साधना देश का जीवन्त इतिहास है।

वास्तव में यह विद्यालय उनके आदर्शों को मूर्त रूप देने का शपथ-पत्र है। इसका एक-एक अक्षर अंकित करने का महत्वपूर्ण कार्य जिन महनीय पुरुषों ने किया, उनमें इस विद्यालय की कल्पना-मूर्ति गढ़ने वाले मौन तपस्वी पूज्य भाऊराव, इसकी आधारशिला रखने वाले युगद्रष्टा परम पूज्य श्री गुरु जी, भव्य भवन को मूर्त रूप देने वाली त्यागमूर्ति ममतामयी बूजी और इसकी कंचन-काया में प्राण भरने वाले निष्काम कर्मयोगी माननीय बैरिस्टर साहब सदा ही स्मरणीय रहेंगे ।

संवत् 2026 की गुरु पूर्णिमा (18 जुलाई 1970) के पावन पर्व से प्रारम्भ अपना यह विद्यालय जुलाई 2003 में अपने जीवन के तेंतीस स्वर्णिम पृष्ठों को संग्रथित कर रहा है।

इस विद्यालय के कल्पना-शिल्प का आधार उदात्त भावना तथा प्रारूप जाग्रत विवेक है। हमारा लक्ष्य यह भी है कि जिन देशद्रोहियों के घिनौने षड्यंत्र तथा सत्ता की गर्हित लिप्सा के कारण पण्डित जी की क्रूर हत्या की गयी, उन विषैले विचारों को आमूल समाप्त कर दिया जाये और ऐसे विष-वृक्ष फिर कभी न पनपें, इसकी सुनिश्चित व्यवस्था भी की जाये ।

पं. दीनदयाल जी भारत, भारती और भारतीयता के मूर्तिमान स्वरूप थे । इस विद्यालय के प्रयोग और परिणाम उनकी इसी भावना की प्रतिकृति हैं। विद्यालय द्वारा संस्कारित दृढ इच्छा-शक्ति सम्पन्न आदर्शप्राण पीढ़ी शनैः-शनैः समाज को अपने अस्तित्व का बोध कराने लगी है। अतः हम विश्वासपूर्वक कह सकते हैं कि ब्रिटिश दासता के काल से चली आ रही पब्लिक स्कूलों की भ्रामक चकाचौंध से सर्वथा अलग यह विद्यालय **भारतीय संस्कारों की पुनर्स्थापना में एक सुस्पष्ट, गतिमान, तेजोदीप्त और प्रभावी उपक्रम है** तथा वर्तमान व्यावसायिक प्रलिप्सु कर्दम में एक उन्नत-अडिग शैल-शृंग ।

कलेवर

षष्ठ कक्षा के मात्र 24 छात्रों से प्रारम्भ होकर निरन्तर प्रगति करता हुआ यह विद्यालय आज विज्ञान वर्ग में मान्यता प्राप्त पूर्ण विकसित इण्टरमीडिएट विद्यालय है।

जिस भूमि पर यह विद्यालय स्थित है, वह श्री ब्रह्मावर्त सनातन धर्म महामण्डल द्वारा प्रदत्त है। महामण्डल की इस उदारता का विद्यालय चिर ऋणी रहेगा । प्रारम्भिक अर्द्धचन्द्राकार दुमंजिले भव्य भवन का निर्माण श्रद्धेया बूजी ने अपने नितान्त व्यक्तिगत साधनों से करावाया, जो अपने में एक महिमामय उद्धरण है। आवश्यकतानुसार धीरे-धीरे इस भवन का विस्तार तथा अन्य भवनों का भी निर्माण होता गया यथा विज्ञान-वीथी, भाऊराव-भवन तथा नरेन्द्र निवास छात्रावास, प्राचार्य-आवास, माधव-स्मति क्रीड़ा-परिसर व प्रेक्षागार तथा आचार्य और कर्मचारी आवास आदि । वर्तमान समय में लगभग 7500 वर्ग फीट का एक भव्य विशालकक्ष निर्माणधीन है। इसके लिये विद्यालय विद्वान सांसद श्री नरेंद्र मोहन जी का आभारी है क्योंकि उन्होंने कृपापूर्वक अपनी सासद

निधि से पच्चीस लाख रुपये का अनुदान देकर विद्यालय परिवार को कृतार्थ किया है। दैव दुर्विपाक से आदरणीय नरेंद्र मोहन जी (20 सितंबर), 2002 को असमय ही इस संसार से विदा हो गये । हम सभी उस महानीय व्यक्तित्व के प्रति श्रद्धावनत हैं।

इस समय षष्ठ से द्वादश तक 7 कक्षाओं के 16 अनुभागों में छात्रों की संख्या 794 है। इनमें से 198 छात्रावासीय हैं जो कि विद्यालय के ऊपरी खण्ड, पीछे भाऊराव–भवन तथा नरेन्द्र–निवास में रहते हैं। इनमें उत्तर प्रदेश के विभिन्न जिलों के साथ ही बिहार, झारखंड तथा अरुणांचल प्रदेश के छात्र भी हैं, जिनके भोजन, स्वास्थ्य, स्वाध्याय, अनुशासन आदि की चिन्ता विद्यालय–परिसर में ही निवास करने वाले सुयोग्य आचार्यों द्वारा की जाती है। वास्तव में **हमारी अभिलाषा और प्रयास इस विद्यालय को पूर्णरूपेण आवासीय विद्यालय बनाने का** है, जिससे अपना सुचिंतित व्यक्ति–निर्माण का कार्य हम और अधिक प्रभावी ढंग से कर सकें ।

विद्यालय में पढ़ाने वाले आचार्यो की संख्या प्रधानाचार्य सहित वर्तमान समय में 29 है। लगभग सभी प्रशिक्षित परास्नातक हैं।

विद्यालय के पास लगभग **एक लाख रु. से अधिक मूल्य की 15000 पुस्तकों से सम्पन्न पुस्तकालय** भी है। वाचनालय में 6 दैनिक, 3 साप्ताहिक तथा 9 मासिक पत्र–पत्रिकायें आती हैं। मुख्य समाचार, सुभाषित, सामान्य ज्ञान इत्यादि श्याम–पटों पर लिखे जाते हैं।

इस विद्यालय को शासन द्वारा विशिष्ट विद्यालय के रूप में कुछ विशेषताओं के आधार पर ही मान्यता दी गयी थी, जिनमें **छात्रों पर व्यक्तिगत ध्यान** प्रमुख है। इसी विशेषता के प्रति सचेत रह कर हम विद्यालय के छात्रों के समग्र विकास में सफल हैं।

शैक्षिक उपलब्धियाँ

परिषदीय परीक्षाएँ

विद्यालय की दशम कक्षा का प्रथम दल 1975 में तथा द्वादश का प्रथम दल 1981 में उत्तर प्रदेश की माध्यमिक शिक्षा परिषद की परीक्षा में सम्मिलित हुआ । परीक्षा–परिणाम प्रारम्भ से ही अत्युत्तम रहा है। प्रदेश में सर्वोत्कृष्ट परीक्षा परिणामों के आधार पर ही शासन विगत वर्षों से विद्यालय को इण्टरमीडिएट का सर्वश्रेष्ठ विद्यालय घोषित कर रहा है। वर्ष 2002 का परीक्षा–परिणाम निम्नांकित है:

वर्ष २००२

	दशम	द्वादश
कुल छात्र	132	110
उत्तीर्ण	131	107
न्यायालय में विचाराधीन	01	02
ससम्मान	37	19
प्रथम श्रेणी	93	78
द्वितीय श्रेणी	01	10
तृतीय श्रेणी	00	00
प्रदेश में स्थान	6	01
	(18वाँ, 19वाँ, 22वाँ, 22वाँ, 24वाँ, 25वाँ)	(19 वाँ)

अद्यतन समेकित (cumulative)

	दशम (28 वर्षों का)		द्वादश (21 वर्षों का)	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
कुल छात्र	2422		1989	
उत्तीर्ण	2406	99.03	1972	99.14
ससम्मान	921	38.02	445	21.41
प्रथम श्रेणी	2008	82.90	1555	78.17
द्वितीय श्रेणी	0315	13.00	352	17.19
तृतीय श्रेणी	0010	00.41	05	00.25
प्रदेश में स्थान	97		76	

अन्य महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ

1. शासन द्वारा आयोजित डॉ. संपूर्णानंद तथा श्रीमती महादेवी वर्मा वाद–विवाद प्रतियोगिताओं में अपने विद्यालय के छात्रों ने प्रथम स्थान प्राप्त कर पूरे प्रदेश में कीर्तिमान स्थापित किया है।

2. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद उत्तर प्रदेश ने विद्यालय की दशम कक्षा के पाँच छात्रों को गणित विषय में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने पर 750 रु. के ड्राफ्ट के साथ साइस एवॉर्ड से सम्मानित किया है।

3. रीजनल मैथमेटिकल ओलंपियाड में विद्यालय की द्वादश कक्षा के छात्र आदित्य कुमार तिवारी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया ।

4. UPTECH द्वारा आयोजित छात्रवृत्ति परीक्षा में संपूर्ण मंडल में विद्यालय का प्रथम स्थान आया तथा तीन छात्रों का प्रदेश स्तरीय प्रतियोगिताओं के लिये चयन हुआ ।

प्रतियोगी परीक्षाएँ

इंजीनियरिंग, मेडिकल तथा प्रशासनिक प्रतियोगी परीक्षाओं में विद्यालय के छात्रों की सफलता का गौरवशाली अध्याय भी प्रथम बैच से ही प्रारम्भ हो गया था । गत वर्ष की उपलब्धियाँ इस प्रकार हैं:

जे.ई.ई. / संयुक्त प्रवेश परीक्षा (आई.आई.टी., मर्चेण्ट नेवी तथा धनबाद खनन महाविद्यालय हेतु)	15
यू.पी.सी.ए.टी. / (क्षेत्रीय अभियान्त्रिकी विद्यालय)	65
कुल (इंजीनियरिंग)	80
सी.पी.एम.टी. / संयुक्त चिकित्सा प्रवेश परीक्षा (मेडिकल कॉलेजों हेतु)	05

इसके अतिरिक्त सैन्य–सेवा की परीक्षाओं में भी अपने विद्यालय के अनेक छात्र चुने जा चुके हैं तथा विद्यालय से प्राप्त संस्कारों के आधार पर सामाजिक–जीवन में नये आयाम स्थापित कर रहे हैं। संघ लोक सेवा आयोग की प्रशासनिक परीक्षा में भी अपने विद्यार्थी पीछे नहीं हैं। विगत वर्षों की भाँति हमको विश्वास है कि इस बार भी संघ लोक सेवा आयोग के परिणाम आने पर अपने विद्यालय के कई छात्र शीर्ष सफलता प्राप्त करेंगे ।

शिक्षा विभाग द्वारा संचालित 'एकीकृत छात्रवृत्ति' तथा 'राष्ट्रीय प्रतिभा खोज' परीक्षाओं में भी हमारे छात्र कीर्तिमान स्थापित करते आ रहे हैं।

विद्या भारती द्वारा संचालित 'संस्कृति ज्ञान परीक्षा' तथा हिन्दी समिति की 'हिन्दी ज्ञान परीक्षा' में भी अपने छात्र प्रतिवर्ष शत प्रतिशत सफलता पाते हैं। श्री ब्रह्मावर्त सनातन धर्म महामण्डल द्वारा आयोजित मानस तथा गीता परीक्षाओं में अपने विद्यालय को सदैव महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त होता है।

छात्रवृत्तियाँ

शासन द्वारा स्वीकृत छात्रवृत्तियों का वर्तमान सत्र का विवरण इस प्रकार है–

1. राष्ट्रीय प्रतिभा छात्रवृत्ति 01
2. राष्ट्रीय योग्यता छात्रवृत्ति 75
3. राष्ट्रीय छात्रवृत्ति 45
4. एकीकृत छात्रवृत्ति 92

इसके अतिरिक्त हमारे अनेक छात्र अन्य स्रोतों से भी छात्रवृत्ति पा रहे हैं । इन छात्रवृत्तियों के दाता महानुभावों तथा न्यासों/संस्थाओं के नाम निम्नांकित हैं । हम इनके प्रति आभार व्यक्त करते हैं।

श्री हरि भार्गव ट्रस्ट	श्री कन्हैयालाल गोपालदास अग्रवाल
श्री सोमनाथ चोपड़ा	श्रीमती सरस्वती देवी एवं श्री हरि मोहन गर्ग छात्रवृत्ति
श्री इन्द्रजीत जैन	श्रीमती प्रेमा गुप्ता छात्रवृत्ति
पं. दीनदयाल उपाध्याय स्मारक शिक्षा समिति	श्री जयनारायण चेरिटेबल ट्रस्ट
श्री प्रेम नारायण जी सोमानी	इंडिया जापान सोसाइटी
श्रीमती सावित्री अग्रवाल	आर्य समाज स्वरूप नगर सेवा–समिति

तथा पूर्व छात्र डॉ. सुनीत गुप्त, चि. प्रवीण भागवत, चि. महेश सिंह चौहान, वि. संदीप मेहरोत्रा, जयंत सोमानी एवं चि. पंकज रूसिया ।

विद्यालय के पूर्व छात्र स्व. गुरुवर शरण अवस्थी की स्मृति में उत्कृष्ट अभिनेता छात्र को पुरस्कार दिया जाता है। यह स्थायी पुरस्कार उनके पिता डॉ. सन्त शरण अवस्थी ने प्रारम्भ किया था ।

पाठ्येतर गतिविधियाँ

खेल–कूद व शारीरिक शिक्षा

विद्यालय में शारीरिक शिक्षा की भी व्यवस्थित योजना है। सामूहिकता की भावना विकसित करने हेतु योगासन व समता पर विशेष ध्यान दिया जाता है। साथ ही अपने सीमित साधनों में हमने खो–खो, कबड्डी, बॉलीबॉल, टेबिल टेनिस तथा बॉक्सिंग जैसे खेलों में पर्याप्त कौशल प्रदर्शित किया है। बॉक्सिंग की राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में विद्यालय के पाँच छात्रों ने कानपुर मंडल का प्रतिनिधित्व करते हुए दो रजत पदक तथा तीन कांस्य पदक प्राप्त किये ।

विद्यालय में सैनिक शिक्षा को भी महत्व दिया जाता है। इस दृष्टि से राष्ट्रीय कैडेट कोर (एन.सी.सी.) की वरिष्ठ तथा कनिष्ठ इकाइयाँ विद्यालय में सफलतापूर्वक चलायी जा रही हैं । इनके प्रभारी विद्यालय के ही आचार्य हैं।

रचनात्मक लेखन

छात्रों में रचनात्मकता के विकास के लिये एक वार्षिक पत्रिका नीराजन तथा एक नित्य–भित्ति पत्रिका 'प्रयास' प्रकाशित होती है। प्रयास में छात्र लेख, निबंध, कहानियाँ, कविताएँ तथा विविध आकर्षक चित्र बनाकर प्रकाशित करते हैं, इसको विद्यालय के ही एक आचार्य संयोजित करते हैं।

देशदर्शन

घर के सुरक्षित व सुविधाभोगी वातावरण से निकलकर छात्र स्वावलम्बन एवं कठोर जीवनचर्या का अभ्यास करते हुए देश का प्रत्यक्ष अध्ययन करें, इस दृष्टि से विद्यालय के छात्र प्रायः प्रतिवर्ष ही देशदर्शन हेतु जाते रहते हैं। इस योजना के अंतर्गत अपने छात्र देशदर्शन हेतु देश के लगभग सभी कोनों में जा चुके हैं।

नैतिक शिक्षा

हमारी समय सारणी में नित्य प्रातः मानस, गीता आदि ग्रंथों के शिक्षाप्रद अंशों से युक्त प्रार्थना के बाद सदाचार बेला का प्रावधान है, जिसमें पूर्व निर्धारित आचार्य कथा, जीवनी आदि के माध्यम से छात्रों को आदर्श जीवन का पाठ पढ़ाते हैं । छात्रों में सर्वगुण–सम्पन्न व्यक्तित्व की स्थापना के प्रोत्साहन हेतु नियत मापदंडों पर खरा उतरने वाले सर्वश्रेष्ठ छात्र को विद्यालय–रत्न पुरस्कार दिये जाने की भी योजना है।

समग्र व्यक्तित्व विकास

निर्भीक सुचारू अभिव्यक्ति, उत्तरदायित्व तथा नेतृत्व भावना छात्रों की मानसिकता का अनिवार्य अंग बने, इस दृष्टि से विद्यालय में तीन संस्थाएँ कार्य करती है।– अष्टम कक्षा तक बाल–भारती, नवम–दशम में किशोर भारती और एकादश–द्वादश में तरुण–भारती – जिनके अन्तर्गत छात्र विद्यालय के विविध सामूहिक कार्यक्रमों का संचालन करते हैं। छात्रावास में भी विभिन्न पदों पर नियुक्त छात्र निर्णय–प्रक्रिया तथा छात्रावास–संचालन में गंभीर भूमिका निभाते हैं।

विद्यालय के बाहर नगर, जनपद, प्रदेश स्तरों पर आयोजित वाद–विवाद, लेखन, ललित कला प्रतियोगिताओं में विद्यालय के छात्र लगातार भाग लेकर प्रतिष्ठा पाते आये हैं।

कंप्यूटर शिक्षण

इस वर्ष कम्प्यूटर प्रयोगशाला को और अधिक विस्तार दिया गया है। अब इसमें 25 कम्प्यूटरों के साथ 3 प्रिंटर व 1 स्कैनर भी है। सॉफ्टवेयर के माध्यम से कम्प्यूटरों पर ही पूर्ण अध्यापन तथा स्वनिर्मित सॉफ्टवेयर द्वारा ऑन –लाइन परीक्षा हमारी विशिष्टता है। इसके साथ ही हमने अपने विद्यालय में छात्रों की प्रवेश–प्रक्रिया को भी कम्प्यूटीकृत कर दिया है। प्रवेश–परीक्षा का परिणाम भी गत वर्ष से इण्टरनेट पर जारी किया जाने लगा है। इसके अतिरिक्त हम अन्य संस्थाओं के लिये भी सॉफ्टवेयर का निर्माण कर रहे हैं। इनमें दीनदयाल शोध संस्थान, नई दिल्ली की वेब साइट तथा इसी के शैक्षणिक अनुसंधान केन्द्र के लिये बनायी जा रही शैक्षिक फिल्में प्रमुख हैं । साथ ही भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, कानपुर के साथ मिलकर कुछ अन्य सॉफ्टवेयर भी बनाये जा रहे हैं।

युग भारती

बाल, किशोर और तरुण–भारती की श्रृंखला में अगली कड़ी है युग–भारती अर्थात् विद्यालय के पूर्व छात्रों की संस्था । जिस उदात्त लक्ष्य की प्राप्ति हेतु इस विद्यालय की स्थापना की गयी थी, उसकी पूर्ति हेतु यह अनिवार्य था कि दशम या द्वादश उत्तीर्ण करने को ही छात्र के विद्यालय से जुड़ाव की समाप्ति न माना जाये। इसीलिए बहुत पहले ही पूर्व छात्रों की संस्था के रूप में संविधान, कार्यकारिणी इत्यादि के साथ तरुण भारती की स्थापना हो गयी थी, जो कि अब युग–भारती के नाम से पंजीकृत हो चुकी है ।

पूर्व छात्रों का विद्यालय से यह जुड़ाव एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हे और अपने आप में एक इतिहास भी है। यही हमारे विद्यालय को अन्य विद्यालयों से अलग एक पहचान देता है।

भारतीय चिंतन में शिक्षा का उद्देश्य विषय का कक्षा–शिक्षण मात्र नहीं, अपितु व्यक्ति–निर्माण के माध्यम से समाज–जागरण माना गया है। समाज का प्रज्ञा–प्रवाह अवरूद्ध होना भी स्वाभाविक है, अतः आदर्श स्थिति यह होगी कि विद्यालय समाज को ऐसे सुयोग्य नागरिक प्रदान करें जो समस्त सामाजिक विकृतियों से अछूते रह कर अपनी तेजस्विता से निरंतर नवजीवन का संचार करते हुए प्रज्ञा–प्रवाह की निरन्तरता बनाए रखें। दुर्भाग्यवश आज अधिसंख्य शिक्षा संस्थान इस उद्देश्य को पूरा नहीं कर पा रहे हैं । ऐसे में युग–भारती के सहयोग से विद्यालय की प्रभावी भूमिका निश्चय ही भारत के स्वर्णिम भविष्य की दिशा में एक आश्वस्ति है।

अंत में ईश्वर से प्रार्थना है कि छात्रों में राष्ट्र–निष्ठा से परिपूर्ण समाजोन्मुखी व्यक्तित्व के उत्कर्ष में आप सभी समाज–बंधुओं का सहयोग हमें निरन्तर मिलता रहे ।

– प्रधानाचार्य

❋ ❋ ❋

मैं कहता आँखिन की देखी

(वार्षिकोत्सव की रपट)

आलोक मिश्र, एकादश

किसी भी विद्यालय का वार्षिकोत्सव उसकी सांस्कृतिक चेतना का लौकिक स्वरूप होता है। देश में तमाम विद्यालयों में वार्षिकोत्सव होते हैं जहाँ सब कुछ खाने–पीने, फैन्सी ड्रेस, सिंगिंग, दो चार घिसे–पिटे भाषणों को समेटता हुआ एक 'पिकनिक' की शक्ल में अपना उपसंहार लिख देता है। दीनदयाल विद्यालय का वार्षिकोत्सव इन सब से हटकर है; क्योंकि वह हमारे अन्तःकरण को कहीं न कहीं छू जाता है और पूरे परिवेश को किसी दिव्य धरा धाम पर अवतरित करता है। विद्यालय के गत–वार्षिकोत्सव के विविध कार्यक्रमों को 'आलोक मिश्र' ने अपनी कलम से बड़ी कुशलता से बाँधा है । उसकी यह पत्रकारीय दृष्टि दृष्टव्य है ।

– सम्पादक

विद्यालय के 31वें वार्षिकोत्सव के आयोजन के मुख्य दिन प्रातःकाल युग–भारती सम्मेलन हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में सम्पूर्ण भारत के मानस पटल पर एक ओजस्वी हिन्दू नायक की यशस्वी छवि अंकित करने वाले, राम मन्दिर–आन्दोलन की धुरी माननीय श्री अशोक सिंहल जी थे। कार्यक्रम प्रातः 9.00 बजे प्रारम्भ हुआ । कार्यक्रम की भूमिका आचार्य श्री दिनेश भदौरिया जी ने प्रस्तुत की ।

प्रधानाचार्य जी ने युग–भारती के निर्माण का उद्देश्य तथा प्रारम्भिक परिस्थितियाँ स्पष्ट करते हुए बताया कि विद्यालय का प्रारम्भ मात्र पढाई लिखाई का केन्द्र स्थापित करना नहीं था अपितु यह भावनाओं का एक उबाल था। विद्यालय में पढ़ने वाले छात्रों के मन में देशभक्ति तथा समाज का कार्य करने की भावना के स्थायित्व के लिए पहले बाह्य रूप में तरूण भारती का गठन हुआ परन्तु बाद में इसे युग भारती के रूप में परिवर्तित कर दिया गया। वास्तव में युग–भारती भावना तथा विश्वास का पौधा है जिसे छात्रों को मिलकर पुष्पित व पल्लवित करना है।

श्री सिंहल जी ने बताया कि विद्यालय की नींव रखने से लेकर आज तक वे विद्यालय से सम्बन्धित रहे हैं। उन्होंने अपने भावपूर्ण उद्‌बोधन में कहा कि ओमशंकर जी का व्यक्तित्व तथा जीवनादर्श ही उन्हें इस विद्यालय तक ले आया है। इसमें उन्होंने मात्र एक 'पोस्टमैन' का काम किया । जिस व्यक्ति को जहाँ होना चाहिये था उसे परमात्मा ने वहीं पहुँचा दिया। बूजी माननीय भाउराव जी तथा गुरुजी की कल्पनाओं, भावनाओं तथा अपेक्षाओं का बोध कराते हुए श्री अशोक जी ने बताया कि भारत की उन्नति के मूल में मुख्यतः चार पुरूषार्थ धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष हैं। अर्थ तथा काम की पूर्ति धर्म की मर्यादा तोडकर होने के कारण ही देश की प्रगति अवरूद्ध हो गयी है। देव शक्तियाँ सदा ही सृष्टि संचालन के लिए सक्रिय रहती हैं तथा मानव का मार्गदर्शन तथा दिशा–निर्देशन करती हैं। परन्तु मानव उन संकेतों को समझकर उन पर विश्वास नहीं जमा पाता है। देव शक्तियाँ संकट निवारण के लिए आशीर्वाद के रूप में सदा ही साथ रहती हैं। भगवान राम के साथ वशिष्ठ, चन्द्रगुप्त के साथ चाणक्य, समर्थगुरू रामदास के आशीर्वाद से शिवाजी की पराजय कभी नहीं हुई । हमें अपने विद्यालय में उपस्थित देवशक्तियों के संवर्धन के लिये कठोर साधना तथा तपश्चर्या का पथ अपनाना होगा ।

भारतवर्ष में परिवार की कल्पना सम्पूर्ण समाज से की गयी है। व्यक्तित्व विकास के साथ–साथ हमें समाज का कार्य भी करना है। हमारा लक्ष्य मात्र भौतिक जीवन तथा उपलब्धियों की उपासना नहीं है बल्कि

सृष्टि के नियन्ता को पाकर एकाकार होना है। जब भारवर्ष अपनी मूल सभ्यता व संस्कृति को पहचानकर उस पर श्रद्धा तथा विश्वास करना सीख जाएगा तथा उस अमूल्य धरोहर पर गर्व करेगा तो भारत वही स्थिति पुनः प्राप्त कर लेगा जो कभी उसे प्राचीनकाल में प्राप्त थी ।

हम सभी का आदर्श बजरंग बली हैं। सुग्रीव को राज्य मिल गया, विभीषण को राज्य मिल गया परन्तु हनुमान जी ने किसी सम्पत्ति की इच्छा नहीं की । हमें भी लोकेषणा, पुत्रेषणा तथा वित्तेषणा को त्यागकर संकल्प पूर्वक अपने अभीप्सित साधना के पथ पर चल देना है।

अपने सम्भाषण के अन्त में माननीय श्री सिंहल जी ने युग–भारती के सदस्यों का मार्गदर्शन करते हुए उन्हें अपने साधनों तथा सुविधाओं से ही कोई भी प्रोजेक्ट (कार्यक्रम) बनाकर आगे समाजसेवा का कार्य करने को कहा। कार्यक्रम के अन्त में गुजरात में हुए नरसंहार पर शोक व्यक्त किया गया । अरिन्दम जी ने 'वन्देमातरम्' करवाया तथा इसके बाद 11.00 बजे कार्यक्रम समाप्त हो गया ।

इसी दिन शाम 6.00 बजे विद्यालय के वार्षिकोत्सव का मुख्य कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ । मुख्य अतिथि माननीय श्री अशोक सिंघल जी ने युग–दधीचि पं. दीनदयाल उपाध्याय के चरणों में पुष्पार्पण किया । तत्पश्चात माँ सरस्वती की वन्दना तथा आशुतोष द्विवेदी का अध्यक्षीय भाषण सम्पन्न हुआ । विद्यालय की एन.सी.सी. की दोनों टुकड़ियों ने कदम से कदम मिलाकर पूरे उत्साह के साथ मंच से गुजरते हुए माननीय मुख्य अतिथि की मान–वन्दना की। एन.सी.सी. की दोनों टुकड़ियों का नेतृत्व क्रमश भैया अंकुर राय तथा भैया नीरज द्विवेदी ने किया । अनुगामी घोष की टुकड़ी ने घोष प्रमुख भैया नमन चतुर्वेदी के नेतृत्व में कदम तथा स्वर का तालमेल बैठाते हुए एक मनोहर दृश्य उपस्थित किया । विद्यालय के विद्यार्थियों ने विभिन्न प्रकार के योगों का प्रदर्शन करते हुए अनुशासन तथा शारीरिक कुशलता का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया तथा यह दिखाया कि "अनेकता में एकता क्या है ?"

फिर द्रुत गति से योग प्रारम्भ हुआ । अपने हृदय में दृढ़ विश्वास तथा चेतना का भण्डार लिये हुए उत्साही छात्रों ने अतिशीघ्रता से योग सम्पन्न किये । हमारे भारतीय जाँबाज सिपाही सीमा पर किस प्रकार की प्रतिकूल परिस्थितियों में भारक की पीढ़ियों के भविष्य को बचाने के लिये अपने वर्तमान को हथेली पर लेकर चलते हैं। इसके लिये एन.सी.सी. के छात्रों ने एक विशेष कार्यक्रम प्रस्तुत किया । भारतीय सेना का नेतृत्व अंकुर राय तथा आतंकवादियों के प्रमुख का किरदार भैया गौरव श्रीवास्तव व पुनीत दुबे ने निभाया ।

इसके बाद मुख्य अतिथि जी द्वारा पुरस्कार वितरण का क्रम प्रारम्भ हुआ सर्वप्रथम उ. प्र. की परिषदीय परीक्षा में वरीयता सूची में स्थान पाने वाले छात्रों अमित गौतम, अभिनव चतुर्वेदी, आनन्द पटेल, अभिषेक, शुक्ल, आलोक मिश्र, अमित गुप्त, अंकुश सिंह तथा दीपक चौहान को सम्मानिक किया गया ।

ससम्मान 39 छात्रों को भी पुरस्कृत किया गया । संस्कृति ज्ञान परीक्षा में 100 अंक पाने वाले छात्रों विपिन व. रोहित ओझा को पुरस्कृत किया गया । हाईस्कूल परीक्षा में गणित में 100 अंक लाने वाले छात्रों को सांइस एवार्ड दिया गया । प्रदेश को प्रतिष्ठा प्राप्त सम्पूर्णानन्द वाद–विवाद प्रतियोगिता में भैया अभिषेक अग्निहोत्री तथा ऋषि तिवारी एवं महादेवी वर्मा वाद विवाद प्रतियोगिता में भैया अरविन्द प्रताप तथा निखिल सचान ने सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया था अतः उन्हें भी पुरस्कृत किया गया । माननीय प्रधानाचार्य जी ने विद्यालय प्रगति की आख्या प्रस्तुत की। उन्होंने बताया कि विद्यालय की स्थापना भावना की नींव पर हुई। विद्यार्थी हमारे समाज की थाती हैं तथा उनका जीवन देश की धरोहर है। विद्यालय द्वारा संस्कारित दृढ़ इच्छाशक्ति सम्पन्न छात्र शनैः शनैः समाज को अपने अस्तित्व का बोध कराते हुए समाज की जीवनशैली तथा ब्रिटिश दासता के काल से चली आ रही पब्लिक स्कूलों की भ्रामक चकाचौंध से सदा ही अप्रभावित रहते हुए भारतीय संस्कारों की पुनर्स्थापना में एक प्रभावी उपक्रम कर रहे हैं।

वार्षिक आख्या के बाद– "लक्ष्य तक पहुँचे बिना पथ में पथिक विश्राम कैसा" .... पंक्तियों से गीत प्रारम्भ करके भैया ऋतुराज शुक्ल ने युवावर्ग की भावनाओं को झकझोर कर पथ पर अविराम गति से चलने का आह्वान किया।

विद्यालय की प्रबंध समिति के अध्यक्ष माननीय इन्द्रजीत जैन जी ने मुख्य अतिथि का परिचय कराया। श्री सिंहल जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि छात्रों के लिये यह समय सर्वतोमुखी विकास का है। हमें इसका प्रारम्भ छात्र जीवन से ही कर देना चाहिये । मुख्य रूप से अपना शारीरिक तथा आध्यात्मिक विकास करना चाहिये। हमें अपनी जीवन शैली भारत के ऋषि–मुनियों की परम्परा के अनुसार ढालनी चाहिये । इस विद्यालय में आकर हम दैवी सम्पदा के अधिकारी बन गये हैं। 'यत्र योगेश्वर कृष्णो' की भावना का आशय स्पष्ट करते हुए उन्होंने बताया कि नर तथा नारायण का समन्वय ही विजय प्राप्त करायेगा । इसके बाद श्री इन्द्रजीत जैन तथा श्री रामबालक मिश्र जी ने मुख्य अतिथि जी को स्मृति चिह्न तथा उत्तरीय भेंट की ।

धन्यवाद ज्ञापन करते हुए प्रबन्ध समिति के सचिव माननीय श्री वीरेन्द्रजीत सिंह जी ने बताया कि आध्यात्मिकता ने ही हमें जगतगुरु बनाया तथा आज हम उसी को खो बैठे हैं, यही हमारे पतन का कारण हैं। वन्देमातरम् के पश्चात् 7.55 पर कार्यक्रम समाप्त हो गया ।

मुख्य कार्यक्रम के अगले दिन रंगमंचीय कार्यक्रमों की एक लम्बी श्रृंखला होती है। इस दिन कार्यक्रम सायं 6.00 बजे से प्रारम्भ होकर रात्रि 10.00 बजे तक चला ।

कार्यक्रम का प्रारम्भ विद्यालय की किशोर भारती के मंत्री भैया सौम्यशील ने प्रधानाचार्य जी को मुख्य अतिथि श्री योगेन्द्र कुमार जी के माल्यार्पण के लिये आमंत्रित करके किया । इसके उपरान्त एक अखण्ड तथा पावन परम्परा का निर्वाहन करते हुए सभी छात्रों ने माँ सरस्वती की वन्दा की । प्रार्थना के उपरान्त अपना अध्यक्षीय भाषण देते हुए भैया शोभित खरे ने विद्यालय को बूजी के सपनों पर खरा उतरता हुआ बताया ।

इसके उपरान्त छात्रों के उत्साहवर्धन के लिये पुरस्कार वितरण की एक लम्बी श्रृंखला प्रारम्भ हुई। सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का 'गुरुवर शरण अवस्थी' पुरस्कार भैया गौरव कुमार सिंह ने 'युगपुरुष' नाटक में कात्यायन की उत्कृष्ट भूमिका के लिये प्राप्त किया । द्वितीय स्थान भैया अभिषेक अग्निहोत्री ने चाणक्य की भूमिका के लिये तथा भैया कृतिवास ने 'सिकन्दर' की भूमिका के लिये तृतीय स्थान प्राप्त किया । 'युगपुरुष' नाटक का कुशल निर्देशन करने के लिये माननीय बालेश्वर जी शर्मा को विशिष्ट सम्मान से अलंकृत किया गया । हास्यनाटक में दमदार भूमिका के लिये अभिषेक रूसिया अंकित तिवारी, गौरव श्रीवास्तव, ऋषभ श्रीवास्तव आदि को पुरस्कार दिया गया । एन.सी.सी. के बेस्ट कैडेट के लिये नीरज द्विवेदी, अवतंश प्रभात, अंकुर राय तथा हेमन्त पटेल चुने गये। घोषवादन में नमन चतुर्वेदी, आलोक मिश्र तथा गौरव कुमार सिंह को पुरस्कार दिया गया । भूगोल प्रदर्शनी में शोभित खरे, सिद्धार्थ सौरभ तथा राजीव रंजन में प्रथम स्थान पाया ।

इसके पश्चात् मुख्य अतिथि जी के अभिभाषण की बारी आयी उन्होंने कहा कि पं. दीनदयाल जी एक साधक थे । संकटमोचक हनुमान जी को उन्होंने भक्ति की पराकाष्ठा पर पहुँचा हुआ बताया । छात्रों के लिये मंगल कामना करते हुए मुख्य अतिथि जी ने अपने वक्तव्य को विराम दिया । धन्यवाद ज्ञापन करते हुए विद्यालय के प्रबन्ध समिति के सचिव मा. श्री वीरेन्द्रजीत सिंह जी ने मीराबाई के तुलसीदास को लिखे गए पत्र के जवाब में तुलसीदास जी द्वारा भेजे गए प्रत्युत्तर का प्रसंग बताते हुए कवि की कला की शक्ति का परिचय कराया ।

इसके बाद रंगमंचीय प्रस्तुतियों का क्रम प्रारम्भ हुआ । इस श्रृंखला की प्रथम कड़ी थी 'सरस्वती वन्दना' कार्यक्रम की संचालिका थीं हमारी अंग्रेजी विषय की आचार्या श्रीमती शारदा राव जी । वन्दना के बोल थे "जय माँ सरस्वती वीणा मधुर बजा दें ।" इस कार्यक्रम में छोटे छोटे बच्चों का अभिनय देखकर अभिभावकों का मन

मुग्ध हो गया । इसके उपरान्त बारी थी अभिनय गीत की । बोल थे– 'लक्ष्य न ओझल होने पाये कदम मिलाकर चल' इस गीत ने छात्रों के मन की देशभक्ति भावना तथा लक्ष्य के प्रति एकाग्रता की भावना को अभिव्यक्ति दी। इस कार्यक्रम में भाग लेने वाले प्रमुख छात्र थे– आशुतोष बाजपेयी, गौरव यादव, क्षितिज दुबे, सौरभ द्विवेदी, अमोल अग्निहोत्री आदि।

'देश की अस्मिता बचाने हमको एक साथ आना पडेगा' बोल के साथ कव्वाली का प्रारम्भ हुआ । कव्वाली में भाग लेने वाले छात्र अमित शर्मा, सुमित शर्मा, अलौकिक श्रीवास्तव आदि थे । इन सभी कार्यक्रमों का निर्देशन किया श्री मंयकमणि जी ने । इन कार्यक्रमों का मार्गदर्शन तथा संरक्षक का गुरुतर कार्य सदा की भाँति ही आचार्य 'श्री गया प्रसाद वर्मा' जी ने किया । आचार्य श्री ने मंच सज्जा, स्वरूप सज्जा व वेशादिव्यवस्था भी की।

इसके उपरान्त उच्च कक्षाओं द्वारा अभिनीत नाटकों का क्रम आया । इस नाटक के मूल लेखक प्रसिद्ध व्यंग्य लेखक 'हरिशंकर परसाई' थे । हास्य नाटक था– 'मातादीन चाँद पर' । इसकी परकथा के अन्तर्गत एक भारतीय पुलिस ऑफीसर को चाँद पर भेजा गया । जहाँ पहुँचकर उसने चाँद की पुलिस व्यवस्था में क्रांतिकारी परिवर्तन किये। इसका मनोरंजक चित्रण करते हुए कलाकारों ने भारतीय पुलिस की खामियों का रोचक चित्रण जनता के सामने प्रस्तुत किया । इस नाटक के निर्देशन तथा प्रबन्धन का दायित्व संरक्षक आचार्य श्री बीरेन्द्र त्रिपाठी ने सँभाला जो कि अच्छे खिलाड़ी होने के साथ–साथ निपुण कलाकार भी हैं तथा छात्रावास अधीक्षक के रूप में वर्तमान समय में छात्रों के बहुमुखी विकास के लिये प्रयत्नशील हैं। इनकी उपस्थिति से सम्पूर्ण कलाकर वर्ग उत्साहित रहा । नाटक के मुख्य पात्र प्रत्यूष प्रांजल, गौरव श्रीवास्तव, नमन चतुर्वेदी, अभिषेक, जयन्त झा, अभिषेक यादव नवनीत कुमार, दृश्यमुनि चाकमा, ईशान अग्रवाल, सुमित शुक्ल, अनुज मिश्र, निशान्त, मनीष आदि थे ।

मर्मस्पर्शी एकल अभिनय द्वारा दर्शकों की भावनाओं को झकझोर देने वाले छात्र थे गौरव कुमार सिंह । इनके एकल अभिनय के माध्यम से सभी ने यह जान लिया कि वर्तमान समय में जेहाद को कैसा क्रूर तथा भीषण रूप देकर युवकों को पथभ्रष्ट किया जा रहा है।

इसके उपरान्त प्रस्तुत हुआ मुख्य नाटक जिसमें प्राचीन गुरु शिष्य परम्परा का निर्वाहन करते हुए शिष्य कौत्स अपने गुरु वरतन्तु द्वारा माँगी गयी गुरु दक्षिणा को देते हैं। राजा रघु की उदारता का प्रदर्शन करते हुए उनकी दानशीलता का चित्रण किया गया । नाटक की प्रस्तुति के पीछे प्रधान उद्देश्य यह था कि वर्तमान समाज गुरु शिष्य परम्परा के प्राचीन भावमयी स्वरूप को पुनः याद करे जिसमें गुरु शिष्य सम्बन्ध की गरिमा माँ–पुत्र की गरिमा से कम न थी । इन्हीं भावों के कारण चाणक्य ने चन्द्रगुप्त का निर्माण किया तो समर्थ गुरु रामदास के शिवाजी को सँवारा । इन परम्पराओं तथा भावनाओं का पुनरुत्थान ही इस विद्यालय का उद्देश्य रहा है इसी कारण प्रतिवर्ष के मुख्य नाटकों में इस परम्परा की स्पष्ट झलक मिलती है **'युगादर्श'** के रूप में अभिनीत इस नाटक में मुख्य कलाकार की भूमिका भैया आशुतोष द्विवेदी ने निभायी । अन्य कलाकार अभिनन्दन तिवारी, अंकित आर्य अभिनव पाण्डेय, सुरेन्द्र मोहन, सौरभ त्रिपाठी आदि थे । इस प्रेरणादायी भावनामय नाटक के पश्चात् रंगमंचीय कार्यक्रम 'वन्देमातरम्' के साथ समाप्त हो गये ।

वार्षिकोत्सव का अंतिम दिन सरस्वती के 'वरद पुत्रों' का होता है। कवि सम्मेलन में हमारे यहाँ वे कवि ही आते हैं जो कविता का व्यापार नहीं करते हैं। देशभक्ति, समाज, दर्शन, ईश्वर–प्रेम पर आधारित कविताएँ ही विशाल कक्ष में गूँजती हैं। पं. धर्मपाल अवस्थी, देवल आशीष तथा ओम नारायण शुक्ल ने ऐसी सरस्वती की धारा प्रवाहित की कि श्रोताओं के हृदय की गंगा तथा प्रज्ञा की यामुनी धारा के मिलने से सभागार ज्ञान–संगम जैसा पावन हो गया ।

***

वाद-विवाद प्रतियोगिता

वैज्ञानिक विकास से पर्यावरण असुरक्षित है

(पक्ष)

अखिल त्रिपाठी, नवम 'क'

कक्षा में गद्यांशों के वाचन से मुझे उसकी आवृत्त वक्तृत्व शक्ति का आभास मिला । उसे चुना गया । प्रदेश की प्रतिष्ठित डॉ. संपूर्णानंद वाद विवाद प्रतियोगिता में अखिल एक बार जिला स्तर पर प्रथम आया तो यह सिलसिला नहीं टूटा । वह प्रदेश का सर्वश्रेष्ठ वक्ता माना गया तथा अपने साथी प्रतिपक्षी मित्र जीत सिंह के साथ वह विद्यालय के लिये टीम का प्रथम स्थान भी लाया ।

— संपादक

ऐसा यह विज्ञान कि जिससे, दुनिया भर भय खाती है।
अचल हिमालय की छाती, इससे थर–थर थर्राती है।
हिन्दु महोदधि की लहरों पर, इसका बेसुध नर्तन है।
चरणों में विध्वंसक गति, हाथों में प्रलय–प्रवर्तन है।

अध्यक्ष महादेय,

सुनते हैं कि इस बार की जैसी सर्दी पहले कभी नहीं पड़ी । इसके पहले गर्मी के लिए भी यही कहा जा रहा था । अभी कुछ ही महीनों पहले प्रकृति के प्रकोप ने खरीफ की फसलों को लील लिया था । सुनता हूँ कि रबी की फसलें भी दम तोड़ रही हैं। वैज्ञानिकों को सलाह दी जा रही है कि वे इससे निजात पाने का रास्ता ढूँढ़ें। महोदय यदि हमारे वैज्ञानिक इसी प्रकार प्रयोगों और परिणामों में उलझते रहे तथा प्रकृति से सामंजस्य बैठाने की भारतीय मनीषियों की ऋचाओं का मखौल उड़ाते रहे तो मुझे नहीं लगता कि हम मनुष्य और मनुष्यता के साथ न्याय कर सकेंगे । हमारे इसी दुराग्रह का परिणाम है कि कहीं पर हमारी वनस्पतियाँ एक–एक बूँद पानी को तरस रही हैं और कहीं पर भीषण बाढ़ के कारण हमारी अधपकी फसलें अकाल मौत का शिकार हो रही हैं। स्वच्छ वायु, साफ जल एवं पौष्टिक अन्न के लिए लालायित तथा अभी कुछ दिनों पूर्व प्रकृति के अप्राकृतिक ताण्डव से ठिठुरे, सहमे एवं ठहरे हम सभी आज इस विवाद में उलझे हैं कि पर्यावरण असुरक्षित है या नहीं । आश्चर्य, होता है इस चिन्तन पर। प्रकृति का प्रत्यक्ष ताण्डव देखने के बाद भी यह कहने का साहस किया जा रहा है कि आज के वैज्ञानिक प्रयोगों से पर्यावरण असुरक्षित नहीं है, बल्कि इसके कुछ और कारण हैं।

भारतीय मन पर्यावरण का प्रेमी रहा है। विदेशी आक्रान्ताओं ने अपनी लोलुपता के फलस्वरूप भारत के पर्यावरण को प्रदूषित करना प्रारम्भ किया था, क्योंकि उन्हें यह पता ही नहीं था कि प्रकृति हमारी सहचरी, पोषिका और संरक्षिका भी है, इसीलिए हम उसकी पूजा करते आए हैं । उनके भोगवादी व्यवहार ने प्रकृति के साथ जो खिलवाड़ करना प्रारम्भ किया, वह भारत के स्वतन्त्र होने के बाद भी आज तक चल रहा है, जिसके कारण पर्यावरण में परिस्थितिकी असन्तुलन उत्पन्न हो गया है। स्वतन्त्र भारत के लोगों में पश्चिमी प्रभाव के वशीभूत हो वैज्ञानिक विकास एवं औद्योगिकरण की ललक ने राक्षसी तृष्णा जगा दी । जंगल द्रुत गति से साफ होने लगे। लाचार वन वृक्ष बिलखने लगे । पशु–पक्षियों एवं वन्य जीवों की जातियाँ समाप्त होने लगीं । वातावरण धुएँ से भर गया । गैसें अपनी पूरी तीव्रता के साथ धरती को तपाने लगीं । बाढ़ और अकाल बार–बार आने जाने लगे। मिट्टी रसायन पी–पीकर अपनी उर्वरा शक्ति से हाथ धो बैठी तथा पानी में कचरा, अपशिष्ट एवं दूषित पदार्थ मिलते–मिलते वह निष्प्राण हो गया । प्रौद्योगिकी ने उत्थान के क्षितिजों को विस्तृत तो किया

परन्तु साथ ही हवा एवं पानी को प्रदूषित भी कर दिया । स्वास्थ्य–सेवाओं ने मनुष्य की जीवनी शक्ति तो बढ़ाई, किन्तु शैक्षिक स्तर संस्कारक्षम न होने के कारण हम उपभोग एवं सहयोग में समन्वय न बैठा सके, लाभ और लोभ को एक–दूसरे से अलग न कर सके, जिसके कारण प्राकृतिक पर्यावरण इतना कुपित हो गया कि उसने विध्वंस का डंका ही बजा दिया और हम उससे खिलवाड़ करने वाले मनुष्य जीवन–मरण के झूले पर असहाय से झूलने को विवश हो गए ।

महोदय,

हमारे पर्यावरण का प्रत्येक अंग थल, जल, वायु एवं जैवमण्डल एक दूसरे पर इस प्रकार आश्रित हैं कि उन्हें एक दूसरे से अलग करना सम्भव नहीं है। सुख–सुविधाओं की अन्तहीन तृष्णा से ग्रसित इस मानव ने विज्ञान के दुर्जेय रथ पर सवार होकर प्रकृति का ऐसा दोहन प्रारम्भ किया, कि उसका सन्तुलन बिगड़ गया । विज्ञान एवं तकनीकी ज्ञान ने मानव को भौतिक सुख तो प्रदान किए परन्तु साथ ही प्रकृति को रोगग्रस्त कर दिया । इसी असन्तुलन से वायु, जल आदि के माध्यम से पर्यावरण की प्राकृतिक शक्ति में एक घातक विष सा घुलने लगा । इसी घातक विष का नाम प्रदूषण है। पर्यावरण प्रदूषण एवं पारिस्थितिकी असन्तुलन में औद्योगीकरण का बहुत बड़ा हाथ है। इस औद्योगीकरण की भूख ने हमारे प्राकृतिक संसाधनों की कुर्बानी ले ली। उद्योगों ने जहाँ एक ओर जीवन को आसान और आरामदायक बनाया वहीं दूसरी ओर ऐसा जहर उगला जिसने अमृत को विषैला कर दिया । उद्योगों का सबसे खतरनाक प्रभाव हमारे वायुमण्डल पर पड़ता है। उद्योगों के संचालन में ऊर्जा के संसाधनों की आवश्यकता होती है, जो मुख्यतः हाइड्रोकार्बन हैं। महोदय, इसीलिए कल–कारखानों की ऊँची–ऊँची चिमनियाँ वायुमण्डल में बेरोक–टोक अपशिष्ट गैसें घोलती रहती हैं। इन गैसीय प्रदूषणों के कारण पृथ्वी के सुरक्षा कवच को पराबैंगनी किरणों से बचाने वाली ओजोन पर्त प्रभावित हो रही है। क्लोरो–फ्लोरो कार्बन, कार्बन टेट्रा क्लोराइड, मिथाइल क्लोरोफॉर्म, हाइड्रोक्लोरो–फ्लोरो–कार्बन आदि समताप मण्डल में पहुँचकर ओजोन पर्त में छिद्र कर देते हैं।

ईंधनों के दहन से तथा वाहनों से निष्कासित विभिन्न गैसें वायुमण्डल में पहुँचकर कार्बोनिक सल्फ्यूरिक एवं नाइट्रिक अम्ल बनाती हैं। वर्षा के समय ये अम्ल पृथ्वी पर अम्लीय वर्षा करते हैं, जिससे जमीन की मिट्टी की अम्लीयता बढ़ जाती है और इसकी उर्वरा शक्ति नष्ट हो जाती हैं।

जल पर्यावरण का जीवनदायी तत्त्व है। विडम्बना है कि इस सुविधाभोगी मानव ने इस अमृत में जहर घोल दिया है। विषैले औद्योगिक रसायन, किसी साहूकार के ब्याज की तरह बढ़ती हुई जनसंख्या के कारण मल का विसर्जन जल को लगातार विषैला बना रहे हैं, जिसके कारण हमारे जलभण्डार नदियाँ, झीलें, नहरें, भूमिगत जल, महासागर आदि लगातार प्रदूषित हो रहे हैं। उद्योगों से निकलने वाले टनों रेडियोधर्मी, कचरे, कृषि उपज की वृद्धि हेतु उर्वरकों, रसायनों एवं कीटनाशक दवाओं के प्रयोग से कृषि वहिःस्राव द्वारा जल और प्रदूषित होने लगा । पेट्रोलियम पदार्थों से महासागरों का जल प्रदूषित होता है, जिसका दुष्प्रभाव हमारे पर्यावरण एवं स्वास्थ्य पर पड़ता है।

वन सम्पदा किसी भी राष्ट्र की जीवन रेखा है किन्तु वैज्ञानिक विकास की सर्वाधिक मार भी इसने ही झेली, जिसके कारण पर्यावरण में असन्तुलन, धरती के तापमान में वृद्धि, मैदानों में बाढ़, भू–स्खलन, जलवायु एवं धरातलीय प्रदूषण में वृद्धि आदि अनेक समस्याओं को झेलने को हम बाध्य हो गए ।

बड़ी भावुकता से साथ आज मैं इस सदन को यह स्मरण कराना चाहता हूँ कि वह विज्ञान का ही तोहफा था, जो अगस्त सन् 1945 में हिरोशिमा और नागासाकी के बेकसूर लोगों को मिला था । आज भी वहाँ पैदा होने वाले, बच्चे उस तोहफे की बेजुबान कहानी कह रहे हैं। वहाँ के वातावरण में फैली वह बारुदी गन्ध, मेरे प्रतिपक्षी मित्रों, आपके लिए बेशक सुगन्ध होगी, किन्तु मेरे लिए मानवता पर एक कलंक ।

मैं याद दिलाना चाहता हूँ भोपाल की वह काली रात, जिसने हज़ारो लोगों का जीवन लील लिया, लाखों को अपाहिज बना दिया । उनका करुण क्रन्दन, आज भी हमारे कानों में चिल्ला चिल्लाकर कह रहा है कि–

ऐ सुविधाभोगी मानव ! मत बनाओ अपनी इस धरा को ऐशगाह, प्रकृति के इस अनुपम वरदान को अपनी राक्षसी क्षुधा शान्त करने का चरागाह भी मत बनाओ, अन्यथा यह धरा हम सभी के लिए कब्रगाह बन जाएगी।

❋ ❋ ❋

वाद-विवाद प्रतियोगिता

वैज्ञानिक विकास से पर्यावरण असुरक्षित

(विपक्ष)

जीत सिंह आर्य

डॉ. संपूर्णानंद वाद–विवाद प्रतियोगिता प्रदेश की सर्वाधिक प्रतिष्ठित वाद–विवाद प्रतियोगिता है। इस प्रतियोगिता में इस बार नवम कक्षा के जीत सिंह आर्य तथा अखिल त्रिपाठी ने पूरे प्रदेश में प्रथम स्थान प्राप्त किया। जीत सिंह ने विषय के विपक्ष में प्रभावी संभाषण किया ।

–संपादक

अध्यक्ष महोदय ! 'वैज्ञानिक विकास से पर्यावरण असुरक्षित' यह वाक्यांश सुनते ही कुछ विचित्र प्रकार की अनुभूति होती है। वह विज्ञान जो हमारे पंचकोषो के चरम प्राप्तव्य का अन्तिम सोपान है, वह विज्ञान जो जीवन की व्यवस्थितता अनुसंधित्सु वृत्ति और ज्ञान के रहस्यों को सुलझाने वाला उपक्रम है, उससे पर्यावरण असुरक्षित है कहने वालों के विवेक पर आश्चर्य होता है। जिस विज्ञान ने सृष्टिकर्ता को सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को परस्पर संयोजित और संचालित करने का विचार प्रस्तुत किया, जिस विज्ञान ने सूक्ष्म से स्थूल और स्थूल से सूक्ष्म के परिवर्तनों का आयोजन किया, जिस विज्ञान ने पर्यावरण को सन्तुलित करने में सर्जक को सहयोग प्रदान किया, जिस विज्ञान ने हमें बोलने को शब्द दिए, चिन्तन को नए आयाम दिए, पुरुषार्थ को नयी परिभाषा दी, जीने की शैली दी, धरती का सीना चीरकर रस रक्त प्राप्त करने की शक्ति दी, आकाश को छूने की ऊर्जा दी और तो और मनुष्य को मनुष्यता प्रदान की, वह विज्ञान आज हमारे पर्यावरण के लिए खतरा कैसे हो गया ?

अपने रोचक और मोहक अंदाज में वैज्ञानिक विकास को पर्यावरण का शत्रु बताने वाले मित्रो ! क्या आप चाहते हैं कि इस सम्पूर्ण विकास को विनाश के मुख में झोंककर हम फिर से उस आदिम अवस्था में लौट जाएं। पेड़ों की छालों को पहनकर, कन्दमूल खाते हुए, पत्थरों से जानवरों को मारने लगे । लौट जाएँ अपने उस आदिम युग में जहाँ हम स्वयं अपनी ही नजरों में अशोभन व भयावह हैं । महोदय ! मैं कहता हूँ कि यह चिन्तन ही विकलांग है। यह सृष्टि सदैव से ही विकासशील है। जहाँ विकास है, वहाँ सुविधाओं के साथ–साथ समस्याएँ भी हैं तथा समस्याओं का शमन करने के लिए ही वैज्ञानिक चिन्तन और अनुसंधान की आवश्यकता होती है।

महोदय! एक गम्भीर प्रश्न तो यह है कि वैज्ञानिक विकास से पर्यावरण असुरक्षित हो गया है अथवा अपनी भौतिक हवस को शान्त करने का माध्यम बना, विज्ञान को अपनी मुठिठयों में बन्द करके, मानवता की लाश को रौंदते हुए अपना विजयी परचम फहराने को बेताब मानव की करतूतों से यह पर्यावरण कहराने को बेताब मानव की करतूतों से यह पर्यावरण असुरक्षित हो गया है । जिस पाप के भागीदार हम असुरक्षित हो गया है। जिस पाप के भागीदार हम स्वयं हो उसके लिए दूसरों को दोष देना अन्याय है।

महोदय! विज्ञान तो ज्ञान के सार तत्व का मूल है, मानव जीवन की दुरुहताओं को समाप्त कर उसे सुखमय और सरल बनाने का साधन है। विज्ञान तो मनुष्य की मेधा और प्रज्ञा की आत्मजा है तो भला वह पर्यावरण के विध्वंस का कारण कैसे ? मानव के उस चतुर्थ कोष के विकास से होता है मानव जीवन का सर्वतोन्मुखी विकास, जो इस पावन वसुन्धरा को नन्दन वन बनाता है। विज्ञान कहीं भी, किसी कोने से भी पर्यावरण को दूषित करने के लिए नहीं है। जहाँ कहीं भी दूषण, प्रदूषण, दोष और ध्वंस होता है, वह मनुष्य के

भीतर बैठे राक्षस के द्वारा होता है। जब–जब ये राक्षस मानव की बुद्धि पर हावी होता है तो उसके अविवेक, अज्ञान और स्वार्थ को जाग्रत करता है। मानव के इसी अविवेक, अज्ञान और स्थार्थ ने विज्ञान को अवलम्ब बना जो पर्यावरणीय संकट खड़े किए वैज्ञानिक विकास ने उनका निराकरण कर इस धरती के रूप को संवारा ।

महोदय! वैज्ञानिक उपलब्धियों के भयावह स्वरूप को इस सदन के सम्मुख बड़ी ही बौद्धिक कलाबाजी के साथ प्रस्तुत किया गया । औद्योगिक विकास के कारण वायु दूषित हो गयी, जल विषैला हो गया, मौसमी चक्रों में परिवर्तन हो गया और न जाने कितने ही प्रभाव गिना दिए गए । उनके समाधान के लिए मैं ये स्पष्ट की दूँ कि इन समस्याओं के मूल में विज्ञान तो कदापि नहीं हैं, हाँ इसकी जानकारी और इसका निराकरण विज्ञान अवश्य प्रस्तुत करता है।

आज हमारे सेटेलाइट, जिनकी हमने एक लम्बी श्रृंखला विकसित कर ली है, हमें पूर्व में ही आने वाले खतरों की जानकारी दे रहे हैं और वैज्ञानिक उपायों द्वारा हम उनका समाधान भी प्रस्तुत कर रहे है। रिमोट सेंन्सिग उपग्रहों के द्वारा मौसम का पूर्वानुमान, भूमि का कटाव, वनों की अवैध कटाई, वनों में फैली आग और चक्रवाती तूफ़ान की दिशा, फसलों में बड़े पैमाने पर फैलते रोगों और ओजोन पर्त मे होने वाले छिद्रों का अध्ययन किया जा रहा है।

प्रदूषण का पर्याय बन चुके हमारे औद्योगिक प्रतिष्ठानों को प्रदूषण नियंत्रक उपकरणों और औद्योगिक कचरे के उपचारण तथा उससे विद्युत निर्माण की विधियों ने प्रदूषण मुक्त बनाया है। वाहनों में स्क्रैबर, साइलेंसर और एथेनॉल मिश्रित पेट्रोल के प्रयोग से वाहनों द्वारा होने वाले प्रदूषण को समाप्त किया गया है। जहाँ एक ओर विद्युत चालित ट्रेनों और सी.एन.जी चालित वाहनों के प्रयोग से हमारी राष्ट्रीय सम्पत्ति पेट्रोलियम के व्यय में कमी आयी है वहीं इल हाइड्रोकार्बन यौगिकों से होने वाले प्रदूषण पर नियंत्रण पाया गया है । जर्मनी में मैग्नेटिक ट्रेन और फ्रांस तथा इंग्लैण्ड में चैनल रेलवे का प्रारम्भ एक पूर्ण प्रदूषण मुक्त रेल व्यवस्था के रूप में किया गया है।

महोदय ! यदि आँकड़ों पर दृष्टिपात करें तो आप पाएंगे कि वर्तमान समय में भारत में बीस करोड़ टन बायो गैस उपलब्ध है, जिससे 10.5 करोड़ टन फाइरोलाइज्ड ईंधन की प्राप्ति होती है जो 275 करोड़ बरैल तेल के बराबर हैं जल विद्युत, पवन ऊर्जा सौर ऊर्जा और बायो गैस का विकास नवीन ऊर्जा स्रोतों के रूप में हुआ है जो प्रदूषण मुक्त विद्युत उत्पादक व्यवस्थाएं हैं।

पर्यावरण की स्वाभाविक गति और उसके संतुलन में व्यवधान उत्पन्न करने वाली अशुद्ध वायु को आयोनर और अल्ट्रावायलेट किरणों द्वारा तथा पानी की वाष्प के साथ वायु में उपस्थित धूल के कणों और जीवाणुओं को ट्राई इथाइलीन ग्लूकोज की वाष्प के द्वारा हटाकर शुद्ध बनाया जा रहा है । यदि मानव पर्यावरण का भक्षक बनकर जंगली जीवों और वनस्पति का विनाश करता है तो वहीं वैज्ञानिक विकास क्रायोवेजीटेसन, पादप अभिजनन और क्लोनिंग तथा जीन बैकों द्वारा उनका सरंक्षण करता है। ट्रीटमेण्ट प्लांटो द्वारा नदियों का शुद्धिकरण हो या बाँध बनाकर बाढ़ को नियंत्रित करना वैज्ञानिक विकास सदैव पर्यावरण के संरक्षण का प्रयास करता है। जल संकट से निजात पाने के लिए हमारे वैज्ञानिकों ने रेन वाटर हार्वेस्टिंग नामक योजना का विकास किया है जो दिल्ली और चेन्नई में प्रारम्भ हो चुकी है और जिसके द्वारा हम अपने भूमिगत जल का संरक्षण कर सकते है।

❋ ❋ ❋

उपजे नहीं अमर्ष

श्री सुभाष शर्मा, आचार्य

आचार्य श्री सुभाष जी सामाजिक विषय के अच्छे अध्यापक होने के साथ–साथ खेलकूद, स्काउटिंग तथा नैतिक शिक्षण की भी छात्रों के लिये व्यवस्था करते हैं। पर इससे इतर वे एक अच्छे कवि भी हैं। विद्यालय के प्रति रचित उनकी यह कविता वास्तव में श्लाघ्य है ।– संपादक

प्रबल आत्म विश्वास फलित है, दया धर्म उत्कर्ष
मनायें ये दिन हम प्रतिवर्ष.
बना है स्मृति का आधार, एक देवी का पुण्य विचार,
संकल्पों के शंख बज रहे, चहुँदिश दीखो हर्ष ।
मनायें.....
भवन चमके द्वितीया सा चन्द, आरती पूजा मानस छंद,
इष्ट देवता रामदूत का, सम्बल है अनुवर्ष ।
मनायें.....
अलौकिक ऋषि आश्रम परिवेश, मंत्र सा गुरु वाणी संदेश,
ढाई आखर प्रेम पाठ से, जीवन हो निरमर्ष ।
मनायें.....
बहे निज भाषा की रसधारा, देव वाणी के सुखद विचार,
जननी जन्म भूमि सेवा का, अटल लक्ष्य आदर्श ।
मनायें.....
करें सब प्रथम देश सम्मान, प्रार्थना वेद मंत्र गुणगान ।
भक्ति भावना प्रेम धरा पर, उपजे नहीं अमर्ष ।
मनायें.....
पढ़ें सब कृष्ण सुदामा संग, ज्ञान गीता के शाश्वत रंग,
गंगा तट की पावन भूमि, 'बूजी' का आदर्श ।
मनायें.....
राम ने दिया धर्म संदेश, कृष्ण ने गीता का उपदेश,
गौतम से है विश्व प्रेम, दानवता से संघर्ष ।
मनायें.....
मार्ग दर्शन का शुभ पाथेय, धर्म पर बढ़ते चलें अजेय ।
संतों की अमृत वाणी की, सुधा बहे प्रतिवर्ष ।
मनायें.....
भावना चन्दन भरी सुगन्ध, राष्ट्र हित जीवन का अनुबंध ।
अग्रज, अनुज, भ्रात, तात, सब, करें राष्ट्र उत्कर्ष ।
मनायें.....
प्रबल आत्मविश्वास फलित है, दया धर्म उत्कर्ष
मनायें ये दिन हम प्रतिवर्ष

❋❋❋

क्या है मनुष्य

अखिल मिश्र , सप्तम 'क'

मनुष्य करता है अनुरक्ति और विरक्ति, पंच तत्वों से बनी एक शक्ति ।
जो करता है विचारों की अभिव्यक्ति, प्रकट करता है अपनी अटल भक्ति ।।

यह है ब्रह्माण्ड की शक्ति महान्, जिसने समेटा है अपनी बुद्धि में अथाह ज्ञान ।
परन्तु आज गिर गया है उसका मान, क्योंकि करने लगा है अपने ज्ञान का अभिमान ।।

आज व्यक्ति करने लगा है दमन, कर रहा है विष का वमन ।
अतः होने लगा है उसका पतन, क्योंकि करने लगा है सच्चाई से जलन ।।

अभी भी बन सकता है वह महान, क्योंकि कूट-कूट कर उसमें भरा है ज्ञान ।
अब वह न बने अज्ञान, करना छोड़ दे अपने ज्ञान का अभिमान ।।

❋❋❋

युग-परिवर्तन

गौरव मिश्र , एकादश 'ख'

चारों ओर कलह का नर्तन ? भला यही है युग परिवर्तन ?
कहाँ गये हैं श्याम कृष्ण ? उनकी मुरली और सुदर्शन ?
चारो ओर..... ।।1।।

रावणारि वे राम कहाँ हैं ? महावीर हनुमान कहाँ हैं ?
धर्मविहीन राज्य आया है, दानवता का होता नर्तन ।।
चारो ओर..... ।।2।।

धरती बोझिल बहुत हो गयी, मानवता अब त्रस्त हो गयी,
युग को नूतन राह दिखाने, भारत-भू का मान बढ़ाने,
आओ फिर भगवान; करो तुम युग परिवर्तन ।
चारो ओर..... ।।3।।

❋❋❋

यह देश हमारा है

सौरभ दुबे , षष्ठ 'क'

बारह वर्ष की आयु होगी सौरभ की । आंशिक संशोधन के बाद उसकी यह कविता काफी अच्छी बन पड़ी है। उसकी भावनाएँ संगीत के स्वर में बँधी हुई हैं। – संपादक

यह देश हमारा है, प्राणों से प्यारा है
हम इसके है रक्षक, बैरी दल के है भक्षक ।।१।।

यह देश बहुत प्यारा है, प्राणों की यह धारा है
हम इसके सैनिक है, नैया के नाविक है ।।२।।

हम ऋषि दधीचि के वंशज श्री राम, कृष्ण के अंशज
बाहों में अतुलित बल है डरता दुश्मन का दल है।।३।।

है छाई बहुत निराशा, हम भारत माँ की आशा
तन-मन का दान करेंगे, हम भामाशाह बनेंगे ।।४।।

***

यह है अपनी भारत माता

रवि सिंह, नवम 'ख'

सिर पर जिसके मुकुट हिमालय, चरणों में नदियों का आलय ।
कण-कण में वीरों की गाथा, यह है अपनी भारत माता ।।

जिसकी साड़ी है हरियाली, भाँति-भाँति के फूलों वाली ।
जिसके ऊपर नील पटल पर, फहर-फहर भगवा फहराता ।।
यह है अपनी भारत माता

जो माता-सी दूध पिलाती, अन्न, फल और फूल खिलाती ।
श्वाँस-श्वाँस में मारुति जिसका, हमको जब जीवन दे जाता ।।
यह है अपनी भारत माता

***

संकट में विश्वास

विपिन वर्मा, नवम 'क'

आज समाज में विश्वास का संकट है। हम अपने आप पर भी विश्वास नहीं कर पा रहे हैं। अपने स्वत्व, तत्व को विस्मृत कर हम दुविधा के चौरहे पर खडे हैं। — संपादक

जागो मनु के पुत्रों, फिर हुंकार करो ।
डोल रही वसुधा का पुनरुद्धार करो ।
भगीरथ से बनो तपस्वी, गंगा का अवतार करो।
बन जाओ हनुमान और दानवदल का संहार करो।

खो रहा धर्म, अधर्म, का पलड़ा भारी ।
सत्य, अहिंसा, कहाँ लुप्त, सिर्फ पाप है जारी।
मरता है सौहार्द्र, सिसकती करूणा प्यारी ।
संकट में विश्वास, गिद्ध सी मारामारी ।

आत्मतत्व खो गया तिमिर में, तूफानों में ।
लिप्सा के सौदे होते है थानों में ।
देश प्रेम की बातें केवल बातों में ।
और गरीबी अकुलाती है रातों में ।

खिला खिला सा फूल अभी मुरझाया है।
सोने की चिड़िया पर काली छाया है।
"वसुधा ही परिवार" हमारा नारा है।
किन्तु सिसकता फिर भी भारत सारा है।

❋❋❋

वार्षिक खेलकूद के अवसर पर मुख्य अतिथि श्री रामप्रकाश त्रिपाठी (सहकारिता मंत्री, उ० प्र०) प्रधानाचार्य जी के साथ

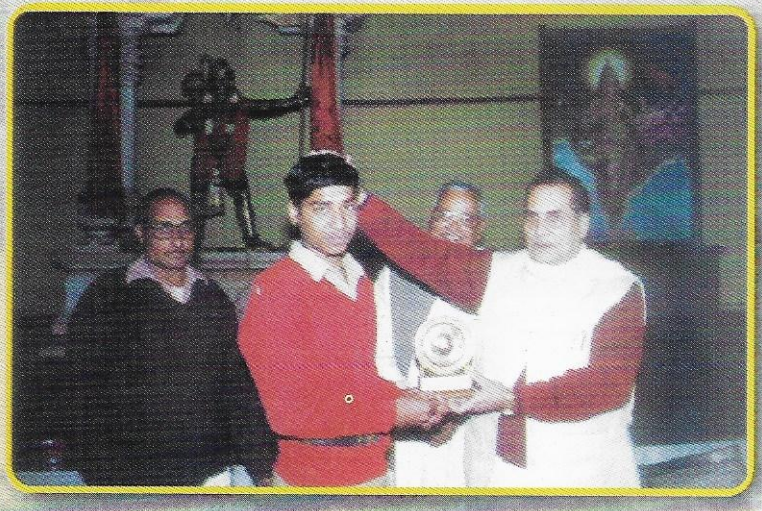

राज्य सब जूनियर मुक्केबाजी प्रतियोगिता २००३ में स्वर्ण पदक प्राप्त छात्र चि० राकेश कुमार को पुरस्कृत करते सहकारिता मंत्री मा० राम प्रकाश त्रिपाठी

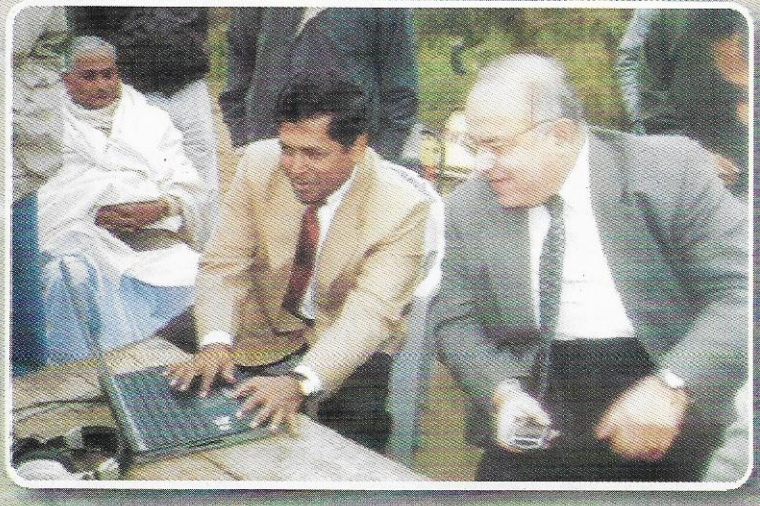

विद्यालय के पूर्व छात्र श्री विवेक भागवत तथा श्री प्रवीण भागवत ने उन्नाव जिले के सरौहाँ ग्राम में सूचना प्रौद्योगिकी का एक अद्भुत केन्द्र स्थापित किया है। इस अवसर पर इन्टरनेट से ग्राम को पूरे विश्व से जोड़ते आई० आई० टी० के निदेशक एस० जी० धांडे० साथ ही आँवले के बाग में सूचना व प्रसारण मंत्रालय के सचिव आर० आर० शाह व प्रधानाचार्य जी

प्रयास भित्ति पत्रिका में छात्रों की प्रतिभा

चित्र : मनीष कुमार
नवम "ग"

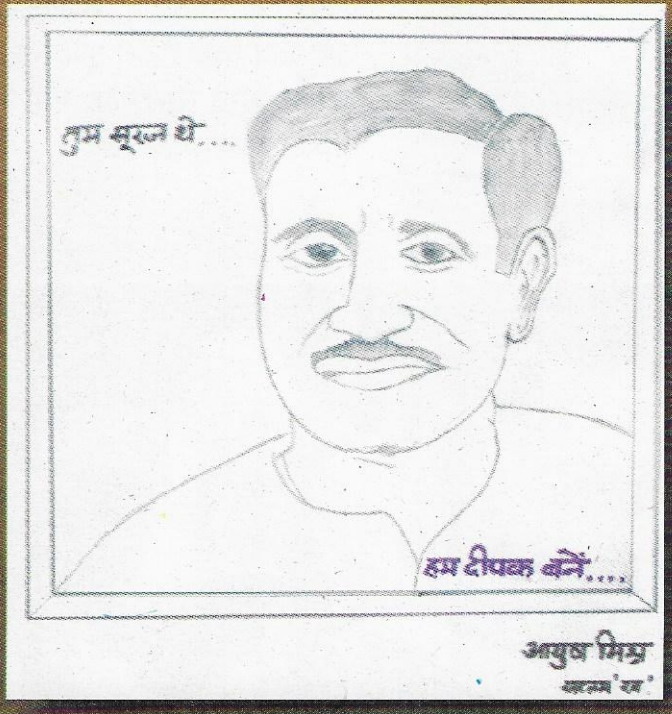

चित्र : आयुष मिश्र
सप्तम "ख"

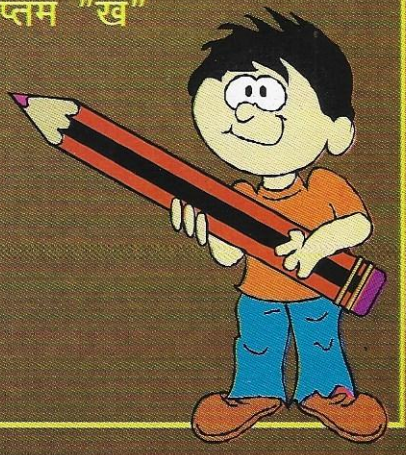

चोरों की जमात और इंस्पेक्टर
मातादीन : प्रत्यूष रोमिल व अन्य

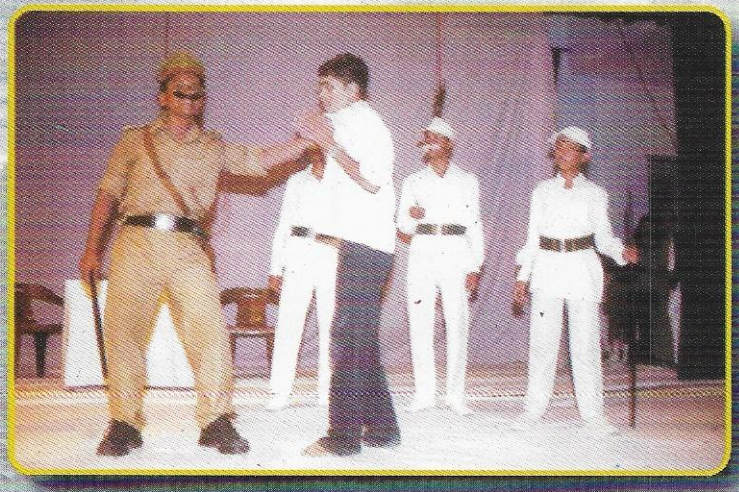

भले आदमी पर पुलिस का
कहर : अनुज व प्रत्यूष

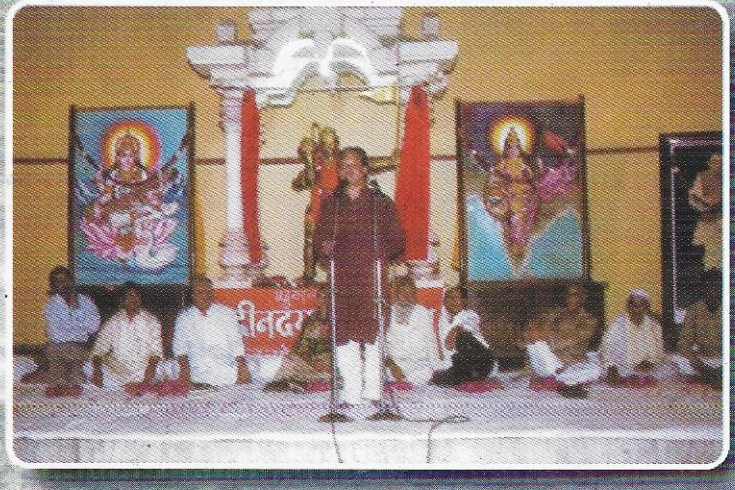

कवि सम्मेलन में सभी को
हँसाते कमलेश द्विवेदी

विद्यालय की भित्ति-पत्रिका प्रयास में :

सृजन के रंग

● चित्र : अमोल अग्निहोत्री, अष्टम "क"

● चित्र : सूर्य प्रताप सिंह, सप्तम "ख"

जाड़ा और गरीब

सत्यम गुप्त, अष्टम 'ख'

इस बार जाड़े ने अपना पूरा पराक्रम दिखा दिया । लोग लिहाफों के भीतर भी ठिठुर रहे थे । पर इस सबसे भी ज्यादा वह निर्धन वर्ग जिनके पास रहने और ओढ़ने को कुछ नहीं है; उस वर्ग के लिये यह समय बड़ा असह्य था । अष्टम कक्षा के सत्यम ने इसी विसंगति की ओर संकेत किया है।

– संपादक

जाड़े की हुई चढ़ाई
कमजोर-सहजोर की लड़ाई
निकली फिर से रजाई
आग के पास बैठे हम
ठण्ड के मारे निकले दम।
कोहरा सुबह से भारी है।
धूप धुंध से हारी है
घाम सहम कर बैठा है
सूरज लगता ऐंठा है ।

जाड़े की निर्मम मार भला,
क्या उन्हें मार पाती है।
जिनके ऊँचे प्रसाद खड़े हैं,
यह उन्हें क्षमा कर जाती है।
ठण्ड गरीबों की दुश्मन
यह उन्हें सताया करती है
फुटपाथों के निर्धन जन को,
सदा बिराया करती है।
प्रकृति से बेबस होकर
भाग्य कोसते रह जाते हैं,
बेचारे रोकर जाते हैं

❋ ❋ ❋

भारत को रोते देखा है

अशुतोष द्विवेदी, द्वादश 'ख'

अंधियारे कोने में भारतमाता को रोते देखा है
खेत, मेंड़, घर, मंदिर, आँगन लहू–लहू होते देखा है
भारत को रोते देखा है ।।1।।

भूखी माँ अपनी ममता को भूखे पेट सुला देती है ।
और अभावों की दोपहरी बरबस उसे रुला देती है ।
उनकी जाड़े की रातें सिसियाते रोज गुज़र जाती है।
और जेठ की दोपहरी दाने दाने को दौड़ाती है ।
हारी थकी गरीबी को निज प्राणों को खोते देखा है
भारत को रोते देखा है ।।2।।

सीमाओं के यज्ञकुण्ड में प्राणों की आहुति देते हैं
अपने लिए कभी जीवन भर नहीं किसी से कुछ लेते हैं
पर समझौतों की लाचारी सब अरमान जला देती है।
पौरुष को कायर अपनों की करनी कुटिल हिला देती है
उनको भावुकता के आँसू बंजर में बोते देखा है।
भारत को रोते देखा है ।।3।।

भाई से भाई आशंकित पिता पुत्र से शरमाता है
शिक्षा अब बाजार हो गई, गुरु शिष्य को भरमाता है ।
गाँव खेत खलिहान बगीचे सबके सब बेजान हो गए
चहल पहल वाले चौबारे लगता सभी मसान हो गए
सुविधाओं के बियाबान में अपने को खोते देखा है
भारत को रोते देखा है ।।4।।

कण कण पर आतंकी साया रोम रोम सिहरा जाता है
चौंक जगा प्रत्यूष पुराना शान्तिपाठ दुहरा जाता है
ऐसी खिंची करम की रेखा, मौत जिंदगी पर भारी है
दहल रही दुनिया दानव से आत्मदाह की तैयारी है
मानवता को अपने तन की भस्मी को ढोते देखा है
भारत को रोते देखा है ।।5।।

❋❋❋

कहाँ गया आवेश

विवेक चतुर्वेदी, नवम 'ख'

जिस देश के बालक सिंहों के रद–गणन करते थे, जिस देश की माताएँ पुत्रों को राष्ट्रहित–बलिदान के पाठ पढ़ाया करती थीं; वहाँ तन्द्रा–प्रमाद और कायरता प्रविष्ट है।
– संपादक

तुम वीर शिवा के वंशज हो,
आवेश तुम्हारा कहाँ गया ?
बोलो राणा की सन्तानों
फिर जोश तुम्हारा कहाँ गया? ।।१।।

जब संकट में था देश हमारा,
तब वीरों ने बलिदान दिया ।
उच्छृंखल, चंचल भावों में
सद्भावों का संचार हुआ ।।२।।

देश प्रेम में वे डूबे थे,
अरिदल उन्हें झुका न सका ।
दृढ़ प्रतिज्ञ, वे कर्म निष्ठ थे,
झंझावात डिगा न सका ।।३।।

राणा के वंशज वीर, अरे ! क्यों डरते हों ?
बनकर कायर अपयश की गागर भरते हो,
क्यों नहीं जागते हो ज्वलन्त अरमानों में ?
क्यों सोती है तलवार तुम्हारी म्यानों में ।।४।।

❋❋❋

बाल वर्ग

कविता–लेखन प्रतियोगिता

दीनदयाल विद्यालय अपना

पदम जी ओमर, सप्तम 'क'
प्रथम स्थान (बाल वर्ग)

दीनदयाल विद्यालय अपना, अनुपम दीप महान है ।
दीनदयाल जी के अनुचर हम, भारत के अरमान हैं ।
दीनदयाल विद्यालय अपना, अनुपम दीप महान है ।।1।।

पाठ यहाँ सिखलाया जाता, सदा मिलकर रहने का ।
मातु पिता, गुरु सेवा करना, प्रेम सहित दुःख भी सहने का।
दीनदयाल विद्यालय अपना, अनुपम दीप महान है ।।2।।

करुण हृदय की सुनो व्यथाएँ, व्यर्थ सुमिरिनी या मालाएँ ।
सेवा धर्म सिखाने वाला, मंदिर बड़ा महान है, हर मन में भगवान है ।
दीनदयाल विद्यालय अपना, अनुपम बड़ा महान है ।।3।।

* * *

दीनदयाल विद्यालय अपना

निशीत कुमार, अष्टम 'क'
द्वितीय स्थान (बाल वर्ग)

दीनदयाल विद्यालय अपना, सपनों का संसार है ।
अमर ज्ञान जो हमको देता, विद्या का भण्डार है ।।१।।

पवनपुत्र या अंगद जैसी, यहाँ राम की सेना है ।
भारत माता के चरणों में, अपना सब कुछ देना है ।।२।।

दीनदयाल के आदर्शों को, दुनिया में फैलाना है ।
यही हमारा एक वचन है । जिसको हमें निभाना है ।।३।।

राष्ट्र भक्ति के कठिन मार्ग पर, हमको चलते जाना है ।
चरैवेति के महामंत्र को, दुनिया में फैलाना है ।।४।।

* * *

बाल वर्ग

कविता–लेखन प्रतियोगिता

दीनदयाल विद्यालय अपना

सूर्य प्रताप सिंह, सप्तम 'ख'
तृतीय स्थान (बाल वर्ग)

दीनदयाल विद्यालय अपना, हम सब इसमें पढ़ते हैं ,
यहाँ आचार्य रूपी शिल्पकार, सुंदर विग्रह को गढ़ते हैं ।।
दीनदयाल .....।।१।।

हमारा विद्यालय दीनदयाल, भवन है इसका अति विशाल ।
ज्ञानी आचार्यों से पढ़कर छात्र, सफलता की सीढ़ी चढ़ते हैं ।।
दीनदयाल .....।।२।।

यहाँ हैं स्थापित श्री हनुमान, सब उन्हें पूजें ससम्मान ।
उनकी कृपा से होता उत्थान, ज्यों ज्यों ये पग बढ़ते हैं ।।
दीनदयाल .....।।३।।

***

दीनदयाल विद्यालय अपना

विवेक सिसौदिया षष्ठ 'क'
तृतीय स्थान (बाल वर्ग)

दीनदयाल विद्यालय अपना, इसमें पढ़ने का था सपना,
इमारत इसकी खूब विशाल, पढ़ाई भी है मालामाल

आचार्य भी हैं खूब अच्छे, उन्हें चाहते सीधे बच्चे,
आचार्यों का भी एक है सपना, बच्चों को बनाना अपना ।

बच्चे भी हैं बड़े निराले, अनुशासन में रहने वाले,
विद्यालय भी है सुंदर गहना, जिसको मैंने अब है पहना ।

दीनदयाल विद्यालय अपना, इसमें पढ़ने का था सपना ।।

***

उपवन का शोक

प्रशान्त कुमार, अष्टम 'क'

माली दादा अपने जीवन के अंत तक विद्यालय की बगिया की सेवा वात्सल्य–भाव से करते रहें। वे सामान्य रूप–नाम और पद में असामान्य थे, कर्मयोगी थे । उनके निधन पर उपवन खुद ही शोकाकुल है। चि. प्रशांत इस संदर्भ में भावुक हैं। — संपादक

तुमने ही मुझको जनम दिया, तुमने ही पाला पोसा था ।
मेरे कारण जाने कब–कब, किस–किस को तुमने कोसा था।।
अब भावहीन सा ठगा ठगा, गुम सुम उदास हूँ खड़ा मगर।
जाने मेरी किस गलती से, तुमने पकड़ी दूसरी डगर ।।
मैं गड़ा खड़ा मुस्काता था, गतिमानों को ललचाता था ।
अनगिनत रूप रस गंधों से, सबको इस ओर बुलाता था ।।
अब प्यासा खड़ा उदास मलिन, पानी अब कौन पिलाएगा ?
पाती पाती की माटी को, झुक झुक कर कौन हिलाएगा ?
अब कौन कली के पहले हीं, टहनी टहनी को बल देगा ।
जिसको जितनी है प्यास, नाप कर उतना ही भर जल देगा।।
अब कौन खाद के लिए, लड़ेगा ऊपर के अधिकारी से ।
'यह गया मसाला थूक कौन, खीझेगा उस कुविचारी से ।।
क्या कहें भाग्य को कोस रहे, मन ही मन खूब मसोस रहे।
विधना की गति से हार मान, आँसू से जीवन पोस रहे ।।

***

माली काका

आयुष मिश्र, सप्तम 'ख'

फूलों को देखते हैं तो आती है उनकी याद,
माली काका ने किया गुलशन को आबाद,
बस यही चाह है मेरी, कि वो याद हमें आते रहें,
मन–मंदिर में हमें इस भाँति ही भाते रहें ।
उनका नाम आये तो आती है उनकी याद,
ले गये भगवान हैं, सुनी नहीं फरियाद,
माली काका फूलों के सपने तो पूरे कर गये,
पर हमारी आँखों को आँसुओं से भर गये ।।
वह क्या समय था जब पौधों को मिलता था प्यार,
पर क्या करें, पौधे अब हो गये बेजार,
फूलों पौधों से था उनको बहुत प्यार,
तभी रहती थी विद्यालय के चमन में बहार ।। ***

फूलों की महक गयी, काका तुम्हारे संग

मधुर सचान, नवम 'ग'

गूँजती थी ये पवन,
अब क्या फूलों में सुगन्ध ।
उपवन बहुत ही था मनोरम,
'काका तुम्होरे संग ।

हँसती थी ये कलियाँ
रोते हैं अब सुमन
पुष्पित थी ये बगिया,
अब रोते सभी के मन ।।

क्रन्दन सा है छाया,
श्रमजीवी थी उनकी काया ।
अब गई वह सुगन्ध,
छोड़कर संसार-माया ।।

सागर से वह निकला, करके मंथन,
गुणों का था वह अद्‌भुत संगम ।
इतना सुन्दर कुंज सजाया,
ललचाया जड़ को और जंगम ।।

एक सुमन गया, तो क्या हुआ,
त्यागमय जीवन जिया ।
जीवन परहित ही लगा दिया,
बुझ गया जीवन-दिया ।।

***

श्रद्धांजलि

माली दादा

निशान्त आनन्द, अष्टम 'ख'

चिर विदा हो गए दादा जी ।
अब याद आपकी ज्यादा जी ।।

मन भावन विद्यालय कैसा,
नन्दन कानन उपवन जैसा ।
एक-एक पौधे को अपने,
रक्तामृत से सींचा किसने ।
अहर्निश श्रम में रत रहकर,
सुरभि बिखेरें दादा जी ।।
चिर विदा हो गए दादा जी ।

हम बच्चे शैतानी करते,
खोई गेंद ढूँढ़ते रहते ।
पुष्प क्यारियों में घुस जाते,
कहने पर भी नहीं मानते ।
प्यार भरी एक डाँट सुनाकर,
हमको समझाते दादा जी ।।
चिर विदा हो गए दादा जी ।

नश्वर जग से मुक्त हुए तुम,
जाओ दादा अमर हुए तुम,
विद्यालय के मानस पट पर
चिर स्मृति के वासी हो तुम ।
हम लेंगे आशीष तुम्हारा,
भी अनन्त से दादा जी ।।
चिर विदा हो गए दादा जी ।।

***

माली दादा के न रहने पर

दुर्गेश वाजपेयी. आचार्य

गुलशन का माली चला गया, सब बाग-बगीचा छला गया
बूढ़ी निंबिया ने पूछा- 'दादा' काहे को चला गया ।

यह दुःखद खबर उपवन में, पेड़ो-पौधों के मन में
जैसे ही जाकर पहुँची, कलियों के अन्तर्मन में ।।

मछली को जैसे जल से, मछुवारा खींचे छल से
राघव की प्रिया सिया को, हर ले रावण ज्यों बल से ।।

वैसा ही कुछ है बीता, सब कुछ लगता है रीता
मायूसी बगिया में है, जैसे लंका में सीता ।।

गुड़हल हताश है लटका, गेंदा पर जैसे टटका
दादा का ऐसे जाना, फूलों के मन को खटका ।।

है सोनजुही अनब्याही, करती है नियति तबाही
सिंदूर पोछती चंपा, मेंहदी की हुई मनाही ।।

चूड़ियाँ तोड़ती बेला, क्रन्दन करती है बेला
दुःख का पहाड़ है टूटा, बढ़ गया समय का रेला ।।

'चाँदनी' उतारती चूनर, बदहाल खड़ी है गूलर
रह-रह कर हुचकी भरती- 'रातों की रानी' सुंदर ।।

'क्रोटन' दादा का कहना, क्या करें ? - नहीं है रहना
अशोक शोक में डूबा, रो रही चमेली बहना ।।

***

जहाँ सुमति तहँ सम्पति नाना

आदर्श अवस्थी, दशम 'ग'
विपिन वर्मा, नवम 'क'

सुमति कुमति सबके उर रहहीं नाथ पुरान निगम अस कहहीं ।
जहाँ सुमति तहँ सम्पति नाना जहाँ कुमति तहँ विपति निधाना।।

जहाँ सुमति अर्थात् सद्बुद्धि होती है वहाँ समस्त प्रकार की सम्पत्तियाँ और समृद्धियाँ स्वयमेव आ जाती हैं। श्रीरामचरितमानस के सुन्दर काण्ड में सुमति के धनी विभीषण कुबुद्धि वाले रावण को समझाते हुए कहते हैं कि हे नाथ ! वेद और पुराण ऐसा कहते हैं कि सुमति और कुमति सबके हृदय में होती हैं। जहाँ सुमति होती है वहाँ नाना प्रकार की सम्पत्तियाँ होती हैं, समृद्धियाँ वास करती हैं व ऐश्वर्य का वास होता है । जहाँ कुमति होती है वहाँ व्याधियों के जंजाल होते हैं।

तव उर कुमति बसी विपरीता, हित–अनहित मानहुँ रिपु प्रीता ।
कालराति निसिचर कुल केरी, तोहि सीता पर प्रीति घनेरी ।।

रावण पर कुबुद्धि के बादल छाए हुए हैं । वह विभीषण की रामभक्ति पर क्रुद्ध तथा अहंकार में चूर होकर कहता है :

जियसि सदा शठ मोर जियावा, रिपु कर पक्ष मूढ़ तोहि भावा ।
कहसि न अस खल को जग माहीं, भुजबल जाहि जिता मैं नाहीं।।

चूकि रावण की सद्बुद्धि नष्ट हो गयी थी । इसलिए उसका समूलोच्चाटन हो गया । वेद, पुराणों में, इतिहास में, देवताओं, ऋषियों, राजाओं, मनुष्यों व राक्षसों की सुमति व कुमति के अनेक दृष्टान्त मिलते हैं। वाग्देवी की कृपा से जिसको सुमति आ गयी वह सिद्ध हुआ, प्रसिद्ध हुआ, आनन्दित हुआ और जो कुमति के फेर में आ गया वह नष्ट हुआ, भ्रष्ट हुआ व हँसी का पात्र बना ।

नारद मुनि की सुमति

पुराकाल में एक ऐसा समय आया जब मनसिज (कामदेव) ने सम्पूर्ण सृष्टि को अपने मादक प्रभाव में बद्ध कर लिया । जीव तो जीव जड़ प्रकृति भी मदन के वशीभूत हो गयी । ऐसे समय में नारद मुनि तपस्या कर रहे हैं। उनका विवेक और सद्बुद्धि इतनी प्रखर है कि वे मदन के प्रभाव से अविचिलत हैं। कामदेव ने उनकी तपस्या को भ्रष्ट करने के अनेक प्रयास किये । नारद मुनि ने अपने मन को इतना नियन्त्रित कर लिया है कि उन्होंने कामदेव को जीवित ही जीत लिया । मदनारि भगवान शिव ने कामदेव को भस्म करके मुक्ति पायी थी लेकिन नारद ने उन्हें सशरीर जीवित ही जीत लिया । नारद भगवान की कृपा के पात्र बने । चतुर्दिक उनका यश प्रसारित हुआ उनकी सुमति के कारण ।

नारद मुनि की कुमति

मनोज विजयी होने के बाद नारद के मन में अहंकार की कालिमा आयी और नारद की मति भ्रष्ट हो गई। जिन नारद ने कामदेव को जीता था वही नारद वासना के वशीभूत होकर एक राजकुमारी को आकर्षित करने के लिए भगवान से सुन्दर रूप माँगते हैं, भगवान उनकी दुर्बुद्धि के विनाश के लिए बन्दर का रूप दे देते हैं। सभा में नारद जी की हँसी होती है व नारद जी क्रोधित व लज्जित होते हैं। यह सब उनकी कुमति के कारण हुआ ।

कैकेयी की सुमति

महाराज दशरथ की पत्नी महारानी कैकेयी बड़ी वीरांगना थी । एक बार राजा दशरथ देवताओं की रक्षा के लिए राक्षसों के विरुद्ध लड़ रहे थे । कैकेयी रथ के पृष्ठ भाग में बैठी अस्त्रो–शस्त्रों को उठा उठाकर दे रही थी। युद्ध बड़ा भीषण हो रहा था । अचानक कैकेयी ने देखा कि महाराज दशरथ के रथ का पहिया निकल रहा है। कैकेयी की सुमति, समर्पण और वीरता तो देखिए चलते चक्र की धुरी में हाथ डालकर उसे थामे रहती है। युद्ध समाप्त होता है। महाराज दशरथ की विजय होती है। जब महाराज दशरथ को पता चलता है तो वे

बड़े भाव विगलित होकर कहते हैं कि हे रानी ! कोई दो वर माँगों । महारानी कैकेयी का चरित्र व व्यवहार बड़ा पवित्र रहता है उसकी सुमति के कारण । रानी कैकेयी महाराज दशरथ सहित अपने सभी पुत्रों की प्रिय थीं।

कैकेयी की कुमति

जब किसी पर कुबुद्धि का आधिपत्य होता है, विनाश के बादल घिरते हैं और फिर बड़ा विध्वंस होता है। ऐसी ही कुमति भरत की माँ कैकेयी की हुई। तीनों लोकों द्वारा पूजित शील, शक्ति और सौन्दर्य के निधान, प्रेम करुणा और ममता के सागर, भक्तों के तारणहार भगवान श्रीराम को तो लोग बड़े तापस के बाद अंश मात्र दर्शन को पाते हैं वही भगवान श्रीराम जब महाराज दशरथ के पुत्र के रूप में हैं तो कैकेयी दुष्ट दासी मन्थरा के प्रभाव में आकर राम को वनवास देने के लिए कहती है :

सुनहुँ प्रानप्रिय भावत जीका, देहुँ एक बर भरतहिं टीका ।
मागउँ दूसर बर कर जोरी, पुरवहु नाथ मनोरथ मोरी ।।
तापस वेष विसेषि उदासी, चौदह बरिस राम बनवासी ।
सुनि मृदु वचन भूप हियँ सोकू, ससि कर छुअत बिकल जिमि कोकू ।।

जयन्त की कुमति

एक बार देवराज इन्द्र का मूर्ख पुत्र जयन्त कौए का रूप धरकर भगवान श्रीराम की शक्ति का परीक्षण करना चाहता है। वह माता जानकी के पैरों में चोंच मारकर भागता है। भगवान राम सरकण्डे के बाण का संधान कर देते हैं :

सीता चरन चोंच हति भागा मूढ़ मन्द मति कारन कागा ।

विभीषण की सुमति

सुमति के कारण विभीषण विभीषण श्रीराम के अनन्य भक्त हो जाते हैं । सम्पूर्ण राक्षस कुल के विनाश के बाद भी वे इसलिए बच जाते हैं क्योंकि वह परमशक्तिमान भगवान श्रीराम की शरण में हैं । जो सम्पति रावण को सैकड़ों बार सिर काटने पर भगवान शिव से मिली थी वहीं सम्पति व लंका की समृद्धियाँ भगवान राम संकोच से विभीषण को देते हैं :

जो सम्पति शिव रावनहि, दीन्हिं दिएँ दस माथ ।
सोइ सम्पदा विभीषनहिं, सकुचि दीन्हि रघुनाथ।।

रावण की कुमति

रावण परम प्रतापी और वेदज्ञ होने के बाद भी इसलिए विनष्ट हो गया क्योंकि वह कुमति के प्रभाव में था। उसने वैदेही जानकी का हरण करके स्वयं अपने विनाश का द्वार खोला था । रावण को विभीषण और मन्दोदरी ने कई बार बहुत समझाया लेकिन उसकी समझ में कुछ भी नहीं आया ।

सुनहुँ नाथ सीता बिनु दीन्हिं हित न तुम्हार सम्भु अज कीन्हें ।

हनुमान जी की सुमति

हनुमान जी की श्रीराम जी के चरणों में भक्ति पूर्णरूपेण निष्काम थी । यह सुमति का ही प्रभाव था कि तीनों लोकों में सर्वाधिक शक्तिशाली और बुद्धिमान होने के बाद भी उनमें कभी अहंकार नहीं आया । इसी सुमति, श्रद्धा, भक्ति और भगवान में अटूट विश्वास के कारण ही वे आठ सिद्धियों और नौ निधियों के स्वामी बनें । आज पूरे संसार में उनकी पूजा होती है ।

समाहार

इस प्रकार अनेक उदाहरणों से हम देखते हैं कि जो अहंकार शून्य है, भगवान के चरणों में अनुराग रखता है, श्रद्धावान है, सुमति सम्पन्न है, वह सभी प्रकार की सम्पत्तियों, सुखों और समृद्धियों का स्वामी है। सभी के द्वारा वन्दित है और जो कुमति के दुष्प्रभाव में है वह विनाश के मार्ग पर आगे बढ़ता है। महाकवि दिनकर ने भी एक कविता में लिखा है।

जब नाश मनुज पर छाता है, पहले विवेक मर जाता है

***

संस्मरण

माली दादा

रवि सिंह निरजंन, नवम 'ख'

माली दादा नहीं रहे । उनका रहना हमको एहसास कराता था सृजनशील–कर्मशीलता का । कर्मशील और कर्मयोगी कहीं भी किसी भी दायित्व से बँधे हों; हमें प्रेरित करते हैं। उनके न रहने पर हम उनका पावन स्मरण कर रहे हैं।

– संपादक

संसार में कुछ ऐसे व्यक्ति होते हैं जो सुख तथा दुःख में सदैव समान रहकर आगे की योजना बनाते हैं तथा इसी कारण समाज सदैव उनकी सराहना करता है। इसके लिये किसी विद्वान ने सही ही कहा है–

Shallow brooks are noisy

माली दादा ऐसे व्यक्तियों में से एक थे । इनका वास्तविक नाम सुखई था । हम लोग उनको प्यार से माली दादा या माली काका कहकर पुकारते थे । ये हमारे विद्यालय में सन् 1987–88 में आए थे । इनका कहना था कि हम लोग एक दिन काम न करें तो भोजन करने का कोई अधिकार नहीं हैं।

माली दादा सन् 2002 की गर्मियों में बीमार हो गये । लेकिन विद्यालय परिवार ने धैर्य धारण करके उनके जीवन के लिये ईश्वर से प्रार्थना की और फलवती हुई । ये पहले की तरह सही हो गये और विद्यालय में 8 अगस्त से आने लगे । ऐसा लग रहा था कि ईश्वर ने इनकी उम्र बढ़ा दी हो परन्तु 9 दिसम्बर को सुबह नित्यकर्म करते समय एकाएक बेहोश हो गये । 12 दिसम्बर को शाम को प्रधानाचार्य जी एवं अन्य आचार्यगण उनको देखने गये तो कहा गया– "अब ये कुछ ही घण्टों के मेहमान हैं ।" अगले दिन सुबह उनका देहावसान हो गया । दोपहर में विशाल कक्ष में छात्र वर्ग को इस बात से अवगत कराया गया । यह सुनकर छात्र वर्ग को असहनीय कष्ट हुआ। प्राचार्य जी ने शोक सभा आयोजित की । इस विद्यालय में 15 वर्ष के इस कार्य काल में माली दादा ने विद्यालय को हरा भरा कर दिया । सन् 2000 में मेरे संग एक घटना घटित हुई–

ग्रीष्मावकाश में मैं अपने घर जा रहा था । मेरे पिताजी ने मुझसे पौधे लाने के लिये कहा था । मैं अवकाश होने के पश्चात् पौधे लेने के लिये माली दादा के पास गया । माली दादा ने पूछा– "यहाँ पर काहे आयें हो" तब मैंने उनके सामने अपनी इच्छा व्यक्त की, कि मुझे एक गुलाब का पौधा चाहिये । उन्होंने बड़े प्यार से कहा, "रूक जाओ, अभी देता हूँ ।"

उनके बोलने के लहजे ने मुझे अन्दर तक छू लिया, उनके इस ममत्वपूर्ण व्यवहार ने मुझे तथा मेरे मन को बहुत प्रभावित किया और उन्होंने एक पालिथिन में गुलाब का छोटा पौधा सुरक्षित मेरे हाथ में दिया । चूँकि मुझे घर जाने की जल्दी थी इसलिये मैं इसे लेकर तेजी से भागा लेकिन तुरन्त ही माली दादा ने कहा– "रूक जाओ, इसे बड़ा कैसे करोगे ?" मैं दुबारा लौट कर उनके पास गया तब उन्होंने मुझे कागज की तीन पुड़ियाँ हाथ में पकड़ाई और कहा– "तुम भोजन नहीं करोगे, तो जीवित कैसे रहोगे ?" मुझे उनके कथन का आशय तुरन्त समझ में आ गया और तब मैं उन पुड़ियों को लेकर घर गया ।

मैं इस घटना से बहुत ही प्रभावित हुआ था । आज भी उनका दिया हुआ गुलाब का पौधा मेरे घर के आँगन में लगा हुआ है और जब भी मेरी आँखों के सामने कोई फूल उसमें खिलता है तो मुझे माली दादा की बातें याद आने लगती हैं । उनकी बातों को याद रखते हुए आज भी मैं पेड़ पौधों को अपनापन सा अनुभव करने का प्रयास करता हूँ और करता रहूँगा।

* * *

एक अनसुलझा रहस्य 'बरमूडा त्रिकोण'

दीपक सिंह सेंगर , एकादश 'क'

मनुष्य ने यद्यपि अपने ज्ञान–विज्ञान को बहुत बढ़ाकर प्रकृति में बहुत कुछ जान–समझ लिया है उसको नियंत्रित भी करने का प्रयास किया है परन्तु फिर भी कुछ ऐसे रहस्य अनसुलझे हैं जो मनुष्य की बुद्धिमत्ता को चुनौती देते हैं। ऐसा ही रहस्य है बरमूडा त्रिकोण । – संपादक

इक्कीसवीं सदी के वैज्ञानिक दावा करते हैं कि दुनिया का कोई रहस्य अब रहस्य नहीं रह गया । विज्ञान ने हर रहस्य को वैज्ञानिक तरीकों से सुलझाया है। ये सच्चाई तो वही जानें, पर अब भी कुछ ऐसे रहस्य हैं, जिन पर से परदा नहीं हटा है। इन्हीं में से एक है, 'बरमूडा त्रिकोण' का रहस्य ।"

अमेरिका के दक्षिण पूर्वी तट के पास पश्चिम अटलांटिक महासागर का एक हिस्सा है, जो उत्तर में बरमूडा से दक्षिण फलोरिडा तक तथा पूर्व में बहामा और पोर्टोरिका से लगभग 40 अंश पश्चिमी देशान्तर तक फैला हुआ है, 'बरमूडा त्रिकोण' नाम से प्रसिद्ध यह क्षेत्र आज संसार की सबसे विवादास्पद अविश्वसनीय और रहस्यमय घटनाओं का केन्द्र है।

सर्वप्रथम 1945 में अमेरिकी नौ सेना के पाँच लड़ाकू विमान प्रशिक्षण उड़ान के दौरान गायब हुए फ्लोरिडा के हवाई अड्डे स्थित कण्ट्रोल टावर को उड़ान के कप्तान चार्ल्स टेलर द्वारा भेजा गया आखिरी संदेश इस प्रकार था, "हम बरमूडा क्षेत्र में थे तभी हमें लगा कि हमारे विमान हम लोगों के दिये निर्देशों का पालन नहीं कर रहे हैं। .... हमें जमीन नहीं दिख रही है।" और अन्त में कहा 'अब हमारे पीछे मत आओ ..... लग रहा है कि वे किसी दूसरी दुनिया के लोग हैं ।

पहला जलयान 1880 ई. में गायब हुआ तथा 1880 ई. में चार अन्य विमान भी गायब हुए । सबसे अजीबोगरीब घटना घटी अमेरिकी जहाज 'ऐलेन आस्टिन' के साथ । इसने बरमूडा क्षेत्र में तैरते समय एक ऐसा जहाज देखा जिसमें कोई यात्री नहीं था । ऐलेन आस्टिन के कप्तान ने अनुभवी आदमियों को जहाज को किनारे लाने को भेजा । लेकिन नये कर्मचारी के जहाज चलाते समय समुद्र में भयंकर तूफान उठा तथा दोनों जहाजों में सम्पर्क टूट गया । दो दिन की खोज के बाद वह जहाज मिला लेकिन नये कर्मचारी गायब थे । इस बार उसकी दिन भर निगरानी की गयी । लेकिन रात होते–होते पुनः समुद्री आंधी आयी और जहाज गायब ।

1964 ई. में हवाई जहाज के चालक थे चक वेकली । उनके अनुसार 'उसके विमान के पंख अजीब रोशनी में चमकने लगे, जिससे कुछ दिखता नहीं था, तेल की सुई चारों तरफ घूमने लगी व आटो पायलट ने जहाज को दाहिनी ओर मोड़ दिया, लेकिन उन्होंने उसे शक्तिपूर्वक सीधे रखा व कुछ देर बाद सब ठीक हो गया ।

इससे बचे लोगों के अनुसार, 'विमान अथवा जहाज के यन्त्र ऐसे समय में बेकार हो जाते हैं तथा काम करना बन्द करते हैं । दिशा–सूचक सूई तेजी से गोलाई में नाचने लगती है।

अभी लगभग 19 वर्ष पहले एक बोइंग 727 विमान बरमूडा से होकर हवाई अड्डे पर उतरने वाला था कि अचानक रडार के पर्दे से गायब हो गया । करीब दस मिनट बाद वह पुनः रडार के पर्दे पर आया तथा दस मिनट देर से हवाई अडडे पर उतरा । कण्ट्रोल के अधिकारी द्वारा विमान चालक से मजाक ही मजाक में पता चला कि दोनों की घड़ियों के समयों में 10 मिनट का अन्तर है। बाद में पता चला कि सभी यात्रियों की घड़ियाँ 10 मिनट पीछे थी। ये 10 मिनट उनके गायब होने का समय था ।

'हेराल्ड वाइकिंग' के अनुसार इस सबके गायब होने के दो कारण हैं। पहला यह कि विभिन्न ग्रहों के लोग पृथ्वी पर आते हों तथा मनुष्यों व जहाजों को परीक्षण के लिये उठा ले जाते हो । दूसरा यह कि मानव

के कृत्रिम विकास को देखने के लिये उठा ले जाते हों ।

इस सम्बन्ध में केवल एक सूत्र मिला । वह है एक रेडियो संदेश, जो 18 अप्रैल 1975 ई. को फ्लोरिडा, अमेरिका के 'डब्लू.एफ.टी.एल.' स्टूडियों के प्रोग्राम डाइरेक्टर रे. स्मिथ को मिला था । वह संदेश इस प्रकार था। "हमारे लोक में जीवित वस्तुओं की आभा होती है। इस लोक का नियन्त्रण मिलियन काउन्सिल करती है। बरमूडा इस लोक का नियन्त्रण क्षेत्र है। इस ग्रह के साथ काउंसिल का सम्पर्क प्राप्त करने का यही एक मार्ग है।" इसके बाद सम्पर्क टूट गया । आज भी वैज्ञानिक उस अनजाने लोक से सम्पर्क स्थापित करने का प्रयास कर रहे हैं।

किताब "Believe it or not" के अनुसार, जब हम किताब में कोई चित्र बनाते हैं तो वह द्विविमीय होता है। हमारे सामान्य जीवन में हर वस्तु त्रिविमीय है। परन्तु शायद एक अन्य विमा भी है– समय की विमा।

जिस प्रकार हमारी पृथ्वी है अन्य आठ ग्रह हैं जिनकी एक आकाश गंगा है । उसी प्रकार ब्रह्माण्ड में अनेकों आकाश गंगायें हैं । जब हमारी आकाश–गंगा से किसी अन्य आकाश–गंगा की समय–विमा मिलती है तो एक आकर्षण शक्ति पैदा होती है जो अत्यधिक प्रबल होती है । यह आकर्षण शक्ति निश्चित कोण व अंश पर ही उत्पन्न होती है। शायद इसी का परिणाम है– बरमूडा त्रिकोण ।

***

लघु-कथा

भूख

अंकित आर्य, एकादश 'ख'

रामपुर ग्राम में गरीबों को जूते का तलवा समझा जाता था। यहीं मोती नाम का एक मोची रहता था । पत्नी की तेरहवीं कुछ ही दिन पहले हुई थी । अगर मोती का कोई अपना था तो चार साल की बेटी रानी । वह माँ की मृत्यु को कुछ समझ नहीं पायी थी । बस रोज–रोज बापू से यही पूछती कि सोई हुई माँ को आदमी उठाकर कहाँ ले गये ? बेटी सिसकियाँ लेकर रोज–रोज पूछती, किन्तु उसका बापू उसे क्या समझाता ।

उसने बेटी को माँ का प्यार दिया । घर में एक बार चार दिनों से अनाज का एक भी दाना उपलब्ध नहीं था, केवल पानी पीकर जिंदगी कट रही थी । पाँचवें दिन मोती ने अपनी बेटी को शान्त किया और आश्वस्त किया कि– "आज तुम्हें भोजन अवश्य मिल जाएगा ।" मोती ने एक राजघराने की मालकिन से भोजन माँगा और उसकी बेटी पर रहम करने को कहा, किन्तु अहंकारी मालकिन ने कहा हमारे यहाँ सिर्फ ब्राह्मणों को ही भोजन दिया जाता है। मोती देख रहा था कि उस मालकिन के लड़के कुत्ते, बन्दरों को पूड़ियाँ खिला रहे हैं और स्वयं रसमलाई खा–खाकर फैला रहे हैं। मोती ने सोचा कि क्या भगवान ने हमें इन जानवरों से भी गया गुजरा बनाया है कि हमको खाने को कुछ भी नहीं मिल सकता है। उस गर्मी की तमतमाती धूप में वह जूते गाँठने का सामान लेकर सड़क के किनारे बैठ गया । धूप के कारण पाँव में छाले पड़ गये थे । शायद विधाता भी आज मोती से असन्तुष्ट था, जो कि एक भी ग्राहक नहीं आया। शाम को निराश होकर अपनी झोपड़ी में आया और अन्दर अपनी बेटी के पास गया, जिसके मुख पर बैठी एक चिड़िया उसके मुख में दाना डालने की कोशिश कर रही थी, शायद अब बहुत देर हो चुकी थी।

मोती ने अपना साफा खोलकर उसके शरीर को ढक दिया और आकाश की ओर निहारकर कहा– कैसा है ये संसार ।

***

निबंध

पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं

अनुराग तिवारी, नवम 'ख'
(किशोर वर्ग, **प्रथम** स्थान)

प्रस्तावना : स्वाधीनता परम सुख है और पराधीनता परम दुख । सिर्फ मनुष्य ही नहीं अपितु जीव जन्तु आदि सभी स्वतन्त्रता को पसंद करते हैं । वन में खिलने वाला पुष्प घर के गमले में मुरझा जाता है, वही पौधा जो खुले में अपना विकास करता है, बंद अंधेरे कमरे में अपने प्राण त्याग देता है। तोता सोने के पिंजड़े रूपी महल को तोड़कर स्वच्छंद आकाश में उड़ना चाहता है। सिंह जैसा हिंसक पशु कटघरे को तोड़कर स्वतंत्र विचरना चाहता है । जब पशु पक्षी स्वतन्त्रता को इतना पसंद करते हैं तो कल्पना कीजिए कि मनुष्य परतन्त्रता के जीवन को कैसे जी सकता है ?

स्वाधीनता का सुख

स्वाधीनता का सुख सचमुच बहुत अच्छा होता है। स्वाधीनता का अर्थ होता है अपनी इच्छानुसार कार्य करना। स्वाधीन व्यक्ति अपने घर की रूखी रोटी खाकर दूसरे के आश्रय में रहने वाले व्यक्ति से अधिक सुखी व स्वस्थ रहता है। स्वाधीन व्यक्ति को पराधीन व्यक्ति की तरह दूसरों का मुँह नहीं देखना पड़ता है वह अपने सभी कर्मों को इच्छानुसार करने में सक्षम होता है उसे किसी की सहायता की आवश्यकता नहीं पड़ती है।

"बस एक दिन की दासता, शत कोटि नरक समान है।
क्षण मात्र की स्वाधीनता, शत स्वर्ग की मेहमान है।।"

पराधीनता का दुःख

पराधीनता का दुःख बहुत ही कष्टदायक होता है। पराधीन व्यक्ति को हमेशा अपने मालिक की अभद्रता सहनी पड़ती है। पराधीन व्यक्ति को उसकी उपेक्षाएँ सहनी पड़ती है जिसे वह अपने स्वप्न में भी सहना पसंद नहीं करता है। उसे दूसरे की गुलामी करनी पड़ती है। पराधीन व्यक्ति के गुण दूसरों के लिए होते हैं इसके अंदर के गुण दूसरों द्वारा प्रयोग किए जाते हैं। वह अपनी इच्छानुसार कुछ भी नहीं करता है जब तक उसे अपने मालिक की आज्ञा नहीं मिलती है। एक कहावत है– "स्वर्ग में दास बनकर रहने की अपेक्षा, नरक में स्वाधीन शासन करना अधिक अच्छा होता है।"

पराधीनता के प्रकार

पराधीनता अनेक प्रकार की होती है जैसे– प्राकृतिक पराधीनता, राजनैतिक पराधीनता, धार्मिक पराधीनता, वैचारिक पराधीनता आदि । प्राकृतिक पराधीनता के अन्तर्गत मनुष्य अपने कार्यों को प्राकृतिक आपदाओं जैसे– भूकंप, बाढ़ आदि के कारण नहीं कर पाता है और वह प्राकृतिक पराधीन हो जाता है। राजनैतिक पराधीनता के अन्तर्गत दो राष्ट्रों के बीच होने वाले युद्ध के बाद लोगों को विजेता शासक की दासता स्वीकार करनी पड़ती है और उनके विचारों को भी ग्रहण करना पड़ जाता है। धार्मिक पराधीनता के अन्तर्गत लोगों को दूसरे के धार्मिक रीति रिवाजों को ग्रहण करना पड़ सकता है। एक प्रमुख पराधीनता आर्थिक पराधीनता है जिसमें वह मनुष्य को भिखारी बना देती है। यह मनुष्य का चारित्रिक ह्रास भी कराती है। वैचारिक पराधीनता के अन्तर्गत लोगों को दूसरे के विचारों को ग्रहण करना पड़ता है।

"कोई नहीं चाहता, परतन्त्र जीवन भी भला ।
है कौन जो चाहे पहनना, दासता की शृंखला ।।"

स्वाधीनता की महत्ता

स्वाधीनता हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण है। व्यक्ति अपना समग्र विकास स्वाधीन होकर ही कर सकता है। विज्ञान की प्रगति, कला आदि का विकास सभी स्वतन्त्र चिन्तन का फल है। स्वाधीन व्यक्ति ही अपना जीवनयापन भली प्रकार से कर सकता है।

स्वाधीनता के लिए संघर्ष

लोकमान्य तिलक ने कहा कि– "स्वतन्त्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।" इस अधिकार को प्राप्त करने के लिए हमें प्रयत्नशील रहना चाहिए ।

संसार के सभी देशों ने स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष किया है। विश्व के छोटे बड़े सभी देशों ने स्वतन्त्रता की जंग लड़ी है। हमारा देश 90 वर्ष तक स्वतन्त्रता के लिए संघर्षरत रहा है इस लड़ाई के लिए हमारे देश के वीरों ने अपने प्राणों की आहुतियाँ दी हैं।

आजकल हम स्वतन्त्रता के युग में अवश्य जी रहे हैं परन्तु अभी भी हम मानसिक रूप से अंग्रेजों के गुलाम हैं। हम उनके खान पान, पहनावे, बोलचाल को गर्व के साथ ग्रहण कर रहें है। हमको चाहिए कि हम पाश्चात्य संस्कृति की ओर न जाएं व स्वतन्त्र चिन्तन के लिए प्रयत्नशील रहें ।

उपसंहार

निष्कर्ष तो यह निकला कि स्वतन्त्रता परम सुख है व परतन्त्रता परम दुःख है। स्वतन्त्रता बहुत बड़ा पुण्य है व परतन्त्रता बहुत बड़ा पाप है। हमें स्वतन्त्र रहने के लिए जागरूक हो जाना चाहिए । तुलसीदास जी ने सत्य ही कहा है–

"पराधीन सपनेहुँ सुख नाँही।

* * *

सब बुझे दीपक जला लूँ ।
घिर रहा तम आज दीपक–रागिनी अपनी जगा लूँ ।
क्षितिज कारा तोड़कर अब
गा उठी उन्मत्त आँधी,
अब घटाओं में न रूकती
लास–तन्मय तड़ित् बाँधी,
धूल की इस वीण पर मैं तार हर तृण का मिला लूँ ।

– महादेवी वर्मा

निबंध

पराधीनता एक कलंक

देवाशीष सिंह, नवम 'ख'
(किशोर वर्ग, **द्वितीय** स्थान)

'पराधीन सपनेहुँ सुख नहीं' इस वाक्यांश में अनेक अर्थ निहित हैं । पराधीनता एक ऐसे दुःस्वपन की तरह है जिसमें पराधीन व्यक्ति कल्पना में भी सुख का अहसास नहीं कर सकता । पराधीनता का अर्थ केवल वही व्यक्ति समझ सकता है जिसने स्वयं उसे भोगा हो । पराधीनता व्यक्ति को क्या से क्या बना सकती है इसके लिये यह एक उदाहरण की काफी है। हम सब जानते हैं कि शेर जंगल का राजा होता है, परन्तु वही शेर जब पराधीन हो जाता है तो वह सर्कस में एक आदमी के इशारों पर नाचता है।

इस उदाहरण के द्वारा हम पराधीन व्यक्ति की मानवीय संवेदनाओं, उसकी विवशताओं एवं उसकी मजबूरी को समझ सकते हैं । बाद में उसकी यही विवशताएँ विद्रोही स्वरों में परिणित होकर पराधीनता की बेड़ियों को काटने में सक्षम होती हैं।

"अपनी आजादी को हम हरगिज भुला सकते नहीं,
सिर कटा सकतें हैं, लेकिन सिर झुका सकते नहीं ।

X X X

"सर–फरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है,
देखना है जोर कितना बाजुए कातिल में है।"

उपर्युक्त कुछ उक्तियाँ विद्रोही स्वर को प्रकट करती हुई प्रतीत हो रहीं है।

हमें विचार करना चाहिये कि आखिर क्या है यह विद्रोह रूपी छटपटाहट । यदि आप किसी बच्चे पर बंदिशें लगाते हैं तो वह रोता है, छटपटाता है और वह पूछता है कि माँ मैं कुछ देर खेल आँऊ । आप हाँ करिये और देखिये मानो उसको सारा जहाँ मिल गया हो । पराधीनता एक ऐसा दुःस्वप्न है जिसमें पराधीन व्यक्ति सुख के विषय में सोचने से भी डरता है। एक भाव जागृत होता है अपनत्व का भाव जो पराधीन व्यक्ति को पराधीनता की बेड़ियाँ काटने हेतु जागृत करता है।

'तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूँगा " – सुभाष चन्द्र बोस
"स्वराज्य हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है " – लोकमान्य तिलक

खून के बदले आजादी मिलती है और आजादी चाहने के लिये प्रत्येक व्यक्ति तैयार है। आजादी पाने की यह इच्छा, जज्बात बताते हैं करते हैं आजादी के महत्व को । प्राचीन काल में हमारा देश, 'सोने की चिड़िया' कहलाता था परन्तु अब हमारा देश कंगालों का देश हो गया है। कुछ महान लोगों ने आजादी के महत्व के बारे में कहा है

"पराधीनता का एक वर्ष देश को सौ वर्ष पीछे ले जाता है" –महात्मा गांधी
पराधीनता उन्नत समाज में एक कलंक है – राबर्ट क्लार्क

अब 'पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं' के अर्थ में जाइये । इसमें पराधीन व्यक्ति को स्वप्न में भी सुख का आभास नहीं हो रहा है । क्यों ? क्योंकि उसे अपनी योग्यताओं, अपनी सीमाओं, अपनी क्षमताओं अपनी संवेदनाओं का ज्ञान नहीं है। स्वप्न व्यक्ति के दैनिक प्रणाली में उत्पन्न ऊर्जा का स्रोत होते हैं । स्वप्न व्यक्ति के वर्तमान एवं भूत का सुनहरा दर्पण होते हैं। जो पराधीन व्यक्ति होता है वह स्वप्न में भी पराधीनता के अंतर्गत ही होता है। फिर वह सुख कहाँ प्राप्त करेगा ? तोते को क्या चाहिये ? उसे चाहिये मुक्त आकाश स्वछंद विचरण भले ही वह स्वर्ण पिंजरे में ही क्यों न हो ।

अंत में यह निष्कर्ष निकलता है कि 'पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं', एक सत्य वचन ही है। पराधीनता चाहे मनुष्य की हो या जानवर की सही नहीं ठहराई जा सकती । पराधीनता मनुष्य की सभ्यता को बदल कर रख देती है।

'युनान मिश्र रोमा सब मिट गये जहाँ से इनके मिटने में भी पराधीनता का कारण रहा है। इसलिये हमें एक स्वतन्त्र शक्तिशाली एवं विजयी राष्ट्र की चाह करनी चाहिये ।

"स्वतन्त्रता एक इस प्रकार की दिव्य अनुभूति है, जिसके महत्व को केवल पराधीन व्यक्ति ही अनुभव कर सकता है।"

* * *

पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं

अखिल कुमार त्रिपाठी, नवम 'क'
(किशोर वर्ग, तृतीय स्थान)

पराधीनता एक बहुत बड़ा अभिशाप है जीवन के लिए । चाहे पशु हो, पक्षी हो या मनुष्य कोई भी परतन्त्रता की बेड़ियों में जकड़ना नहीं चाहता । यह बात अलग है कि पशुओं को मनुष्य के बल के सम्मुख विवश होना पड़ता है। यदि चिड़िया को पिंजड़े में बन्द कर दिया जाए तो वह लाख समझाने पर भी बाहर निकलने की कोशिश करेगी। किसी कवि की निम्नलिखित पंक्तियाँ इस बात को सार्थक करती हैं–

"चिड़िया को लाख समझाओं कि पिंजरे के बाहर की दुनिया बहुत बड़ी है, निर्मम है। वहाँ हवा में उसे अपने जिस्म की गन्ध तक नहीं मिलेगी । यूँ तो बाहर नदी है, समुद्र है, झरना है, पर पानी के लिए भटकना है, यहाँ कटोरी में भरा जल गटकना है। बाहर पानी का टोटा है, यहाँ चुग्गा मोटा है। बाहर बहेलिये का डर है, यहाँ निर्द्वन्द्व कण्ठ स्वर है। मारे जाने की आशंका से भरे होने पर भी पिंजरे से जितना अंग निकल सकेगा निकालेगी अपना हरसूं जोर लगाएगी और पिंजरा टूट जाने या खुल जाने पर उड़ जाएगी ।"

पराधीन होकर कोई भी व्यक्ति या जीव जन्तु अपनी इच्छाओं की पूर्ति नहीं कर सकता । मदारी का बन्दर मदारी के लिए नाचता है परन्तु अपनी इच्छा से नहीं, अपितु विवश होकर । क्या उसका मन नहीं होता कि वह भी वृक्षों पर जाकर स्वच्छन्द विचरण करें और फलों का मीठा रस चखे । परन्तु उसे अपनी इच्छाओं का हनन करना ही पड़ेगा । शिवमंगल सिंह समुन पिंजरबद्ध पक्षी के भावों का वर्णन करते हुए कहते हैं–

हम पंछी उन्मुक्त गगन के, पिंजरबद्ध न गा पाएँगे।
कनक तीलियों से टकराकर, पुलकित पंख टूट जाएँगे ।

पराधीनता चार प्रकारों की होती है– राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा वैचारिक ।

राजनीतिक पराधीनता के अन्तर्गत एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र पर बलपूर्वक अधिकार जमा लेता है। उदाहरण के लिए अंग्रेजों ने भारत पर अधिकार कर लिया था जिससे भारत ने सन् 1947 ई. में स्वतन्त्रता प्राप्त की । आर्थिक पराधीनता के अन्तर्गत कोई राष्ट्र या मनुष्य आर्थिक रूप से गुलाम हो जाता है। इस समय भारत विश्व बैंक का बहुत बड़ा ऋणी है। सांस्कृतिक पराधीनता में व्यक्ति को अपना धर्म निभाने की स्वतन्त्रता नहीं होती या उसे दूसरा धर्म अपनाने के लिए बाध्य किया जाता है। वैचारिक पराधीनता में मनुष्य दूसरों के विचारों पर आश्रित हो जाता है और उसे अपनी इच्छा से कोई भी कार्य करने की स्वाधीनता नहीं रहती । इस प्रकार वह एक जिन्दा लाश बनकर ही रह जाता है।

कोई भी बुद्धिमान व्यक्ति न तो पराधीन होना चाहेगा और न ही किसी और को पराधीन करने की चेष्टा ही करेगा क्योंकि पराधीन मनुष्य का जीवन एक बोझ के समान होता है, जिसे वह जबरदस्ती ढोता है। उसके जीवन में कोई खुशी नहीं होती केवल दुःख ही दुःख होता है।

स्वाधीनता किसी भी मनुष्य के सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक है। स्वाधीन मनुष्य के ललाट पर एक अद्वितीय दमक होती जबकि पराधीन मनुष्य का चेहरा मुरझाया हुआ सा रहता है। पराधीन मनुष्य के लिए पराधीनता पाँवों में बँधी हुई एक ऐसी चक्की के समान होती है जो उसे निरन्तर अवनति के गड्ढे में गिराती रहती है, जबकि स्वाधीनता एक सम्बल के समान होती है जो व्यक्ति को निरन्तर उन्नति की ऊँचाइयों तक ले जाती रहती है।

अन्त में यह निष्कर्ष निकलता है कि पराधीनता जीव जीवन का बहुत बड़ा अभिशाप है। यह एक अन्धकार है जिसमें फँसने के पश्चात मनुष्य निरन्तर गिरता ही जाता है। पराधीनता मनुष्य व सभी प्राणियों के लिए सदैव दुःख लेकर ही आती है–

पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं ।
करि विचार देखहु मन माहीं ।।

***

कहानी प्रतियोगिता में बाल वर्ग में प्रथम स्थान

मायावी गेंदें

अखिल मिश्र, सप्तम 'क'

बच्चे नटखट होते हैं। रामपुर पढ़ने जाने वाली हमारी टोली पूरी वानर टोली थी । एक दिन हम लोग स्कूल से लौट रहे थे कि रास्ते के उस सूखे कुएँ में हमको झाँकने की सूझी । जैसे ही हमने उस सूखे कुएँ में झाँका त्यों ही.... हमने देखा कि उस कुएँ में एक गेंद पड़ी है। दुर्भाग्य से उसी दिन हम लोंगों की गेंद खेलते–खेलते खो गई थी । अतः हम लोगों की इच्छा उस गेंद को उठाने की हुई। हम लोग तरह–तरह के विचार करने लगे । अन्ततः बहुत देर बाद एक अति उत्तम सुझाव आया कि हममें से एक मित्र अपने घर से रस्सी ले आये और जिसकी सहायता से कुएँ के अन्दर जाया जा सके । अपनी सुरक्षा हेतु एक गुलेल और एक डण्डा अपने साथ ले जाय । इस विचार से सब लोग खुश हो गये, हमारा एक मित्र अपने घर गया और लगभग आधे घंटे बाद सभी वस्तुओं सहित आ गया। इसके उपरान्त जो हमारे दल का मुखिया था वह कुएँ में घुसने को तैयार हुआ । वह हाथ में डंडा तथा गुलेल लेकर रस्सी की सहायता से उस कुएँ में घुस गया । परन्तु जैसे ही उसने गेंद को छुआ तो उसे एक आवाज सुनाई दी । वह आश्चर्यचकित होकर उस आवाज की ओर एकाग्र हो गया । परन्तु फिर उसे कोई आवाज सुनाई नहीं दी । उसने समझा कि यह उसका भ्रम है अतः वह फिर अपने प्राप्तव्य को पाने हेतु अपना हाथ बढ़ाया तो उसे पहले जैसी आवाज सुनाई दी परन्तु इस बार उसने इस रहस्यमयी आवाज की ओर ध्यान न देते हुए गेंद को उठा लिया और उसे पटकने लगा । पटकने पर वही आवाज सुनाई देती थी । परन्तु उस आवाज पर ध्यान दिये बिना वह कुएँ से बाहर निकल आया । हम लोग बहुत खुश गये और उस गेंद से खेलने लगे । हमारे मित्र ने वह आवाज जो गेंद में से आती थी उसके सम्बन्ध में बताया । पर हम लोगों ने उस पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया और खेलने लगे । प्रतिदिन की तरह आज हम फिर स्कूल से वापस आ रहे थे । हम लोगों को फिर उस कुएँ में झाँकने की सूझी । आज फिर हम लोगों को एक गेंद दिखी और हम लोगों ने वह गेंद भी उठा ली । यही क्रम हम लोगों के साथ लगातार छः दिन तक हुआ और हमें कुल छः गेंदें मिली । जब वह छः गेंदें इकठ्ठी एक साथ रखी गई तो उनमें एक आवाज निकली, कि "हमें मुक्त कराओ"। इस प्रकार की आवाज बार–बार निकलने पर हम में से एक मित्र ने पूछा कि हम तुम्हें कैसे मुक्त करा सकते हैं । तुम तो गेंद हो । तब उन गेंदों ने सामूहिक स्वर में कहा कि हम गेंद नहीं हैं हम राजकुमार हैं परन्तु एक दुष्ट औरत ने हम लोगों से छीनकर हमारी प्यारी बहन को उस कुएँ में कैद कर लिया है। अपनी बहन की खोज में हम छः भाई बारी–बारी से उस कुएँ में अपनी बहन को ढूँढने गये पर उस दुष्ट औरत ने हम सबको गेंद बना दिया और कहा कि जब भी कुछ अच्छे लड़के तुम्हें गेंद के लालच में उठा ले जायेंगे तो तुम उन्हें अपने बीते दिन की बात सुनाना तो वे तुम्हें वापस राजकुमार के रूप में परिवर्तित कर देंगे और तुम्हारी बहन को मेरी कैद से छुड़ा लेंगे । इस प्रकार हम सब मित्र उस कुएं में उन गेंदों के साथ गये । उस कुएँ में एक सुरंग थी उसमें घुसकर हम लोग एक अत्यन्त सुन्दर जगह पहुँच गये। हमने देखा कि वहाँ पर सुन्दर पुष्पों के बीच एक लड़की रो रही थी । उस लड़की को देखकर वे गेंदें राजकुमार के रूप में आ गयी और फिर उस लड़की ने कहा कि मैं आपकी बहन हूँ । अपनी बहन को पाकर वे राजकुमार प्रसन्न हो गये। उनकी बहन ने कहा कि उस दुष्ट औरत की जान इसी में से सबसे बड़े फूल में है। एक राजकुमार ने उस फूल को तोड़ दिया उसके टूटते ही एक चीख सुनाई दी और वह जगह एक महल में तब्दील हो गई। हमसे प्रसन्न होकर उन राजकुमारों ने हमको खूब सारी मुद्रिकाएँ देकर वापस भेज दिया ।

* * *

कहानी प्रतियोगिता में बाल वर्ग में द्वितीय स्थान

भूतनी का भ्रम

सौरभ दुबे, अष्टम 'ख'

बच्चे नटखट होते हैं। रामपुर पढ़ने जाने वाली हमारी टोली पूरी वानर टोली थी । एक दिन हम लोग स्कूल से लौट रहे थे कि रास्ते के उस सूखे कुएँ में हमको झाँकने की सूझी । जैसे ही हमने उस सूखे कुएँ में झाँका त्यों ही....मेरी नजर उसमें पड़ी मेरी पुरानी घड़ी पर गयी । अरे! कुछ दिन पहले इसे मैंने घर की आलमारी में रखा था। फिर बहुत ढूँढ़ा नहीं मिली, पर यहाँ कैसे पहुँची ? मेरे पीछे खड़े सोनू ने मुझसे कहा– ये तो तुम्हारी घड़ी है। लगता है दादी सच कहती हैं। सब लोग उत्सुकतावश पूछने लगे– क्या कहती हैं? उसने कहा– अरे! दादी कहती हैं कि इस कुएँ में भूतनी रहती है। वह सबके घर का कुछ न कुछ सामान जरूर उठा ले जाती है । वह कहतीं हैं कि उनकी सोने की लुटिया भूतनी ले गयी फिर कभी नहीं मिली । यह तुम्हारी घड़ी भी वही उठा लाई है ।

मुझे हँसी आ गयी । उस रात को मैं सो नहीं पाया । अजीब सी उलझन ने मुझे घेर रखा था। सुबह जल्दी उठकर मम्मी से पूछा– "मम्मी क्या पुराने कुएँ में कोई भूतनी है" ?

तभी दादी आ गयी। शायद उन्होंने मेरी बात सुन ली थी । इसलिये तुरन्त बोली– बेटा उधर मत जाना। वहाँ भूतनी का निवास है, पता नहीं कब इस गाँव को नजर लगी और यह भूतनी आ गयी । तब से इसने जीना हराम कर रखा है। राम–राम पता नहीं कब जायेगी ? जब देखों तब कुछ न कुछ दुर्घटना होती है। आज उसने सोनू के बाबा .....

वह रोने लगीं। मैं दौड़कर सोनू के घर पहुँचा । वहाँ का नजारा देखकर स्तब्ध हो गया । सोनू के बाबा घर के बाहर द्वार पर बँधे पड़े थे। उनकी गरदन काट दी गयी थी । मुझे कुछ संदेह हुआ । मेरे मन में इसका पूरा वृतान्त जानने के लिये अपार उत्सुकता हो गयी । मैंने सोनू से पूछा– क्या हुआ ? यह क्या हुआ ? उसने कहा– तुम्हारी वजह से यह हुआ है । न तुम कुएँ के पास जाते न ही वह जागती और न ही यह सब होता। उसकी बात सुनते ही सबने मुझे डाँटना प्रारम्भ कर दिया । मैं उन्हें समझाने की कोशिश करता रहा परन्तु कोई प्रभाव न पड़ा ।

अब मैंने यह सोच लिया था कि इस भूतनी का आतंक सबके दिमाग से हटा दूँगा ।

वहीं पुलिस खड़ी थी । मैं उनके पास गया । सुरेश अंकल ने मुझे पुलिस स्टेशन बुलाया । मैं वहाँ गया उन्होंने कहा कि बताओ क्या कहना चाहते हो ? मैंने बताया अंकल दरअसल कल मुझे उस कुएँ में झाँकने का मन हुआ । मैंने उसमें झाँका परन्तु मुझे उसमें कोई भूतनी नहीं दिखी । क्या कुछ और दिखा ? नहीं ..... हाँ याद आया मेरी घड़ी दिखी थी । वह कुछ दिन पहले खो गयी थी ।

– "कुएँ में या बाहर" ?

– "कुएँ में"।

फिर उन्होंने कुछ देर सोचकर मुझे अपनी योजना बतायी ।

मैं वापस आकर लेट गया । रात के लगभग डेढ़ बजे मेरी नींद खुली । मैं चुपके से बाहर चला गया।

बाहर आकर मैंने पेड़ के पास बिस्तर बिछाया और सो गया । घर का दरवाजा खुला छोड़ दिया ।

तभी मेरी नींद खुली । लगा जैसे कोई कुछ फुस–फुसा रहा है मैंने चारों तरफ देखा । सोनू के घर के पास कुछ लोग खड़े थे ।

मैं चुपके पेड़ की आड़ में हो गया । बस इतना सुना कि साढ़े चार बजे सुबह.... भूतनी । वे लोग चले गये। मैं कुछ समझ नहीं पाया । सुबह उठकर थाने भागा । इंस्पेक्टर अंकल वहीं मिल गये । उन्हें बताया तो उन्होंने अनुमान लगाया कि हो सकता है कि कुएँ पर कुछ हो ।

हम लोग वहाँ पहुँचे । वहाँ सोनू बेहोश पड़ा था । होश में आने पर उसने बताया कि उसे नशे की लत थी। कुछ आदमी उसे चरस देते थे । पर बाबा ने देख लिया । उस रात जब वे यहाँ आ गये । उन्होंने मुझे देख लिया और उन आदमियों नें उन्हें मारकर घर के बाहर बाँध दिया ताकि कोई शक न करे पर मैने कुछ नहीं किया । आज वे मुझे यहाँ बुलाकर लाये और सिर पर मारकर भाग गये ।

मैंने उससे कहा कि– वे दूर नहीं गये होंगे । अंकल आप थाने में सूचना दीजिये कि वे उन्हें ढूढें ।

मैं सोनू को लेकर घर गया । वहाँ गाँव वालों को कुछ नहीं बताया । दूसरे दिन इंस्पेक्टर अंकल आये उन्होंने मुझे एक चेक पकड़ते हुए कहा कि तुम्हारी जानकारी की वजह से हमने दो स्मगलर पकड़े ।

वे चरस, गाँजा का व्यापार करते थे । लड़कों को नशे का आदी बनाते थे । घरवाले कुछ नहीं समझे फिर इंस्पेक्टर अंकल ने पूरी कहानी बतायी । उसमें सोनू का नाम नहीं था । गाँव वाले मेरी तारीफ कर रहे थे।

सोनू ने मेरे पास आकर कहा तुमने मुझे बचा लिया । मैं आज के बाद कुछ गलत काम नहीं करूँगा ।

मैंने कहा– वादा

"वादा"

फिर उस कुएँ की भूतनी का अन्त हो गया । आज सोनू पुलिस ऑफिसर है मैं भी उसी के साथ हूँ ।

सच में बच्चे तो नटखट होते ही हैं।

***

मानस में निष्काम भक्ति

स्रोत गुप्त, द्वादश 'ख'

श्रीरामचरित मानस एक महाकाव्य ही बल्कि जीवन की कसौटी है। जीवन के हर तथ्य की सत्यता का परीक्षण इस महाकाव्य से किया जा सकता है। जीवन के एक ऐसे ही सत्य पर राम चरित मानस में विस्तृत रूप से प्रकाश डाला गया है। वह मन को बाँधने वाले इन्द्रियों का दमन करने वाले हर योगी का लक्ष्य निष्काम भक्ति है ।

जब भक्त के मन की समस्त कामनायें, समस्त इच्छायें समाप्त हो जाती है और वह आकण्ठ भगवद् भक्ति में डूब जाता है तो भगवान और उसके मध्य के सारे अन्तर समाप्त हो जाते हैं तथा उसकी जीवन–ज्योति परमपिता परमेश्वर के चरणों में विलीन हो जाती है।

'महाकाव्यों में श्रेष्ठ' रामचरित मानस में तुलसीदास ने निष्काम भक्ति को ही अपना आधार बनाया है। रामचरित मानस के प्रारम्भ में ही उन्होंने कहा है–

"जाहि न चाहिअ कबहुँ कछु, तुम्ह सन सहज सनेह।
बसहु निरन्तर तासु उर, सो रामहिं निज गेह ।।"

रामचरित मानस के अनेक पात्रों जैसे हनुमान, भरत, जटायु, विभीषण आदि के माध्यम से तुलसीदास जी ने सम्पूर्ण जगत को संदेश दिया है कि यदि निर्गुण या सगुण भक्ति नौका है तो निष्काम भक्ति पतवार है जिसकी सहायता से हम इस भव–सागर को पारकर भगवद् चरणों में पहुँच जायेंगे ।

***

कहानी प्रतियोगिता में बाल वर्ग में तृतीय स्थान

रहस्यमयी बक्सा

प्रियम सचान, अष्टम 'ख'

बच्चे नटखट होते हैं। रामपुर पढ़ने जाने वाली हमारी टोली पूरी वानर टोली थी । एक दिन हम लोग स्कूल से लौट रहे थे कि रास्ते के उस सूखे कुएँ में हमको झाँकने की सूझी । जैसे ही हमने उस कुएँ में झाँका त्यों ही.....उस कुएँ में हमें एक बक्सा दिखाई दिया । हमने उस बक्से को कुएँ से बाहर निकाला । बाहर निकालने पर हमने पाया कि उस डिब्बे में मधुमक्खियों के भिनभिनाने का आवाज आ रही थी । हमने चंचलता वश उस डिब्बे को खोल दिया तो उसमें से बहुत सी मधुमक्खियाँ निकलने लगी, भय के कारण हमने उस डिब्बे को बन्द कर दिया। उन मधुमक्खियों ने एक गाँव में बहुत अधिक उत्पात मचाया । जिससे वहाँ के गाँव वालों ने सोचा कि उनके पड़ोसी गाँव के लोगों ने यह सब किया है। तो उन गाँव वालों ने दूसरे गाँव के लोगों के ऊपर हमला किया । चारों तरफ अशान्ति छा गई । यह सब हमारे कारण हुआ था । इसलिए हम सब दुखी थे । वहीं पर हम सो गए। मेरा सिर बक्से पर रखा हुआ था और मैं सो रहा था । जब मेरी नींद खुली मैंने अपने मित्रों को जगाना शुरु किया तभी उस डिब्बे से आवाज आई "मुझे बाहर निकालो" मैंने भ्रम समझकर उस पर ध्यान न दिया। तभी उसमें से फिर आवाज आई "मुझे बाहर निकालो"। उस समय मेरा एक साथी जग रहा था उसने मुझसे कहा "इस बक्से को मत खोलना । तभी उसमें से फिर आवाज आई "कृपया इस बक्से को मात्र एक बार खोल दो" तो मैंने कहा "तुम बाहर आकर हमें और तकलीफ देना चाहती हो" "वैसे भी तुम्हारे भाई बहनों ने हमें बहुत दुख दिया है तुम और हमारा दुख बढ़ाना चाहती हो ।"

तभी उसमें से फिर आवाज आई "वे दुष्ट मधुमक्खियाँ बहनें नहीं हैं, क्या वे मेरी तरह बोलती हैं, क्या उनमें से किसी ने कोई ऐसी बात कही है जो इस समय मैं तुमसे कह रही हूँ ? जब मुझे देखोगे तो तुम मुझसे प्रेम करने लगोगे" उसकी यह सब बातें सुनकर मैंने अपने मित्र से पूछा "क्या मैं ये बक्सा खोल दूँ।"

उसने जवाब दिया "जैसी तुम्हरी मर्जी" । मैं उस समय बहुत जिज्ञासु हो रहा था इसलिए मैंने उस डिब्बे को खोल दिया, तो उसमें से सूरज की रोशनी के समान चमकने वाली एक परी निकली जिसके पंख इन्द्रधनुष के समान थे । वह जहाँ भी जाती थी उसके पीछे सतरंगी पट्टी बनती जाती थी । जब उसने हमारे कष्टों को देखा तो वह हमारे पास आई और हमें छुआ । उसके छूते ही दुष्ट मधुमक्खियों द्वारा दिए गए कष्ट दूर हो गए। वह बहुत ही सुन्दर परी थी ।

मैने उस परी से पूछा, "तुम कौन हो"। उसने उत्तर दिया "मैं आशा की परी हूँ ।"

मैने पूछा, "तुम इस डिब्बे में कैसे बन्द हो गई" उसने उत्तर दिया "मुझे एक दुष्ट जादूगर ने इसमें बन्द कर दिया । जिससे कि मैं लोगों के अन्दर अच्छी आशाएँ न भी सकूँ । परन्तु तुमने मुझे इस डिब्बे से बाहर निकाला है इसलिए अब मैं लोगों के अन्दर अच्छी आशाएँ उत्पन्न करूँगी" और उसने कहा "मैं जानती हूँ कि तुम्हें मेरे सतरंगी पंख बहुत अच्छे लगते है। उसी प्रकार तुम्हारे हृदय के अन्दर अच्छे विचार होंगे तो वे सतरंगी इन्द्रधनुष के समान है।" हम सबने उस परी से कहा "तुम हमारे साथ क्या हमेशा रहोगी ?" उसने कहा "नहीं" "परन्तु मेरी दी हुई अच्छी आशा तुम्हारे साथ हमेशा रहेगी ।"

हमने उससे बहुत आग्रह किया कि वह हमारे साथ हमेशा रहे, परन्तु वह न मानी और बोली "जब भी तुम मुझे याद करके सोओगे तो तुम्हें मेरा सपना आएगा और तुम मुझे और मेरे पंखों को उस सपने में देख सकोगी।" उसने कहा, "अब मेरे जाने का समय आया है, अब मैं चलती हूँ"। इतना कहकर वह अदृश्य हो गई और उसके बाद हम अपने घर लौटने लगे ।

***

कहानी

मिलन

नीरज राजपूत, एकदश 'ख'

राम अवतार लाम पर से वापस आ रहा था । अम्मा सरपंच से चिठ्ठी पढ़वाने आई थी । जंग खत्म हो गयी थी इसलिये वह तीन साल बाद वापस घर आ रहा था । जंग लड़कर ही नहीं बल्कि जंग जीतकर घर आ रहा था । सरपंच ने चिठ्ठी पढ़कर जब रामअवतार के आने की खुशखबरी अम्मा को सुनाई तो अम्मा फूली न समाईं। उनकी आँखें भर आईं। मानों हृदय से उमंग फूटकर आँखों तक चली आयी हो । पतझड़ के बाद वसंत तो आता ही है। जंग के दौरान दुश्मनों के छक्के छुड़ा देने के कारण उसका प्रमोशन भी हो गया है। अम्मा की आँखों के सामने से सारे बीते दिवस एक पल मैं तैर गए ।

राम अवतार के पिता पण्डित गंगा अवतार बड़े ही सरल स्वभाव के थे । यद्यपि जाति के अनुसार वे क्षत्रिय थे परन्तु धर्मकर्म में अधिक रूचि के कारण गाँव भर के लोग 'पण्डित जी' कहकर पुकारते थे । सांसारिक साधनों को जुटाने में उनका ध्यान नहीं था । लेकिन यह उनकी विद्वता और सज्जनता ही थी कि लोग अपने यहाँ उनसे यज्ञ आदि कर्मकाण्ड कराकर अपने आप को सौभाग्यशाली माना करते थे । व्यवसाय से वे एक अध्यापक थे । गाँव से छह कोस दूर बलरामपुर नाम का शहर था । रोज अपनी साइकिल से पढ़ाने के लिये शहर आया–जाया करते थे। पण्डित जी समय के बड़े पक्के थे । कड़ाके की सर्दी में भी वे सबेरे ही सबेरे निश्चित समय पर स्कूल जाने के लिये तैयार हो जाते थे लेकिन लौटते समय प्रायः देर हो जाती थी । गाँव के सभी लोग पण्डित जी द्वारा अपने जरूरत की चींजे शहर से मँगा लिया करते थे । पण्डित जी सभी से मधुर वाणी में बोलते थे । राम अवतार अभी दो तीन वर्ष का ही था । गंगा अवतार तथा उनकी धर्मपत्नी सुभागी ने अभी से राम अवतार के आधार पर अपने सपनों का महल खड़ा किया था । पण्डित जी की तो हार्दिक इच्छा थी कि उनका बेटा बड़ा होकर फौज में अफसर बने। पण्डित का न किसी से बैर था न द्वेष, साक्षात सज्जनता की प्रतिमूर्ति थे पर शायद भगवान भी सत् आत्माओं का वियोग अधिक समय तक झेलने में असमर्थ रहता है।

एक दिन पण्डित जी नित्य नियमानुसार स्कूल गए तथा लौटकर आए। चेहरा कुछ मलिन सा लग रहा था। सुभागी के आते ही एक गिलास पानी पीकर खटिया पर लेट गये । सुभागी ने उनके माथे पर हाथ रखा तो एक पल लगा कि जैसे जलते तवे पर हाथ रख दिया हो । कुछ गाँव के आदमी डाक्टर के लिये दौड़े लेकिन पण्डित जी जान गए कि उनका अंत आ गया । सुभागी को पास बुलाया और अपने बेटे रामू को फौज में अफसर बनाने का वचन लेकर संसार से अलविदा हो गए ।

अब सुभागी पर तो समस्याओं का जैसे पहाड़ टूट पड़ा । एक तरफ घर चलाने की जिम्मेदारी, दूसरी ओर रामू को पढ़ाने की । सुभागी ने बड़े धैर्य से काम लिया तथा कपड़े सिलने का काम शुरू कर दिया । रामू का नाम स्कूल में लिखा दिया । रामू बड़ा होनहार था, सदैव पढ़ाई से वापस आता तो सबसे पहले अपना पढ़ाई का काम खत्म करता था । रात में जल्द ही रूखी सूखी रोटी खाकर सो जाता था । लेकिन सुभागी देर रात तक अपने लाल के सर पर हाथ फेरती रहती थी ।

इन्हीं सब मुश्किलों से जूझकर रामू जब सेना में भर्ती हो गया तो सुभागी ने मंदिर में प्रसाद चढ़ाया क्योंकि उसने भगवान से मन्नत जो माँगी थी । सरपंच ने एकाएक कहा– कहाँ खो गई अम्मा ? अरे ! खुशियाँ मनाओ, लड्डू बाँटो । अम्मा को सुभागी से अम्मा बनने में देर न लगी और हड़बड़ाते हुए निकला– अरे हाँ हाँ क्यों नहीं?

अब गाँव के लोग पहले की तरह नेक तथा कर्मठ नहीं थे । सब के सब आलसी थे । उन्हें किसी का परिवार फलता फूलता देख न सुहाता ऐसे ही लोग थे– मक्खनदास तथा जगदीश । नाम जैसे थे उनके, दिल उसके ठीक विपरीत थे। अफसर रामअवतार के आने की खबर इन दोनों के कानों में भी पड़ गई। दोनों के शैतानी दिमागों में रामअवतार को लूटने की योजना बनने लगी । राम अवतार को ठीक तीन दिन बाद बलरामपुर स्टेशन पर उतरना था । वहाँ से गाँव तक का रास्ता पैदल ही चलना पड़ता था ।

मक्खनदास तथा जगदीश अपने दस–बारह आदमियों के साथ रास्ते में छुप गए । ठीक वैसा ही हुआ जैसा चाहते थे । शाम के सात बजे एक आदमी अपने दोनों हाथों बहुत सा सामान लिये चला आ रहा था जो रामअवतार ही था । मौका पाते ही मक्खनदास तथा जगदीश के आदमियों ने उस पर धावा बोल दिया शायद उनको राम अवतार की ताकत व फुर्ती का अंदाज न था । उसने सभी आदमियों को मारकर बेहोश कर दिया तथा मक्खनदास को पकड़कर पहचान लिया । अब तो दोनों के होश उड़ गये । बदनामी से बचने का कोई उपाय न सूझता था। जगदीश के हाथ में पिस्तौल थी । अचानक पिस्तौल से गोली निकली तथा पीछे से रामअवतार के सीने को पार करती हुई निकल गई। रामअवतार वहीं ढेर हो गया ।

यहाँ बूढ़ी अम्मा की आँखें इंतजार करते–करते पथरा रही थीं। रात भर नींद न आयी । अगले दिन प्रातः मक्खन दास तथा जगदीश अम्मा के दरवाजे के सामने से निकले तथा पूछा–अम्मा ! रामअवतार भैया नहीं आये? अम्मा का जबाव बिना सुने आगे बढ़ गये ।

इसके बाद अम्मा को रामअवतार की कोई खबर न मिली । वह क्या जाने कि रामअवतार उससे कितनी दूर पहुँच चुका है । बूढ़ी माँ भी इस शोक में ज्यादा देर तक न टिक पायीं और कुछ ही महीनों बाद चल बसीं, शायद राम अवतार से मिलने..... ।

***

भगवान क्यों नहीं दिखाई देते

कुलदीप यादव, सप्तम 'ख'

जिस प्रकार हम किसी दूसरे मकान में रहकर किरायेदार कहलाते हैं, उसी प्रकार यह संसार हमारे लिये किराये का मकान है और इस मकान का मालिक वह भगवान है जो हमारे अंतःकरण में कहीं न कहीं किसी कोने में छिपा है। यह ईश्वर उस दर्पण की तरह होता है जो कई दिनों तक साफ न किए जाने से गंदा हो जाता है तथा धूल जम जाती है और फिर वह हमको दर्पण, धूल दिखाई पड़ता है।

जिस प्रकार दर्पण के ऊपर धूल अधिक होने पर हमको अपना प्रतिबिंब नहीं दिखाई पड़ता, उसी प्रकार हमारे हृदय रूपी दर्पण में धूल के समान काम, क्रोध तथा सांसारिक प्रपंच होने के कारण भगवान नहीं दिखाई पड़ता ।

जिस प्रकार दर्पण को हिलाने पर हमको हमारा प्रतिबिंब नहीं दिखाई पड़ता, उसी प्रकार हमारे मन रूपी दर्पण की चंचलता के कारण भगवान नहीं दिखाई पड़ते । इन सभी विकारों का परित्याग करने पर हमें भगवान की प्राप्ति हो सकती है तथा इनका परित्याग करने के लिए हमें अभ्यास तथा वैराग्य की आवश्यकता होती है।

***

श्री रामस्य चरित्रम्

ऋषि राज त्रिवेदी, नवम 'क'

भगवतः श्री रामस्य चरित्रम् अवर्णनीयम् अस्ति तथापि अहं तस्य चरित्रं संक्षेपेण वर्णनं करोमि । जगति सर्वोत्तमं चरित्रं भगवतः श्री रामस्य अस्ति । रामायण–ग्रन्थे वाल्मीकिः अपि श्री रामस्य चरित्रस्य विशद् वर्णनम् अकरोत् । सर्वे जनाः तं मर्यादा पुरुषोत्तमः अपि कथयन्ति । प्रजार्थं रामः महत् कार्यमकरोत्। अस्य सम्पूर्णं जीवनम् एव प्रेरणास्त्रोतम् अस्ति । रामः महान् पराक्रमसम्पन्नः, प्रियः चन्द्रः इव, क्रोधे कालाग्निः, क्षमया पृथिवीसमः आसीत् ।

जनाः इति मन्यन्ते यत् श्री रामः भगवतः विष्णोः अवतारः आसीत्। सः च ब्रह्मरूपं सर्वत्र विद्यते ।

बाल्यकाले श्री रामः अनेकाः बाललीलाः अकरोत् एवं विद्या पित्रोः वचांसि पालयन् सः सीता लक्ष्मणाभ्यां सह वनमगच्छत्। रावणस्य सदृशान् अनेकान् दुर्जनान् अहनत्। सः अहिल्यायाः उद्धारमकरोत्। सः सुग्रीवाय तस्य राज्यम् अदाययत्। यदा सः लंकाम् अजयत्, लक्ष्मणः तम् अकथयत् यत् भवान् अत्रैव शासनकुर्यात् । तदा सः अकथयत् यत्

"अपि स्वर्णमयी लंका न मे लक्ष्मण रोचते ।
जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।।"

तदा सः सीता–लक्ष्मणाभ्यां सह अयोध्याम् आगच्छत्। सः प्रथम स्वां विमातां कैकेयीम् अनमत्। सः अयोध्यायाः राज्यम् अकरोत्। तस्य राज्ये प्रजाः अतीव सुखिनः आसन्। प्रजार्थं सः सीताम् अपि अत्यजत्।

आज्ञापालनं, ज्येष्ठानाम् अर्चनं च रामस्य स्वभावः आसीत् । गुरु वशिष्ठं विश्वामित्रं वा प्रति रामस्य आचरणम् अवर्णनीयम् अस्ति । श्री राम, सदैव धर्मस्य पालनम् अकरोत्। अतः, पुराणेषु ग्रन्थेषु चापि श्री रामस्य चर्चा सर्वत्रास्ति। यथा श्री रामचरितमानसे महाकविना तुलसीदासेन रामस्य प्रादुर्भावं वर्णितम्।

"व्यापक ब्रह्म निरजंन, निर्गुन विगत विनोद ।
सो अज प्रेम भगति बस, कौसल्या के गोद ।।"

अस्माकम् इयम् मान्यता यत् धर्मस्य स्थापवनाय अधर्मस्य च विनाशाय निगुर्ण –ब्रह्म समये–समये सगुणाः साकारः अपि भवति । एवं रामः साधूनां परित्राणार्थं ब्रह्मोऽवतरति । यथा हि सः स्वयमेव श्रीमद्भगवद्गीतायाम् अकथयत्–

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ।।
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्म संस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे ।।

एवं विद्या श्री रामस्य चरित्रम् अद्वितीयम् अस्ति । सः मातृपितृगुरोः भक्तः आदर्शपतिः, आदर्श भ्राता, कृपालुः स्वामी, प्रजापलकः चासीत् । अतः वयं श्री रामं भजेम ।

❋ ❋ ❋

यात्रावृत्त

मेरी जगन्नाथ पुरी यात्रा

प्रफुल्ल श्रीवास्तव, एकादश 'क'

प्रफुल्ल एकादश कक्षा के अध्ययनशील छात्रों में से एक हैं। जनवरी महीने में वे अपने परिवार–जनों के साथ पुरी की यात्रा पर गये । अपने इस यात्रावृत्त में उन्होंने विभिन्न दर्शनीय, पौराणिक स्थलों का वर्णन करने के साथ –साथ 'पण्डों' के आतंक को भी व्यंग्य के साथ उकेरा है। पण्डे जगह–जगह धर्म के कवच में लुटेरों जैसा व्यवहार कर रहे हैं, यह सच है।

– संपादक

देशदर्शन किसी व्यक्ति के ज्ञानवर्द्धन के साथ–साथ बुद्धि परिष्करण का महत्वपूर्ण कार्य करता है। लेकिन जब देशदर्शन का उद्देश्य किसी धाम की यात्रा हो तो वह हृदय को पवित्र बनाता है। साथ ही किसी स्थान विशेष के प्रत्यक्ष दर्शन करने से जो रस की प्राप्ति होती है, वह किताबी अध्ययन से अधिक चिर स्थायी होती है।

यात्रा का शुभारम्भ दिवस परेवा होने के कारण अमंगलकारी सिद्ध हुआ । रात 12 बजे पर्वा का बुरा प्रभाव समाप्त हो गया और हर्ष की एक ऐसी लहर बही जिसने हम सभी को प्रसन्न कर दिया । अगले दिन सुबह की किरणें उत्साह से भरी हुई थीं लेकिन दुर्भाग्य ने अभी पीछा पूरी तरीके से नहीं छोड़ा थ्झा । हमारी ट्रेन को बिहार के मुगलसराय जंक्शन पर बिहार बन्द की मार को झेलना पड़ा और ट्रेन कुछ विलम्ब से मुगलसराय को पार कर पायी और अगले दिन झारखण्ड से होकर टाटा नगर से हमारी ट्रेन गुजरी । सभी लोगों ने टाटा नगर की टाटा चाय पी । इसके पश्चात् झारखण्ड बन्द के आगे रेलवे को आत्मसर्मपण करना पड़ा और मूरी जंक्शन पर इंजन की दिशा परिवर्तित कर ट्रेन को पं. बंगाल से होकर गुजारा गया । यात्रा के दौरान खड़गपुर, जो कि भारत का सबसे बड़ा प्लेटफार्म वाला रेलवे स्टेशन है, पर ट्रेन पहुँची । स्टेशन दो मंजिली इमारत के रूप में अपनी अद्भुत छटा बिखेर रहा था । कटक गुजरने के पश्चात् रात के लगभग 1 बजे भुवनेश्वर पर हम सभी उतरें और आगे की पुरी यात्रा के लिए जगन्नाथपुरी एक्सप्रेस से पुरी तक आये । इस बार यात्रा शयनयान दर्जे में करनी पड़ी और इससे पहले ए.सी. में यात्रा की थी । हमें बिल्कुल ऐसा अनुभव हुआ जैसे किसी को राजसी सुविधाएँ देने के पश्चात् अत्यन्त साधारण सुविधाओं में गुजारा करना पड़े । उतरते ही पापा और अंकल जी होटल ढूँढने चले गये । कुछ समयोपरान्त दोनों लोग वापस आ गये और हम लोग श्री व्हीलर से होटल के लिए चल दिये और कुछ समय बार अंजना होटल पहुँच गयें । कमरे में जाकर जगन्नाथ जी के दर्शन करने के लिए तैयार होने लगे।

1. जगन्नाथ मंदिर – भोजन एवं आराम करने के उपरान्त हम सभी पण्डे के साथ दर्शनार्थ मन्दिर की ओर रिक्शे से गये । चप्पलों और बेल्टों को एक स्थान पर जमा करने के बाद हाथ–पैर धोकर हम सब भी मन्दिर द्वार पर खड़े हो गये । प्रवेश द्वार के सामने दाईं ओर एक जगन्नाथ जी की छोटी सी मूर्ति स्थापित थी । पण्डे ने हमें बताया कि प्रवेश द्वार से केवल हिन्दू ही प्रवेश कर सकते हैं, अन्य किसी धर्म का नहीं यहाँ तक कि दर्शनार्थ आये राजीव गाँधी और इंदिरा गाँधी को भी मन्दिर में घुसने नहीं दिया गया था । इस नियमबद्धता को देखकर मुझे गर्व हुआ । प्रवेशद्वार जो कि पूर्व दिशा की ओर स्थित था उस पर दो सिंह स्थित होने के कारण

उसे सिंह द्वार कहते हैं। सिंह द्वार के बाहर अरुण स्तम्भ स्थित था, जिसकी ऊँचाई के बराबर भीतर जगन्नाथ जी की मूर्ति स्थित है। प्रवेश द्वार से अन्दर घुसने पर बाईस सीढ़ियाँ मिली जिसे बाईस पावछ कहते हैं जिनसे होकर जगन्नाथ जी यात्रा के लिये निकलते हैं। इसके पश्चात हम सभी अन्नभोग समिति गये । जहाँ भोग की एक लिस्ट दे दी गयी । प्रसाद की लिस्ट में छप्पन भोग प्रसाद था जो कि छप्पन हजार रुपये का था तथा कुछ अन्य प्रसाद उससे कम रुपये के थे । हमने खाजा प्रसाद खरीदा जो 380 रुपये का था । इसके पश्चात हम सभी जगन्नाथ जी के दूर से दर्शन करने के लिए गए । पण्डे ने बताया कि श्याम रंग के जगन्नाथ जी हैं, जो कृष्ण का एक रूप हैं तथा विष्णु का अवतार हैं। मध्य में सुभद्रा जी हैं जो कृष्ण की बहन थी तथा ब्रह्मा का अवतार हैं। बाई ओर बलभद्र जी हैं जो बलराम का रूप हैं तथा शिव का अवतार हैं। पण्डा प्रसाद चढ़ाने के लिए जगन्नाथ जी के समीप चला गया । उसी समय मैंने देखा कि जगन्नाथ जी के भोग के लिए कई पण्डे मुँह में कपड़ा बाँधकर कन्धे पर डण्डे के दोनो सिरों पर भोग का प्रसाद (कढ़ी चावल) छोटे छोटे मिटटी के बर्तनों में ले जा रहे थे । पण्डे के प्रसाद चढ़ाकर लौट आने के बाद हम लोग 20 रुपये प्रति व्यक्ति का टिकट खरीदकर पंक्ति में लग गये । कुछ समय पश्चात दर्शन करने के लिए हम सब जगन्नाथ जी के सामने उपस्थित थे । हमने जिस मूर्ति के चरण स्पर्श किए उस मूर्ति पर बैठा पण्डा रुपये चढ़ाने की माँग करने लगा और इच्छित रुपये प्राप्त होने पर ही मानता । इस प्रकार तीनों देवों के दर्शन और चरण स्पर्श करके रविनारायण और चन्द्रनारायण के मन्दिर गये । इस मन्दिर की मूर्तियाँ कोर्णाक के सूर्य मन्दिर से लाकर रखी गई हैं। फिर हम सभी वापस होटल लौट आये ।

मैनें अनुभव किया कि भारत में जगन्नाथपुरी के पण्डे सबसे अधिक धूर्त और कपटी हैं। पण्डों के इस आतंकपूर्ण व्यवहार से हम सब यही कहने लगे 'नो पण्डा नो पंगा' उस दिन शाम को हम सभी समुद्र तट पर टहलने गये । उस समय लहरें धीरे–धीरे आ रही थी।

2. चिल्का झील – अगले दिन हम सभी आठ बजे चिल्का झील गये । सतपुड़ा पहुँचकर सात घण्टे के लिए एक स्टीमर किराए पर किया । यात्रा के लिए नाश्ता और पानी खरीदा जो कि महँगा था । उसके बाद हम लोगों ने झील में यात्रा प्रारम्भ की । कुछ समय बाद हम लोग डाल्फिन झील पहुँच गये । वहाँ पर हम सभी ने डाल्फिन को जलक्रीड़ा करते हुए देखा । इस क्रीड़ा पर मुग्ध होकर हम लोगों ने इसे अपने कैमरे में कैद कर लिया। इसके बाद पक्षी विहार गये । जहाँ विदेशी पक्षी आये हुए थे । वे पक्षी साइबेरिया तथा अन्य देशों के थे। इसके पश्चात कालीजयी मन्दिर गये और दर्शन करने के उपरान्त सतपुड़ा के लिए वापस चल दिये । शाम तक होटल वापस आ गये ।

3. कोणार्क का सूर्य मन्दिर– अगले दिन हम सभी सुबह आठ बजे कोणार्क के सूर्य मन्दिर के लिए टाटा सूमों पर सवार हुए । आधे घण्टे कोर्णाक पहुँच गए । वहाँ नाश्ता करने के बाद किराए पर एक छायाचित्रकार तथा एक गाइड किया । गाइड ने बताया कि यहाँ तीन दरवाजे हैं जिनसे होकर सूर्य की किरणें मन्दिर के गर्भगृह में स्थित मूर्ति पर पड़ती हैं। परन्तु गर्भगृह को सरकार द्वारा बन्द करा दिया गया है । इस मन्दिर में तीन प्रकार के पत्थरों का प्रयोग किया गया है जिसमें ग्रीन क्लोराइड पत्थर बेशकीमती है। इसमें सूर्य के सात घोड़े थे जिनमें से अधिकांश खण्डहर में तब्दील हो गए । इसमें 24 पहिए थे जो एक वर्ष में 24 पखवारे का सूचक है। प्रत्येक पहिए में 12 तीलियाँ है जो राशियों की द्योतक है। मन्दिर 227 फुट ऊँचा है इसमें 755 कलाकृतियाँ हैं जो 4 प्रकार की हैं ।

1. पद्मिनी 2. चित्रा
3. शंखिनी 4. हस्तिनी

पद्मनी के पैर, चित्रा के केश, संखिनी की कमर तथा हस्तनी के हाथ श्रेष्ठ हैं। सूर्य की पत्नियों संज्ञा और छाया के मन्दिर के अवशेष देखे । दोपहर में ही हम लोगों ने पुरी के समुद्र में स्नान किया जिसका धार्मिक दृष्टि से बहुत महत्व है। स्नान करने के बाद हम लोगों ने भोजन किया और शाम को पुरी की विशेष कलाकृतियों को खरीदने के लिए निकले ।

4. भुवनेश्वर – अगले दिन सुबह भुवनेश्वर के लिए निकले । बीच मार्ग में साक्षी गोपाल मन्दिर दर्शनार्थ गये । दर्शनोपरान्त पण्डों ने नाम गोत्र लिखवाकर साक्षी बनवाकर रुपए लूटने का प्रयास किया जिसे हमने बड़ी समझदारी के साथ असफल कर दिया । इसके बाद कुछ समय उपरान्त हम भुवनेश्वर में होटल बसेरा पहुँचे। सारा सामान होटल में रखने के पश्चात घूमने निकल पड़े ।

5. नन्दन कानन – यहाँ पर हम लोगों ने विश्वप्रसिद्ध सफेद चीतों को दहाड़ते हुए देखा । इनको अपने कैमरे में कैद किया । इन्हें देखकर हमें अपने क्रिकेट टीम के कप्तान सौरभ गाँगुली की याद आयी जो बंगाल टाइगर कहलाते हैं। वहाँ पर बब्बर शेरों को भी सोते देखा ।

6. खण्डगिरि एवं धौलगिरि– यहाँ पर कलाकृतियों एवं गुफाओं का वास्तविक ज्ञान प्राप्त करने के लिए एक गाइड किराए पर किया । खण्डगिरि पर अद्‌भुत कलाकृतियों को देखकर हम लोग दंग रह गए । गिरि से हमने कलिंग का युद्धस्थल देखा तथा कलिंग के प्राचीन बंकर देखे । इन बंकरों में चार गुप्त रास्ते विभिन्न पर्वतों को जाते थे । प्रकाश में तीन रास्ते दिखायी दिये । उस समय की संचार व्यवस्था का माध्यम नालियाँ थी जिनसे पानी तथा आवाज का संचार होता था । इन सबको देखकर हम सबने दाँतो–तले अगुँली दबा ली और यह सोचने लगे कि प्राचीन मानव बहुत अधिक बुद्धिमान रहा होगा ।

7. एयरपोर्ट– अगली सुबह हम जल्दी से एयरपोर्ट पहुँच गये । वहाँ ट्राली से हमने और भैया ने सारा सामान अन्दर पहुँचाया । वहाँ पहले लगेज की जाँच की गयी । इसके पश्चात लगेज का भारमापन किया गया और लगेज हवाई जहाज के लिए मशीन चालित ट्राली से भेजकर हम सबकी तथा बैगेज की जाँच हुई । तत्पश्चात हम सभी वेटिंग हॉल में बैठे थे । हमारा हवाई जहाज हैदराबाद से आ गया था । हवाई जहाज में बैठने की उत्सुकता में मेरा मन बल्लियों उछल रहा था । वेटिंग हॉल से रनवे का मार्ग खुलते ही हम हवाई जहाज पर बैठने के लिए चल पड़े । जैसे ही हम हवाई जहाज में पहुँचे एक एयरहोस्टेस ने भारतीय संस्कृति के अनुसार हम लोगों का स्वागत किया । तत्पश्चात हम सभी अपनी–अपनी सीटों पर बैठ गये । उसके बाद एक एयर होस्टेस एक ट्रे में रूई और टाफियाँ लेकर आयी । इसके पश्चात हम सभी ने बेल्ट बाँध ली और कुछ देर बाद हवाई जहाज पट्‌टी पर तेजी से दौड़ने लगा और कुछ ही पल बाद धीरे–धीरे हवा में उठा और उड़ने लगा । हम बादलों से ऊपर थे और बादल रेत के मैदान सदृश प्रतीत हो रहे थे । लगभग एक घण्टे बाद हमारा प्लेन कोलकाता एयरपोर्ट पर उतरा । हम सब नीचे उतरे तो हमें ए.सी. से निकलने के बाद हल्की सी ठण्ड लग रही थी । उसके बाद रिटायरिंग हॉल में बैठे और लगेज को प्राप्तकर हम एयरपोर्ट से बाहर आ गये और हमने हावड़ा स्टेशन के लिए प्रस्थान किया।

8. विक्टोरिया मेमोरियल – उसके बाद हम सब लोग विक्टोरिया मेमोरियल गए । विक्टोरिया मेमोरियल अपनी अद्‌भुत छटा बिखेर रहा था । विक्टोरिया मेमोरियल ताज की नकल करके दूसरा ताजमहल बनाने का असफल प्रयास अंग्रेजों द्वारा किया था । इसके पश्चात हमने संग्रहालय का दीदार किया जिसमें साढ़े तीन हजार कलाकृतियाँ थी । इसे देखने के बाद चाय पीकर म्यूजिकिल फाउण्टेन देखा और मेट्रो पर बैठकर होटल वापस आ गये ।

9. गंगासागर – अगले दिन सुबह गंगासागर के लिए निकले लेकिन दुर्भाग्यवश उस दिन बसों की हड़ताल थी । लेकिन धर्मतल्ला से बस द्वारा लाट नम्बर–8 की यात्रा की, जिसके बीच में सौरव गाँगुली का महल और रेसकोर्ट देखा । इसके बाद हमें लॉच द्वारा गंगासागर पहुँचना था । इसके लिए टिकट खरीदने पापा और अंकल जी गए लेकिन वहाँ तो बेढंग का हिसाब था । वहाँ पर स्थानीय व्यक्ति के लिए 5 रुपए का टिकट था लेकिन दूसरे स्थान के व्यक्ति के लिए 45 रुपए का टिकट था । इस अन्तर को देखकर मुझे बहुत आक्रोश आया कि जो टिकट विदेशियों के लिए जितने का है उतने का ही हमारे लिए । इसके पश्चात 45 रुपए प्रति व्यक्ति टिकट खरीदकर लॉच में बड़ी धक्कामुक्की के साथ चढ़े और खड़े खड़े असुविधा के साथ यात्रा की और गंगासागर उतरकर 450 रुपए में टाटा सूमो की जिसने हम सबको आधे घण्टे के बाद कपिल मुनि के आश्रम में पहुँचा दिया । वहाँ पर हम सभी ने स्नान किया और कपिल मुनि के दर्शन किए और वापस गंगासागर पहुँच गए । गंगासागर जाकर ऐसा लगा कि 'नाम बड़े दर्शन थोड़े' ।

10. बैलूर मठ – अगले दिन कोलकाता के दर्शनीय स्थलों को देखने के लिए एक मारूति वैन 2 घण्टे के लिए किराए पर की । सबसे पहले बैलूर मठ पहुँचे । वहाँ पर राम कृष्ण परमहंस तथा उनकी पत्नी शारदा देवी की समाधि पर गए । इसके बाद स्वामी विवेकानन्द जी की समाधि पर गए । यहाँ के संग्रहालय में रामकृष्ण परमहंस तथा स्वामी विवेकानन्द के जीवन की वस्तुओं को देखा जिन्हें देखकर उनकी सादगी स्पष्ट रूप से दृष्टव्य थी।

11. दक्षिणेश्वर मन्दिर– यह मन्दिर काली जी का कोलकाता के बाद दूसरे नम्बर पर ख्याति प्राप्त मन्दिर है। जब हम लोग मन्दिर पहुँचे तो शनिवार होने के कारण काली जी के दर्शन के लिए तीन–चार किलोमीटर लम्बी लाइन लगी थी । इतनी लम्बी लाइन में लगकर दर्शन करने में तीन–चार घण्टे अवश्य लग जाते । अतः हम लोगों ने अपना प्रसाद लाइन में लगी एक महिला को देकर बाहर से ही हाथ जोड़कर निक्को पार्क के लिए चल दिए । कुछ देर बाद निक्को पार्क पहुँच गए । निक्को पार्क को एक प्रकार से मुम्बई के एक्सल वल्डे का क्लोन था । अतः समयाभाव के कारण बिना किसी झूले को झूले दर्शन मात्र से ही काम चला लिया।

12. बिरला मन्दिर और साइंस सिटी– बिरला मन्दिर में श्रीकृष्ण जी के दर्शन करके सांइस सिटी पहुँचे। सांइस सिटी के प्रमुख दो शो टिकट खरीदे । जिनमें 'द रिंग' आफ फायर' में ज्वालामुखी का सजीव उद्‌गार देखा तथा 'टाइममशीन' से विभिन्न स्थानों की काल्पनिक यात्रा की ।

13. काली मन्दिर– काली मन्दिर में भी पण्डों ने पीछा नहीं छोड़ा । इसके बाद हम लोगों ने उत्तर प्रदेश के एक पण्डे को किया । उस दिन शनिवार होने के कारण अत्यधिक भीड़ होने से मैं, मम्मी और दीदी दर्शन नहीं कर पाए । लेकिन हम लोगों ने दुबारा दर्शन किए और होटल की ओर चल दिये ।

14. रवीन्द्र सेतु एवं विद्यासागर सेतु – होटल लौटते समय हमने विद्यासागर सेतु चलती मारूति वैन से देखा । इस सेतु में केवल दो स्तम्भ थे और ये स्प्रिंग की तरह टँगा हुआ था । आगे हमें रवीन्द्र सेतु मिला जिसके बीच में कोई आधारस्तम्भ नहीं था ।

अगले दिन हम लोगों ने ट्राम से यात्रा की । उस दिन और कहीं नहीं घूमने जा पाये क्योंकि उस दिन माकपा की विशाल रैली थी । होटल से सामान लेकर रेलवे स्टेशन के वेटिंग रूम में पहुँच गए । वहाँ पर वास्तु शास्त्र की कुछ किताबे खरीदी और नियत समय से बीस मिनट पूर्व ट्रेन में बैठ गए । भोजन करने के बाद सो गए और सुबह आठ बजे उठकर मैंने अपना सारा सामान पैक कर लिया । शाम के चार बजे कानपुर सेन्ट्रल उतर गये। जहाँ जीरो डिग्री सेन्टीग्रेड की ठंड ने गर्मजोशी से हमारा स्वागत किया ।

❋ ❋ ❋

भारत को चाहिये एक तानाशाह

अमित मयंक, अष्टम 'क'

आज विश्व के समस्त देश आतंकवाद से जूझ रहे हैं। सितम्बर 2001 में अमेरिका के 'वर्ल्ड ट्रेड सेंटर' तथा 'पेंटागन' पर हुए हमलों ने आतंकवाद के बढ़ते प्रभाव को साबित किया ही था कि 'भारतीय संसद भवन' पर होने वाले आतंकवादी हमले ने विश्व के सामने एक चुनौती देकर भारतीय प्रशासन को एक बार पुनः ललकारा ।

वास्तविकता तो यह है कि भारत पिछले कई वर्षों से अपनी सीमा पर मजबूर नियंत्रण रखने के बावजूद भी घुसपैठियों से परेशान है। भारत की शान्ति के ये दुश्मन विभिन्न स्थानों पर आत्मघाती हो रहे हैं। यद्यपि भारत सरकार शान्त नहीं है फिर भी वह पाकिस्तानी आतंकवादियों का मुँह तोड़ जबाव नहीं दे पा रही है। भारत में आतंकवाद ही नहीं बल्कि आपराधिक गतिविधियाँ भी बढ़ गई हैं। रोजना हत्याएँ, चोरी, अपहरण इत्यादि घटनाएँ होती रहती हैं। यहाँ लोग चन्द पैसों के लिए अपने पिता तक को मारने से नहीं चूकते हैं।

मेरा विचार है कि ऐसे में भारत को इन गम्भीर समस्याओं से छुटकारा दिलाने के लिए एक तानाशाह की आवश्यकता है।

हर वर्ष हमारे देश के राष्ट्रपति महोदय गणतन्त्र दिवस के अवसर पर अपने भाषण में यह बात अवश्य कहते हैं कि 'भारत आतंकवाद से जूझ रहा है। हम इसका मुकाबला लोकतन्त्र से करेंगे । सिद्धान्तः यह सर्वथा उचित है। जहाँ सार्थक लोकतन्त्र हो, वहाँ लोगों में समानता, स्वतन्त्रता और देश के हर सुख दुख या किसी समस्या को सुलझाने में जनशक्ति और सहभागिता की भावना का होना स्वाभाविक है। इस लोकतन्त्र के समक्ष आतंकवाद का टिकना असंभव है । किन्तु ऐसे लोकतन्त्र से क्या लाभ जो आए दिन खंडित किया जाता हो । जिसका कोई स्थायी अस्तित्व न हो जो जर्जर होकर लड़खड़ा रहा हो । जो स्वयं ही देश के लिए बोझ बन गया हो तो मेरी समझ में यह आता है कि ऐसे लोकतन्त्र का होना न होना सब एक समान है। इससे आतंकवाद का सामना नहीं किया जा सकता।

ऐसे वक्त में देश को एक ऐसे तानाशाह की आवश्यकता है जो कड़े से कड़े कदम उठाकर आतंकवाद और अन्य समस्याओं को समाप्त करने की कोशिश करे ।

हिटलर ने तानाशाह बनकर जर्मनी तथा मुसोलिनी ने इटली की रूपरेखा ही बदल दी । इन्होंने अपने देशों को जमीन से उठाकर आसमान में पहुँचा दिया तथा विश्व के समक्ष तानाशाह की महत्ता को प्रस्तुत किया।

पाकिस्तानी सेना के जनरल मुशर्रफ ने प्रधानमंत्री नवाज शरीफ का तख्ता पलट दिया तथा सत्ता को स्वयं हथिया लिया । उसके शासन में पाकिस्तान कुछ मामलों में भारत से आगे निकलने की होड़ में है। उसने मिसाइलों का परीक्षण किया तथा सैन्य कार्यवाई भी बढ़ाई । इस लिहाज से मुशर्रफ ने पाकिस्तान को आगे बढ़ाया है।

अब रही बात भारत की 'क्या भारतीय जनता तानाशाही शासन स्वीकारेगी' ? मेरे नजरिए में इस प्रश्न का जवाब हाँ होना चाहिए क्योंकि भारतीय अपनी लोकतंत्रीय शासन प्रणाली से निराश हो चुके हैं ? सबसे श्रेष्ठ कहा जाने वाला देश आज पिछड़ता ही जा रहा है। सभी इसमें एक नया परिवर्तन चाहते हैं जिससे उनका देश पुनः उस पद को प्राप्त कर ले जिसे अन्य देशों ने उससे छीन लिया है तथा ऐसा तानाशाही के बलबूते ही संभव है।

***

कहानी

सुमुखी

गौरव श्रीवास्तव, एकादश 'ख'

रामअवतार लाम पर से वापस आ रहा था । अम्मा सरपंच से चिठठी पढ़वाने आयी । रामअवतार को छुटटी मिल गयी थी । जंग खत्म हो गयी थी इसलिए वो तीन साल बाद घर आ रहा था । अम्मा ने जैसे ही सुना कि वह घर आ रहा है वह खुशी से फूली न समायी, अपनी ही उमंग में नाचने लगी । पर कुछ ही समय बाद वह चुपचाप कुएँ के चौतरे पर बैठ गयी, सोचने लगी कि वह उसे उसकी दूसरी पत्नी के बारे में कैसे बताएगी । वह उसकी पहली पत्नी के पत्र की दशा किस प्रकार बताएगी । रामअवतार अपनी माँ और अपनी पत्नी दोनों से प्रेम करता था । रामअवतार की पहली पत्नी को विवाह के कुछ सालों बाद ही मौत ने अपने आगोश में ले लिया । उसका पुत्र रामू जिससे बचपन में ही क्रूर नियति ने माँ का आँचल छीन लिया था। वह आठ वर्ष का दुर्बल, जिसकी सारी पसलियाँ शरीर से बाहर निकल आयीं थीं से हाड़तोड़ काम कराया जाता था। रामअवतार के लाम पर जाने के बाद उसकी दूसरी पत्नी सुमुखी घर की मालकिन बन बैठी । वह माँ नहीं बन सकी थी इसलिए उसे पुत्र स्नेह का आनन्द नहीं मिला था । उसकी यही कुण्ठा निर्दयता में बदल गयी, घर का सारा काम रामू से कराती, उस नन्हें मासूम पर बहुत बोझ डालती । सुबह होता नहीं कि बेचारा नन्हा बालक अपने काम में लग जाता और सारे काम करने के बाद बोलता कि बोलो माँ और क्या काम है ? लेकिन सुमुखी उसके प्रेम को न देखकर उस पर और बोझ डालती । उसे रूखी–सूखी रोटी दे देती ताकि वह जिन्दा बना रहे। घर का खाना अपनी सास से बनवाती और खुद मालकिन बनकर घर में बैठी रहती । अपनी सास को खरी खोटी सुनाती और अक्सर कहती "ए बुढ़िया ! जल्दी–जल्दी काम कर, काम करना नहीं आता है क्या ?" बेचारी अम्मा अपने बेजान हाथों से इधर उधर कुछ काम करने लगती । सुमुखी ने इस बार सोच रखा था कि इस बार आने दो उनको, इस बुढ़िया को अलग करवाकर सुख व चैन की जिन्दगी जियूँगी ।

रामअवतार घर आया । अम्मा ने रामअवतार को देखा तो उसे ऐसा लगा कि मेरे जीवन का सहारा सामने खड़ा है। रामअवतार माँ से मिलकर बहुत खुश हुआ और अपने बेटे और सुमुखी से मिलकर भी बहुत खुश हुआ। रामअवतार को कुछ नहीं पता था वह चैन से छुटिटयाँ काटने लगा । घर आये हुए दो या तीन दिन ही हुए होंगे कि उसे महससू हुआ कि उसकी पत्नी, उसकी माँ और पुत्र से कटु व्यवहार करती है और जब उसने इसका कारण पूछा तो वह पलट कर बोलने लगी कि तीन साल तक घर का सारा काम मैंने किया । तुम्हारी माँ और बेटे ने मुझे बहुत परेशान कर दिया । अब तुम आ गए हो तो ये सब देखने में बड़े सीधे लगते हैं, लगता है जैसे ये कुछ जानते ही नहीं है । चूँकि अम्मा ने रामअवतार से घर के बारे में सारी बात छुपाई थी और कहा था कि तीन सालों में हमें बहूरानी ने बहुत सुख दिया । रामअवतार अपनी पत्नी की बातों को सुनकर गुस्से में आ गया और बिना कुछ समझे अम्मा से ये सब बातें कह दीं । जब अम्मा ने ये सुना तो उसकी सारी सुध खो गयी और वो बिना बोले उसे एकटक देखती रही और रामअवतार से कुछ न बोल सकी । रामू को कुछ समझ न आता कि ये सब क्या हो रहा है। अम्मा की खामोशी को देखकर रामअवतार को लगा कि उसकी पत्नी सही है। सुमुखी ने रामू को पहले ही मार पीटकर अपने पक्ष में कर लिया था । रामअवतार को अब अपनी पत्नी पर पूरा भरोसा हो गया था । अम्मा अब अपने भाग्य पर दिनभर रोती और रूखा सूखा खाती । रामअवतार को पत्र आया कि उसे लाभ पर बुलाया गया है अब तो सुमुखी की पाँचों उँगलियाँ घी में थी वह अम्मा को हटाना चाहती थी और रामू को भी वह चाहती थी कि वह उसकी दुनिया से दूर चला जाए । सुमुखी ने अम्मा को खाना देना बन्द कर दिया और चार–पाँच दिनों में अम्मा की हालत बुरी हो गयी । आँखें पथरा गयीं और वह

भूमि पर लोट–लोटकर चिल्लाने लगी । तभी रात में राम खाना चुराकर अम्मा को खिलाने आया । अम्मा नहीं चाहती थी कि रामअवतार दुःखी रहे । वह कुएँ में कूदकर जान दे बैठी । रामू ने ये देख लिया और अम्मा अम्मा कहते पूरी गाथा सुनाते वह भी अम्मा के पास बिना कुछ समझे चला गया। उस समय रामअवतार का एक मित्र जो सब कुछ देख और समझ चुका था रामअवतार के लाम पर से लौटते समय ही रामअवतार को सारी बात सुना दी ।

रामअवतार के होश उड़ गया और वह आक्रोश से भर गया । रोते हुए घर जाकर उसने सुमुखी को मार डाला। मारने के बाद उसकी मनोदशा विचित्र हो गयी । यह उसका सबसे बड़ा युद्ध जिसमें वह घर आया था उसे हार चुका था और खून से रंगे हाथों को ऊपर उठाए वह आकाश में देखकर चिल्लाने लगा अम्मा अम्मा SSS।

***

संस्मरण

जब मैं बहने लगा...

अनुराग मिश्र, सप्तम 'क'

मई 2002 की बात है। "मैं पूर्णागिरि माता के दर्शन हेतु गया था । यह मन्दिर हिमालय की एक पर्वत श्रेणी पर स्थित है। मैं शारदा नदी पर बने एक पुल पर खड़ा होकर नदी को निहार रहा था । कई लोग नहा रहे थे जल स्वच्छ था । मैं भी नहाने हेतु किनारे तट पर आया और नहाने लगा । मैं उल्टे बहाव में तैरा फिर तैरते–तैरते मैं अचानक बहने लगा तेज रफ्तार से और बहकर पुल के पास पहुँचा । कई लोगों ने मुझे देखा और चिल्लाए– "दीवार पकडो" । मैं सुन नहीं पाया था बस चिल्लाए जा रहा था "बचाओ बचाओ" । एक आदमी वहीं नहा रहा था वह मुझे बचाने आया और मुझे पूरी कोशिश से दूसरे किनारे लाया जहाँ सिर्फ पत्थर थे उसने मुझे लिटाया और पूरी ताकत से मेरे शरीर में भरे पानी को निकाला और पूछा "तैर सकोगे" ? मैंने जबाब सिर हिलाकर दिया– "नहीं" । मेरे शरीर में दर्द हो रहा था वह व्यक्ति मुझे वापस मेरे माँ, पिताजी को सौंप कर चला गया। पिताजी मेरा इलाज कराने उस नदी के पास एक डॉक्टर के पास गए । डॉक्टर ने मेरा एक्सरे किया । पता चला कि फेफड़ों में पानी भर गया है; फिर उसने मुझे एक गोली दी जिससे शरीर का सारा अतिरिक्त पानी विसर्जन मार्ग से निकल गया। जब हम वापस शारदा नदी आए तो देखा कि वह आदमी तैर रहा था । मैंने उसे बाहर बुलाया और दिल से धन्यवाद दिया । उनका नाम पूछने पर उन्होंने मुझे बताया कि 'मेरा नाम अजय है' मेरे पास उनका मोबाइल, फोन नं. भी रखा है। उन्होंने पापा जी को कार्ड भी दिया । यह एक ऐसी घटना है पहली जिसे भुलाया नहीं जा सकता है। मैं सोचता रहता हूँ कि आपत्तिकाल में मनुष्य ही मनुष्य के काम आता है।

***

संस्मरण

विछोह

निशान्त कुमार, सप्तम 'क'

मेरा घर स्टेशन से लगभग दो कि.मी. दूर है। जब कभी मैं छुटिटयों में घर जाता हूँ तो घर तक पहुँचने के लिए उस वृद्ध ताँगे वाले को अवश्य खोजता हूँ और उसके न मिलने पर मन मारकर दूसरी सवारी कर घर चला जाता हूँ । उस प्रौढ़ ताँगे वाले से मुझे इतना लगाव क्यों हो गया इसकी भी एक कथा है।

शायद पाँच वर्ष हुए होंगे इस घटना के, एक बार मैं सड़क के किनारे–किनारे पिताजी की डाँट से क्षुब्ध अनमना सा चला जा रहा था । कोई मेरे प्रति अपनत्व से भरा हुआ प्रौढ़ मुझे बार–बार आवाज दे रहा था। शायद कुछ कहना चाहता था मुझसे जब मेरा ध्यान उस प्रौढ़ पर गया तो मैं प्रथम दृष्टि में कुछ कुछ झिझका, परन्तु उसकी आँखों में अपनत्व की चाह देखकर मिलने को लालायित हुआ पर प्रायः एक दृष्टि से चोर–उचक्कों का भय जो मन में रहता है वहीं हिलोरें मारने लगा और वही क्षोभ से कुंठित मन लेकर अपने घर लौट आया। पर मन शायद उसी को याद कर रहा था । मैं स्वयं को किसी कार्य को करने में असमर्थ पर रहा था । फिर कुछ समय पश्चात मैं उसे भूल गया तथा नित्य प्रति की भाँति अपने कार्यों में मशगूल हो गया तथा प्रतिदिन पिताजी की डाँट व माँ के अध्ययन को लेकर उलाहने मेरे हृदय में बैठ गये और मैं फेल होने लगा । जब मैं फेल होने लगा तो मार से डरकर मैं घर में कम समय देने लगा । फिर एक दिन वही प्रौढ़ मुझे सड़क के किनारे मिल गया तथा स्नेह की आकांक्षा लिए वह प्रौढ़ शायद कुछ मुझसे कह रहा था और मेरा मन भी पहले से उससे बात करने को उत्सुक था । कुछ दिनों बाद हम दोनों में प्रगाढ़ मैत्री हो गई और कुछ दिनों बाद हम दोनों का उठना बैठना, खाना पीना आदि सब साथ होने लगा और हम कुछ समय के लिए भी उससे दूर रहने में अपने आप को असमर्थ महसूस करते थें। उसके कथनानुसार मैंने अपने भावों और विचारों को शुद्ध करते हुए अपने मन को पढ़ाई की ओर एकाग्र किया तथा कुछ दिनों बाद परीक्षा फल जिसमें कि मैं प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुआ जिससे मेरे माता–पिता मेरी ओर आकर्षित होने लगे और मैं दिन प्रतिदिन मुझे छात्रावास जाने की बात सुनकर बहुत दुःख हुआ और शायद लगा कि किसी ने कटार मार दी हो ऐसी असहाय पीड़ा का बोध शायद मुझे प्रथम बार हो रहा था और मैं निरीह सा इधर–उधर विचरण करने लगा । मैं समझ नहीं पा रहा था कि क्या करना चाहिए उतने में ही वह प्रौढ़ आया और उसने मुझे समझाया तथा वादा किया कि अगली छुटिटयों में हम पुनः यहीं मिलेंगे और सांत्वना देकर चला गया तथा अगले दिन आने का वादा किया । दूसरे दिन वह अपने ताँगे के साथ आया मेरा सामान रखकर वह स्टेशन की ओर चल पड़ा जब मैं छात्रावास पहुँचा तब रास्ते भर की बाते मुझें याद आने लगीं वह कह रहा था कि मैं जियूँ या मरूँ लेकिन मुझे कभी भूलना नहीं मैं बहुत गरीब हूँ पर शायद तुम्हें तो कभी नहीं भूलूँगा और हो सकेगा तो चिठठी भी समय–समय पर लिखता रहूँगा। कुछ समय पश्चात उसकी चिठिठयाँ आना भी बंद हो गई। इसके बाद मैं काफी उत्सुक रहने लगा कि उसकी चिठिठयाँ क्यों नहीं आ रही है और मैं कुछ दिनों बाद परेशान रहने लगा। जब घर जाने की छुटिटयाँ हुई तो मैं भी घर गया और स्टेशन पर उस प्रौढ़ को न देखकर मैं बहुत दुःखी हुआ और कुछ समय तक वहाँ उसे न देखकर मैं और द्रवित हो उठा वहाँ के आस–पास के लोगों को देखकर मैं और द्रवित हो उठा वहाँ के आस–पास के लोगों को देखकर मैं एक के पास गया और एक ताँगेवाले से पूछताछ की कि वह प्रौढ़ कहाँ गया? उन्होंने बताया "बेटा वह बहुत नेक इंसान था पर एक बार एक सेठ ने उसे जबरदस्ती चोरी के आरोप में जेल भिजवा दिया । जेल में कुछ समय तक रहने के बाद उसके तांगे का कोई पता नहीं लगा । आय के सब साधन बंद हो गए । वह बीमार रहने लगा और कुछ समय पश्चात वह एक नाम दोहराते हुए मर गया । जैसे ही मैंने यह सुना तो मैं असहाय सा इधर–उधर ताकने लगा । शायद मेरी यह निरीह आँखे जो सदैव एकटक उसके तागें को निहारा करती थी। आज उनसे अनायास ही अश्रुधारा बह उठी मैं उसकी याद करते हुए घर गया और अब जब भी उस स्टेशन पर पहुँचता हूँ तो अब भी मुझे यही लगता है शायद वही प्रौढ़ रह–रहकर आवाज दे रहा हो और कुछ कहना चाह रहा हो ।

***

गद्यगीत

सृष्टि

प्रशान्त भारद्वाज, एकादश 'ख'

सृष्टि । क्या है यह सृष्टि ? विचित्र है यह सृष्टि शून्य है यह सृष्टि । वास्तविक होते हुए भी कल्पित है यह सृष्टि । परिभाषित होते हुए भी अपरिभाषित है यह सृष्टि अद्‌भुत्, असीमित, अपरिमित है यह सृष्टि । लौकिक होते हुए भी आलौकिक है यह सृष्टि । विभिन्नताओं से भरी है यह सृष्टि । ब्रह्म के स्वरूप का विग्रह है यह सृष्टि । ब्रह्मा के कल्पनातरू का पोषित फल है यह सृष्टि । विष्णु की कर्मभूमि है यह सृष्टि । शिव की तपस्थली है यह सृष्टि। देवों की रंगभूमि है यह सृष्टि । असुरों द्वारा शोषित है यह सृष्टि । योगियों की साधना स्थली है यह सृष्टि । भोगियों की भोग्या है यह सृष्टि । जीवधारियों की माँ है यह सृष्टि ।

माँ । भावना प्रधान शब्द है माँ । माँ नाम स्मरण होते ही मन में भावनाओं का ज्वार आ जाता है। बुद्धि का मन से तारतम्य टूट जाता है । मन बुद्धि पर हावी हो जाता है। मन आशा, प्रेम, विश्वास और सम्मान से भर जाता है। मानस पटल पर एक करूणा त्याग, ममता का एक विराट चित्र खिंचता है। सुन्दर स्वरूप है। इसका सौन्दर्य आलौकिक है, अनुपमेय है, अद्वितीय है, अद्‌भुत है, दिव्य है। ऐसा सौन्दर्य जिसके सम्मुख सभी सुन्दरतम वस्तुएँ नीरस लगती हैं । स्रष्टा का स्वरूप है माँ । इसका सामीप्य पाकर रोम रोम पुलकित हो उठता है। मन श्रद्धा से भर जाता है। उस महान दैवीय स्वरूप का सामीप्य पाने में जो आनन्द है वह कहीं नहीं ।

चिड़िया को देखो। कितनी स्वच्छन्द है वह । कितनी स्वतन्त्र है वह; कुछ भर करने के लिए; कुछ भी खाने पीने के लिए खेत से एक एक दाना चुनकर अपनी चोंच में दबा कर लाती है, स्वयं नहीं खाती स्वयं तृप्त नहीं होती, बल्कि अपने छोटे छोटे नवजातों के मुख में उड़ेल देती है। बिना किसी स्वार्थ के, आशा के, अपेक्षा के । छोटे छोटे बच्चे खाना पाकर चहक उठते है और चिड़िया उन्हें अपने डैनों में छिपा लेती है। बच्चों की प्रसन्नता ही उसकी तृप्ति है वही उसका सुख है। वह जानती है कि एक दिन ये बच्चे उसे छोड़ जायेगे। बिना किसी चिन्ता के उनकी सेवा करती रहती है। ऐसी निस्वार्थ सेवा माँ के अतिरिक्त कोई नहीं कर सकता ।

शेर, हाथी, भालू, कुत्ते आदि की तरह गाय भी एक जानवर है। उन्ही की तरह सबल है, आत्मरक्षा और भय पैदा करने के लिए । किन्तु गाय सरलता, ममता, दया व पवित्रता का अनुपम उदाहरण है क्यों ? बछड़ा जब दुग्ध पान करने के लिए आता है सम्पूर्ण ममता उड़ेल देती है उस पर । जितनी देर वह गाय के पास रहता है, चाटती रहती है, दुलार करती रहती है अगाध प्रेम करती है उससे निष्काम प्रेम, ऐसा प्रेम जो दिव्य है कल्पनातीत है जो जीव मात्र को देवत्व के ऊपर ईश्वरत्व तक पहुँचा सकता है। ऐसा प्रेम करती है वह । जब उसके पास से बछड़ा बलपूर्वक हटाया जाता है। वह विचलित हो जाती है। इतना अगाध प्रेम है उसे अपने बछड़े से । यही उसका मातृत्व है। यही गुण उसे देव कोटि में लाकर खड़ा कर देता है। मानव जैसी स्वार्थान्ध कृति को अपने बालक के समान दुग्धपान कराती रहती है। कभी विरोध नहीं करती । इसी कारण मानव मात्र उसे अपनी माँ मानने लगता है। ममता का अगाध सागर है वह सरलता की मूर्ति है वह ।

मानव सृष्टि की महानतम कृति है मानव । मानव भोगों का त्याग कर, सुकर्मों के बल पर देवत्व को प्राप्त कर सकता है। स्वयं भगवान मानव रूप में इस सृष्टि पर अवतरित होते हैं। मानव अपने त्याग, बलिदान व तप से ईश्वर के समकक्ष पहुँच जाता है। सृष्टा बन जाता है वह । विश्वामित्र मनुज ही थे किन्तु राजभोगों को त्यागकर वे स्रष्टा बन गये थे । ब्रह्म को चुनौती तक दे डाली । सिर्फ त्याग के बल पर वे इस पद पर पहुँच गये । मानव त्याग का पर्याय है। उसका त्याग कुछ आशा के लिए होता है, कुछ अपेक्षा के लिए होता है। किन्तु माँ का त्याग निस्वार्थ होता है। जब रात को बालक बिस्तर गीला कर देता हैं माँ गीले बिस्तर पर स्वयं लेट जाती है; बालक को आँचल में छिपाये रात भर सर्दी से ठिठुरती रहती है। अपने बच्चे को कष्ट नहीं देती । अपना सम्पूर्ण जीवन यौवन अपने बच्चे के लिए न्यौछावर कर देती है। कभी उस त्याग का प्रतिफल नहीं माँगती । वही

शिशु जब उसके साथ दुर्व्यवहार करता है अपमानित, करता है तब भी वह अपनी प्रकृति से विचलित नहीं होती।

पौधे जिस पर पल्लवित होते है, नदियाँ जिस पर कल कल करती हुई बहती हैं। जल प्रपात जिसकी शोभा बढ़ाते हैं । हिरन जिस पर कुलाचे भरते हैं । चिड़ियाँ जिस पर चहचहाती हैं । जिसके विशाल जंगल भय पैदा करते हैं। जिसकी पहाड़ों की विशाल गगनचुम्बी चोटियाँ मन में उत्साह और उमंग का संचार करती है । जिसके नीलम, मोतियों और स्वर्ण के भण्डार मन को आकर्षित करते हैं। ऐसी है धरती । सभी जीवों के जीवन का आधार है यह धरती । पेड़, पौधों, वनस्पतियों, पशु-पक्षी, देव, दानव, मानव, योगी, यती, तपस्वी, जलचर, नभचर, स्थलचर सभी को धारण किये हुए हैं । अथाह सागर की गहराइयों से पर्वतों की चोटियों तक छोटे–छोटे उपवनों से बड़े बड़े जंगलों तक, चीटियों की कतार से गजों के झुण्ड तक, निरीह बकरी से एक सबल सिंह तक, कौड़ियों के निःसार संसार से स्वर्ण, मोतियों के चमकीले संसार तक, सभी इस धरती पर व्याप्त है। धरती सभी का आधार है। सभी कुछ इस धरती के बिना निराधार है । हम जिस पर खाते हैं, खेलते हैं, पलते हैं, बढ़ते है वह है यह धरती । प्रातः मल-मूत्र त्याग से रात्रि सोने तक न जाने कितने ही ऐसे कार्य करते हैं, ना जाने कितने ही अवशिष्ट हम इस धरती पर डालते हैं; बड़े वीभत्स हैं वे । उनका ध्यान आते ही मन घृणा से भर जाता है । किन्तु वह उन अपवित्र तत्वों को भी अपने में मिला कर पवित्र कर देती है। जीवन भर हमारा भार सहन करती है। सहनशीलता, करूणा व दया की निर्विवादित मूर्ति है वह । एक माँ के समान हमारा पालन–पोषण करती है वह । जो कुछ हम खाते हैं वह धरती देती है; प्रत्यक्ष रूप से या अप्रत्यक्ष से । फल, अनाज, सब्जियाँ, तिलहन, दलहन आदि सभी धरती की कृपा से प्राप्त होती है। नर पिशाचों के लिए माँस भी वही देती है। निर्जीव होते हुए भी सजीव है वह । एक माँ की तरह दयावान है, करूणा का सागर हैं वह । उसका चरित्र माँ की तरह विराट है, विस्तृत है। इन्हीं कारणों से वह धरती माँ कहलाती है।

आँख बन्द करके देखो। मन में एक भौगोलिक स्वरूप उभरता है। उत्तर से पूर्व तक फैली विशालकाय हिमाच्छादित चोटियाँ, जिनकी छाँव में सेब, केसर, अंगूर, संतरे आदि के महकते बाग हैं। पश्चिम में हिन्दुकुश की वीरान पहाड़ियाँ, जिसके आँचल में एक विशालकाय पठार है। मध्य में समतल मैदान है; जिसमें कई नदियाँ प्रवाहित होती है। तीन ओर से अथाह जल है। क्या यही धरती माँ है ? क्या यही भारत माता का स्वरूप है ? नहीं , नहीं । वह तो शुभ्रवस्त्रा है, सिंहवाहिनी है, ममता का सागर है, करूणा की मूर्ति है, दया से परिपूर्ण है। ये सभी तो उसके अंग हमारे लिए वन्दनीय हैं, तीर्थ हैं । हम तो उस सिंहवाहिनी के नीराजक है। उसी के पुत्र हैं हम । अतः पुत्र के नाते उसकी रक्षा का भार भी हमारे ऊपर है। ऐसी जननी जिसका मातृ, ऋण हम जन्म जन्मान्तर तक नहीं चुका सकते ।

भावनाएँ हैं उसके साथ । ऐसी भावनाएँ जो तर्कातीत हैं, अपरिमित हैं । जिनका कोई ओर छोर नहीं है। जब भावनाएँ बलवती होती हैं विचार शून्य हो जाते हैं । एक लम्बी कतार खड़ी हो जाती है बिना लाभ हानि के विचार के । वे स्वयं की शक्ति नहीं आँकते । भविष्य के विषय में नहीं सोचते । भावनाएँ उनका सम्बल होती हैं, शस्त्र होती हैं शक्ति होती हैं । विचारों से कोई सरोकार नहीं होता । वे यदि असफल होते हैं तो प्रारब्ध को दोष देकर दुःखी नहीं होते; बलिदान देकर उऋण होते हैं मातृ ऋण से और सफल हो जाते हैं तो असीमित आनन्द को प्राप्त करते हैं। यही वास्तविक सुख है आनन्द है।

प्रत्येक जीव माँ की ममता पाना चाहता है, उसका प्रेम से परिपूर्ण आँचल प्राप्त करना चाहता हैं। उस प्रेम की प्राप्ति के लिए स्वयं लीलावतार कृष्ण अवतारित होते हैं; लीला दिखाते हैं किन्तु माँ यशोदा के सम्मुख कभी विराट स्वरूप में उपस्थित नहीं होते हैं। उनके सामने सदैव बाल क्रीड़ाएँ करते हैं। वे यशोदा जी के सम्मुख अपना विराट स्वरूप प्रस्तुत कर श्रद्धा व सम्मान के पात्र बन सकते थे; किन्तु नहीं वे माँ की ममता चाहते थे, उसका प्रेम चाहते थे जो इस मृत्युलोक में ही सम्भव है, वैकुण्ठ लोक में नहीं । उसकी ममता अमूल्य है। जिसको प्राप्त करने के लिए स्वयं ईश्वर अवतरित होते हैं।

माँ । जीव होते हुए भी देवता है। वह जीवन भर संघर्ष करती है, परिस्थितियों से मुख नहीं मोड़ती । एक पराक्रमी योद्धा की भाँति संघर्ष करती है। निस्वार्थ सेवा और दया जिसका शौर्य और पराक्रम है। ममता जिसका सम्बल है। त्याग जिसका धैर्य है ऐसे योद्धोचित गुणों से युक्त है वह । इन्हीं के बल पर जीतती है वह जीवन समर को । जीवन संघर्षों से जूझते उस योद्धा को मेरा शत् शत् नमन ।

❋ ❋ ❋

पं. दीनदयाल उपाध्याय स्मारक निबंध प्रतियोगिता में बाल वर्ग में 'प्रथम' स्थान

पं. दीनदयाल उपाध्याय : जीवन और कार्य

सन्दीप कुमार शिवहरे, अष्टम 'ख'

कर्ममय जीवन सदा, उपकार की वाणी रहा था
जब कभी भी मौन टूटा, तत्व ही तुमने कहा था
साधना के दीप बाती, जगमगाती है तुम्हारी
यज्ञ की समिधा बनेंगे, है शपथ यह अब हमारी ।

नेतृत्व के अगणित गुणों के धनी । जिसके एक इशारे पर हजारों सहयोगी अपने प्राणों को बलिदान करने के लिये तैयार हो जाते थे– ऐसा दैदीप्यमान व प्रेरणादायक व्यक्तित्व ! जो उन्हें एक बार देख लेता व उनकी वाणी सुनी, बस उनका हो गया । पं. दीनदयाल उपाध्याय एक ऐसे सेवाव्रती, त्यागी व मनीषी महामानव थे । जिन्होंने देशमाता की सेवा में अपना सम्पूर्ण जीवन व्यतीत कर दिया । वह हमेशा अपने बारे में कम तथा दूसरों के हित के बारें में अत्यधिक सोचते थे ।

ध्येय पथ का सजगतम अविराम राही,
साधना भी रही जिसकी हृदय ग्राही
देव दुर्लभ प्रकृति संस्कृति का उपासक,
'राष्ट्रधर्म' जगा बना उसका प्रकाशक ।

पं. दीनदयाल जी ने अपने नाम के आशय को सिद्ध करके दिखाया। पं. दीनदयाल दूसरों के प्रति प्रेम, स्नेह व जागरूक रहते थे इसी कारण से दीनदयाल दीनदयाल बने । श्रुति में भी कहा गया है–

सेवाधर्मो परम गहनो योगिनाम अपि अगम्यः

जीवन वृत्त – पं. दीनदयाल जी एक ऐसे दैदीप्यमान सूर्य के समान थे जिन्होंने अपने तेज से अपनी साधना के तप से अपने आचरण से देश की सुप्त जनता को अंधकार से उठाकर प्रकाश की ओर आकर्षित किया। ऐसे महान पुरुष, युगद्रष्टा का आविर्भाव आश्विन मास विक्रम सम्वत् उन्नीस सौ तिहत्तर कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी तदनुसार पच्चीस सितम्बर सन उन्नीस सौ सोलह को हुआ । इस महान व्यक्तित्व को अस्तित्व प्रदान करने वाली उनकी माता का नाम रामप्यारी देवी था इनके पिता जो श्री भगवती प्रसाद थे वे उत्तर प्रदेश के जलेसर रोड के स्टेशन पर स्टेशन मास्टर थे । इनके नाना पं. चुन्नीलाल शास्त्री जो अजमेर रेलवे लाइन पर स्टेशन मास्टर थे वह धनकिया ग्राम में रहते थे । इनका जन्म नाना के यहाँ उसी ग्राम में हुआ था । बचपन में स्नेह से लोग इन्हें दीना कहते थे । जब इनका जन्म हुआ तो पूरे विश्व में भारत का, भारत में उत्तर प्रदेश का, उत्तर प्रदेश में मथुरा का और मथुरा में नगला चन्द्रभान का यश बढ़ा । जब यह दो वर्ष के ही थे तब माता रामप्यारी ने एक दूसरे पुत्र को जन्म दिया जिसका नाम शिवदयाल (शिबू) रखा गया । फिर एक ही वर्ष पश्चात उनके पिता उन दोनों को छोड़कर इस संसार से चले गए । पिता की मृत्यु का गम इतना नहीं था । बचपन में ये दोनो शरारती थे और खेलते अधिक थे । इसके पश्चात् पाँच ही वर्ष बाद उनकी माता को भी विधाता ने उनसे छीन लिया ।

कहा भी गया है काल किसी के सुख दुःख की चिन्ता नहीं करता जब वह धरती पर अपने चरण रखता है धरती रोती है और वह एक न एक को अपने साथ ले जाता है। दोनों के जाने का दुःख दोनों भाई बर्दाश्त न कर सके अतः उनकी देख रेख, सेवा सुश्रूषा के लिये उनके नाना ने उन्हें मामा राधारमण के यहाँ रहने की व्यवस्था करवाई । मामा के एक भी पुत्र न था । पं. दीनदयाल जी ने अपनी पढ़ाई का क्रम सन उन्नीस सौ

पच्चीस में प्रारम्भ किया । "सामान्य परिवार में रहकर असमान्य व्यक्तित्व और कृतित्व धारण करना कोई सामान्य कार्य नहीं है।"

कोई चलता पग चिन्हों पर कोई पग चिह्न बनाता है
है वही सूरमा इस जग में दुनिया में पूजा जाता है।

शैक्षिक जीवन– पं. दीनदयाल जी ने कक्षा चतुर्थ में प्रथम स्थान प्राप्त किया वे सफलता की सीढ़ियों में चढ़ते गये व पंचम, षष्ठ, सप्तम, अष्टम, नवम में प्रथम स्थान प्राप्त करते थे । जब किसी दशम वाले को कोई प्रश्न नहीं समझ में आता था तो इन्हें नवम से बुलाया जाता था ये जाते सवाल करके सादर चले आते थे । इन्होंने मैट्रिक (हाईस्कूल बोर्ड) की परीक्षा सीकर से दी व वहाँ सम्पूर्ण बोर्ड में इनका प्रथम स्थान था । महाराजा सीकर ने इन्हें दो सौ पचास रुपये स्कूल में दाखिला करवाने का, दस रुपये जब तक पढ़ेगें तब तक मासिक छात्रवृत्ति व एक स्वर्ण पदक पुरस्कार स्वरूप दिया । उस समय अजमेर बोर्ड ने इन्हें एक स्वर्ण पदक दिया व इण्टरमीडिएट की परीक्षा उन्होंने पिलानी से सन् उन्नीस सौ सैंतीस में उत्तीर्ण की व सम्पूर्ण बोर्ड में प्रथम स्थान प्राप्त किया व महाराजा बिरला ने भी दो सौ पचास रुपये दाखिला करवाने का, एक स्वर्ण पदक, दस रुपये की मासिक छात्रवृत्ति दी । बोर्ड की तरफ से एक स्वर्ण पदक मिला । उनकी प्रमुख विशेषता यह है कि इण्टर में उन्होंने गणित में फेल होने वाले छात्रों का एक ग्रुप बनवाया । जिसको 'जीरो एशोसियेशन' के नाम से जाना जाता है और उनकी उन छात्रों को दीनदयाल जी ने पढ़ाया व उन सबको इण्टर में अच्छे अंक मिले । वह लोगों का विशेष ध्यान रखते थे। उनका चरित्र एक अनुकरणीय चरित्र था जब सब सो जाया करते थे तब पं. दीनदयाल जी एक किनारे में जाकर लालटेन जलाकर पढ़ा करते थे । बी.ए. इन्होंने कानपुर नवाबगंज स्थित वी. एस. एस. डी. कालेज से उत्तीर्ण किया प्रथम श्रेणी पाकर । सन् उन्नीस सौ सैतींस से उनका सम्पर्क राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से हुआ । एम.ए. प्रथम वर्ष उन्होंने आगरा से अंग्रेजी साहित्य में किया । एम.ए. का द्वितीय वर्ष वह न कर सके क्योंकि उनकी आजी व बहन (सगी नहीं) की तबियत खराब थी व उनकी सेवा सुश्रूषा के लिये ये पहाड़ों पर चले गये।

उनके कार्य– पं. दीनदयाल उपाध्याय सामान्य व्यक्ति मात्र नहीं थे वे महामानव दृढ़संकल्पी, समाज शिल्पी थे। एक बार ये राष्ट्रीय स्वयं संघ के शिविर में गये तो रसोइये से दो रोटी जल गई थी तो उसने उन दोनों रोटियों को किनारे रख दिया । दीनदयाल जी ने उन दोनो रोटियों को अपनी थाली में रख कर भोजन प्रारम्भ किया । लोगों के पूछने पर उन्होंने उत्तर दिया कि हमें अन्न का अपमान नहीं करना चाहिये ।

पं. दीनदयाल जी ने संघ कार्य को बड़ी श्रद्धा, लगन व आत्म विश्वास के साथ किया संघ कार्य के साथ–साथ उन्होंने राष्ट्रधर्म (मासिक) तथा पांचजन्य (साप्ताहिक) पत्रिका निकाली । उन्होंने एकात्म मानववाद जैसा दर्शन प्रस्तुत किया । पं. दीनदयाल का जीवन अत्यन्त सादा व सरल था ।

उनके विचार – पं. जी का कहना था स्वाध्याय का अर्थ होता है 'स्व' 'अध्याय' अर्थात अपने बारे में अध्यापन उनका कहना था कि स्व का अध्यापन । उनका कहना था कि शिक्षा को किसी भी प्रकार से प्राप्त करना चाहिये।

स्वदेशी के बारे में युगद्रष्टा ने कहा है कि हम स्वदेशी वस्तुओं का उपभोग करे अपने देश को उन्नति के मार्ग में अग्रसर करायें ।

स्वदेशी को युगानुकूल और विदेशी को स्वदेशानुकूल बनाकर ग्रहण करना चाहिये।

पेड़ को उगाने और सींचने के लिये हम उससे पैसा नहीं बल्कि अपनी ओर से पूंजी लगाते है और जानते हैं कि पेड़ के फलने पर हमें फल मिलेगा ही । शिक्षा इसी प्रकार का विनियोजन है।

मृत्यु– ग्यारह फरवरी उन्नीस सौ अड़सठ को मुगल सराय रेलवे स्टेशन पर उनकी हत्या कर दी गई

सुन पड़ा काल का क्रूर हाथ, तुम चिरनिद्रा में लीन हुए ।
किस वज्र हृदय से सहन करें, आश्चर्य क्षुब्ध श्रीहीन हुए ।।

अजातशत्रु कहलाने वाले पं. जी की मृत्यु किस क्रूर हाथ ने की यह बात अभी तक रहस्य ही है।

फिर रक्त रंजिता हुई दिशा, दिन में छाई निविड़ निशा ।
कैसा यह वज्र निपात हुआ, वह चला छोड़कर, कौन साथ
हम लगते है जैसे अनाथ, कैसा यह आकस्मिक घात हुआ।

उपसंहार– "दीपक चाहे छोटा हो या बड़ा सूर्य जब आलोकवाही कर्तव्य उसे सौंपकर चुपचाप डूब जाता है तो तब जल उठना ही उसके अस्तित्व की शपथ है और जल उठना ही इसका जाने वाले को प्रणाम है"

तुम यती, तपस्वी, कर्मवती, वैरागी, त्यागी, आप्तकाम
हे! युगद्रष्टा हे ! युगर्निमाता, स्वीकार करो युग का प्रणाम।

❋ ❋ ❋

आप–बीती

दीनदयाल विद्यालय आने से पूर्व

सौरभ द्विवेदी, षष्ठ 'ख'

षष्ठ कक्षा के छात्र चि. सौरभ द्विवेदी ने विद्यालय में प्रवेश पाने से पूर्व तथा प्रवेश पाने के बाद के अपने मनोभावों को यथारूप लिखकर वयानुसार एक अच्छा संस्मरण प्रस्तुत किया है।
– संपादक

मैं जब अपने पंचम तक के पूर्व विद्यालय से शिक्षा प्राप्त कर निकला और मुझे कुछ दिनों बाद पता चला कि मुझे दीनदयाल विद्यालय में षष्ठ कक्षा में प्रवेश लेना है; तब से मेरे पिताजी मेरे लिये अनेक किताबे लाने लगे; उन किताबों को मैं पढ़ता–समझता और याद करता था । मैने विद्यालय की प्रवेश–परीक्षा से पूर्व संकल्प ले लिया था, कि मुझे उस विद्यालय में प्रवेश लेना ही है। फिर परीक्षा के दिन मैंने परीक्षा दी, मुझे महसूस हो रहा था कि मेरा चयन अवश्य ही हो जायेगा । चयन होने के बाद मैं निश्चिंत हो गया और मैने पढ़ना छोड़ दिया । जब विद्यालय की प्रवेश–परीक्षा का परिणाम आया तो मुझे पता चला कि मेरा '61'वाँ स्थान आया है तो मुझे अत्यधिक खुशी हुई और फिर मैं छात्रावास आने की तैयारी करने लगा । मैंने अनेक तैयारियाँ की और मेरे मन में अनेक विचार आते थे जो मैं आपको बता रहा हूँ ।

मेरा दीनदयाल विद्यालय कैसा होगा ? "वहाँ का छात्रावास कैसा होगा, मैं कहाँ रहूँगा ? वहाँ मेरे रहने की व्यवस्था कैसी होगी ? मैने अपना सभी प्रकार का सामान खरीद लिया । अब मुझे छात्रावास आने में एक महीना रह गया था । मेरी मम्मी और दीदी कहती थी कि वहाँ जाकर खूब पढ़ना एक महीने मैने बिल्कुल पढ़ाई नहीं की, मैंने इस विद्यालय के बारे में अनेक बातें सोची; मैं सोचता था कि वहाँ पढ़ाई कैसी होगी, वहाँ की दिनचर्या कैसी होगी, वहाँ के विद्यार्थियों का व्यवहार कैसा होगा, वहाँ खेल कैसे होंगे । लेकिन मुझे यहाँ आने के बाद ऐसा महसूस होता है कि यहाँ के सभी लोगों का व्यवहार अच्छा है, यहाँ की दिनचर्या भी चुस्त हैं और यहाँ खेल भी अच्छे होते हैं। यहाँ पढ़ाई का एक अच्छा माहौल है। विद्यालय आने से पूर्व मेरे मन में जो भय और आशंकाएँ थीं, वे निर्मूल निकलीं । विद्यालय तथा छात्रावास में आने के बाद मेरा मन पूरी तरह यहाँ लग चुका है। शुरूवात में मैने कुछ बदमाशियाँ भी की थीं, जैसे मैने एक नवम कक्षा नये भैया को देवेन्द्र के साथ मिलकर पीटा भी था; जिस पर मुझे दंड दिया गया था । मैने उन भैया से माफी भी माँग ली थी । अब मैं अपने से बड़े सभी लोगों का सम्मान करता हूँ तथा भविष्य में अच्छा आचरण करने का संकल्प भी लेता हूँ ।

❋ ❋ ❋

खेल में विद्यालय की कीर्ति पताकाएँ

वीरेन्द्र त्रिपाठी, छात्रावास अधीक्षक

विद्यालय के छात्रावास अधीक्षक वीरेन्द्र त्रिपाठी छात्रावास में खेल की विविध गतिविधियों के लिये प्रयत्नशील रहते हैं । उनके संरक्षण में कबड्डी, खो–खो तथा बॉक्सिंग में छात्रों ने जिले से प्रदेश तक विभिन्न स्तरों पर सफलता पाई है । वे खुद भी बॉक्सिंग के अच्छे खिलाड़ी रहे हैं तथा संप्रति उत्तर प्रदेश एम्येच्योर बॉक्सिंग एसोसियेशन के संयुक्त सचिव हैं । – **संपादक**

विद्यालय के छात्रों द्वारा वर्तमान सत्र में विभिन्न खेलों में प्राप्त विशिष्ट उपलब्धियाँ निम्नांकित हैं–

(i) राज्य स्कूली खेल प्रतियोगिता में दशम के छात्र चि. सुधांशु शेखर ने कबड्डी में कानपुर मण्डल का प्रतिनिधित्व किया ।

(ii) राज्य सब जूनियर मुक्केबाजी प्रतियोगिता में चार छात्रों ने मण्डलीय टीम का प्रतिनिधित्व किया जिसमें से अष्टम कक्षा के छात्र चि. राकेश कुमार ने स्वर्ण पदक प्राप्त किया तथा राष्ट्रीय प्रतियोगिता हेतु विशेष प्रशिक्षण शिविर में आमंत्रित किये गये ।

(iii) राज्य सीनियर खो–खो प्रतियोगिता में विद्यालय के तीन छात्रों चि. ईशान अग्रवाल, चि. कुन्दन कुमार एवं चि. विवेक चतुर्वेदी ने कानपुर जनपद का प्रतिनिधित्व किया ।

(iv) जिला सब जूनियर मुक्केबाजी प्रतियोगिता में लगातार दूसरे वर्ष विद्यालय टीम ने सर्वाधिक अंक अर्जित किये । प्रतियोगिता में विद्यालय मुक्केबाजी टीम के निम्नांकित खिलाड़ियों ने स्थान प्राप्त किये –

स्वर्ण पदक प्राप्त करने वाले खिलाड़ी–

1. दृश्यमुनि चाकमा
2. मनीष तिवारी
3. निशीत कुमार
4. प्रत्यूष प्राञ्जल
5. अमित मयंक
6. सुधांशु शेखर

रजत पदक

1. सर्वेश कुमार
2. सजल गोयल

काँस्य पदक

1. एस. एम. गौरव
2. निशान्त
3. पंकज
4. अभिषेक
5. शुभम शुक्ला
6. राकेश कुमार
7. विनीत शाक्य

विद्यालय में नियमित रूप से एथलेटिक्स, फुटबॉल, खो–खो, कबडडी, वालीबॉल, बास्केट बाल, बैडमिण्टन और टेबिल टेनिस का प्रशिक्षण चल रहा है।

***

कहानी प्रतियोगिता में किशोर वर्ग में प्रथम स्थान

सच्चा मित्र

अजीत सिंह यादव, नवम 'ख'

कहानी प्रतियोगिता में नवम 'ख' कक्षा के छात्र चि. अजीत सिंह यादव ने अपने वर्ग में प्रथम स्थान प्राप्त किया। मित्र तथा मित्रता पर आधृत यह कहानी सूक्ष्म मनोभावों तथा संवेदनाओं को व्यक्त करने में सक्षम है। — संपादक

बड़ी देर से उसकी प्रतीक्षा कर रहा हूँ । उसको आना चाहिए क्योंकि यह मेरे जाने का समय है। चलते समय मैने पुनः एक बार पलटकर देखा पर मुझे वहाँ किसी के भी दर्शन न हुए । मैं निराश ही लौट रहा था। मैं अपने विद्यालय की ओर चल पड़ा । अन्ततः मुझे निराशा को ही अंगीकार करना पड़ा । अब मुझे लगने लगा था कि उसे शायद कुछ अभिमान आ गया है पर अगर वह आता तो मैं उसे अवश्य संतुष्ट कर देता । हम दोनों में घनिष्ठ मित्रता थी । एक दिन जब मेरे विद्यालय की क्रिकेट टीम मैदान पर पहुँची । हमारे कई साथियों ने मेरे उस घनिष्ठ मित्र से तमाम मज़ाक करके उसे मानसिक कष्ट पहुँचाया । मैं कुछ देर तो खुद को रोके रहा पर कुछ ही क्षण पश्चात् उनके हास्य.विनोद में मैं भी शामिल हो गया पर शायद मुझसे उसे यह आशा न थी। उस आलोचक.समूह में उसका कोई समर्थक न रहा । मैं मित्रों में अपने को सर्वोच्च सिद्ध करने के लिए उत्सुक था और जल्द ही मुझे यह मौका मिल गया और मैने उस पर व्यंग्य भरा एक कटाक्ष किया । वह वहाँ से भाग गया । मैने उससे दोबारा मिलने की कोशिश की पर वह न मिला और मुझे यह भी न पता चला कि कब मेरा अपने सर्वाधिक प्रिय मित्र से मन.मुटाव हो गया ।

धीरे–धीरे मुझे अपना वह छोटा सा व्यंग्य पर्वत के समान विशाल लगने लगा । अन्ततः मैने उसे मिलने के लिए बुलाया और चाहा कि मैं उससे क्षमा माँग लूँगा और हमारे सम्बन्ध पुनः प्रगाढ़ हो जायेंगे पर इस बार भी मुझे निराशा ही हाथ लगी।

यही सब सोचता हुआ मैं विद्यालय की ओर बढ़ा जा रहा था । मुझे पता भी न चला कि कब मैं विद्यालय आ गया । मेरा मन विद्यालय में न लगा क्योंकि वह विद्यालय भी नहीं आया था । मैं यह सोचने लगा कि विद्यालय से जाते ही उसे फोन करूँगा । विद्यालय समाप्त हुआ और मैने बाहर निकलते ही उसके घर फोन मिलाया पर उसने फोन नहीं उठाया और कई बार प्रयास करने पर भी उससे बात नहीं कर सका । मैंने सोचा कि वह शायद मुझसे लड़ने का बहाना ही चाहता था और अब उसे मौका मिल गया है। मैंने सोचा कि यदि वह ही मुझसे नहीं मिलना चाहता तो मैं क्या कर सकता हूँ । मुझे भी अब दोबारा उससे मिलने में अपना अपमान लग रहा था । क्या मैं उसके बिना रह नहीं सकता ? क्या मैं इतना निरीह हो गया हूँ कि कोई दूसरा मुझसे दोस्ती न करेगा । पुराने दोस्त के खो जाने पर दुखी तो अवश्य था पर लज्जित कदापि नहीं । मेरी बुद्धि तो उसे भुला देने के प्रबल समर्थन में थी पर मेरा हृदय उसे भुला पाने में समर्थ न था ।

फिर अचानक मुझे यह पता चला कि वह अस्पताल में घायल अवस्था में हैं। अब मेरा मन अत्यन्त लज्जा के साथ हीनता का भी अनुभव करने लगा था । मेरा मन अब इतना दुर्बलता का अनुभव कर रहा था कि मैं अस्पताल जाने की सामर्थ्य नहीं जुटा पा रहा था । मेरे माता–पिता ने मुझे उससे मिलने को प्रोत्साहित किया। बड़े दुखी हृदय से मैं उससे मिलने गया । उसने मुझ पर इसलिए क्रोध किया क्योंकि मैं उससे मिलने नहीं आया ? जैसा कि एक सच्चे मित्र को करना चाहिए । मैंने भी बड़े संकोची हृदय से पूछा कि क्या वह मुझसे नाराज है, पर उसने कहा "किस बात पर ?" यह सुनकर मैं शर्म से पानी–पानी हो गया और उसके विशाल हृदय न पहचानने के कारण लज्जित तो हुआ पर साथ ही अपने बंधुसमान मित्र की सहिष्णुता व विशाल हृदयता पर गौरवान्वित भी हो रहा था । मुझे एक और आघात लगा जब यह ज्ञात हुआ कि यह दुर्घटना मुझसे मिलने आते समय हुई थी । कुछ भी हो पर अब हम फिर से साथ हैं। ❋ ❋ ❋

कहानी प्रतियोगिता में किशोर वर्ग में द्वितीय स्थान

गुलबकावली का फूल

सौरभ कटियार – नवम 'ख'

बड़ी देर से उसकी प्रतीक्षा कर रहा हूँ । उसको आना चाहिए । क्योंकि यह मेरे जाने का समय है । जब वह ग्यारह बजे तक नहीं आया तो मैं चल पड़ा तथा 'गुलबकावली के फूल' के विषय में सोचने लगा । 'वही मेरे पिता को पुनः ज्योति प्रदान कर सकता है अन्यथा मेरे पिता के प्राण संकट में पड़ सकते हैं। मैं अपने पिता के लिए किसी अभिशप्त काया से कम नहीं क्योंकि ज्योतिषी की भविष्यवाणी के अनुसार मेरे अपने पिता के सामने जाते ही उनकी ज्योति चली गई थीं ।'

भाव–विभोर होकर मैं चल पड़ा तथा दिन–रात चलकर मैं एक सघन वन में पहुँच गया । उस वन की सघनता तथा वीभत्सता का वर्णन कठिन है। वह वन इतना सघन था कि सूर्य की किरणें वहाँ कठिनाई से ही पहुँच पाती थीं । चलते–चलते मैं थक गया तथा वनों के जीव–जन्तुओं के विषय में अधिक न जानने के कारण मैं पेड़ के नीचे ही सो गया । जब कुछ समय पश्चात् मेरे नेत्र खुले तो एक वनराज सिंह मुझमें अपना आहार तलाश रहा था । मैं डर गया, तभी वह शेर मुझ पर झपटा और मैं 'हनुमान चालीसा' पढ़ने लगा परन्तु भगवान भी दया करते हैं । एक महात्मा तभी वहाँ आ गए उनके मुख पर इतना तेज था कि वह शेर उन्हें देखते ही भाग गया। शेर के एक ही झप्पटे से मैं इतना आहत हो गया था कि मेरा रुधिर प्रवाह व श्वास रूकने ही वाली थीं तथा ये प्राण रूपी पंछी स्वच्छंद गगन में उड़ ही जाते यदि वे दिव्य विभूति मुझे अपनी कुटिया में न ले जाते। मैं बेहोश हो गया था जब मेरी बेहोशी टूटी तो उन्हें अपने सिरहाने पाया । उन्होंने मेरा कुशल–मंगल पूछा तथा मेरे इस जंगल में आने का कारण । मैंने उन्हें बताया कि मैं अपने पिता के नेत्र विहीन हो जाने के कारण उनके वास्ते 'गुलबकावली का फूल' लेने इस सघन वन में आया हूँ ।

इतना सुनकर महात्मा गम्भीर हो गए तथा उनकी गम्भीरता का कारण पूछने पर उन्होंने हमें बताया कि, उसका मार्ग अति दुर्गम है, वह सात टापुओं के बाद एक देव की पुष्प वाटिका में सभी पुष्पों के मध्य स्थित है। वह उसका प्रिय फूल है।' मैं अचरज में पड़ गया और महात्मा जी से पूछा कि 'क्या देव–दानवों का भी अस्तित्व है।' प्रत्युत्तर में महात्मा जी ने बताया, हाँ ! देवों का भी अस्तित्व होता है। उन्होंने मुझे वहाँ जाने से मना किया परन्तु मैं आगे बढ़ने लगा । मेरे आत्मविश्वास को देखकर महात्मा जी ने मुझे रास्ता बता दिया । मैं बढ़ गया तथा रास्ते में मुझे पहला टापू मिला उस पर एक विशालकाय आदि मानव था उसने बताया कि वह 'देवों के मालिक' का एक सेवक है तथा वह मुझे आगे नहीं जाने देगा तथा खा लेगा । मैंने उसे अपनी विडम्बना बताई, आखिर राक्षसों में भी दिल व दिमाग होता है, उसने मुझे सातों टापुओं को पार करा दिया तथा मित्र होने के कारण किसी रक्षक ने उससे कुछ न कहा । मुझे वह उस देवों के स्वामी के महल के आगे छोड़कर चला गया तथा मुझे सचेत रहने की सलाह देकर विदा ली । अब मैं अचरच में था कि महल के अन्दर कैसे प्रवेश करूँ, तभी मुझे मानव के समान विशालकाय चूहे मिले, वे उस देव के विरोधी थे परन्तु भय के कारण वे उसका प्रतिरोध नहीं करते थे । मेरी व्यथा सुनकर उन्होंने मुझे सहायता का आश्वासन दिया तथा जमीन से ही एक सुरंग खोद दी तथा मुझे एक रहस्य बताया कि उस गुलबकावली के फूल में उस देवता की जान है। उस फूल की बड़ी सुरक्षा रहती है, रात भर वह फूल एक कमल के अन्दर बन्द रहता है तथा मात्र सुबह 4 बजे से 5 बजे तक निकलता है। मैंने दृढ़ निश्चय कर लिया तथा सुबह 4 बजे मैं उस वाटिका में देव से बचता हुआ चला गया तथा कमल के खिलते ही, इससे पहले कि वह देव सचेत होता मैंने वह फूल तोड़ लिया। उस देव की वहीं मृत्यु हो गई तथा वह दैवीय महल वहीं गिर गया तथा मैं वहाँ से गायब होकर सीधे पहले टापू पर पहुँच गया तथा उन महात्मा जी को यह वृत्तान्त सुनाया और वह फूल लेकर आगे बढ़ गया । कुछ समय पश्चात वह फूल लेकर मैं अपने पिता के पास पहुँच गया तथा वैद्य को बुलाकर उस 'गुलबकाबली के फूल' का रस निकलवाकर अपने पिता की आँखों में लगाया तथा पटटी बाँध दी । कुछ दिन पश्चात् जब पिता जी की पट्टियाँ खुली तो मुझे शान्ति का आभास हुआ। मैं महल से पहले टापू तक कैसे पहुँचा यह अभी तक मेरे लिए रहस्य बना हुआ है तथा इस बड़ी खुशी के कारण वह रहस्य शून्य में विलीन होता जा रहा है। अब मुझे पता चला कि उस दिन मैं जिसकी प्रतीक्षा कर रहा था वह मेरा मित्र रवीन्द्र भी वह फूल ढूँढने के लिए निकला था तथा अभी तक वापस नहीं आ पाया । उस रहस्य के साथ यह भी रहस्य बन गया कि वह कहाँ गया ?

* * *

कहानी प्रतियोगिता में किशोर वर्ग में तृतीय स्थान

अपराध बोध

ऋषभ श्रीवास्तव, दशम 'ग'

बड़ी देर से उसकी प्रतीक्षा कर रहा हूँ । उसको आना चाहिए क्योंकि यह मेरे जाने का समय है, जब वह 11 बजे तक न आया तो मैं चल पड़ा ।

दरअसल मैं अपने दोस्त उपेन्द्र का इन्तजार कर रहा था, जो कुछ ही महीने पहले गाँव से शहर नौकरी के लिए गया था । उसे नौकरी करते हुए एक ही महीना हुआ था । अतः उसने महीने की पहली तारीख को तनख्वाह मिलत ही बैंक में जमा करनी ठीक समझा । उसे अपनी बहन की शादी भी करनी थी । कुछ दिनों पहले हम दोनों ने उपेन्द्र के गाँव जाने का निश्चय किया था । अगले दिन ही उपेन्द्र को आफिस के सिलसिले में बाहर जाना पड़ा। वह मुझसे कह गया था कि "बाहर से आते ही हम गाँव चलेंगे । अतः सारा सामान बाँध लेना व गाँव को जाने वाली 11 बजे की बस का टिकट ले लेना । शहर से उपेन्द्र का गाँव यही कोई 40 किमी था । मैने जिस तारीख का टिकट लिया था, उस दिन सुबह उपेन्द्र न आया । काफी देर तक मैने उसका इन्तजार किया । मैं उपेन्द्र के हस्ताक्षर बना लेता था । मुझे शंका थी कि यदि उपेन्द्र ने शहर न आकर सीधे गाँव जाना ठीक समझा तो बहन की शादी के लिए पैसे कहाँ से आयेंगे अतः मैं बैंक गया और उपेन्द्र के हस्ताक्षर बनाकर पैसे निकाल लिये और बस से गाँव चला गया । शायद यह मेरी जिन्दगी की सबसे बड़ी भूल थी । उपेन्द्र के घर में उसके सेवानिवृत्त बाबूजी, कुँवारी बहन व विधवा भाभी थी । मैं उपेन्द्र के घर पहुँचा । बड़े ही प्रेम–भाव के साथ उनके पिता जी ने मेरा आतिथ्य किया । रात में भोजन किया व आराम से सो गया सुबह ही टेलीग्राम आया । यह हमारे ही मोहल्ले के लोगों ने भेजा था । मेरा मोहल्ले के लोगों को पता दे जाना काफी लाभप्रद सिद्ध हुआ । दरअसल मेरा एक संस्था से call letter आना था । अतः टेलीग्राम आते ही मैं मन ही मन सोच के खुश हुआ कि शायद मेरी नौकरी लग गई। मगर यह क्या उपेन्द्र के बाबूजी ने जैसे ही टेलीग्राम पढ़ा वह रो पड़े । यह मेरी नौकरी का टेलीग्राम न होकर, उपेन्द्र की मौत का पैगाम था । मैं अपने आप को सम्भाल न पा रहा था । उपेन्द्र की बहन यह खबर सुनकर कारण बेहोश हो गयी । भाभी भी अपने आँसुओं के ज्वार को रोक न सकीं । घर में दुःखद माहौल हो गया । टेलीग्राम में आगे लिखा था कि 'उपेन्द्र की महीने भर की तनख्वाह किसी ने नकली हस्ताक्षर करके निकाल ली थी अतः वह परेशान था । उसने हम सबको यह किस्सा बताया । जब हम सुबह उठकर उसके कमरे में गये तो वह फाँसी में झूल रहा था ।"

यह सिर्फ मोहल्ले वालों की सोच थी, पर मुझे मालूम था कि असली बात क्या है? मैंने उपेन्द्र को बिना बताये बैंक से पैसे निकाल लिये थे । उपेन्द्र ने अपनी बहन की शादी न कर पाने के डर से आत्महत्या कर ली थी। मैं मन ही मन अपने को धिक्कार रहा था । उसके घरवालों को न मालूम था कि उनके बेटे की मौत का कारण मैं ही हूँ । एक समय तो मैने सोचा कि मैं अपने को पुलिस को सौंप दूँ, परन्तु दूसरे ही क्षण उसकी बहन की शादी का विचार मेरे मन में बिजली की तरह कौंध गया । यह सोचकर मैं वापस आया और बाबूजी के सामने बहन की शादी का प्रस्ताव रखा । कुछ ही दिनों में उसका रिश्ता तय हो गया और मन में उपेन्द्र की मृत्यु का गम लिये हुए बहन को विदा किया ।

आज उस बात को बीते पाँच साल हो चुके हैं। लेकिन आज भी मैं उपेन्द्र की मौत का जिम्मेदार अपने को मानता हूँ और खुद को माफ नहीं कर पाता हूँ ।

❋ ❋ ❋

माँ सुशीला वात्सल्य मंदिर

धनवान तो दुनिया में बहुत होते हैं; पर भामाशाह जैसे धनाड्य ही पूजे जाते हैं, स्मरण किये जाते हैं। आज के समय में ऐसे ही त्याग–भाव की आवृत्ति हुई है दीनदयाल विद्यालय के पूर्व छात्र तथा मा. श्री वीरेन्द्रजीत सिंह के सुपुत्र श्री यतीन्द्रजीत सिंह 'यती' के मार्फत । उन्होंने काफी बड़ी धनराशि देकर 'माँ सुशीला वात्सल्य मंदिर' का निर्माण प्रारंभ करवाया है जो समाज के निर्धन व वंचित वर्ग के प्रतिभाशाली बच्चों के लिये होगा ।

समाज– सेवा और देशभक्ति परस्पर पूरक होते हैं और 'सेवा' समर्पण का ही दूसरा नाम है। सेवा–भावना, कामना रहित एक सात्विक मनोभाव है। परमात्मा के अनुग्रह और जीवात्मा के प्राक्तन कर्मों के प्रभाव से ही यह सात्विक भाव मन में उदित होकर सत्कर्म के लिये प्रेरित करता है।

इसी भावना से प्रेरित होकर हम सभी ने एक पुण्य अनुष्ठान ठाना है। यह अनुष्ठान है भाग्य से ठुकराए बच्चों को पुरुषार्थी बनाने का । बच्चे, बच्चे होते हैं, उनका न कोई पंथ होता है, न कोई जाति। कामना–रहित सेवा करके उनको उत्साही और कुंठामुक्त समाजसेवी और देशभक्त बनाया जा सकता है।

उद्देश्य– मानव जीवन के लिये अनिवार्य सुविधाओं से वंचित बच्चों का पालन–पोषण, उनकी आवश्यक शिक्षा, मनोवैज्ञानिक परीक्षणों के आधार पर उनकी प्रतिभाओं को परखकर उनका विकास करना तथा उन्हें आत्मविश्वासी बनाकर उन्हें अपने पैरों पर खड़ा करना । उनकी संवेदनाओं को जागृत कर उन्हें समाजोन्मुखी बनाना। उन्हें सत्य–निष्ठा, श्रम–निष्ठा तथा राष्ट्र निष्ठा के प्रति आग्रही बनाना ।

प्रयास– 'वात्सल्य मंदिर' में अभी हम बच्चों को आवास, भोजन, क्रीड़ा, स्वाध्याय आदि की सुविधाएँ देकर उनकी योग्यतानुसार विभिन्न विद्यालयों में प्रवेश दिलायेंगे और हम एक जागरूक अभिभावक की भूमिका निभायेंगे। इस कार्य के लिये ममतामयी माताओं का मार्गदर्शन रहेगा ।

'वात्सल्य–मंदिर' में पाँच वर्ष से कम तथा सात वर्ष से बड़े बच्चे का प्रवेश नहीं लिया जायेगा । आर्थिक दृष्टि से अति निर्धन परिवारों के बच्चों का ही प्रवेश लिया जायेगा । परिवार की स्थिति की जाँच हमारे अपने सूत्रों द्वारा की जायेगी । किसी भी प्रकार के शारीरिक तथा मानसिक रोगी बच्चे का प्रवेश नहीं होगा । बच्चे के भरण–पोषण एवं विकास हेतु संपूर्ण व्यय–भार 'वात्सल्य मंदिर' ही वहन करेगा ।

शिलान्यास– 1 मार्च 2003, महाशिवरात्रि के पावन दिवस पर प्रातः काल 9:45 पर, दीनदयाल विद्यालय के पार्श्व में वी.एस.एस.डी. क्रीड़ांगन में वैदिक मंत्रों के साथ मानव संसाधन मंत्री श्री मुरली मनोहर जोशी ने वात्सल्य मंदिर का शिलान्यास किया ।

गीत– इस अवसर पर दीनदयाल विद्यालय की छठी कक्षा के छात्र चि. नंदराज व चि. कामाख्या ने देशभक्ति से ओतप्रोत – "यह देश मेरा, धरा मेरी' गीत सुनाकर सभी को भाव विभोर कर दिया ।

कविता– सेवाभारती के वयोवृद्ध कार्यकर्ता श्री चंद्रकांत भारद्वाज ने 'वात्सल्य भाव' पर अपनी एक सरस कविता सुनाई जिसमें वही भाव थे जो इस योजना के मूल में हैं।

भूमिका– विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री ओमशंकर जी ने बताया कि विद्यालय के पूर्व छात्र यती ने अपना बहुत कुछ देकर इस पावन प्रकल्प का संकल्प लिया है। मैं भी जब तक जीवन रहेगा तब तक इस मंदिर की सेवा करता रहूँगा । मैं यती की भूरि–भूरि प्रशंसा करता हूँ ।

डॉ. जोशी– डॉ. मुरली मनोहर जोशी ने विदेशों में भारतीय प्रतिभाओं के तमाम कौशलों का उदाहरण देते हुए बताया कि भारत में प्रतिभाओं की कमी नहीं है; कमी है उनको उभारने और नियोजित करने की । उन्होंने कहा कि बैरिस्टर साहब का पूरा परिवार ही समाज सेवा में रहा है। विक्रमाजीत सिंह से लेकर यतीन्द्रजीत सिंह तक एक परंपरा है। मै यती का अभिनंदन करता है । जहाँ यती ने धन लगाया है वहीं ओमशंकर जी ने पूरा जीवन लगाने की बात कह दी है। इससे मैं आश्वस्त हो गया हूँ कि यह संस्था भी दीनदयाल विद्यालय जैसी यशस्वी बनेगी। मेरी ईश्वर से कामना है कि यती जैसे अनेक छात्र दीनदयाल विद्यालय से निकलकर दुनिया भर में फैल जाएँ तथा रोशनी फैलाएँ । डॉ. जोशी ने पश्चिमी संस्कृति तथा भारतीय संस्कृति की तुलना करते हुए बताया कि पश्चिमी देशों में बाजारवादी संस्कृति है और हमारे यहाँ परिवारवादी संस्कृति है। इसलिये हम पहले दान करते हैं फिर भोग करते हैं । अतिथि को, ब्राह्मण को, भूखे को, यहाँ तक कि गऊ को पहले खिलाते हैं बाद में खुद खाते हैं। वहीं पश्चिम में दान वह किया जाता है जो खाने के बाद बचता है। खुद उपभोग करने के बाद जब ऊब जाएँ तो किसी को दे दें यह पश्चिम में है।

धन्यवाद ज्ञापन– दीनदयाल शोध संस्थान के अध्यक्ष तथा दीनदयाल विद्यालय के सचिव श्री वीरेन्द्रजीत सिंह ने बड़े मार्मिक शब्दों में डॉ. जोशी तथा मंचस्थ महानुभावों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया।

मंचस्थ थे– पं. रामबालक मिश्र, डॉ. ज्ञानचंद्र अग्रवाल, श्री इन्द्रजीत जैन, श्री वीरेन्द्रजीतसिंह, डॉ. जोशी तथा प्रधानाचार्य श्री ओमशंकर जी मंच की शोभा बढ़ा रहे थे ।

वंदेमातरम्– कार्यक्रम के अंत में श्री अरिन्दम उपाध्याय ने शास्त्रीय संगीत में वंदेमातरम् गाया ।

संचालन– विद्यालय के आचार्य श्री दिनेश सिंह भदौरिया ने कार्यक्रम का कुशल संचालन किया।

***

आज मेरे नयन के तारक हुए जलजात देखो।
अलस नभ के पलक गीले,
कुन्तलों से पोंछ आई ;
सघन बादल भी प्रलय के
श्वास से मैं बाँध लाई ;
पर न हो निस्पन्दता में चंचला भी स्नात देखो ।

– महादेवी वर्मा

देहगाथा : विज्ञान की नजर में

पदम जी ओमर, सप्तम 'क'

भौतिकवादी और उपभोक्ता संस्कृति के युग में मानव–देह के पंच तत्वों, उनके सहायक तत्वों और शरीर के अन्य अंग–प्रत्यंगों को विशुद्ध वैज्ञानिक तथा व्यावसायिक नजरिए से देखा जा रहा है। शायद इसीलिए गाहे–बगाहे शरीर के अंगों के व्यापार का सिलसिला भी चल निकला है। मनुष्य के शरीर में इतनी चर्बी है कि इससे साबुन की सात बट्टियाँ बनायी जा सकती हैं। इतना चूना है कि इससे 10 X 10 के कमरे की पुताई की जा सकती है। लगभग 14 किलो कार्बन (कोयला) की कालिख निकलती है। इसके अलावा शरीर में अग्नितत्व (फास्फोरस) इतना है कि इससे करीब दो हजार दो सौ माचिस की डिब्बियाँ बनाई जा सकती हैं। लोहा इतना है कि इससे 1 इंच लंबी कील बनायी जा सकती है। शरीर में एक चम्मच गंधक और इतनी ही अन्य धातुएँ हैं।

शरीर में 70 प्रतिशत जल पाया जाता है। इसीलिए खरी बात रखने वाले मनुष्य को पानीदार कहा जाता है। इस शरीर को जीवंत बनाए रखने के लिए ताजिंदगी इसे ईधन के रूप में औसतन 50 टन सामग्री व 11 हजार गैलेन पानी वाले पदार्थों की आवश्यकता होती है । हमारे शरीर के रक्त में पाया जाने वाला पदार्थ प्लाज्मा जिसमें 90 प्रतिशत जल पाया जाता है। हमारे शरीर में भार के अनुसार रक्त 85 ml/kg. होता है । हृदय 1 मिनट में 5 ली. रक्त पंप करता है। हमारे शरीर के रक्त में 5000 WBC/ml^3 होते हैं।

मनुष्य में जन्म के समय 305 हडिडयाँ होती हैं । परन्तु मनुष्य के विकास के साथ–साथ इन हड्डियों की संख्या घटती जाती है और एक नियमित अवस्था में (लगभग 11–12 वर्ष) ये 206 रह जाती है। मानव हड्डियों में 100 जोड़ पाए जाते हैं और 650 पेशियाँ इन्हें संचालित करती हैं । चलते समय जांघ की हड्डियों पर आधा टन प्रति 6.45 वर्ग सेमी. दबाव पड़ता है। आदमी जीवन में लगभग 35 से 50 हजार किलोमीटर पैदल चलता है और जीवन भर में 65 ली. आँसू बहाता है।

मानव शरीर की त्वचा का रंग शरीर में उपस्थित कुछ रंगीन पदार्थों पर निर्भर करता है। इन रंगीन पदार्थों को पिगमैन्टस (Pigments) कहते हैं। प्रत्येक मनुष्य के शरीर में मुख्य रूप से तीन प्रकार के रंगीन पदार्थ होते हैं।

मेलालिन– यह पदार्थ भूरे रंग का होता है। शरीर में इस पदार्थ के अधिक मात्रा से शरीर का रंग काला दिखाई पड़ने लगता है।

केरोटेन (Caratone)- इस पदार्थ का रंग पीला होता है ।

हीमोग्लोबिन (Hilmoglobin)- इसका रंग लाल होता है। यह शरीर में ऑक्सीजन को वहन करता है। इन तीनों पदार्थों की कमी से शरीर का रंग धूमिल हो जाता है।

मानव शरीर में उपलब्ध धमनियों, शिराओं और कोशिकाओं को मिलाकर सभी नसों की लम्बाई 96 हजार 540 किलोमीटर बैठती है। हृदय प्रति मिनट 10 फुट खून उछालता है। खून में उपलब्ध 25 खरब लाल कोशिकाएँ प्रतिपल रोगाणुओं से लड़ने को तत्पर रहती है। शरीर में पायी जाने वाली संपूर्ण त्वचा लगभग 20 वर्ग फुट लम्बी व चौड़ी होती है। पूरे शरीर में 50 लाख बाल होते हैं।

शरीर रूपी में जीवन पर्यन्त परिवर्तन चलता रहता है। हमारी त्वचा साँप की केंचुली की तरह परिवर्तित होती रहती है। यह परिवर्तन एक साथ नहीं होता इसलिए मनुष्य को इसका एहसास नहीं होता है।

❋ ❋ ❋

आतंकवाद और उसका समाधान

अमित गौतम, सप्तम 'ख'

अक्षरधाम मन्दिर पर हमला, रघुनाथ मन्दिर पर हमला, संसद भवन पर हमला पंजाब में पचास तीर्थ यात्रियों की हत्या उत्तर प्रदेश के तराई क्षेत्र में दो किसान जीवित जलाये गये, असम में बोडो कार्यकर्ताओं द्वारा रेल के डिब्बे में भयंकर विस्फोट, सत्रह मरे पचपन घायल । इतनी हत्याएँ क्यों ? इन मरने वाले लोगों का दोष क्या है ? वास्तव में ये बेचारे तो निर्दोष हैं। ये हत्याएँ देश के द्वार पर आतंकवाद की दस्तकें हैं ।

आतंकवाद का शिकार कब कौन हो जाए, इसका कुछ पता नहीं । कोई समुदाय अपनी कुछ माँगो को मनवाने अथवा किसी निश्चित उद्देश्य की पूर्ति के लिए तोड़–फोड़ तथा हिंसा से भय का जो वातावरण बनाता है, उसी को आतंकवाद कहते हैं। पहले हमारे देश में अंग्रेजों का शासन था । अंग्रेज उस समय संसार की सबसे बड़ी शक्ति थे । उनसे मुक्ति पाने के लिए देश भक्तों ने दो मार्ग अपनाये । इनमें एक था महात्मा गाँधी के नेतृत्व में सत्याग्रह और अहिंसा का मार्ग तथा दूसरा सुभाषचन्द्र बोस, चन्द्रशेखर 'आजाद', सरदार भगत सिंह आदि का 'जैसे का तैसा' वाला हिंसा का मार्ग। इनमें दूसरा, अर्थात् हिंसा– मार्ग पर चलने वाला दल गरम दल कहलाता था । गरम दल के लोगों ने अनेक बार फिश प्लेटें हटाकर रेल–मार्गों पर तोड़–फोड़ की, सरकारी खजाना लूटा, बम–विस्फोट किये तथा निरीह जनता पर अत्याचार करने वाले बड़े–बड़े अधिकारियों की हत्याएँ भी कीं ।

वर्तमान स्थिति– स्वाधीनता–संग्राम से सम्बन्धित संघर्ष को हम आतंकवाद नहीं कह सकते, एक तो, वह संघर्ष अत्याचारी तथा विदेशी शासन के विरुद्ध था । दूसरे, उसके पीछे महान् तथा न्यायोचित उद्देश्य था। तीसरे, वे देश की निर्दोष जनता पर अत्याचार नहीं करते थे ।

आज हमारे देश के कई प्रान्तों में आतंकवाद पनप रहा है। आज की स्थिति सर्वथा भिन्न है। आज हमारा देश पूरी तरह स्वाधीन है। अब शासक और शासित अलग–अलग देशों के नहीं है। आज मरने और मारने वाले एक ही देश के नागरिक, एक ही माँ की सन्तान हैं। आज हिंसा के इस मार्ग का लक्ष्य प्रशासनिक या सुरक्षा–अधिकारी ही नहीं, अपितु सामान्य जनता, व्यापारी, मजदूर, विदेशी राजनयिक तथा पर्यटक भी हैं। अतः आतंकवाद की वर्तमान स्थिति अत्यन्त भयानक तथा लज्जाजनक है।

कारण और स्रोत– आतंकवाद के कारणों को हम दो श्रेणियों में रख सकते हैं– 1. आन्तरिक तथा 2. बाह्य। आन्तरिक कारणों में युवकों में बढ़ती हुई बेरोजगारी तथा असुरक्षा की भावना प्रमुख है। युवाओं में अपार शक्ति तथा अदम्य साहस होता है। उन्हें ऐसा कोई कार्यक्षेत्र नहीं मिलता जिसमें अपनी शक्ति का उपयोग करके वे धन और नाम कमाएँ । इसीलिए वे दिशाहीन हो जाते हैं और थोड़े–से बहकावें में आकर आतंकवादी संगठन के सदस्य बन जाते हैं। हमारे कुछ पड़ोसी देश हमारी प्रगति से जलते हैं। वे हमारे देश में घुसपैठ करके यहाँ के युवकों को गुमराह करते हैं। वे ही उन्हें हथियार और धन देते हैं। इतना ही नहीं, वे ही अपने देश के अनेक शिविरों में आतंकवादियों को प्रशिक्षण देते हैं।

दुष्प्रभाव – आज आतंकवाद से कश्मीर, पंजाब और असम राज्य बुरी तरह प्रभावित हैं। इन राज्यों से निकलकर आतंकवाद की लपटें अब अन्य पड़ोसी राज्यों को भी झुलसाने लगी हैं । उत्तर प्रदेश का तराई क्षेत्र इसका उदाहरण है। आतंकवाद से प्रभावित राज्यों में शिक्षा, उद्योग और कृषि पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा है। जनता में भय और असुरक्षा की भावना घर कर गयी है। देशी या विदेशी पर्यटक अब इन राज्यों में नहीं जाना चाहते। अतः इन राज्यों के उत्पादन तथा आय को बहुत बड़ा धक्का लगा है।

उपसंहार– आतंकवाद का रोग भयंकर तो है किन्तु असाध्य नहीं है। इसके लिए गुमराह युवकों को राष्ट्र की मुख्यधारा से जोड़ना होगा । यह तभी सम्भव है जब उनके मन में आत्म–विश्वास को जगाया जाए । शिक्षा को व्यवसाय से जोड़ा जाए तथा प्रत्येक खाली हाथ को रोजगार दिया जाए । देश के हर नागरिक को यह लगे कि उसका वर्तमान और भविष्य सुरक्षित है। शिक्षा और प्रसार माध्यमों द्वारा राष्ट्रीय भावना को पुष्ट किया जाए । देश में विदेशी हस्तक्षेप को जड़ से समाप्त किया जाए । मुझे आशा है कि इन उपायों से हम अपने राष्ट्र को सबल और सम्पन्न बना सकेंगे।

* * *

नया भारत गढ़ो

अर्पित शिवहरे, एकादश

इक्कीसवीं सदी के नवजागरण में एक बार पुनः भारतीय सनातन सिद्धान्तों को मथने की आवश्यकता अनुभव हो रही है। यह वास्तविकता है या कोरा श्रम..... ईश्वर जाने; लेकिन कम से कम देश का सामाजिक परिदृश्य, राजनैतिक भूकम्प, नैतिक अवमूलन और न जाने क्या–क्या.... इस सतत उज्ज्वल परम्परा की ओर संदग्धि दृष्टि से देखने के लिए बाध्य अवश्य करते हैं। ऋषियों की यह भूमि समस्याओं की बाढ़ में अपना अस्तित्व ही न गँवा बैठे, डर लगता है, क्योंकि हूँ तो मैं भी इसका एक पुत्र । चित्र धुंधला है और प्रश्न ज्वलंत, असावध ानी से स्पर्श अनिष्टकारी तो होगा ही, पीड़ा भी हो सकती है।

मैं इसी प्रकृति का एक अदना सा किरदार शायद बहुत बड़ी बातें करने की हिम्मत जुटा रहा हूँ, स्वाभाविक है इसके पीछे कोई जीवंत शक्ति ही है। मेरे विचार में इन सभी समस्याओं के केन्द्र में मूलतः दो बिन्दु हैं–

आधुनिक शिक्षा व्यवस्था और उससे विकसित वर्तमान युवा पीढ़ी । दोनों बिन्दु एक–दूसरे से सम्बन्धित तो हैं ही, साथ ही साथ समजात (homologous) भी हैं। यद्यपि पहले बिन्दु के बारे में कुछ कहने की योग्यता मुझमें नहीं, फिर भी आचार्य जी से जो कुछ सुना और उसे मेरी क्षुद्र बुद्धि ने जिस रूप में समझा, उसी का सार यहाँ प्रस्तुत कर रहा हूँ ।

1. शिक्षा (Education) और प्रशिक्षण (training) का अन्तर ध्यान रखा जाये ।
2. अन्तर्निहित शक्तियों के विकास पर जोर दिया जाये ।
3. शिक्षा परमुखापेक्षी और पराश्रित बनाने वाली न हो ।
4. विद्यालय कारखाने नहीं होते । वे जाग्रत उपासना के केन्द्र होते हैं, जहाँ राष्ट्र का प्राणवान विग्रह स्थापित रहता है। पाठ्यक्रम का निर्धारण इसी के अनुकूल हो ।
5. समाज में शिक्षक का स्तर बढ़ाया जाये ।

प्राचीन समय में अध्ययन–अध्यापन इसलिए गुरुतापूर्ण था, क्योंकि गुरु साक्षात् साधना का विग्रह हुआ करता था, जो अपनी शक्ति तथा तपस्या को अपने शिष्यों की योग्यता जाँच परख कर उनमें उड़ेल देता था । इसी का परिणाम था कि गुरु और शिष्य, दोनों के नाम इतिहास में अमर हो जाते थे । गुरु शिष्यों को जिस आचरण के लिए प्रेरित करता था, वह उसके जीवन में स्वयंसिद्ध था । जैसे ही इस परम्परा का पतन हुआ, राष्ट्र निर्माण का कार्य कबीर के समकालीन पण्डों ने अपने हाथों में ले लिया । इसके बाद कुछ तथाकथित समाजसुध ारक संस्थायें कुछ विशेष वर्गों और सम्प्रदायों के सुधार में जुट गयीं । शिक्षा का अधिकार अपने व्यक्तिगत हितों की पूर्ति के लिए समाज के विशेष सम्प्रदायों ने जनसाधारण से छीन लिया और उन्हें यह बताया कि उन्होंने नीच जाति में तथा गुलाम के रूप में जन्म लिया है। बस, यही पुरोहित–प्रपंच भारत की अधोगति का मूल कारण है।

दूसरा बिन्दु है– अविश्वास से आशंकित जवानी । कोई भी काल रहा हो, किसी देश के निर्माण और विध्वंस में क्रान्तिधर्मी भूमिका युवा पीढ़ी की ही होती है। सम्भवतः इसी कारण इंग्लैण्ड की विजय का श्रेय वहाँ के विश्वविद्यालयों एस और हैरो को दिया गया । सदियों से चली आ रही दासता को देश की नौजवान पीढ़ी ने मात्र एक निःस्वार्थ उच्छ्वास के साथ जीत लिया और बन गये अमर आनन्द के भागी । वास्तव में युवी पीढ़ी इसी संचेतना का प्रतीक रही है।

आज परिस्थितियाँ कुछ भिन्न हैं। 17 वर्ष की अवस्थापूर्ण होने के साथ–साथ एक बहुत बड़ा वर्ग अश्रद्धा, अविश्वास, क्रूरता और अपवित्रता जैसी मानवीय दुर्बलताओं का ग्रास बन जाता है और विवश हो जाता है परतन्त्रता को अपनी प्रकृति बनाने के लिए । इन सबकी परिणति एक और केवल एक–शक्तिहीनता । स्वामी विवेकानन्द ऋषि और द्रष्टा थे। उनकी अध्यात्म में गति और मति ही इसका प्रमुख कारण है। इस सम्बन्ध में उनके विचारों का अनुपालन ही मैं सर्वोपयुक्त समझता हूँ। उन्होंने उद्घोष किया–

"शक्ति ही जीवन है और शक्तिहीनता ही मृत्यु है। शक्तिहीन का न तो इस लोक में और न किसी दूसरे लोक में कोई अस्तित्व है।" विचारवान लोगों के लिए यह वाक्य उनके सम्पूर्ण जीवन का सार–संग्रह है और होना चाहिए। यह बात जितनी सैद्धान्तिक है, उतनी ही व्यावहारिक भी । इसलिए यह बात हम ठीक से समझ ले और दूसरों को भी समझा दें कि शारीरिक, मानसिक बौद्धिक, आध्यात्मिक, हर प्रकार की शक्ति का संचय ही मानव जीवन की सार्थकता एवं सुफल है। इसलिए छोड़ दो वे आदतें जो तुम्हें कमजोर बनाती हैं। तोड़ दो वे बन्धन जो तुम्हारी दुर्बलता का कारण बने हुए हैं। इसके बाद जैसे ही तुम अपने आराध्य के चरणों में पूर्ण समर्पण करोगे, अपने अंतस् में असीमित सात्विक शक्ति का भण्डार पा जाओगे । पहले अन्तः प्रकृति पर विजय प्राप्त करो, फिर बाह्य प्रकृति पर । पहले इस्लामी शरीर विकसित करो, फिर वे वेदांती बुद्धि, यही सामंजस्य हमारा ध्येय होना चाहिए ।

ध्यान रखें, साधना और संवेदना दोनों का हमारे जीवन में बराबर महत्व है कारण यह कि साधना के बिना संवेदना कोरी भावुकता रह जाती है और संवेदना के बिना साधना केवल दंभ ।

युवाशक्ति का आह्वान करते हुए स्वामी जी ने कहा– "आवश्यकता है इस तरह के दृढ़ इच्छाशक्ति सम्पन्न होने की कि कोई उसका प्रतिरोध करने में समर्थ न हो । आवश्यकता है ऐसी अदम्य इच्छाशक्ति की, जो ब्रह्मांड के सारे रहस्यों को भेद सकती हो । .....इस शक्ति को प्राप्त करने का पहला उपाय है– उपनिषदों पर विश्वास करना और यह विश्वास करना कि मैं आत्मा हूँ । उपनिषदों में ऐसी प्रचुर शक्ति विद्यमान है कि वे समस्त संसार को तेजस्वी बना दें । सबको बता दो कि कोई नीच नहीं है और सबके अन्दर वही एक अजर, अमर, अनन्त, आत्मा विद्यमान है।"

क्या अपनी माँ कीं दुर्दशा देखकर तुम्हारा मन पीड़ा और अन्तर्ग्लानि से नहीं भर जाता । भरता होगा, मेरा भी भरता है। मैं अपने अंतस् की उसी अग्नि को प्रज्वलित करने के लिए तुम्हारा आह्वान करता हूँ । इस विकृत पीढ़ी को देखकर ऐसा लगता है कि एक निर्धन माँ का बड़ा बेटा बिगड़ गया हो । क्या हम सदैव ऐसे ही थे? नहीं तो फिर अपने पूर्वजों को याद करो । एक अंग्रेज बालक जब यह सोचता है कि वह सम्पूर्ण विश्व पर शासन करने वाली सत्ता का ही अंश है तो उसकी छाती आत्मविश्वास से फूल जाती है और वह अपने प्रतिद्वन्द्वी पर हावी हो जाता है। गंगापुत्र भीष्म का तेजस्, राम का शौर्य, हनुमान की सेवा, कृष्ण का योद्धा रूप हमें क्यों नहीं याद आता। एक बार निःस्वार्थ कर्म करके तो देखो, उसमें बहुत शक्ति होती है, वह राजकुमार सिद्धार्थ को भगवान बुद्ध बनाने की क्षमता रखता है।

इसे तत्व कहूँ या तथ्य लेकिन इसके समर्थन में मैं भी कहना चाहता हूँ कि संसार से सारी आध्यात्मिकता का समूल नाश नहीं हो सकता । नहीं मिट सकती धर्म के प्रति मधुरतम सहानुभूति और भावुकता । इसलिए विश्वास करो कि भारत का पुनरुत्थान होगा और युवाशक्ति ही करेगी ।

उठो साथियों, अपनी अन्तःशक्ति पहचानो । इस समय चाहिए– प्रबल कर्मयोग, हृदय में अमित साहस और अपरिमित शक्ति । इतना कर लिया तो ईश्वर भी हमारी सहायता अवश्य करेगा । तैयार करो; अब की बार इस देश को सोने की चिड़िया नहीं, सोने का सिंह बनाना है।

❋ ❋ ❋

पाठ्येतर–गतिविधियाँ

बाल चेतना शिविर

निशीत, अंकित, अष्टम

हमारा विद्यालय प्रारम्भ से ही विद्यार्थियों के बहुमुखी विकास के लिए प्रयासरत रहा हैं। यदि कोई विद्यार्थी बस पढ़ाई के क्षेत्र में ही विकास करता रहे और पाठ्येतर गतिविधियों से उसका कोई सम्बन्ध न हो तो उसका सर्वांगीण विकास नहीं होता है। ये गतिविधियाँ ही शिक्षा की पूरक हैं। इनके बिना शिक्षा आधूरी समझी जाती है। स्वामी विवेकानन्द ने कहा था– "किसी भी विद्यार्थी के लिए फुटबाल का मैदान देवालय तथा फुटबॉल देवता के समान होना चाहिए ।"

हमारे क्रीड़ा आचार्य श्री सुभाष जी कक्षा षष्ठ, सप्तम, अष्टम में बाल चेतना शिविर का आयोजन इसी परम्परा को ध्यान में रखकर करवाते आ रहे हैं। इसी में इन कक्षाओं की शारीरिक परीक्षा भी हो जाती है। शिविर की तिथि मिलते ही पटकुटी के सामानों को जुटाने की होड़ सी लग गयी थी । सभी टोली नायकों ने अपनी–अपनी टोली के सदस्यों को सामनों के लिए दिशा निर्देशित कर दिया । सबके मन में कौतूहल था । तब 24 तारीख के सूर्योदय ने उसे भी समाप्त कर दिया। जब उस दिन मैं 8.30 बजे गोल फील्ड की ओर निकला तो मुझे आश्चर्य हुआ कि आचार्य जी बड़ी तत्परता से केन्द्र की व्यवस्था में जुटे थे । केन्द्र में सुभाष जी कुछ छात्रों के साथ उस स्थल को दर्शनीय स्थल बनाने में प्रयासरत थे । कर्मचारियों ने वहाँ बाँसों से एक कुटिया जैसी संरचना बनायी थी । उसी के ऊपर चादर डाला जा रहा था । मैने भी उनका सहयोग करना प्रारंभ कर दिया । विद्यालय की प्रार्थना के बाद सभी अष्टम कक्षा के छात्र गोल फील्ड में उपस्थित हो गए । वहाँ हमको सुभाष जी ने दिशा निर्देशित किया तथा कठोर अनुशासन को पालन करने का आदेश दिया । इसके साथ प्रारंभ हुआ अपने संजोए हुए सपनों को साकार करने का कार्य। इस कार्य के लिए हम सबको 12.00 बजे तक का समय दिया गया लगभग सभी ने 11.30 तक अपनी पटकुटी तैयार कर ली थी । लेकिन अभी तो मुख्य कार्य शेष था । जिस प्रकार कोई चित्रकार अपने चित्र को सजाने का प्रयास उसके निर्माण के बाद करता है। उसी प्रकार हमने भी अपने घरों को सजाने का प्रयास करना प्रारंभ किया। वहाँ सभी चित्रकार थे। इसलिए सभी ने अपने–अपने स्तर से रंग भरना प्रारंभ किया और 12.00 बजते ही सबका चिन्ह प्रदर्शन को तैयार था । तभी सुभाष जी ने सूचना दी की प्रधानाचार्य जी इस शिविर के उद्घाटन के लिए पदार्पण करने वाले है तो हमने अपनी कुटिया को अंतिम छवि देकर तैयार कर दिया । उद्घाटन कार्यक्रम में प्रधानाचार्य जी ने बताया की हमें किसी भी परिस्थिति में रास्ता निकाल लेना चाहिए । हमें किसी भी कार्य को छोटा नहीं समझना चाहिए । उन्हीं के सामने गीत–गायन प्रतियोगिता भी सम्पन्न हुई । उसके बाद प्रधानाचार्य जी ने शिविर क्षेत्र का भ्रमण किया। उनके जाने के बाद हमारे भोजन का कार्यक्रम प्रारंभ हुआ । इस शिविर में मुझे प्रथम बार भोजन करने का आनन्द आया । मैं टोली नायक था मुझे सबको भोजन कराने के बाद भोजन करना था। मैंने सभी छात्रों द्वारा लाए गए भोजन को एक जगह मिलाया तथा छात्रावास के भोजन को भी मिलाया तथा सबको वितरित कर दिया । हमने सुभाष जी को भी भोजन कराया । भोजन के बाद भी कई कार्यक्रम हुए लेकिन कहीं भी अव्यवस्था नाम की चीज दृष्टिगोचर नहीं हुई। शिविर में मुझे यह आश्चर्य हुआ कि जिन छात्रों का प्रतीक ही चंचलता बन चुका था वो भी गंभीरता की प्रतिमूर्ति बने बैठे थे । धीरे–धीरे समापन कार्यक्रम की भी घड़ी आ गई। प्रातः काल की ही भाँति केन्द्र जिसका नाम 'नरेन्द्र मंडप' रखा गया था वहाँ हम लोग एकत्र हो गए । प्रधानाचार्य जी आए उन्होंने प्रतियोगिताओं में स्थान पाए छात्रों को पुरस्कृत किया तथा कहा कि अगली बार इससे भी अच्छा प्रयास कर शायद उन्हें ज्ञात न था कि हमारा ये अंतिम वर्ष है। उसके बाद सुभाष जी ने आज्ञा दी कि सभी पटकुटियों को उखाड़ कर सारे समान व्यवस्थित रूप से सबको वापस कर दिया जाए ।

ये मेरे लिए सबसे आश्चर्य कि बात थी कि जिन्होंने जितने प्रेम से तम्बू लगाया था उससे भी अधिक प्रेम वे उखाड़ने में प्रदर्शित कर रहे थे । मानव की बुद्धि के ये पेंच खोलने का प्रयास मैं शिविर समाप्ति के बाद से कर रहा हूँ तथा मैं आपसे भी यही आशा करता हूँ कि आप मेरी इसमें मदद करेंगे ।

❋ ❋ ❋

पं. दीनदयाल उपाध्याय स्मारक निबंध प्रतियोगिता में तरुण वर्ग में प्रथम स्थान

लोकमत का परिष्कार ही सच्चे लोकतंत्र का प्राण है

निखिल सचान, एकादश 'ख'

प्रस्तावना : राष्ट्र के लिये चार बातों की आवश्यकता होती है। प्रथम भूमि या जन जिसे देश कहते हैं, दूसरी सबकी इच्छाशक्ति यानि सामूहिक जीवन का संकल्प अथवा लोकमत; तीसरी एक नियम या व्यवस्था जिसे संविधान कहते हैं और जिसके लिये हमारे आर्यावर्त में बेहद ही सुन्दर शब्द का प्रयोग हुआ है– 'धर्म' । चौथा है सुसंस्कारित एवं परिशुद्ध जीवन आदर्श । उपरोक्त चारों की समष्टि अथवा इनके समुच्चय को राष्ट्र कहते हैं।"

ऐसे राष्ट्र के स्वरूप का आचमन करने का दायित्व लोकमत का है, जिसका तात्विक आधार लोकतंत्र है। लोकमत का परिष्कार ही सच्चे लोकतंत्र का प्राण है, तत्व है, स्वत्व है।

नवयुग की प्रथम ऊषा के रूप में उभरे युगपुरुष पं. दीनदयाल उपाध्याय जी ने लोकमत का समन्वित एवं आदर्श स्वरूप प्रस्तुत किया । आइये अध्ययन करते हैं लोकमत एवं लोकतंत्र के शाश्वत घटकों का, नवयुग के चाणक्य पं. जी के कालजयी चिन्तन के दर्पण में :

2. धर्मनिरपेक्षता एवं लोकमत का परिष्कार : रिलीजन यानि मत, पंथ, वाद है परन्तु धर्म कदापि नहीं। धर्म तो सनातन एवं व्यापक है। यह जीवन के सभी पहलुओं का आचमन करता है। इससे समाज की धारणा होती है, सृष्टि की धारणा होती है; अतैव धार्य मंत्र ही धर्म है। पं. जी ने स्पष्ट कर दिया था कि धर्म हिन्दू अथवा मुसलमानों के पौराणिक इतिहास से उपजी पिछलग्गू मनोवृत्ति नहीं है। धर्म तो लोकमत के नियमों की सम्पूर्ण संहिता है। लोकतंत्र का वैचारिक एवं मानसिक आधार धर्म से ही निर्मित एवं परिपक्व होता है। पं. जी के शब्दों में: "धर्म में हमारी आस्था उसकी साधनता के कारण नहीं अपितु स्वयंभू है। राज्य और लोकतंत्र का आधार भी हमने धर्म को माना है। अकेली दण्डनीति लोकमत का परिष्कार नहीं कर सकती ।"

3. अल्पसंख्यकवाद की शुद्धता और लोकमत : अल्पसंख्यकवाद ने एक विवाद का रूप तब लिया जब भारत और पाकिस्तान का विभाजन हुआ । तभी से यह लोकतंत्र की सफलता के सम्मुख प्रश्नचिन्ह के रूप में उपस्थित है। "कोई नहीं कहेगा कि भारत के छः करोड़ मुसलमानों को यहाँ से उखाड़ फेंका जाये । वे भारत की माटी के साथ समरस हैं। भौतिक दृष्टि से खंडित भारत में एकता की अनुभूति लोकतंत्र एवं लोकमत के साथ तत्वीभूत हो चुकी है।"

वस्तुतः लोकमत एवं लोकतंत्र की सार्थकता तभी एक है, जब तक अल्पसंख्यकों को मात्र भारतीय माना जाता है, विवाद नहीं । ऐसे में बस ये शब्द ही मानस को कुरेदने लगते हैं–

"सब रसूलों की किताबें, ताक पर रख दो फाज ।
नफरतों की ये सहीफें, उम्र भर देखेगा कौन ।।

4. अर्थव्यवस्था और लोकतंत्र की गति: गाँधीवादी विचारधारा से पं. जी का इस अर्थ में मतभेद था कि वे मशीनों के प्रयोग पर अधिक बल देते थे । गाँधी जी का चरखा और उनकी तकनीकि स्वायत्ता और विकास में प्राथमिकता की बहस पर एकमत नहीं हो सकी । फिर भी वे नम्रतापूर्वक कहते थे :

"मेरा चरखे से कोई वैर नहीं है, न ही उसकी महिमा से । परन्तु मैं समझता हूँ कि हमें युगानुकूल बनना पड़ेगा क्योंकि समय चक्र को किसी की चिन्ता के बिना घूमने की धुन है। भाई मेरे ! मैं तो बस मशीनों को चरखे का हाथ बटाते हुये देखना चाहता हूँ ।"

लोकतंत्र के गतिक होने के लिये अर्थव्यवस्था को ऐसे ही तंत्र पर आधारित होना चाहिये । लोकमत अर्थात् जनता की मानसिकता की शुद्धता के लिये स्वस्थ भौतिक पर्यावरण नितांत आवश्यक है। इसी हेतु अर्थव्यवस्था लोकतंत्र से घनिष्ठ सम्बन्ध रखती है।

5. लोकतंत्र में निष्पक्ष एवं जागरूक विरोधी दल : पं. जी सदन में विरोधी दल के प्रमुख लेता थे। उनका तो कर्तव्य ही था कि जो कुछ अनिष्ट अथवा त्रुटिपूर्ण दिखे, उसके विषय में अपना बेबाक मत प्रकट करना।

सदन में भी वे बड़े प्रेम से बोला करते, कभी भी क्रोधित नहीं हुये । 'दुर्योधन' में 'दुरा'क्षर था अतः वे प्रसंगवश 'सुयोधन' ही कहते थे । वास्तव में वे आजात शत्रु थे ।

परन्तु आज लोकतंत्र का यह आवश्यक प्रस्तर (सुष्ठु दल प्रणाली) जर्जर हो चुका है।

सदन में विरोधी दल के सदस्य कैसा दृश्य उपस्थित करते हैं यह प्रबुद्ध लोग जानते ही हैं। भारतीय आत्मा और भारतीयता के वैचारिक आधार के प्रतिनिधि के रूप में उन्हें संयमित रहना होगा । उनका मत, लोकमत का सारांश है अतः उसका परिष्कृत होना लोकतंत्र के लिये प्रथम माँग है। पं. जी का इस सम्बन्ध में नसीहत थी–

"जिस राष्ट्र मन्दिर का निर्माण इतने दिनों से दिग्विजयी सम्राट, आत्मविजयी ऋषि–मुनि, स्मृतिकार, वेदों के उद्भट प्रस्तोता एवं उन्मत्त यौवन का ज्वार करता चला आ रहा है, हम उस मन्दिर में राष्ट्र पुरुष की मूर्ति स्थापित करके उसका आह्वान करें । हम इस मन्दिर के प्रथम पुजारी बनें । भगवान को धन्यवाद दें कि यह सौभाग्य हमें प्राप्त हुआ है।"

6. भारतीय संस्कृति में लोकमत का स्वरूप : एक ओर जहाँ पश्चिमी चिन्तन कामनाओं को उद्दाम बनाकर उन्हें शामित करना ही अपने जीवन का उद्देश्य मानता है वहीं दूसरी ओर भारतीय चिन्तन कामनाओं को वासनाओं में परिवर्तित होने से रोककर अपनी निस्पृह भाव सम्पन्ना मनः शक्ति से उसे योग में होम कर देती है।

पं. जी का चिन्तन था–

"यदि भारत की आत्मा को समझना है तो उसे राजनीति अथवा अर्थनीति के चश्मे से न देखकर सांस्कृतिक दृष्टिकोण से देखना होगा । हमें सम्पूर्ण विश्व को सांस्कृतिक सहिष्णुता की शिक्षा देनी होगी ।"

7. लोकमत की संहिता के पवित्र महामंत्र : (i) 'चरैवेति' का सिद्धान्त : 'चरैवेति' पं. जी के सम्पूर्ण दर्शन का महामंत्र है। मेरे विचार से लोकमत का आदर्श स्वरूप चरैवेति में पूर्ण हो जाता है। इस सिद्धान्त के अनुसारः "वादों के विवाद में फँसने की जरूरत नहीं है। अपने अन्तःकरण की प्रवृत्ति को ही प्रमाण मानकर चलिये, इससे तप की प्रेरणा मिलेगी और निष्काम कर्म की दिशा प्राप्त होगी ।

भविष्य से डरिये मत बल्कि उसके निर्माण में रूचि लीजिये । संजोये हुये सपनों को संवारिये । कल्पना को कर्म में गढ़िये और योजना को युक्ति से पूरा कीजिये ।"

'चरैवेति' में जीवन का सम्पूर्ण रहस्य है, कर्म का सार है, गीता का रस है और लोकमत के आदर्श स्वरूप का बारीकी से अन्वेक्षण किया हुआ निष्कर्ष है।

वास्तव में लोकमत लोक या समाज अथवा जनता का मत ही है। मत को और विस्तृत करें तो अभिधारणा बनती है और अभिधारणा को विचारों में गढ़ें तो दर्शन उपस्थित होता है। 'चरैवेति' समाज के ऐसी ही दर्शन को पवित्रतम रूप में स्थापित करने का वैचारिक प्रयास ही है। यदि लोक–दर्शन का परिष्कार करना है तो इसे अंगीकार करना होगा । इस अद्वितीय मंत्र को सदैव स्मृति में रखें:

"कवि शयानो भवति, संत्रिहानस्तु द्वापरः । उत्तिष्ठंस्त्रेतामाप्रोति, कृतं सम्पद्यते चरन् ।।"

चरैवेति..... चरवैति.

(ii) 'एकात्ममानववाद' की कालजयी संकल्पना : व्यवस्था या विधि लोकतंत्र के सम्मुख सदैव दुविधा के रूप में उपस्थित हुई है, इस अर्थ में कि दी गई या विकसित की गई व्यवस्थाओं में किसे स्वीकार किया जाये। पं. जी ने कहा था:

"पूंजीवाद मानव शरीर को पुर्जे के समान मानता है तो समाजवाद अति साम्य से ग्रस्त है। मुझे इन दोनों व्यवस्थाओं में भारत का भविष्य नजर ही नहीं आता । इसीलिये मैंने एकात्ममानववाद की संकल्पना को प्रस्तुत किया है।"

एकात्ममानववाद व्यवस्था के विवाद को समाप्त करता है। यह लोकमत को वैचारिक स्तर पर पुष्ट करने की जंग नहीं लड़ता अपितु उसे आत्मा की ऊँचाइयों पर स्थापित करता है।

वस्तुतः जहाँ मनुष्य–आत्मा और व्यवस्था के मध्य मतैक्य हो जाता है वहीं एकात्म–मानववाद की अभिधारणा जन्म लेती है। यह उन सभी व्यवस्थाओं से कोसों दूर है जो मनुष्य को शरीर तक रोककर वैचारिक ताना बाना बुनती हैं।

लोकतंत्र के लिये आचमन और लोकमत के लिये शुद्धता का संचार करने का जिम्मा एकात्ममानववाद का है। मानव का अजर और अमर तत्व आत्मा है, ठीक वैसे ही लोकमत की आत्मा एकात्ममानववाद है। यह साधन भी है, साध्य भी और साधक भी । साधना परिष्कार की, साधन विकास का, साध्य मानव का और साधक शुद्ध संकल्पना का ।

8. समाहार : मैं यही निष्कर्ष निकालता हूँ कि उपरोक्त घटक और मंत्र लोकतंत्र को बनाते भी है और संवारते भी है। ये तत्व लोकमत का परिष्कार करते हैं और लोकतंत्र को सार्थक बनाते हैं। इस सम्बन्ध में अपने चिन्तन का सार इस प्रकार पाता हूँ –

"राष्ट्रीयता का आधार भारत–माता है, केवल भारत नहीं । माता शब्द हटा लीजिये तो भारत केवल जमीन का टुकड़ा मात्र रह जायेगा । इस भूमि से हमारा रागात्मक सम्बन्ध तभी आता हैं जब माता वाला पवित्र रिश्ता जुड़ता है । हमें इसने ममत्व की डोर से जोड़ रखा है। हमारे विचार, हमारा मत, इससे भी ऊपर समाज का विचार और समाज का मत ऐसा होना चाहिये कि इस नाजुक डोरी पर आसानी से तौला जा सके । जब तक ये विचार इस डोर से सम्बद्ध हैं वे उसी प्रकार पल्लवित होते रहेंगें जैसे फल वृक्ष की शाखा पर रसयुक्त हो जाते हैं। इन विचारों की सम्पूर्ण संहिता ही लोकमत है, इसका परिष्कार करें तभी लोकतंत्र का ध्येय प्राप्त हो सकेगा, क्योंकि 'लोकमत का परिष्कार ही सच्चे लोकतंत्र का प्राण हैं'।

***

रोचक जानकारियाँ

प्रस्तुति : **अमित कुमार चौधरी**, सप्तम 'क'

क्या आप जानते है:

1. हर वर्ष पूरी पृथ्वी में लगभग साठ से भी अधिक ज्वालामुखी विस्फोट होते है।
2. अंतरिक्ष में प्रकाश की रफ्तार लगभग 1,86,000 मील प्रति सेकेण्ड है।
3. गरनाई नामक मछली पानी में तैर सकती है, हवा में उड़ सकती है और जमीन पर चल सकती है।
4. आतंकवाद की शुरूआत फिलीस्तीन से हुई।
5. रूस में ऊकाब नाम का ऐसा पक्षी था, जो हाथी जैसे विशाल जानवर को भी अपने पंजों में उठाकर ले जाता था और खा जाता था ।
6. सहारा मरूस्थल संयुक्त राज्य अमेरिका से भी बड़ा है।
7. अटाकामा मरूस्थल में सन् 1570 से 1971 तक बिल्कुल वर्षा नहीं हुई ।
8. अमेजन विश्व की दूसरी सबसे बड़ी नदी है।
9. भारत में प्रमुख रूप से 6 प्रकार के लोग पाये जाते हैं।
   1. **निग्रिटो**– इनका निवास अण्डमान निकोबार द्वीप समूह में है।
   2. **प्रोटो आस्ट्रेलॉयड** – इनका निवास मध्य व दक्षिणी भारत के वन्य व पर्वतीय स्थानों में है।
   3. **मंगोलायड** – इनका निवास भारत के उ. पू. क्षेत्र व हिमालय के स्थानों में है।
   4. **मेडिटैरोनियन** – इनका निवास मुखतः दक्षिणी भारत में है।
   5. **पं. ब्रेकिसिफालिकल्स**– पारसी तथा कुर्गी समुदाय इसी प्रजाति से संबंधित है।
   6. **नार्डिक** – अब सम्पूर्ण उ. तथा मध्य भारत में फैली यह प्रजाति मूल रूप से प. उ. भारत की निवासी है।
10. दुनिया की लगभग आधी जनसंख्या का विकास दक्षिण अफ्रीका में हुआ ।

1. **एक इमारत में पूरा शहर** : चीन के शहर शंघाई में एक गगनचुम्बी इमारत बनाने की योजना बनाई जा रही है। जिसकी ऊँचाई 1100 मी. से भी अधिक होगी । शंघाई में बनाये जाने वाले इस बायोनिक टावर को वास्तुविदों ने 'वर्टिकल सिटि' की संज्ञा दी । अनुमान है इस इमारत में लगभग पूरा शहर आ जाएगा।
2. **अपनी मरम्मत स्वयं करने वाला पदार्थ**: वैज्ञानिकों ने ऐसे प्रथम पदार्थ का विकास किया है जो दरार पड़ने में स्वयं अपनी मरम्मत करने में सक्षम है। यह एक तरह का कम्पोजिट पदार्थ है, जिसका प्रयोग टेनिस रैकेट से लेकर विमान निर्माण में किया जा सकता है।
3. **रोबोडॉग**: ब्रिटेन की एक कंपनी ने ऐसे रोबो कुत्ते का विकास किया है, जो असली कुत्ते की तरह घर की रखवाली और कुत्तों के अन्य काम करने में स्वयं सक्षम है।
4. **क्यूबिक बोरॉन कार्बोनाइट्राइड**– हीरा एक ऐसा पदार्थ है जो बहुमूल्य और अत्यन्त कठोर है। किंतु 'क्यूबिक बोरॉन कार्बोनाइट्राइड' एक ऐसा पदार्थ है जो हीरे से भी अधिक कठोर है। यह एक कृत्रिम पदार्थ है।

* * *

अजब–गजब

प्रस्तुति : **शशांक**, सप्तम 'क'

1. भारत में पायी जाने वाली पहाड़ी मैना (ग्रेफुला रिलिजि– ओस) तोते से भी स्पष्ट मनुष्य की भाषा बोलती है।
2. शिकाडा ऐसा जन्तु है जिसकी जीवन काल 17 साल है परन्तु वह अधिकतम समय जमीन के नीचे सोता रहता है और मात्र 5 हफ्ते के लिये ही बाहर आता है।
3. डालफिन मछली आदमी की भाषा की नकल कर सकती है और आदमी की तरह हँस सकती है।
4. मानव के शरीर की कुल रक्त नलिकाओं की कुल लम्बाई 96 हजार कि.मी होती है।
5. मे मक्खी (May Fly) का जीवनकाल 1 दिन होता है।
6. शिकोया वृक्ष का जीवनकाल 3000 साल या इससे अधिक हो सकता है।
7. कंगारू और चूहा कभी पानी नहीं पीते ।
8. विश्व में सबसे तेज चलने वाली मछली सेलीफिश है। इसकी चाल 100 कि. मी. प्रति घण्टा होती है।
9. विश्व का सबसे प्राचीन पौधा दक्षिण–पश्चिम कैलीफीनिया में पाया जाने वाला फिग क्लोन पौधा है। यह लगभग 11,700 वर्ष पुराना है।
10. गसाई मछली एक ऐसी मछली है जो पानी में तैरती है, हवा में उड़ती है और जमीन पर चलती है।
11. सबसे जहरीला पदार्थ रेडियम तथा सबसे कठोर पदार्थ हीरा होता है।
12. तिब्बत में पायी जाने वाली उरूत्सी झील प्रत्येक बारह वर्ष में मीठे व खारे जल में बदलती रहती है।
13. दक्षिण अमेरिका के अर्जेन्टाइना के जंगलों में क्लोरोफार्म नाम वृक्ष पाया जाता है। यदि कोई व्यक्ति इसके नीचे सो जाये तो वह अपनी नुकीली शाखाओं से उसका खून पी जाता है।
14. काला कौरेया नामक वृक्ष की छाया के नीचे की घास जल जाती है।
15. साइबेरिया के जंगलों में फाउण्टेन ट्री नामक वृक्ष पाया जाता है। इस वृक्ष काफी मात्रा में पानी पाया जाता है, इसकी जरा सा भी काटने पर फौव्वारे की तरह धारा निकलती है।
16. अफ्रीका में पाया जाने वाला मेण्ड्रूक नामक वृक्ष की शक्ल आदमी से मिलती जुलती है और इसे उखाड़ने पर बच्चे के रोने की आवाज आती है।
17. विश्व में सबसे बड़ा अण्डा इंग्लैण्ड की मूट श्वान का है तथा सबसे छोटा अंडा जमैका की बर्बेन हमिंग बर्ड का होता है।
18. हरियल पक्षी जो कि उत्तर प्रदेश में पाया जाता है कभी जमीन पर पैर नहीं रखता ।
19. राको फोरस नामक मेढक उड़ते हैं।
20. मेलोशोकस' नामक चीटी जो कि आस्ट्रेलिया में पायी जाती है, फूलों के रस की शौकीन होती है।

***

डॉल्फिन

अक्षय यादव, अष्टम 'ख'

पानी में से राकेट की तरह निकलकर फिर पानी में घुस जाती डॉल्फिन एक मनोहारी दृश्य प्रस्तुत करती है। एक के बाद एक डाल्फिन का पूरा दल पानी में ऐसे ही अटखेलियाँ करता है, मानो वे किसी सर्कस में कमाल दिखा रही हों ।

डॉल्फिन समुद्र और मीठे पानी की नदियों में पाई जाती है। मछली जैसी दिखने वाली डॉल्फिन वास्तव में स्तनपायी जीव हैं, जो अंडे की जगह बच्चे जनती है। इनको छोटे दाँतों वाली ह्वेल भी कहा जा सकता है। कुछ डाल्फिनों को पोरपस भी कहा जाता है। डाल्फिन की 50 प्रकार की प्रजातियाँ पायी जाती हैं। हारबर डाल्फिन 34 किग्रा भारी और 152 सी.एम. लम्बी होती है। विशाल ओर्का जिसे किलर व्हेल भी कहा जाता है। इसका औसत वजन 8165 किग्रा. से कम नहीं होता तथा यह 8 मी. लम्बी होती है।

कुछ डॉल्फिनों के सिर गोल होते है तो कुछ के थूथन चिड़िया की चोंच की तरह भी होते है। नर नरवाल के सिर पर लम्बा हाथी दाँत जैसा सींग होता है, जिसकी लम्बाई ढाई मीटर तक हो सकती है । डाल्फिनों को साँस लेने के लिए पानी सतह पर आना पड़ता है। इन जीवों के सिर पर नथुना होता है, जिसे ब्लोहोल कहा जाता है। इस छेद के नीचे एक वाल्व लगा होता है। सतह पर आकर अपनी माँस–पेशियाँ सिकोड़ कर डॉल्फिन इस छेद को खोल देती है ताकि हवा अंदर जा सके । इस वाल्व को बारी–बारी से बंद खोल कर डाल्फिन अपनी श्वसन क्रिया सम्पन्न करती हैं जैसे ही यह पानी में डुबकी लगाती है यह नथुने के वाल्व बंद कर देती है, ताकि पानी अंदर न जा सके । साधारणतया डॉल्फिनों को हर चार मिनट के अंतराल पर साँस लेने के लिए पानी की सतह पर आना पड़ता है। नींद में भी उनकी यह क्रिया बदस्तूर जारी रहती है। बोतल जैसी नाक वाली डॉल्फिन को हर बीस सेकेण्ड के बाद सतह पर आना पड़ता है। कुछ डाल्फिनें तीस सेकेण्ड तक बिना साँस लिए पानी में रह सकता है। डाल्फिनों के शरीर की बनावट उनके वातावरण के बिल्कुल अनुरूप होती है। इनकी चमड़ी के नीचे चर्बी की मोटी परत इन्हें ठण्ड से सुरक्षा प्रदान करती है। उनके तारपीडो जैसे आकार उन्हें पानी में आसानी से तैरने में मदद करते हैं। पूँछ पर बने किन अर्थात् मीन पंखों की मदद से यह पानी के ऊपर नीचे आती जाती है। डाल्फिन की कुछ प्रजातियाँ पानी में 40 कि.मी. की गति से तैर सकती है। समुद्र तटीय डाल्फिन की दृष्टि काफी पैनी होती है, जबकि गंगा नदी में पाई जाने डाल्फिन सूस वास्तव में अंधी होती है।

डॉल्फिन अपनी जल यात्रा प्रतिध्वनि निर्धारण सिद्धांत के आधार पर तय करती है। चमगादड़ भी इसी सिद्धान्त पर भोजन की तलाश और दिशा निर्धारण करता है। डाल्फिन हमेशा झुंड में रहती हैं जिन्हें स्कूल कहते हैं। एक स्कूल में कुछ से लेकर 10,000 डाल्फिनें हो सकती हैं । खतरे का आभास होते ही ये मदद के लिए चिल्लाने भी लगती हैं।

उत्सुक और बुद्धिमान होने के कारण इन्हें पालतू बनाकर कई प्रकार के करतब सिखाए जाते हैं। समुद्र के किनारे बने विशेष 'जल क्रीडांगनों' में डाल्फिनों के करतब देखकर दर्शक लोग दाँतों तले अँगुलियाँ दबा लेते हैं । घेरे से निकलना, कैच पकड़ना, आदमी के हाथ से मछली खींच लेना इसके लिए कोई बड़ी बात नहीं होती। इन दिनों डाल्फिनों को आकार तथा प्रकार पहचानने का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। यदि इसमें सफलता प्राप्त हुई तो शायद आदमी व डाल्फिन आपस में संवादों को आदान प्रदान करने लगेंगे ।

* * *

बाल भारती के पदाधिकारी

संरक्षक आचार्य	:	**श्री जगपाल सिंह जी**
अध्यक्ष	:	चि. सौरभ दुबे अष्टम 'ख'
उपाध्यक्ष	:	चि. श्रीयांश पुरवार अष्टम 'क'
मंत्री	:	चि. सूर्य प्रताप सिंह सप्तम 'ख'
उपमंत्री	:	चि. शीतांशु तिवारी सप्तम 'क'
अनुशासन प्रमुख	:	चि. शिवम अवस्थी अष्टम 'ख'
बौद्धिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रमुख	:	चि. निशान्त आनन्द अष्टम 'ख'
		चि. अमित सिंह बिसैन अष्टम 'ख'
		चि. अजय मिश्र अष्टम 'ख'
		चि. शशांक पन्त सप्तम 'क'
		चि. कामाख्या नाथ सिंह षष्ठ 'ख'
		चि. अंकित शर्मा सप्तम 'क'
		चि. सुमित शर्मा षष्ठ 'क'

किशोर भारती के पदाधिकारी

सरंक्षक आचार्य	:	**श्री महेश जी**
अध्यक्ष	:	शोभित खरे दशम 'क'
उपाध्यक्ष	:	अभिनव पाण्डेय दशम 'ख'
महामंत्री	:	सौम्यशील सिंह दशम 'क'
मंत्री	:	अनुराग तिवारी दशम 'क'
अनुशासक	:	विनीत शाक्य दशम 'ख'
उपअनुशासक	:	सौरभ सिंह दशम 'ग'
सांस्कृतिक उपप्रमुख	:	जीत सिंह आर्य नवम 'क'
जल व्यवस्था	:	अभिनन्दन तिवारी दशम 'ग'
		नीरज द्विवेदी दशम 'ख'
सज्जा व्यवस्था	:	रघुनाथ सिंह दशम 'क'
		पंकज यादव दशम 'क'
		सिद्धार्थ सौरभ दशम 'क'
		मृदुल मिश्र दशम 'क'
		शिवेन्द्र प्रताप दशम 'क'
कक्षा प्रतिनिधि	:	सौम्यशील सिंह दशम 'क'
		कुमार गौरव दशम 'ख'
		राजीव रंजन दशम 'ग'
		अखिल मिश्र नवम 'क'
		आशीष कुमार नवम 'ख'
		कुन्दन कुमार नवम 'ग'

तरुण भारती के पदाधिकारी

प्रभारी आचार्य	:	**श्री रामतीर्थ जी**
अध्यक्ष	:	आशुतोष द्विवेदी द्वादश 'ख'
उपाध्यक्ष	:	अरविंद प्रताप सिंह एकादश 'क'
मंत्री	:	निखिल सचान एकादश 'क'
उपमंत्री	:	अनुराग शुक्ल द्वादश 'ख'
बौद्धिक प्रमुख	:	शैलेन्द्र यादव द्वादश 'क'
कार्यकारिणी सदस्य	:	आलोक मिश्र एकादश 'क'
		सुयश मिश्र द्वादश 'ख'
		पुलकित अग्रवाल द्वादश 'क'

छात्रावास के पदाधिकारी

छात्रावास अधीक्षक	:	**श्री वीरेन्द्र त्रिपाठी**
छात्रावास सहअधीक्षक	:	**श्री अरिन्दम उपाध्याय**
छात्रावास प्रमुख	:	आशुतोष द्विवेदी, द्वादश
छात्रावास उपप्रमुख	:	मयंक गुप्ता, द्वादश
		प्रतीक सिंह, एकादश
व्यवस्था प्रमुख	:	आलोक मिश्र, एकादश
अनुशासन प्रमुख	:	नमन चतुर्वेदी, एकादश
क्रीड़ा प्रमुख	:	स्नेहिल त्रिपाठी, एकादश
		कुंदन सिंह, एकादश
भोजन प्रमुख	:	अखिलेश गोयल, द्वादश
भोजन उपप्रमुख	:	पुनीत दुबे, एकादश
सांस्कृतिक प्रमुख	:	गौरव श्रीवात्सव, एकादश
चिकित्सा प्रमुख	:	नीरज कटियार, एकादश
डाक प्रमुख	:	अखिल पुंडीर, एकादश
बागवानी प्रमुख	:	अंकित आर्य, एकादश

हमारा आचार्य–परिवार

1. श्री ओमशंकर त्रिपाठी, एम.ए. (हिन्दी), बी. एड.	–	प्रधानाचार्य
2. श्री प्रकाश नारायण बाजपेयी, एम.एस.सी. (जन्तुविज्ञान), बी.एड.	–	उप प्रधानाचार्य
3. श्री राजेश कुमार शुक्ल, एम.एस.सी. (रसायन विज्ञान), बी. एड.	–	प्रवर आचार्य
4. श्री रामतीर्थ मिश्र, एम.ए. (हिन्दी), बी.एड.	–	प्रवर आचार्य
5. श्री हेमन्त कुमार शुक्ल, एम.एस.सी. (भौतिकी), बी.एड.	–	प्रवर आचार्य
6. श्री कैलाश जोशी, एम.एस.सी. (गणित), एम.एड.	–	प्रवर आचार्य
7. श्री बिहारी लाल मिश्र, एम.ए. (अंग्रेजी), बी. एड.	–	प्रवर आचार्य
8. श्रीमती शारदा राव, एम.ए. (अंग्रेजी), बी.एड.	–	प्रवर आचार्या
9. श्री आनन्द प्रसाद वर्मा, आई.जी.डी. (बाम्बे)	–	कला आचार्य
10. श्री महेश चन्द्र श्रीवास्तव, एम.एस.सी. (गणित), एम.ए. (समाजशास्त्र) बी.एड.	–	आचार्य
11. श्री दीपक राजे, बी.ए., बी.एड.	–	आचार्य
12. श्री सुभाषचन्द्र शर्मा, एम.ए. (भूगोल), बी.एड., डी.पी.एड. व्यायाम विशारद	–	आचार्य
13. श्री वीरेन्द्र सिंह पाण्डेय, एम.ए. (समाजशास्त्र), बी.एड.	–	आचार्य
14. श्री गणेश शंकर बाजपेयी, एम.ए. (संस्कृत) बी.एड. शास्त्री	–	आचार्य
15. श्री गया प्रसाद वर्मा, एम.ए. (अंग्रेजी) बी.एड.	–	आचार्य
16. श्री सतीश चन्द्र गुप्त, एम.ए. (प्राचीन इतिहास, राजनीतिशास्त्र),एम.एड.	–	आचार्य
17. डॉ. उमेश चन्द्र तिवारी, एम.एस.सी., पी.एच.डी (वनस्पति विज्ञान), बी.एड.	–	आचार्य
18. श्री जगपाल सिंह, एम.ए. (भूगोल), बी.एड.	–	आचार्य
19. श्री दिनेश सिंह भदौरिया, एम.एस.सी. (रसायन), बी.एड.	–	आचार्य
20. श्री अरुण कुमार शुक्ल, एम.एस.सी. (रसायन), बी.एड.	–	आचार्य
21. श्री श्रीप्रकाश ओझा, एम.एस.सी. (भौतिक), बी.एड.	–	आचार्य
22. श्री प्रदीप बाजपेयी, एम.एस.सी. (गणित)	–	आचार्य
23. श्री सुधीर अवस्थी, एम.एस.सी. (रसायन), बी.एड.	–	आचार्य
24. डॉ. मनोज शुक्ल, एम.ए. (संस्कृत) पी.एच.डी.	–	आचार्य
25. श्री दुर्गेश बाजपेयी, बी.एस.सी., एम.ए. (हिन्दी सा.), पी.जी.डी.जे. (IIMC)	–	आचार्य
26. श्री मिलिन्द भट्ट (एम.सी.ए.)	–	कम्प्यूटर आचार्य
27. सुश्री ईशा पुरी (एम.सी.ए.)	–	कम्प्यूटर आचार्या
28. सुश्री सीमा मिश्र, (बी.एस.सी., ए लेविल)	–	कम्प्यूटर आचार्या

वार्षिक खेलकूद 2002–2003

श्री सुभाष शर्मा 'आचार्य'

शिक्षा के सर्वांगीण विकास में शारीरिक शिक्षा का प्रमुख योगदान रहता है। शारीरिक शिक्षा के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार के खेल तथा एथलैटिक्स प्रतियोगितायें आती हैं । एथलैटिक्स प्रतियोगितायें व्यक्तिगत खेल स्पर्धा में बच्चे की शारीरिक दक्षता को प्रमाणित करती हैं। पं. दीनदयाल विद्यालय खो.खो, कबड्डी, बालीबाल, इन्डोर.गेम के साथ-साथ वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिताओं का सफल आयोजन करता है । प्रस्तुत है वार्षिक खेलकूद 2002–2003 के चार दलों के कुंजानुसार परिणाम–

क्र.सं.	नाम	कक्षा	दल	खेल	कुंज	स्थान
1.	चि. आनन्द शाक्य	सप्तम	लवकुश	200–मी.रिले	शौर्य	प्रथम
2.	चि. ऋषभ	सप्तम	लवकुश	200–मी.रिले	शौर्य	प्रथम
3.	चि. निशान्त	सप्तम	लवकुश	200–मी.रिले	शौर्य	प्रथम
4.	चि. अभिषेक मिश्र	सप्तम	लवकुश	200–मी.रिले	शौर्य	प्रथम
5.	चि. आदर्श कुमार	सप्तम	लवकुश	200–मी.रिले	धैर्य	द्वितीय
6.	चि. कामाख्या नाथ	सप्तम	लवकुश	200–मी.रिले	धैर्य	द्वितीय
7.	चि. आलोक कुमार	सप्तम 'ख'	लवकुश	200–मी.रिले	धैर्य	द्वितीय
8.	चि. विकास	सप्तम	लवकुश	200–मी.रिले	धैर्य	द्वितीय
9.	चि. रंजन मिश्र	षष्ठ 'क'	लवकुश	200–मी.रिले	सत्य	तृतीय
10.	चि. अमरेन्द्र सिंह	षष्ठ 'क'	लवकुश	200–मी.रिले	सत्य	तृतीय
11.	चि. अभिषेक शुक्ल	षष्ठ 'क'	लवकुश	200–मी.रिले	सत्य	तृतीय
12.	चि. सौरभ दुबे	षष्ठ 'ख'	लवकुश	200–मी.रिले	सत्य	तृतीय
13.	चि. अमित मयंक	षष्ठ 'ख'	ध्रुव	200–मी.रिले	शक्ति	प्रथम
14.	चि. अमित सिंह विशेन	षष्ठ 'ख'	ध्रुव	200–मी.रिले	शक्ति	प्रथम
15.	चि. विवेक सिंह	षष्ठ 'ख'	ध्रुव	200–मी.रिले	शक्ति	प्रथम
16.	चि. सौरभ सिंह	षष्ठ 'ख'	ध्रुव	200–मी.रिले	शक्ति	प्रथम
17.	चि. राहुल झा	षष्ठ 'ख'	ध्रुव	200–मी.रिले	शौर्य	द्वितीय
18.	चि. मनीष	षष्ठ 'ख'	ध्रुव	200–मी.रिले	शौर्य	द्वितीय
19.	चि. संतमणि	षष्ठ 'ख'	ध्रुव	200–मी.रिले	शौर्य	द्वितीय
20.	चि. प्रशान्त श्रीवास्तव	षष्ठ 'ख'	ध्रुव	200–मी.रिले	शौर्य	द्वितीय
21.	चि. विष्णु प्रताप	षष्ठ 'ख'	ध्रुव	200–मी.रिले	धैर्य	तृतीय
22.	चि. आदित्य प्रताप	षष्ठ 'ख'	ध्रुव	200–मी.रिले	धैर्य	तृतीय
23.	चि. गौरव मिश्र	षष्ठ 'ख'	ध्रुव	200–मी.रिले	धैर्य	तृतीय
24.	चि. ऋषि द्विवेदी	षष्ठ 'ख'	ध्रुव	200–मी.रिले	धैर्य	तृतीय
25.	चि. कुमार गौरव	षष्ठ 'ख'	एकलव्य	200–मी.रिले	सत्य	प्रथम
26.	चि. रजीव रंजन	षष्ठ 'ख'	एकलव्य	200–मी.रिले	सत्य	प्रथम
27.	चि. सजल गोयल	षष्ठ 'ख'	एकलव्य	200–मी.रिले	सत्य	प्रथम
28.	चि. कुन्दन कुमार	षष्ठ 'ख'	एकलव्य	200–मी.रिले	सत्य	प्रथम
29.	चि. ईशान अग्रवाल	नवम 'ख'	एकलव्य	200–मी.रिले	शौर्य	द्वितीय
30.	चि. गौरव कुमार	नवम 'ख'	एकलव्य	200–मी.रिले	शौर्य	द्वितीय
31.	चि. प्रेम किशोर	नवम 'ख'	एकलव्य	200–मी.रिले	शौर्य	द्वितीय
32.	चि. चैतन्य दत्त	नवम 'ख'	एकलव्य	200–मी.रिले	शौर्य	द्वितीय
33.	चि. आयुष सिंह	नवम 'ख'	एकलव्य	200–मी.रिले	शक्ति	तृतीय
34.	चि. अभिनव चिब	नवम 'ख'	एकलव्य	200–मी.रिले	शक्ति	तृतीय
35.	चि. आजाद कुमार	नवम 'ख'	एकलव्य	200–मी.रिले	शक्ति	तृतीय
36.	चि. आशुतोष गुप्त	नवम 'ख'	एकलव्य	200–मी.रिले	शक्ति	तृतीय
37.	चि. आलोक मिश्र	एकादश 'क'	अभिमन्यु	200–मी.रिले	शक्ति	प्रथम
38.	चि. भूपेन्द्र पाल	एकादश 'ख'	अभिमन्यु	200–मी.रिले	शक्ति	प्रथम

39.	चि. अभिषेक कटियार	द्वादश 'ख'	अभिमन्यु	200–मी.रिले	शक्ति	प्रथम
40.	चि. अंकुर राय	द्वादश 'क'	अभिमन्यु	200–मी.रिले	शक्ति	प्रथम
41.	चि. कुमार सौरभ	द्वादश 'क'	अभिमन्यु	200–मी.रिले	सत्य	द्वितीय
42.	चि. प्रकाश चन्द्र	द्वादश 'क'	अभिमन्यु	200–मी.रिले	सत्य	द्वितीय
43.	चि. रजनी कान्त	द्वादश 'ख'	अभिमन्यु	200–मी.रिले	सत्य	द्वितीय
44.	चि. हिमांशु गुप्त	द्वादश 'क'	अभिमन्यु	200–मी.रिले	सत्य	द्वितीय
45.	चि. स्नेहिल	द्वादश 'क'	अभिमन्यु	200–मी.रिले	धैर्य कुंज	तृतीय
46.	चि. आशीष शुक्ल	द्वादश 'क'	अभिमन्यु	200–मी.रिले	धैर्य कुंज	तृतीय
47.	चि. अनूप पटेल	द्वादश 'क'	अभिमन्यु	200–मी.रिले	धैर्य कुंज	तृतीय
48.	चि. अंकित आर्य	द्वादश 'क'	अभिमन्यु	200–मी.रिले	धैर्य कुंज	तृतीय
49.	चि. सजल गोयल	दशम 'ख'	एकलव्य	गोला प्रक्षेप	सत्य कुंज	प्रथम
50.	चि. गौरव कुमार	दशम	एकलव्य	गोला प्रक्षेप	शौर्य	द्वितीय
51.	चि. प्रेम किशोर शुक्ल	दशम 'ग'	एकलव्य	गोला प्रक्षेप	शौर्य	तृतीय
52.	चि. रंजन मिश्र	षष्ठ 'क'	लवकुश	100 मी. दौड़	सत्य	प्रथम
53.	चि. अमेरन्द्र सिंह	षष्ठ 'क'	लवकुश	100 मी. दौड़	सत्य	द्वितीय
54.	चि. विश्वेश शुक्ल	सप्तम 'ख'	लवकुश	100 मी. दौड़	शौर्य	तृतीय
55.	चि. मनीष कुमार तिवारी	सप्तम 'क'	ध्रुवदल	गोला प्रक्षेप	शौर्य	प्रथम
56.	चि. अमित सिंह	अष्टम 'ख'	ध्रुवदल	गोला प्रक्षेप	शक्ति	द्वितीय
57.	चि. निशीत कुमार	अष्टम 'क'	ध्रुवदल	गोला प्रक्षेप	धैर्य	तृतीय
58.	चि. पाहुल कमल	एकादश 'ख'	अभिमन्यु	लम्बी कूद	शौर्य	प्रथम
59.	चि. भूपेन्द्र पाल	एकादश 'ख'	अभिमन्यु	लम्बी कूद	शक्ति	द्वितीय
60.	चि. अभिषेक शुक्ल	एकादश 'क'	अभिमन्यु	लम्बी कूद	शक्ति	तृतीय
61.	चि. कृतिवास	एकादश 'क'	अभिमन्यु	गोला प्रक्षेप	शौर्य	प्रथम
62.	चि. पुनीत दुबे	एकादश 'ख'	अभिमन्यु	गोला प्रक्षेप	धैर्य	द्वितीय
63.	चि. नितेश दीक्षित	द्वादश 'ख'	अभिमन्यु	गोला प्रक्षेप	शौर्य	तृतीय
64.	चि. आयुष सिंह	दशम 'ग'	एकलव्य	लम्बी कूद	शक्ति	प्रथम
65.	चि. गौरव कुमार	दशम 'ख'	एकलव्य	लम्बी कूद	शौर्य	द्वितीय
66.	चि. प्रेम किशोर	दशम 'ग'	एकलव्य	लम्बी कूद	शौर्य	द्वितीय
67.	चि. सौरभ कटियार	नवम 'क'	एकलव्य	800 मीटर	सत्य	प्रथम
68.	चि. विमल कुमार	दशम	एकलव्य	800 मीटर	धैर्य	द्वितीय
69.	चि. शान्तनु शर्मा	नवम 'ख'	एकलव्य	800 मीटर	सत्य	तृतीय
70.	चि. भूपेन्द्र सिंह पाल	एकादश 'ख'	अभिमन्यु	भाला प्रक्षेप	शक्ति	प्रथम
71.	चि. अंकित आर्य	एकादश 'ख'	अभिमन्यु	भाला प्रक्षेप	धैर्य	द्वितीय
72.	चि. मयंक कुमार	द्वादश 'ख'	अभिमन्यु	भाला प्रक्षेप	शौर्य	तृतीय
73.	चि. नवनीत कुमार	सप्तम 'क'	ध्रुव	लम्बी कूद	शौर्य	प्रथम
74.	चि. संतमणि	सप्तम 'क'	ध्रुव	लम्बी कूद	शौर्य	द्वितीय
75.	दृश्य मुनि चाकमा	सप्तम 'ख'	ध्रुव	लम्बी कूद	शौर्य	तृतीय
76.	अंकुर राय	द्वादश 'क'	अभिमन्यु	800 मी. दौड़ (2:40:75)	शक्ति	प्रथम
77.	कुन्दन सिंह	एकादश 'क'	अभिमन्यु	800 मी. दौड़ (2:44)	शौर्य	द्वितीय
78.	पाहुल कमल	एकादश 'ख'	अभिमन्यु	800 मी. दौड़ (2:50)	शौर्य	तृतीय
79.	राकेश कुमार	अष्टम 'क'	ध्रुव	800 मी. दौड़	सत्य	प्रथम
80.	पंकज कुमार	अष्टम 'ख'	ध्रुव	800 मी. दौड़	शौर्य	द्वितीय
81.	दृश्य मुनि चाकमा	अष्टम 'ख'	ध्रुव	800 मी. दौड़	शौर्य	तृतीय
82.	आनन्द शाक्य	सप्तम 'क'	लवकुश	लम्बी कूद	शौर्य	प्रथम
83.	रंजन मिश्र	षष्ठ 'क'	लवकुश	लम्बी कूद	सत्य	द्वितीय
84.	विकास शर्मा	सप्तम 'क'	लवकुश	लम्बी कूद	धैर्य	तृतीय

85.	अमर ज्योति चाकमा	सप्तम 'ख'	लवकुश	800 मी. दौड़	शक्ति	प्रथम
86.	गौरव कुमार	सप्तम 'ख'	लवकुश	800 मी. दौड़	धैर्य	द्वितीय
87.	प्रबोध राजपूत	सप्तम 'ख'	लवकुश	800 मी. दौड़	शक्ति	तृतीय
88.	अमित सिंह विसेन	अष्टम 'ख'	ध्रुव दल	100 मी. दौड़	शक्ति	प्रथम
89.	नवनीत कुमार	सप्तम 'क'	ध्रुव दल	100 मी. दौड	शौर्य	द्वितीय
90.	आदित्य प्रताप	अष्टम 'ख'	ध्रुव दल	100 मी. दौड	धैर्य	तृतीय
91.	राजीव रंजन	दशम 'ग'	एकलव्य	200 मी. दौड़	सत्य	प्रथम
92.	कुमार गौरव	दशम	एकलव्य	200 मी. दौड	सत्य	द्वितीय
93.	प्रेम किशोर शुक्ल	दशम 'ग'	एकलव्य	200 मी. दौड	शौर्य	तृतीय
94.	विनीत शाक्य	दशम	एकलव्य	भाला प्रक्षेप	धैर्य	प्रथम
95.	सजल गोयल	दशम 'ख'	एकलव्य	भाला प्रक्षेप	सत्य	द्वितीय
96.	अजीत सिंह	दशम 'ख'	एकलव्य	भाला प्रक्षेप	शक्ति	तृतीय
97.	निशान्त कुमार	सप्तम 'क'	लवकुश	तीन टाँग की दौड़	शौर्य	प्रथम
98.	राज गौरव	सप्तम 'क'	लवकुश	तीन टाँग की दौड़	शौर्य	प्रथम
99.	अमोल दुबे	सप्तम 'क'	लवकुश	तीन टाँग की दौड़	शक्ति	द्वितीय
100.	शशांक पन्त	सप्तम 'क'	लवकुश	तीन टाँग की दौड़	शौर्य	द्वितीय
101.	आशुतोष समाधिया	सप्तम 'क'	लवकुश	तीन टाँग की दौड़	शौर्य	तृतीय
102.	निखिल श्रीवास्तव	सप्तम 'क'	लवकुश	तीन टाँग की दौड	शौर्य	तृतीय
103.	दृश्य मुनि	सप्तम 'ख'	ध्रुव	तीन टाँग की दौड	शौर्य	प्रथम
104.	पंकज	सप्तम 'ख'	ध्रुव	तीन टाँग की दौड	शौर्य	प्रथम
105.	अनुराग मिश्र	सप्तम 'क'	ध्रुव	तीन टाँग की दौड़	शौर्य	द्वितीय
106.	आशीष वर्मा	सप्तम 'क'	लवकुश	तीन टाँग की दौड़	शौर्य	द्वितीय
107.	शिवम अवस्थी	अष्टम 'ख'	लवकुश	तीन टाँग की दौड़	शौर्य	तृतीय
108.	राहुल झा	अष्टम 'ख'	लवकुश	तीन टाँग की दौड़	शौर्य	तृतीय
109.	प्रकाश चन्द्र	द्वादश 'क'	अभिमन्यु	200 मी. दौड़	सत्य	प्रथम
110.	अभिषेक कटियार	द्वादश 'ख'	अभिमन्यु	200 मी. दौड़	शक्ति	द्वितीय
111.	कुमार सौरभ	द्वादश 'क'	अभिमन्यु	200 मी. दौड़	सत्य	तृतीय
112.	चैतन्य दत्त	दशम 'ख'	एकलव्य	तीन टाँग की दौड़	शौर्य	प्रथम
113.	नितिन प्रताप	9 'क'	एकलव्य	तीन टाँग की दौड़	शौर्य	प्रथम
114.	कुन्दन कुमार	नवम 'ग'	एकलव्य	तीन टाँग की दौड़	सत्य	द्वितीय
115.	राजीव रंजन	दशम 'ग'	एकलव्य	तीन टाँग की दौड़	सत्य	द्वितीय
116.	विनीत कुमार	दशम 'क'	एकलव्य	तीन टाँग की दौड	धैर्य	तृतीय
117.	मृदुल मिश्र	दशम 'क'	लवकुश	तीन टाँग की दौड़	धैर्य	तृतीय
118.	आलोक मिश्र	एकादश 'क'	अभिमन्यु	तीन टाँग की दौड़	शक्ति	प्रथम
119.	भूपेन्द्र पाल	एकादश 'ख'	अभिमन्यु	तीन टाँग की दौड़	शक्ति	प्रथम
120.	नितेश दीक्षित	द्वादश 'ख'	अभिमन्यु	तीन टाँग की दौड़	शौर्य	द्वितीय
121.	शैलेन्द्र यादव	द्वादश 'क'	अभिमन्यु	तीन टाँग की दौड़	शौर्य	द्वितीय
122.	आशीष पाल	एकादश 'ख'	अभिमन्यु	तीन टाँग की दौड़	शक्ति	तृतीय
123.	आनन्द शुक्ल	एकादश 'ख'	अभिमन्यु	तीन टाँग की दौड़	शक्ति	तृतीय
124.	अमरेन्द्र सिंह	षष्ठ 'क'	लवकुश	क्रिकेट बाल थ्रो	सत्य	प्रथम
125.	आनन्द कुमार शाक्य	सप्तम 'क'	लवकुश	क्रिकेट बाल थ्रो	शौर्य	द्वितीय
126.	अमित शर्मा	षष्ठ 'ख'	लवकुश	क्रिकेट बाल थ्रो	शक्ति	तृतीय
127.	पंकज	सप्तम 'ख'	ध्रुव	1500 मी. दौड़	शौर्य	प्रथम
128.	राकेश कुमार	अष्टम 'क'	ध्रुव	1500 मी. दौड	सत्य	द्वितीय
129.	आनन्द राज	सप्तम 'ख'	ध्रुव	1500 मी. दौड	शौर्य	तृतीय
130.	शैलेश शुक्ल	षष्ठ 'क'	लवकुश	1200 मी. दौड	शौर्य	प्रथम
131.	अमर ज्योति चाकमा	सप्तम 'ख'	लवकुश	1200 मी. दौड	शक्ति	द्वितीय
132.	विवेक सिसौदिया	षष्ठ 'क'	लवकुश	1500 मी. दौड़	शौर्य	तृतीय
133.	भूपेन्द्र सिंह पाल	एकादश 'ख'	अभिमन्यु	उछल कदम कूद	शाक्ति	प्रथम

134.	प्रज्ञेश गुप्त	द्वादश 'क'	अभिमन्यु	उछल कदम कूद	सत्य	द्वितीय
135.	कुमार सौरभ	द्वादश 'क'	अभिमन्यु	उछल कदम कूद	सत्य	तृतीय
136.	अमित सिंह	अष्टम 'ख'	ध्रुव	उछल कदम कूद	शक्ति	प्रथम
137.	नवनीत कुमार	सप्तम 'क'	ध्रुव	उछल कदम कूद	शौर्य	द्वितीय
138.	अमित मयंक	अष्टम 'क'	ध्रुव	उछल कदम कूद	शक्ति	तृतीय
140.	सजल गोयल	दशम 'ख'	एकलव्य	चक्का प्रक्षेप	सत्य	प्रथम
141.	शिशिर मिश्र	नवम 'ख'	एकलव्य	चक्का प्रक्षेप	धैर्य	द्वितीय
142.	सिद्धार्थ सौरभ	दशम	एकलव्य	चक्का प्रक्षेप	धैर्य	तृतीय
143.	अंकुर राय	द्वादश	अभिमन्यु	400 मी. दौड़	शक्ति	प्रथम
144.	अभिषेक कटियार	द्वादश 'ख'	अभिमन्यु	400 मी. दौड़	शक्ति	द्वितीय
145.	प्रज्ञेश गुप्त	द्वादश 'क'	अभिमन्यु	400 मी. दौड़	सत्य	तृतीय
146.	मनीष तिवारी	सप्तम 'क'	ध्रुव	उछल कदम कूद	शौर्य	प्रथम
147.	दृश्य मुनि चाकमा	सप्तम 'ख'	ध्रुव	उछल कदम कूद	शौर्य	द्वितीय
148.	दिलीप कुमार	अष्टम 'क'	ध्रुव	उछल कदम कूद	धैर्य	तृतीय
149.	कुमार गौरव	दशम	एकलव्य	400 मी. दौड़	सत्य	प्रथम
150.	सौरभ कटियार	नवम 'ख'	एकलव्य	400 मी. दौड़	सत्य	द्वितीय
151.	रघुनाथ सिंह	दशम 'क'	एकलव्य	400 मी. दौड़	सत्य	तृतीय
152.	कृतिवास	एकादश 'क'	अभिमन्यु	चक्का प्रक्षेप	शौर्य	प्रथम
153.	पुनीत दुबे	एकादश 'ख	अभिमन्यु	चक्का प्रक्षेप	धैर्य	द्वितीय
154.	अभिषेक शुक्ल	एकादश 'क'	अभिमन्यु	चक्का प्रक्षेप	शक्ति	तृतीय
155.	आलोक मिश्र	एकादश 'क'	अभिमन्यु	100 मी. दौड़	शक्ति	प्रथम
156.	प्रकाश चन्द्र	द्वादश 'क'	अभिमन्यु	100 मी. दौड़	सत्य	द्वितीय
157.	हिमांशु गुप्त	द्वादश 'क'	अभिमन्यु	100 मी. दौड़	सत्य	तृतीय
158.	रंजन मिश्र	षष्ठ 'क'	लवकुश	200 मी. दौड़	सत्य	प्रथम
159.	ऋषभ दुबे	सप्तम 'क'	लवकुश	200 मी. दौड़	शौर्य	द्वितीय
160.	विकास शर्मा	सप्तम 'क'	लवकुश	200 मी. दौड़	धैर्य	तृतीय
161.	गौरव कुमार	दशम 'ख'	एकलव्य	उछल कदम कूद	शौर्य	प्रथम
162.	कुमार गौरव	दशम 'ख'	एकलव्य	उछल कदम कूद	सत्य	द्वितीय
163.	आयुष सिंह	दशम 'ख'	एकलव्य	उछल कदम कूद	शक्ति	तृतीय
164.	सौरभ कटियार	नवम 'क'	एकलव्य	1500 मी.दौड़	सत्य	प्रथम
165.	आशुतोष गुप्त	नवम 'क'	एकलव्य	1500 मी. दौड़	शक्ति	द्वितीय
166.	प्रशान्त अवस्थी	दशम 'क'	एकलव्य	1500 मी. दौड़	सत्य	तृतीय
167.	राकेश कुमार	8 'क'	ध्रुव	चक्का प्रक्षेप (58-11")	सत्य	प्रथम
168.	मनीष कुमार तिवारी	सप्तम 'क'	ध्रुव	चक्का प्रक्षेप	शौर्य	द्वितीय
169.	विष्णु प्रताप सिंह	अष्टम 'क'	ध्रुव	चक्का प्रक्षेप	धैर्य	तृतीय
170.	अमरेन्द्र सिंह	षष्ठ 'क'	लवकुश	400 मी. दौड़	सत्य	प्रथम
171.	रंजन मिश्र	षष्ठ 'क'	लवकुश	400 मी. दौड़	शक्ति	द्वितीय
172.	अमर ज्योति	सप्तम 'ख'	ध्रुव	400 मी. दौड़	शक्ति	तृतीय
173.	शरद कश्यप	अष्टम 'ख'	ध्रुवदल	फोटोग्राफी	धैर्य	प्रथम
174.	कपिल निरंजन	अष्टम 'ख'	एकलव्यदल	फोटोग्राफी	धैर्य	द्वितीय
175.	अर्पण अवस्थी	अष्टम 'ख'	ध्रुव	फोटोग्राफी	धैर्य	तृतीय
176.	सूर्यांश बाजपेई	षष्ठ 'क'	लवकुश	फोटोग्राफी	शौर्य	प्रथम
177.	आशीष मिश्र	अष्टम 'ख'	ध्रुव	फोटोग्राफी	शौर्य	प्रथम
178.	नीरज कटियार	दशम	एकलव्य	फोटोग्राफी	शौर्य	प्रथम
179.	अंकुर राय	द्वादश 'क'	अभिमन्यु	1500 मी. दौड़	शक्ति	प्रथम
180.	कुन्दर सिंह	एकादश 'क'	अभिमन्यु	1500 मी. दौड़	शौर्य	द्वितीय
181.	सौरभ निरंजन	एकादश 'ख'	अभिमन्यु	1500 मी. दौड़	सत्य	तृतीय
182.	अमित सिंह विसेन	अष्टम 'ख'	ध्रुव	200 मी. दौड़	शक्ति	प्रथम
183.	नवनीत कुमार	सप्तम 'क'	ध्रुव	200 मी. दौड़	शौर्य	द्वितीय

182.	अमित मयंक	अष्टम 'क'	ध्रुव	200 मी. दौड़	शक्ति	तृतीय
183.	आयुष सिंह	दशम	एकलव्य	ऊँची कूद	शक्ति	प्रथम
184.	शिवेन्द्र प्रताप	दशम	एकलव्य	ऊँची कूद	धैर्य	द्वितीय
185.	विनीत कुमार	दशम	एकलव्य	ऊँची कूद	धैर्य	तृतीय
186.	आनन्द शाक्य	सप्तम	लवकुश	रिले (4 X 100मी)	शौर्य	द्वितीय
187.	ऋषभ दुबे	षष्ठ	लवकुश	रिले (4 X 100मी)	शौर्य	द्वितीय
188.	अभिषेक मिश्र	षष्ठ	लवकुश	रिले (4 X 100मी)	शौर्य	द्वितीय
189.	सुमित यादव	षष्ठ	लवकुश	रिले (4 X 100मी)	शौर्य	द्वितीय
190.	रंजन मिश्र	षष्ठ	लवकुश	रिले (4 X 100मी)	सत्य	प्रथम
191.	सौरभ द्विवेदी	षष्ठ	लवकुश	रिले (4 X 100मी)	सत्य	प्रथम
192.	अमरेन्द्र	षष्ठ	लवकुश	रिले (4 X 100मी)	सत्य	प्रथम
193.	सौरभ दुबे	षष्ठ	लवकुश	रिले (4 X 100मी)	सत्य	प्रथम
194.	नवनीत कुमार	सप्तम	ध्रुव	रिले (4 X 100मी)	शौर्य	प्रथम
195.	संतमणि	सप्तम	ध्रुव	रिले (4 X 100मी)	शौर्य	प्रथम
196.	पंकज	सप्तम	ध्रुव	रिले (4 X 100मी)	शौर्य	प्रथम
197.	दृश्यमुनि	सप्तम	ध्रुव	रिले (4 X 100मी)	शौर्य	प्रथम
198.	अमित मयंक	अष्टम	ध्रुव	रिले (4 X 100मी)	शक्ति	द्वितीय
199.	अमित सिंह	अष्टम	ध्रुव	रिले (4 X 100मी)	शक्ति	द्वितीय
200.	विवेक सिंह	अष्टम	ध्रुव	रिले (4 X 100मी)	शक्ति	द्वितीय
201.	सौरभ कटियार	अष्टम	ध्रुव	रिले (4 X 100मी)	शक्ति	द्वितीय
202.	राकेश कुमार	अष्टम 'क'	ध्रुव	रिले (4 X 100मी)	सत्य	तृतीय
203.	प्रशान्त श्रीवास्तव	सप्तम 'क'	ध्रुव	रिले (4 X 100मी)	सत्य	तृतीय
204.	ज्योतिर्मय कौशिक	अष्टम 'ख'	ध्रुव	रिले (4 X 100मी)	सत्य	तृतीय
205.	शिवम त्रिपाठी	अष्टम 'ख'	ध्रुव	रिले (4 X 100मी)	सत्य	तृतीय
206.	गौरव कुमार	दशम	एकलव्य	100मी. दौड	शौर्य	प्रथम
207.	कुन्दन कुमार	नवम 'ग'	एकलव्य	100मी. दौड	सत्य	द्वितीय
208.	कुमार गौरव	दशम	एकलव्य	100मी. दौड	सत्य	तृतीय
209.	राजीव रंजन	दशम	एकलव्य	रिले (4 X 100मी)	सत्य	प्रथम
210.	सजल गोयल	दशम	एकलव्य	रिले (4 X 100मी)	सत्य	प्रथम
211.	कुन्दन कुमार	नवम 'ग'	एकलव्य	रिले (4 X 100मी)	सत्य	प्रथम
212.	कुमार गौरव	दशम	एकलव्य	रिले (4 X 100मी)	सत्य	प्रथम
213.	आयुष यादव	दशम	एकलव्य	रिले (4 X 100मी)	शक्ति	द्वितीय
214.	अभिनव चिब	नवम	एकलव्य	रिले (4 X 100मी)	शक्ति	द्वितीय
215.	अंकुर गुप्त	दशम	एकलव्य	रिले (4 X 100मी)	शक्ति	द्वितीय
216.	आजाद कुमार	दशम	एकलव्य	रिले (4 X 100मी)	शक्ति	द्वितीय
217.	गौरव कुमार	दशम	एकलव्य	रिले (4 X 100मी)	शौर्य	तृतीय
218.	चैतन्य दत्त	दशम	एकलव्य	रिले (4 X 100मी)	शौर्य	तृतीय
219.	ईशान अग्रवाल	नवम 'ख'	एकलव्य	रिले (4 X 100मी)	शौर्य	तृतीय
220.	नितिन	नवम 'ख'	एकलव्य	रिले (4 X 100मी)	शौर्य	तृतीय
221.	निशांत	सप्तम 'क'	लवकुश	स्केटिंग	शौर्य	प्रथम
222.	रमाकांत शर्मा	सप्तम 'ख'	लवकुश	स्केटिंग	शौर्य	द्वितीय
223.	एस.एम. गौरव	षष्ठ 'ख'	लवकुश	स्केटिंग	सत्य	तृतीय
224.	अनुराग मिश्र	सप्तम 'क'	ध्रुव	स्केटिंग	शौर्य	प्रथम
225.	शिवांशु सचान	सप्तम 'क'	ध्रुव	स्केटिंग	शौर्य	द्वितीय
226.	कुलदीप यादव	सप्तम 'क'	ध्रुव	स्केटिंग	शौर्य	तृतीय
227.	हिमांशु सिंह	दशम 'ग'	एकलव्य	स्केटिंग	शौर्य	प्रथम
228.	ईशान अग्रवाल	नवम 'ख'	एकलव्य	स्केटिंग	शौर्य	प्रथम
229.	विकल यादव	नवम 'ख'	एकलव्य	स्केटिंग	धैर्य	द्वितीय
230.	शिवम गुप्त	दशम 'क'	एकलव्य	स्केटिंग	सत्य	तृतीय

231.	स्नेहिल त्रिपाठी	एकादश 'ख'	अभिमन्यु	स्केटिंग	धैर्य	प्रथम
232.	गौरव श्रीवास्तव	एकादश 'ख'	अभिमन्यु	स्केटिंग	धैर्य	द्वितीय
233.	प्रदीप त्रिपाठी	एकादश 'क'	अभिमन्यु	स्केटिंग	सत्य	तृतीय
234.	अमित शर्मा	षष्ठ 'ख'	लवकुश	रिले (4 X 100मी)	शक्ति	तृतीय
235.	सात्विक तिवारी	षष्ठ 'ख'	लवकुश	रिले (4 X 100मी)	शक्ति	तृतीय
236.	अनूप	षष्ठ 'ख'	लवकुश	रिले (4 X 100मी)	शक्ति	तृतीय
237.	अमोल दुबे	षष्ठ 'ख'	लवकुश	रिले (4 X 100मी)	शक्ति	तृतीय
238.	आलोक मिश्र	षष्ठ 'ख'	अभिमन्यु	रिले (4 X 100मी)	शक्ति	प्रथम
239.	भूपेन्द्र पाल	षष्ठ 'ख'	अभिमन्यु	रिले (4 X 100मी)	शक्ति	प्रथम
240.	अंकुर राय	षष्ठ 'ख'	अभिमन्यु	रिले (4 X 100मी)	शक्ति	प्रथम
241.	अभिजित सिंह	षष्ठ 'ख'	अभिमन्यु	रिले (4 X 100मी)	शक्ति	प्रथम
242.	अंकित आर्य	षष्ठ 'ख'	अभिमन्यु	रिले (4 X 100मी)	धैर्य	द्वितीय
243.	स्नेहिल त्रिपाठी	षष्ठ 'ख'	अभिमन्यु	रिले (4 X 100मी)	धैर्य	द्वितीय
244.	आशीष शुक्ल	षष्ठ 'ख'	अभिमन्यु	रिले (4 X 100मी)	धैर्य	द्वितीय
245.	विनोद कुमार	षष्ठ 'ख'	अभिमन्यु	रिले (4 X 100मी)	धैर्य	द्वितीय
246.	प्रकाश चन्द्र	षष्ठ 'ख'	अभिमन्यु	रिले (4 X 100मी)	सत्य	तृतीय
247.	कुमार सौरभ	षष्ठ 'ख'	अभिमन्यु	रिले (4 X 100मी)	सत्य	तृतीय
248.	रजनी कांत	षष्ठ 'ख'	अभिमन्यु	रिले (4 X 100मी)	सत्य	तृतीय
249.	हिमांशु गुप्त	षष्ठ 'ख'	अभिमन्यु	रिले (4 X 100मी)	सत्य	तृतीय
250.	मनीष कुमार तिवारी	सप्तम 'क'	ध्रुव	भाला प्रक्षेप	शौर्य	तृतीय
251.	सौरभ दुबे	अष्टम 'ख'	ध्रुव	भाला प्रक्षेप	शौर्य	तृतीय
252.	शिवम अवस्थी	अष्टम 'ख'	ध्रुव	भाला प्रक्षेप	सत्य	तृतीय

चारों दलों के चैंपियन छात्र

लवकुश दल	एकलव्य दल	अभिमन्यु दल	ध्रुव दल
चि. रंजन मिश्र षष्ठ 'क'	कुमार गौरव 10 ख सत्य कुंज	चि. अंकुर राय शक्ति	चि. अमित सिंह 8वां
100 मी. I	400 मी. I	400 मी. I	100 मी. I
200 मी. I	200 मी. I	800 मी. I	200 मी. I
400 मी. I	400 मी. I	400 मी. I	400 मी. I
200 मी. I	100 मी. I	1500 मी. I	गोला II
4 x 100 मी I	उछल कदम कूद II	1300 मी. I	4 x 100 मी I
4 x 200 मी I	100 मी. III	1500 मी. I	4 x 100 मी II
4 x 100 मी I	4 x 100 मी I	4 x 200 मी - I	
	4 x 200 मी I		

कुंजशः स्थिति

शौर्य कुंज	प्रथम स्थान
सत्य कुंज	द्वितीय स्थान
शक्ति कुंज	तृतीय स्थान
धैर्य कुंज	चतुर्थ स्थान

हाईस्कूल परीक्षा 2003 में प्रविष्ट छात्रों की सूची

S.No.	Roll No.	Name
1.	0878303	Abhinandan Tiwari
2.	0878304	Abhinav Mishra
3.	0878305	Abhinav Pandey
4.	0878306	Abhinav Singh
5.	0878307	Abhishek
6.	0878308	Abhishek Khare
7.	0878309	Abhishek Kumar
8.	0878310	Abhishek Kumar Singh
9.	0878311	Abhishek Omar
10.	0878312	Abhishek Tripathi
11.	0878313	Adarsh Awasthi
12.	0878314	Aditya Narayan Mishra
13.	0878315	Ajeet Singh
14.	0878316	Ajeet Singh
15.	0878317	Alok Shukla
16.	0878318	Amit Kumar Verma
17.	0878319	Anand Awasthi
18.	0878320	Anand Ojha
19.	0878321	Aniket Nigam
20.	0878322	Ankit Kudeshia
21.	0878323	Ankit Mishra
22.	0878324	Ankur Srivastav
23.	0878325	Anshul Tiwari
24.	0878326	Anshuman Singh Sengar
25.	0878327	Anubhav Tihar
26.	0878328	Anuj Kumar Mishra
27.	0878329	Anurag Tiwari
28.	0878330	Anuraj Gupta
29.	0878331	Arjun Dixit
30.	0878332	Arpit Baranwal
31.	0878333	Arpit Srivastava
32.	0878334	Arun Rajput
33.	0878335	Arvind Singh
34.	0878336	Ashish Katiyar
35.	0878337	Ashish Tiwari
36.	0878338	Ashish Verma
37.	0878339	Ashutosh Pandey
38.	0878340	Avirag Shukla
39.	0878341	Ayush Singh
40.	0878342	Chaitanya Dutta
41.	0878343	Deepak Pandey
42.	0878344	Devarshi Mishra
43.	0878345	Divyanshu Dwivedi
44.	0878346	Durgesh Singh
45.	0878347	Gaurav Kumar
46.	0878348	Gaurav Kumar Singh
47.	0878349	Gaurav Pandey
48.	0878350	Gaurav Sachan
49.	0878351	Gaurav Srivastava
50.	0878352	Gaurav Umrao
51.	0878353	Gopal Das
52.	0878354	Himanshu Gupta
53.	0878355	Himanshu Singh
54.	0878356	Jay Vardhan
55.	0878357	Jayant Jha
56.	0878358	Jayant Yadav
57.	0878359	Jyotir Aditya
58.	0878360	Kirtiman Mishra
59.	0878361	Kuldeep Singh
60.	0878362	Kumar Gaurav
61.	0878363	Manish Kartikeya Tiwari
62.	0878364	Mihir Awasthi
63.	0878365	Mridul Mishra
64.	0878366	Mritunjay Pratap Singh Chauhan
65.	0878367	Mudit Nigam
66.	0878368	Neeraj Kumar
67.	0878369	Neeraj Pal

68.	0878370	Nishant Dixit
69.	0878371	Pankaj Yadav
70.	0878372	Pawan Kumar Singh
71.	0878373	Piyush Payasi
72.	0878374	Prabhakar Sachan
73.	0878375	Prabhat Saxena
74.	0878376	Prakhar Maini
75.	0878377	Prakhar Vardhan
76.	0878378	Prashant Pal
77.	0878379	Prashant Awasthi
78.	0878380	Prem Kishor Shukla
79.	0878381	Priyanshu Dubey
80.	0878382	Pushap Raj Singh
81.	0878383	Raghunath Singh
82.	0878384	Rajeev Ranjan
83.	0878385	Raman Priyadarshi
84.	0878386	Ravi Gupta
85.	0878387	Ravi Prakash
86.	0878388	Ravi Sharma
87.	0878389	Raviraj Singh Chauhan
88.	0878390	Rishabh Srivastava
89.	0878391	Rishi Kumar Singh
90.	0878392	Ritu Pal
91.	0878393	Sachin Gupta
92.	0878394	Sajal Goyal
93.	0878395	Sandeep Kumar Singh
94.	0878396	Sandeep Singh Chauhan
95.	0878397	Saransh Srivastava
96.	0878398	Satyam
97.	0878399	Saurabh Chandra Rai
98.	0878400	Saurabh Kumar Tripathi
99.	0878401	Saurabh Singh
100.	0878402	Saurabh Singh
101	0878403	Savya Sachi Mishra
102.	0878404	Setu Gupta
103.	0878405	Shailendra Kumar Shukla
104.	0878406	Shailendra Pal Veer Singh
105.	0878407	Shaiwal Chaudhary
106.	0878408	Shantana Gupta
107.	0878409	Shashank Pathak
108.	0878410	Shashank Purwar
109.	0878411	Shashank Singh
110.	0878412	Shashank Tripathi
111.	0878413	Shikhar Dixit
112.	0878414	Shikhar Mishra
113.	0878415	Shishir Sharma
114.	0878416	Shivam Gupta
115.	0878417	Shivam Mishra
116.	0878418	Shivam Shukla
117.	0878419	Shivam Tripathi
118.	0878420	Shivendra Pratap Singh
119.	0878421	Shivim Tiwari
120.	0878422	Shobhit Khare
121.	0878423	Shwetank Dixit
122.	0878424	Siddharth Saurabh
123.	0878425	Shohit Gupta
124.	0878426	Soumya Sheel Singh
125.	0878427	Sudhanshu Shekhar
126.	0878428	Swami Sharan Gupta
127.	0878429	Swapnil Joshi
128.	0878430	Tarun Agrawal
129.	0878431	Udit Rastogi
130.	0878432	Umang Purwar
131.	0878433	Utkarsh Pandey
132.	0878434	Vaibhav Nigam
133.	0878435	Vikal Pandey
134.	0878436	Vimal Kumar
135.	0878437	Vineet Kumar
136.	0878438	Vipin Mishra
137.	0878439	Vivek Kumar Srivastava
138.	0878440	Vivek Pal

इण्टरमीडिएट परीक्षा 2003 में प्रविष्ट छात्रों की सूची

S.No.	Roll No.	Name
1.	0319569	Abhijeet Singh
2.	0319570	Abhinav Tripathi
3.	0319571	Abhishek Bajpai
4.	0319572	Abhishek Katiyar
5.	0319573	Abhishek Kushwaha
6.	0319574	Abhishek Singh
7.	0319575	Abhishek Upadhyay
8.	0319576	Abhya Chaturvedi
9.	0319577	Adesh Yadav
10.	0319578	Aditya Kumar Tiwari
11.	0319579	Aditya Singh Bhadauria
12.	0319580	Akashdeep Kasauhdhan
13.	0319581	Akash Dwivedi
14.	0319582	Akhilesh Kumar Goyal
15.	0319583	Alok Dwivedi
16.	0319584	Alok Kumar Nayak
17.	0319585	Amit Kumar Gupta
18.	0319586	Amit Shukla
19.	0319587	Amit Vali Ramani
20.	0319588	Ankit Agrawal
21.	0319589	Ankit Bhatnagar
22.	0319590	Ankit Bhatia
23.	0319591	Ankit Sharma
24.	0319592	Ankit Tiwari
25.	0319593	Ankur Kumar Rai
26.	0319594	Anshu Katiyar
27.	0319595	Anshul Kumar Dixit
28.	0319596	Anunay Gupta
29.	0319597	Anurag Patel
30.	0319598	Anurag Sharma
31.	0319599	Anurag Shukla
32.	0319600	Anurag Verma
33.	0319601	Ashish Gupta
34.	0319602	Ashish Katiyar
35.	0319603	Ashish Kumar Mishra
36.	0319604	Ashish Kushwaha
37.	0319605	Ashutosh Dwivedi
38.	0319606	Ashutosh Gupta
39.	0319607	Ashutosh Pandey
40.	0319608	Ashwani Kumar Pal
41.	0319609	Avanish Pandey
42.	0319610	Bhupendra Singh
43.	0319611	Chandresh Srivastava
44.	0319612	Deoki Nandan Tiwari
45.	0319613	Durgesh Singh
46.	0319614	Gaurav Khare
47.	0319615	Gaurav Tripathi
48.	0319616	Gaurav Tripathi
49.	0319617	Gunjan Garg
50.	0319618	Harsh Agnihotri
51.	0319619	Hemant Joshi
52.	0319620	Hemant Patel
53.	0319621	Himanshu Gupta
54.	0319622	Himanshu Joshi
55.	0319623	Himanshu Mishra
56.	0319624	Himanshu Shukla
57.	0319625	Himanshu Singh
58.	0319626	Jayendra Tiwari
59.	0319627	Jeetendra Kumar

60.	0319628	Kranti Kanchan Mishra
61.	0319629	Kumar Saurabh
62.	0319630	Kushagra Dwivedi
63.	0319631	Manoj Kumar Tripathi
64.	0319632	Manoj Kumar Kushwaha
65.	0319633	Mayank Kumar Gupta
66.	0319634	Naman Kumar
67.	0319635	Navneet Pal
68.	0319636	Nilesh Dwivedi
69.	0319637	Nitesh Dixit
70.	0319638	Nitin Dubey
71.	0319639	Nitin Dwivedi
72.	0319640	Piyush Trivedi
73.	0319641	Pragyesh Gupta
74.	0319642	Prakash Chandra Trivedi
75.	0319643	Pranjal Srivastava
76.	0319644	Prashant Khare
77.	0319645	Prashant Singh Gaur
78.	0319646	Pulkit Agarwal
79.	0319647	Puneet Srivastava
80.	0319648	Pushkar Singh
81.	0319649	Rahul Mishra
82.	0319650	Rahul Singh
83.	0319651	Rahul Tiwari
84.	0319652	Rahul Pratap Singh
85.	0319653	Rajni Kant Upadhyay
86.	0319654	Ranjeet Kumar
87.	0319655	Ratnesh Pandey
88.	0319656	Rishabh Gupta
89.	0319657	Rishi Dixit
90.	0319658	Rishi Raj Sharma
91.	0319659	Rituraj Shukla
92.	0319660	Sachin Kumar Agrawal
93.	0319661	Sagar Verma
94.	0319662	Sameer Bhattacharya
95.	0319663	Santosh Dwivedi
96.	0319664	Sarvesh Singh
97.	0319665	Satyam Awasthi
98.	0319666	Saurabh Gupta
99.	0319667	Saurabh Kumar Awasthi
100.	0319668	Saurabh Sachan
101	0319669	Saurabh Tiwari
102.	0319670	Shailendra Kesarwani
103.	0319671	Shailendra Yadav
104.	0319672	Sharad Gupta
105.	0319673	Shobhit Maheshwari
106.	0319674	Srikant Vashistha
107.	0319675	Srot Gupta
108.	0319676	Sudesh Raje
109.	0319677	Sugam Srivastava
110.	0319678	Sumit Pandey
111.	0319679	Sumit Tandon
112.	0319680	Surjeet Singh
113.	0319681	Suyash Awasthi
114.	0319682	Suyash Kumar Mishra
115.	0319683	Tribhuvan Nath Lokesh
116.	0319684	Vijyendra Vikram Singh
117.	0319685	Vinay Sharma
118.	0319686	Yogendra Kumar Dube

* * *

EDITORIAL

Sharda Rao

The past one year has been very eventful as the nation faced several ups and downs. The Godhra incident stunned the entire nation and the Hindu sentiments were deeply hurt by the heinous carnage. Gujarat fell a victim to the worst ever riots in the history of India. Just as the nation was gradually emerging from the shock of the violence and blood-shed that had torn apart the tolerant fabric of our country; the Akshardham massacre left our motherland bleeding and injured for yet another time. Our misfortunes did not end here; on Ist February, the tragic news of the Columbia Disaster dropped like a bomb-shell on millions of Indians who were waiting anxiously for the return of Kalpana Chawla from her glorious space voyage.

Kalpana epitomized the dreams and aspirations of all Indians who wished to see India installed on a high pedestal of science and technology.

Through this edition we offer our homage to Kalpana Chawala, the brave and talented daughter of India. Her sacrifice will inspire our aspiring scientists to keep the torch burning in the field of aero-space engineering; where even the stars are not the limit.

Kalpana ! India will never forget you - We are proud of you and salute you.

THY SOUL WAS LIKE A STAR AND DWELT APART.

But the real tribute to her can be paid only if we continue her mission and fulfill her dreams. India has a long way to go; we have massive challenges to face and several milestones are waiting for us. So, let us gear up to face life in all its manifestations Man is the supreme creation of God and has been endowed with profound strength but we also have certain duties towards our mother Earth. We have to ensure that mankind continues to live in an environment that is peaceful, free of hatred and violence. India, the land of sages, can once again give a message of hope to the suffering humanity. The youth have a tremendous role to perform and it is a race against time. Robert Frost has rightly said-

"The woods are lovely dark and deep
But I have promises to keep
And miles to go before I sleep
And miles to go before I sleep."

❄ ❄ ❄

THE AIM OF HUMAN LIFE

Pt. Deen Dayal Upadhyaya

The fundamental difference between our position and that of the west is that whereas they have regarded body and satisfaction of its desires as the aim, we regard the body as an instrument for achieving our aims. We have recognized the importance of the body in this light. The satisfaction of our bodily needs is necessary, but we don't consider this to be the sole aim of all our efforts. Here in Bharat we have placed before ourselves the ideal of the fourfold responsibilities of catering for the needs of body, mind, intellect and soul, with a view to achieving the integrated progress of man. Dharma, Artha, Kama and Moksha are the four kinds of human effort. Purushartha means efforts which befit a man. The longings for Dharma, Artha, Kama and Moksha are inborn in man, and satisfaction of these gives him joy. Of these four efforts, too, we have thought in an integrated way. Even though Moksha has been considered the highest of these Purusharthas, efforts for moksha alone are not thought to give benefit to the soul. On the other hand, a person who engaged in action, while remaining unattached to its fruits is said to achieve Moksha inevitably and earlier.

❋ ❋ ❋

'OUR DUTY TOWARDS THE COUNTRY'

Anand Narayan Patel, XI 'A'

First of all we should try to know the definition of the word 'country'. The word country has a great meaning. The clear picture of a nation can be gathered from its land, the people and their culture. We call our land 'Bharat Mata'. In true words this land is the mother of whole national ideology. After knowing the country the word 'Duty' should be considered. We have duties towards the country. We should try to know and fulfill our obligations.

Duty towards the country is one of the most important duties for everyone. We can serve our country in many different ways. In our country unfortunately there are a large number of people who are very selfish and do not care at all for what happens to the country and to other people, so long as their interests are served. They are people who care only for themselves, or at the most, for their children and for their companions and relatives. We are not born only for living, eating and enjoying, Our chief aim is not to be an engineer or a doctor or to earn a lot of money. But our chief goal is to become good citizens of the nation. We should try our best to relate to our national ideologies.

To be a good citizen we should try to establish 'Unity' among ourselves. We should try to enhance adjustment among ourselves because 'Unity is strength'.

The second fact is 'Our culture'. Culture is "to know the best that has been said and thought in the world." Culture is the soul of any country. A country is lifeless without good

culture. 'No culture can live if it attempts to be exclusive.' Anyone can know the accurate condition of the country by its culture. We should try our best to make our culture strong.

We should attempt to adopt and mingle with our culture.

'Literature' comes after the culture. We can see the dignity of Indian culture in epics. Sant Tulsidas depicted Indian culture in his famous epic, 'Ram Charit Manas'. Good literature gives us the glimpse of the best society and culture in every period. So we can serve our country also by creating good literature.

Management strengthens the pillars of our country. Effective Management builds our personality. Japanese are the best instances of this fact. India is a very ancient country. But India has not yet been able to make a place for itself in the developed countries even today. So, everyone should work systematically. Then our country will go forward in the race of progress.

Virtue of 'Self-confidence' is essential for every human being in life. We should not be affected by Western culture. We should believe in our own ideas and things. Foreign thoughts and things should not be adopted by us. But now a days lack of confidence can be seen in every creature. So, confidence in ourselves should be developed.

Sometimes ago our country was struggling against some social evils such as - Dowry system, untouchability etc. Now these evils have been checked by government. It is high time these evils are rooted out. Antisocial elements should be dealt with firmly by our government. Our country is also suffering from the vices of corruption, communalism and selfishness. To combat these evils, stringent, measures should be taken by the government and society. The whole world is like a body and India is the soul of the world. The body can't exist without soul. In this way the world is lifeless without India.

So, we are fortunate enough to be born in this spiritual country. I want to say that we should make a resolve to serve our country whole-heartedly. In the real sense we the youth of today are India's hope for tomorrow. Let us know our worth and remember that.

"United we stand and divided we fall."

❋❋❋

THE EXAMINATION SYSTEM IN INDIA AN-ANALYSIS

Rishi Raj Trivedi, 9th 'A'

Everyone knows about the examinations conducted every year by various boards and schools. They are regarded as the base of a person's achievement in the academic field. A person secures first, second or third class on the basis of marks obtained by him. But do we test his knowledge ? Certainly not.

Our present examination system is not meant to test the ability of a student. But in

fact, it is the test of cramming capacity of the student. It is not possible for a common man to remember many facts all the time. So, though the boy understands, the subject well, he can not write everything if he does not cram the subject. On the other hand one who can cram up easily will come out with flying colours.

We conclude that there is certainly something lacking. It has proved that one who can cram up easily, gets good marks. It consists of learning few formulae of physics, chemistry or some facts of other subjects only. What do we do for our moral values ? It should also test the moral standard of students. Thus we can say that our true progress is far from its goals.

We need a change in examination system if we want to remove these evils. We must change the present pattern of judging the knowledge. Secondly cramming ability of a student does not prove his intelligene.

If we need a well prepared man power we shall have to change the examination system. Examinations should not be linked with percentage of marks. We must also judge whether we are preparing worthy and patriotic citizens or mere crammers.

❋ ❋ ❋

GREAT IMPORTANCE OF SCIENCE

Vikas, VII 'A'

Science is systematic knowledge with its help man has made a great progress. Today the world is a scientific world. So no person can do anything without science.

Science has progressed from the industry and industrial revolution. Today man is better than any other creature on the earth. With its help man has made many inventions Scientific inventions have made our life easy and comfortable. Science has shortened time and space. Scientific inventions are trains, aeroplanes, Televisions etc. The train can be moved with a steam engine and the steam engine was invented by James Watt. With its help journey can be completed early. The aeroplane was invented by wright brothers. Now we can travel and fly to any part of the world. It has been provided by science.

Science has made a progress in Medical field also. Science helps in surgery also. It has saved us from many fatal diseases.

Science helps in cleaning our homes. Volta has invented electricity. It helps in many ways. It gives us light, moves our fans and cooks our foods. With its help world has shrunk in size.

❋ ❋ ❋

NECESSITY IS THE MOTHER OF INVENTION

The meaning of the saying is that our needs inspire us to find out the means and the way. When Nature does not give the things or the materials that we want or require to continue our life, we are forced to achieve them with our efforts. If a person feels hungry he is compelled to find out the ways to get food in order to satisfy his hunger. In this way we can say that "Necessity is the mother of invention."

Our daily life is also filled with examples that show that inventions are always connected to necessity. The examples show that the necessity is behind all the activities and inventions. The story of a thirsty crow is well known to everybody. When the crow was thirsty, he flew here and there in the search of water which was his necessity. After some time he was successful. He saw a pitcher water with at the bottom. He thought of a trick and working hard he put some stones in water. When the water came up he drank the water and quenched his thirst. In the same way it is the pressing need that compels a person to find out ways and means to ful fill it.

Through history we find out that all the inventions were made due to the pressing nature of the necessity. In the past man lived in the forest. He survived by hunting the animals. When the man felt the necessity of progress in his life he made new inventions and formed villages and cities. These further helped in the progress of human life.

When the human necessities grew inventions also grew. But all the inventions were not made because of necessity. Today the inventing faculty is very much developed in the man when the scientists invent a new thing, they feel great pleasure. They invent new things for the sake of pleasure. Whether there is any necessity or not. Today invention are made not just for necessities but for the comfort and business also.

❄ ❄ ❄

A RENDEZVOUS WITH A GHOST

Surendra Singh, XI 'C'

I was alone in the hostel room reading a mysterious novel. Hearing the loud voices of some boys I got up and joined them. The topic of discussion was "whether spirits and ghosts exist ?" It was a hot and chilly topic and I declared that spirits do not exist. Suddenly we heard the foot steps of our warden and we turned on our heels and vanished. It was the last day of examinations and the last day of that session we were very happy. When exams were over, I started for my home with two other travellers. We left the school at 5'O Clock and reached the station at 6.15 p.m. The train arrived at 7 O'Clock. As my journey was long I reached the destination very late.

It was 3 O'Clock in the night. My home was near a burial place and I found myself unable to collect energy to pass by the burial place. Till 4 O'Clock there was no Rickshaw or auto. Remembering Hanumanji I started for my home. As soon as the Burial place came near I began to feel uncomfortable. I was very much frightened due to the burial place. Now I was very alert and I didn't know why I had a feeling that somebody was chasing me. But I could not make myself strong. As I was very frightened, an incomplete and faceless image of a spirit struck my mind. This image was always remembered by me whenever I was afraid. Now the burial place was very near, my heart beats became very irregular and the image kept coming to my mind.

Now I was thinking of all the shape less and cruel images. When I was going through these thoughts all the rumours which I had ever heard came alive in my mind.

I was very busy in my dreams Suddenly I looked in front. It was the burial place. Ah! I was frozen. My legs stopped moving as If somebody had caught me. I did my best to run away but all in vain. I did not know what was happening but what was that I saw ? It was dangerous, 2 eyes were peeping at me from the bushes in the burial ground. I remembered all the horror films. I had ever seen, and closed my eyes to remember my Hanuman ji. Ah! Now they were gone. I was now relieved but the danger was not over. When I focussed my eyes again I saw for the second time the eyes were still there and they were moving slowly behind the bushes.

I started 'Hanuman chalisa' and mantras. Ah! the eyes again dissapeared the bushes were calm now. But what was God's will I did n't know. The eyes were again present there and the incomplete, discoloured and unclear long teethed face and big ears were there. Not only this I also heard a terrible sound. I felt that the bushes were moving dangerously and some unclear dark and terrible thing was approaching towards me slowly. I closed my eyes and remembered all 33 crore gods of my religion I waited for my death. It was a long time since I waited ! I think it was 15-20 sec. An irr-regular, shapeless shadow jumped out of the bushes from the burial ground. I shouted and cried and ran with my full strength.

You all can never imagine my situation but you have come to know how I escaped from the Ghost and how brave I was !

Sorry ! You all are wrong. It was an Ass struggling to come out.

❋ ❋ ❋

THE MYSTERIOUS WORLD OF DINOSAURS

Ashish, 9th 'C'

The world of dinosaurs was full of adventure. Now we can read about these adventures and see in animated films or films like Jurrasic Park, the lost world, Godzilla etc. We can feel these adventures through animation films.

If you want to read about these adventures you must read dinosaurian books. Dinosaurs were very interesting creatures and reading about them is all the more interesting.

Some people like reading books. But reading books of dinosaurs can be taken up as a hobby. It can make you learn more and more about it and to collect many facts or gain knowlege about dinosaurs.

One thing we see is that dinosaurs reigned on this earth and man is also now on this earth and is reigning from a long period of time but dinosaurs could not progress as man is progressing now. Their brain was also very small in size but the size of their body was gigantic.

One interesting thing is that now there is grass on the earth and it is the food of many animals but in those days there was not enough grass on the whole earth. Dinosaurs had waterproof skins.

These types of interesting facts we learn by reading books. When you imagine about it you become full of wonder.

There are many things about it which make us read or to learn more about them. So the world of dinosaurs was full of adventure and mystery and remains so even today.

❋ ❋ ❋

THE FUTURE OF ENGLISH IN INDIA

Rohit Katiyar, 9th 'A'

It is often said that since the English have left India, the English language too should disappear from the country. English is a mark of foreign rule and it should have no place in free India. It is true that English was introduced to promote English interests. Their chief aim was to produce a body of English knowing clerks to serve British Government. In this way English was a means of making us complete slaves to our foreign masters. So English should be made to disappear from India.

But there is a positive side of English also. The fact is that English has done some good to us. First of all, It is English education which introduced Indians to the treasures of Western thought, culture and specially the ideas of democracy and self government. The story of the great European freedom movements such as English civil war, the French Revolution and the American War of Independence has come to us through English. Our freedom struggle has been largely inspired and influenced by them. Thus, we should not give up a language which did us good in the past.

Again, English brought us into touch with the rest of the world. If we now remove it, we will be cut off from the world. English is one of the most widely spoken languages in the world. It is very useful in international affairs. It is very necessary in the study of science. It will be foolish to ignore the rich literature of English. Indians will certainly be unfortunate, if they do not know the works of Shakespeare, Wordsworth, Milton, Shaw or Wells. So it is necessary that Indians study it in the same spirit as they study, Sanskrit or Hindi.

❋ ❋ ❋

वसंत की दोपहर में
विद्यालय का विहंगम दृश्य

विद्यालय परिसर में सुसज्जित
दीनदयाल जी की मूर्ति

सांस्कृतिक कार्यक्रमों के लिये
माधव-स्मृति का मंच

माँ सुशीला वात्सल्य मंदिर का प्रस्तावित भवन

पटकुटी शिविर लगाते छात्र

CHANGE - 'THE ETERNAL LAW OF NATURE'

Sumit Tandon, 12th 'B'

Change is the eternal law of nature. In this world there is nothing which does not change. We change everything according to our needs and conditions. The same applies to our customs, beliefs and values. Many people say that the society has changed very much and it is not good. But how can we live in modern age with old thoughts ? How should we adapt our moral values and social duties, is a burning question of today.

The society of India has undergone a great change since independence. people are being more and more self centered and are drifting away from our cultural traditions. But it is not true that there is downfall in every field. We love our motherland more than our lives, it is well known. But in modern age the life of a common man has become more busy. So he does not get much time to think about society. But the foundation of a long-lasting society is an understanding of the feelings of others.

Our country is a developing country in the world and we have many chances to secure our place in the list of developed countries.

There are many challenges before us as dowry system, exploding population, lack of education, corruption, unemployment and the biggest problem is poverty and corrupt bureaucracy. We have to face all these. In this situation it becomes more difficult to ameliorate the condition of our country in the world.

We should look at the Western countries and other nations like China, who have faced the same situation some time ago.

If we can get an honourable position in the world by adopting strict measures, then it is not a bad deal. But we should not follow the west blindly. Some people say that there is a great degradation in our morals but they do not try to understand that the conditions have changed.

People think that television movies, internet, fashion and new tradition of Western life style are the main reason of downfall in our values, but it is not the complete truth. People watch television and movies for entertainment and very few people take them seriously so as to be affected. Internet is the life of domestic and international business of the world today and a great source of knowledge and entertainment. Every dark cloud has a silver lining. So we should sacrifice the harmful effects of internet and the youth must be aware of these vices of the net. What is desired is a judicious acceptance of modern amenities.

The busy life of man needs some joy and entertainment. On the one hand we become happy when Deepawali is celebrated at 'The House of Commons' and on the other hand we march against the Western festivals. It is not fair. Today we are in the age of globalisation. We should also enjoy the traditions of west lightly and these activities gives us freshness which is necessary to relieve us from the tedium of hard work.

In this way, we can say that there is downfall in our values but not as much as it is being cried about.

Indian society is passing through an age of transition. The Western society also has passed through the same stage a century ago. And if we adopt a broad minded outlook we shall be able to save our values, morals and customs and may regain the position of 'Jagadguru'.

But we should remember the lines of Tennyson.

"The old order changeth,
yielding place to new,
and God fulfills Himself in many ways,
lest one good custom should
corrupt the world."

❋ ❋ ❋

NEED OF TECHNICAL EDUCATION IN INDIA

Abhinandan Tiwari, 10th

Technical Education is a necessity of modern economy. The European countries have industrialised themselves to a very great extent. It is all due to technical education. Today every article of necessity and use is manufactured by machines. These goods are far better and cheaper than hand made goods. Hence their demand is greater. Only a few persons like to use hand made goods. In reality none likes to use or buy things at a higher rate.

The people of our country do not realize the importance of technical education. They are busy in producing raw materials such as cotton jute, hide etc. Other nations use them and sell articles made of them at good rates. Thus our country has become a market to import finished goods and exports raw materials.

Our present system of education is very defective such an education produces mere clerks who can do nothing but work in office. The B.A.'s and M.A.'s have no market for themselves. The problem of unemployment is simply depressing and the hollowness of the present education is mercilersaly exposing our economy to the dearth of the technically trained persons. Thus the need of technical education is quite clear.

For India it is high time to start technical education for we are now free and want industrial re-organisation. For this purpose we may send some of our enthusiastic workers to foreign countries to receive technical education so that our standard of living may be high.

❋ ❋ ❋

THE KINDNESS OF LINCOLN

Abhishek Kumar, VI-A

Lincoln was honest in all the walks of life. When he was practising as a lawyer, a man brought a case to him which he refused to accept because he felt that the man was a cheat. A poor widow with six children to rear had inherited six hundred dollars from a relative. This man would deprive her of this sum. Lincoln looked at the man and said, "Do you want me to make that honest woman's life miserable ? Imagine her plight if you were to deprive her of the little support, she had got. I would advise you to earn this amount in some more honest way. These words had the desired effect. The man felt thoroughly ashamed of himself and went away.

❄ ❄ ❄

ATOMIC POWER : BOON OR CURSE

Prateek Singh, XI-A

Pt. Nehru said about science, "Life today is governed and conditioned by the off shoots of science and it is very difficult to imagine existence without them."

The modern age is the age of science. Science has made impossible things possible. It has changed our ways of living and thinking. There is no sphere of life where science has not influenced us. So we can say that Science is very useful to us in every walk of life.

In every corner of the world science is influencing everybody continuously. Electricity, Medicines, Transport, Atomic power, computers and many more are impacts of science in the world.

Now I want to write something about Atomic Energy or Atomic Power. Because now a days it is full of hope as well as danger. In the human life, great change has been brought by the discovery of atom. It has revolutionzied the whole thinking of man.

When we think of the atom, we think only of destruction. But it is not only useful in the war. It can be used for the service of mankind. So Shakespeare was perfectly right when he said, "Nothing is good or bad in the world but thinking makes it so." There are two sides of atomic power, one is bright and second one is dark. First is the bright side. Atomic Energy can change the earth into heaven. It can be used for creative and peaceful purposes. The earth itself will be healthier and happier. Atomic Energy can change the face of the earth. Deserts of dust and poles covered with ice can be turned into shining lands with colourful vegetation. The climate can be made more wholesome and comfortable. Atomic Energy can cure painful diseases which were considered incurable. Atomic Energy can preserve food for a long time and food can be produced in laboratories without any

dependence on crops and soils. Electricity can also be produced from Atomic energy. Atomic energy can do all the hard work for man. By this mills and factories will do more work.

If there is a bright side of it, its darkside is also present. Atomic bomb is used in wars. In an atomic explosion lacs or crores of people can die in 1 or 2 minutes.

Hiroshima and Nagasaki are the examples of it, when America attacked Japan in the second World War.

Prof. Joad said, "Science has given us powers fit for the Gods, yet we use them like small children."

We should use the power of science wisely like a man and not foolishly like a monster. Then we will be able to make human life more happy, comfortable and prosperous.

❋ ❋ ❋

IS SCIENCE RESPONSIBLE FOR POLLUTION?

Abhinav Chib, IX-B

Any type of sequencial and systemetic knowledge of any subject is called science.

Some harmful elements which damage the atmosphere cause pollution.

Pollution is the main problem of the world. There are several types of pollutions in the world :

1. Air Pollution
2. Land Pollution
3. Water Pollution
4. Sound Pollution
5. Nuclear Pollution

Our atmosphere is being ruined by these pollutions. We may suffer from many disease Trees which are being cut speedily, give us oxygen. So, it is necessary to save trees.

Progress of the science is very fast, science is omnipresent. We get locomotives, spaceships, tanks from science so, science is responsible for smoke. But only science is not responsible for pollution, it is the misuse of science that is causing problem.

Nothing is good or bad
But thinking, makes it so

So, the use of science should be such as will bring about some relief in the life of man and make his life easy.

❋ ❋ ❋

ART OF SPEAKING

Jeet Singh Arya, IX-A

Often we hear someone expressing his opinions, standing on a high stage, in front of a large crowd and inspiring the audience by the magic of his words. Then we think that we can also do it, but whenever we get any opportunity we fail. A few years ago I was also unable to do this but now it is a reality that I am a good speaker. To express your thoughts is also an art and we have to know about its basic requirements.

When we start any new work there is a fear in our mind. We think that, if we fail this world will laugh at us. A crowd can just laugh and find mistakes in others but can not do any creative work so we must have confidence that the work we are going to do is right. Confidence is the first step towards good speaking. We have to throw out fear from our heart and mind.

Good vacabulary is also a quality needed to be a speaker. A good speaker is one who can say a lot of things in limited words so our vocabulary must be strong. It is also important to improve the flow of words and sentences in speech.

Good memory and knowledge of different aspects of life and society is also required for a good speaker. If our knowledge bank is rich then we can select a good topic and can speak on any topic any time. By good memory we can also highlight all the facts of our subject. For it we have to read newspapers and magazines properly.

We have to understand the real meaning of any subject. Sometimes we see that a person who is speaking, is very far away from his subject. So it is important to go in the depth of the subject and search the facts of the subject that are the base for our speech. If the flow of the speech breaks down we have not to fear and be shamed rather we should get back our confidence and continue speaking. We have to think that we are the best.

And the most important thing is that we have to learn about the style of speaking from our elders and by our own experience to become a good magician of words.

If we imbibe these qualities then the stage, dias, mike and the applause of audience are waiting for us in a hall.

❋ ❋ ❋

MAGIC OF SCIENCE

Saurabh Katiyar-I, IX-B

We must be indebted to modern science because its magic has gifted us ten smart machines which are as follows :

(i) Micro Medical Device : Chew this capsule and then this capsule will take a round of body and find the disease. It will get the photo of the part of body which is in distress and

if need arises it can do minor surgery. Some capsules are so small that they can enter in blood veins and inject some important Drugs.

(ii) Cell Phone : In future without cell phone life can not be imagined. It also has the facilities of video confrencing.

(iii) Swinging, T.V. : Developed by sony this electronic machine can be hung in the neck. The card used for hanging the T.V. in the neck works like an antenna.

(iv) Security Machine : Mitsubishi Industry is inventing a machine for house, which has an electronic device, which not only safeguards the home, it safe guards our pet animals.

(v) Computer in Hand : The machine can be set in the fingers. With this you can search your file or web. Screen which is attached with the hand makes your work easy at any place.

(vi) Micro Factory : This industry of the future can be fitted on any table and with its help chips can be produced.

(vii) Electronic Book : This book looks like a good quality printed book, as per the need, the book can be made big or small. Not only this, if we are not in mood to read the book then we could hear it patiently. When we have read one book we can down load the second from the net.

(viii) A Robot which feeds you : By the name of 'feeding Robot' this machine will be a good friend of the handicapped. With the help of laser beam, it can be brought to the mouth level and when the button is pressed it can feed you.

(ix) Automatic Driving System : By pressing the switch, this will take the control of car in its hand not only starting it but it will keep some distance between another car and it self.

(x) Choker Walkman : For youth this walkman is very good. This is controlled by voice, and can play the song at your choice by your command.

❄ ❄ ❄

INDIA - THE JAGADGURU

Prateek Singh, IX-A "Bhartiya"

India is the name of the country that was Jagadguru, that is Jagadguru and will be Jagadguru. India is the centre of the whole world, India is the beacon of light for other countries. There are a lot of unique characteristics of this country. Uncountable adjectives and numberless specilities are for India Hindu way of life and Hindu culture is the epitome of human values.

I am a hostler in Pt. Deen Dayal Upadhyay Sanatan Dharm Vidyalaya. So I am fortunate enough to learn some features of Hindu Religion and Indian culture Pt. Deen

Dayal Upadhyay Sanatan Dharm Vidyalaya and Indian culture both are complimentary to each other. Our daily life is inspired by the Vedas, Epics, Upnishads, Purans, Ramayana, Mahabharat, Geeta, Ramcharit Manas and many religious texts. Now I humbly want to express my views on Hindu Religion and Indian culture.

India is the land of hermits and sages who divided the various phases of our life into four parts Brahmacharya, Grihastha, Vanprastha and Sanyas. Brahmacharya Ashram is the first step of success for life-style of Indians. Being a hostler I feel, this period is very important for every student. There are numerous examples of Indians who studied in India, meditated in India and became famous all over of the world. Swami Vivekananda is a glorious example of it. His philosophy is uncomparable. Pt. Deen Dayal Upadhyay is also a great source of inspiration for us. He said that he did not enunciate any new principle what he had said, had already been said in Indian culture before. But everyone had forgotten those things. So he was doing a recap of those thoughts. He gave a great philosophy about **'Integral Humanism'**. In our country there is a high place for spiritual works. In hostel life the importance of Indian way of life is immense. Because hostel life can make a man, self-dependent. By spiritual knowledge we can make our lives sublime.

By getting up early in the morning, we can achieve divine knowledge and become well versed in our culture, we should pray to God and meditate, so that we can come near God.

'God does not want anything, from us, he is supreme and he has all". - John Milton

By doing good work we can find the God in inner soul. Idol worship helps in reaching God easily. Because Idol worship is a unique thing in Indian culture. Swami Vivekanand said that he was also opposed to idol worship but when he came in contact with Swami Ramkrishna Paramhansa, he realized what Hindu Religion was about and it had become possible with the help of idol worship. When we pray in temples or meditate our mind we realize God and his supreme power.

Indian culture is broad and its specilities are easy to follow. Because we are not Bengalees, not Marathis, not Gujratis, not Tamils, not Andhras, not Oriyas, not Assamese, not Canarese, not Malayalis, not Sindhis, not Punjabis, not Kashmiris, not Rajpurs, but we are Indians, our culture is same, our ancestors were same, our literature is same. Main thing is that Greece, Egypt, Rome and many more civilizations were mingled in dust but Indian culture continues and will continue. Because it has unique qualities and spiritual knowledge is essential to develop the human soul.

We believe in soul and its upliftment. We are not living for Physical needs. We are a part of the divine soul. That is why India attracts foreigners.

At last I can say that we will never perish because of our spiritual strength. So I declare that we are proud to be Indians and I want to take birth again in India. May God bless India.

Jai Bharat

❋ ❋ ❋

IMPORTANCE OF DISCIPLINE

Rishi Kumar Dewedi, VIII-A

Discipline is nothing but obedience to rules for the good of society. It is, therefore, the habit of acting in accordance with certain rules. It is prompt obedience to the authority. of others. Discipline is necessary in every walk of life. The general good of the society depends on it. It is very essential for our progress so an individual has to sacrifice his own interest for the good of the society. It is needed in every field of human life. If the members of a family do not obey the head of the family, they will never be happy. There will be no peace in family. It is needed at the play ground. Players should obey the captain. A team can not be victorious, if each player plays according to his own whims.

It is very essential in an army. A soldier obeys his commander. It is his duty to obey the orders of his commanders. Lord Tennyson has said-

"There's not to reason why ?
There is not to question why ?
There's but to do and die."

No battle has been won by soldiers who were unruly and in disciplined.

Discipline is also very essential in schools and colleges. If the students do not obey their teachers, there will be no order in the class and efficient teaching will not be possible with out efficient teaching, results will not improve. As the student life is the career making period, it is but necessary that problem of indiscipline must be firmly dealt with. A nation can rise if the people know the values of discipline. No great work can be done with out peace and order. So discipline is absolutely necessary. Our country will not progress, if we are not disciplined.

Thus we see that discipline leads to prosperity and indiscipline creates anarchy. That is why Napolean once said : "United we stand and divided we fall."

❄ ❄ ❄

CRICKET THE SOURCE OF UNITY

Ashish Kumar, IX-B

Cricket is the only game which is famous in each and every corner of the world. Cricket has got immense publicity in India. People take a lot of interest in this game as spectators as well as players.

Almost the entire country is in the grip of cricket-fever. Numerous commercial companies are coming forward to sponsor the cricket matches. The whole nation has come together in the name of cricket. A few days back the craze for the world-up was

evident across the length and breadth of the nation. People want to see their country as champions. Indian from cities and villages are joining hands to wish good luck to the team. It has united our country and we are proud of it. Today, there is no doubt about the fact that cricket is the band that strongly binds Indians.

On the other hand, some people criticise cricket as an evil. They say that cricket is a wastage of time. But in my opinion everyone has a right to pursue his interests.

If cricket is a unifying band then why should me criticise it? Why not breed healthy competition and let the fittest survive ?

***

THE STRUGGLE OF MISSILEMAN

Madhur Sachan, IX-C

A.P.J. Abdul Kalam had always been desirous of joining the "Indian Air Force' since his childhood. After graduating from 'Hindustan Aeronautical Limited' (HAL) Kalam went to Air Force Recruitment authorities Dehradun for interview. Kalam was excited but nervous; confident but tense. He could only finish 9th in the batch of 25 examined to select eight officers for commissioning in the Air Force. Kalam was heart-broken.

It took him some time to recover from his set back. In the meantime he met a hermit 'Swami' Shivanand at Rishikesh; who gave a new orientation to his life. Swamiji said, "Forget this failure, as it was essential to lead you towards you destined goal."

These inspiring words gave a new hope to him and he was able to recover his self-confidence. He began to pursue his goals in aeronautical engineering.

Later Kalam was selected in Directorate of Technical Development and Production department in the ministry of defence. Kalam did an excellent work in the field of Missile Technology of India and now he is the honourable President of India. Indeed, we are proud of this great son of India. Kalam ! We salute you !

***

GOING INTO SPACE

Himanshu Mishra, IX-A

What is space

The earth is surrounded by air. The place beyond this layer of air is called space. All heavenly bodies like the moon, the planets and the stars have the power to attract objects towards themselves. A heavy star or a planet has a greater force of attraction so also our planet earth. The force of attraction or pull of earth is called earth's force of gravity. It is because of this force that a stone thrown up in the air always falls back to the earth. The

earth's gravitational force is six times more powerfull than the gravitational force of the moon. That is why it is not easy to get out of the earth's pull and escape into space. We need special machines which have the power and speed to take us away from the earth's, gravitational force. There are 'space rockets' which are used to put space crafts into space.

Man on the Moon

It was one such space craft that took the man to the moon in 1969. This machine was called Apollo-II and first human being who stepped on the moon was Neil Armstrong. The words he uttered after landing on the moon were that, "It is one small step for man but a giant leap for mankind" Edwin Aldrin and Michael Collins also travelled in the space craft with Neil Armstrong.

Life on the moon

The real moon is very different from the moon, we have known in stories and poems. There is no water and air on the moon. There is no life on the moon there are no plants and animals. The moon's surface has hung patholes called craters. Since the gravitation pull of the moon is less than the earth. You weighton the moon will be 1/6th of your weight on the earth. It Neil Arm strong weight 60 Kg. on the earth, he would have weighed 10 Kg. on the moon.

❋ ❋ ❋

MILITARY TRAINING

Rajeev Ranjan, X-C (N.C.C. Cadet)

The state is responsible for safe guarding and protecting the nation from internal as well as external dangers. Military force is an essential factor for a state to fulfill its aims. Military force is necessary to maintain law and order in the society. It is also necessary for national defence.

India won her freedom after centuries of foreign rule. She has to safeguard it any cost. From this point of view military training is essential. A strong force can be built up by giving military training to the youngmen of the country.

Certain measures are necessary to achieve this goal. All the able bodied and healthy boys and girls of our schools and colleges must be given compulsory military training in our country. Thus military training should be made a part of our education system.

At present the government is doing its best to give military training through N.C.C. But it should be made compulsory. Military training makes a man well disciplined and alert. It makes a man smart and brave. It also build's a man's character. It is wrong to think that military training teaches violence. Military training is meant to protect and not to kill any one.

❋ ❋ ❋

AN IDEAL TEACHER

Abhishek Kumar, VI-A

There are men and men

Every stone is not a Gem

Good teachers are very rare. They leave a permanent impression upon the mind of young scholars.

An ideal teacher is not heaven born. He is very much earthly but he possesses heavenly qualities of head and heart. He is a friend, a philospher and a guide to his students. He is a master of his subject. His knowledge is vast and deep. He reads every new book that deals with his master subject. His shares his knowledge with his students. He not only teaches them, but also inspires and enthuses them. His impressions are striking and always drive home the lessons that he teaches. He loves students like a father and forgives them like a mother. He is full of concern for them and tries to understand the difficulties. An Ideal teacher deals with the students sympathetically. He tries to shape and mould their character both by examples and precepts.

His ideas are bright. He is discipline minded, his discipline is real and genuine. It is not the discipline of the rod, it appeals always to the heart. He always respects the personalities and sensitivities. He always encourages the students. He bears with their failings and short comings. He controls the students with a smile and jokes. He tries to win their love and confidence. he rightly believes that the correct approach to the formation of good habits, good morals and good physical health is education. Such teachers are the crying need of India.

❋ ❋ ❋

MALI KAKA

Ashish Kumar, IX-B

Man is mortal. Every man who comes in this lonely world must die. Most of the people pass an insignificant life. But a few others leave a deep impression by their acts. Our Mali kaka left an indellible impression over all the students.

In his youth he joined a Christian school as a gardener. He rendered remarkable services in that school upto 1987.

In the same year he came to our school with our art teacher "Shree Anand Verma". He was famous among the students as "Mali Kaka" but his name was "Sukhai." He started

working pain stakingly in our school. His aim was to beautify our school with flowers and plants and this he performed wonderfully. He managed all the expenses of the garden by selling seeds and saplings. In his transactions he never tried to cheat others.

In the month of Augst in 2002, he fell ill. Some ex-students of our school, who are doctors now, treated him. After some time he recovered and joined school but he was not totally fit. However, he was regular in his work.

"Work is Worship" was his motto of life. He also said that "A man becomes lazy by rest." He worked in the scorching heat of the sun as well as in the severe cold. On 13th Dec. he left the world for his heavenly abode. In the evening we received the news of his demise with a great shock and grief. The news filled our mind with emotions. The entire school observed mourning.

The next morning when I was plucking flowers for offering to God, I realized that Mali Kaka was with us in the freshness and fragrance of flowers. He will continue to live through the plants that he has planted in the school campus.

❋ ❋ ❋

RIDDLES

Arpan Awasthi, IX-B

(1) What starts with T, ends with T and is full of Tea : Tea Pot

(2) What has four legs and back but no body : Chair

(3) What do you find only once in a room but twice in every corner : Letter 'r'

(4) What flies without wings : Time

(5) What is full of holes and yet holds water : Sponge

(6) What weighs almost nothing but you can't hold it :Your Breath

(7) What goes up and never comes down : Your age

(8) What is if that belongs to you but is used by other people : Your name

(9) From what can you take the 'whole' and still have some left: Wholesome

(10) Name the bird that is heaviest in weight : Crane

❋ ❋ ❋

MATHEMATICAL MARRIAGE

Sudhanshu Shekhar, IX-B

Hello "Trignometry",

Hope my letter finds you in the pink of health and cheerful spirits. After doing long calculations, I have come to the conclusion that it will be nice if my son zero and your daughter Infinity get married because Mr. Zero and Miss. Infinity both are old friends and you also know that they are complimentary to each other. This fact is proved by this :

Any Digit/Infinity = Zero

Any Digit/Zero = Infinity

Although, both of them have some evils. My son is also the enemy of students. They call him by the name of 'egg' whenever, zero is multiplied with any large number, then zero always gets victory. He eats all numbers and rules them all. On the other hand, your daughter, Infinity also has a charm and her activities are better than those of my son. Whenever, she starts to walk, then there is no end point.

After seeing, the above qualities, I think that this pair is matchless. You inform me quickly after seeking the advise of your husband Mr. Formula and his brother Mr. Logarithm. So that the date of marriage can be fixed after consulting the Pandit named Mathematician and it will be registered in the office of university. So that it is easy to get a certificate.

I hope that your uncle Mr. calculas will return from the journey of differenciation and integral. Rest is fine convey greetings to your daughter Miss Infinity and Miss Co-ordinate from my side and my wife Statistics. Also pay regards to Mr. Arithmetic and Mr. Graph.

Waiting for your reply in anticipation.

Yours multiplication and division,

c/o Mr. Algebra,

Mathematics Colony

10, Angle Crossing,

Dynamics Street,

Calculationpur.

❋ ❋ ❋

INDIA : NEED FOR RETROSPECTION

Nikhil Suman, IX-B

What is the national game of India? When you put this question to an illiterate Indian child, it is impossible to find out the right answer. Most of them will answer that it is cricket. There is a very long story behind this fact.

We know that cricket was brought to our country by Englishmen. Slowly, rich men of India also started playing this game. Some Indian cricketers played in the English team before independence.

After freedom 'Hockey' was declared to be our national game. Major Dhyanchand took Indian Hockey to a place of prominence, and made hockey very popular among Indians. Cricket was in its infancy in India at that time. Slowly, one day international were also introduced along with test cricket. This was the main factor of the popularity of this game. World Cup for one day cricket had just been organised and India also participated in it. In 1983, the third World-cup was held and by good performances of our players and some good luck our team was able to win it. This was the time when televisions were available in India and the matches were watched by millions of Indians. Cricketers became stars and the rich prizes won by them attracted the youngsters to this fantastic game. Today, India is an important cricket playing country. Good cricketers like Sachin Tendulkar, Rahul Dravid and Saurav Ganguly are heroes of India now.

Victory in the World Cup 1983, was a turning point for cricket in India. Some poor results in Hockey were sufficient for the expansion of cricket in our country and slowly, it became the most popular game in India.

Like all Indians, I am also a cricket fan but I am not happy with the conditions of Indian teams in various other games. It is pathetic but true that, a lot of money is being spent over cricket but not a half is spent over hockey, football and other games. A lot of our country men have to support Brazil, Germany and other countries in World Cup Football because our team is not even capable of qualifying in the tournament. Dhanraj Pillai in Hockey is a single name whom ordinary Indian knows today. Our national game is in its last stage in our country.

Its true that cricket unites the whole country but it can be done by other games also. Other games should also be encouraged and our sports committee must try their best for this. Then, the day will not be far when the trophies of World Cup cricket, World Cup Football and other World Championships shall be ours.

❋ ❋ ❋

HOW DO ATMs WORK

Seema Mishra, (Teacher, Deptt. of Computer)

Today the upcoming word is Information Technology. It is ingenuity and perseverance that helps the man to become master of information technology.

Have you ever imagined that you are in market and you have 5000/- in your pocket but you want to buy a thing which costs 8000/- and you need it very urgently, for that you have to wait for the next day to take out your money from the bank but if you get a facility to access your account as and when required then it will be a miracle for you.

Yes ! it's true that you can access your account as and when required. There is no boundation of day & night. If you are in a different city even then you can access your account. It is all because of ATM.

An Automatic teller machine (ATM) performs simple banking functions such as deposits, withdrawal, cash dispensing and transfer between accounts.

An ATM is a terminal connected via telephone or dedicated telecommunication lines to large computer system that identifies the user's account on the basis of identification data stored in a magnetic strip on the back of a plastic ATM card commonly known as credit card. The user operates the system using an exclusive personal identification (PIN), assigned to him or her.

An ATM includes four main computer controlled components which handle the entire processing of ATM transactions. When the user inserts the credit card into the machine, and enters his PIN, one of the components of ATM accepts or dispenses the card. Before allowing transactions, the ATM verifies the user's PIN with in 30 seconds.

The second component stores transaction records in an auxilliary storage controller. The third component communicates with other computers for checking the user's account balance and the fourth component synchronizes the work of the other three.

The entire processing of ATM transactions is handled by dedicated minicomputers with specialized programming capabilities housed in the bank. When the transaction is complete, an ATM releases cash up to a certain amount. Later all these transactions are updated, so that the bank can track the net inflow or outflow of cash.

So, friends the days of money hassles, of long queues and risks are over. Your ATM card is waiting to assist you for loads & loads of shoping.

It is no magic from the bolt of the blue. It is the gift of the fertile brain of man for the benefit of man.

❋ ❋ ❋

MY HOBBY - PHILATELY

Romil Kapoor, IX-C

Hobby is a leisure-time activity persued for pleasure by a man. Leisure time means the time when a person is free to enjoy himself. Hobbies are pursued by people to enjoy or to keep them busy when they have nothing to do. Hobbies are of different types. Some people have a hobby of collecting things e.g. - collection of stamps, coins, historical things.

To have a hobby means to be devoted to that work. Whenever you get anything related to that work you must procure it I have a hobby of collecting stamps I enjoy this work as I take pleasure in doing it because it is a source of gratification for me it is also full of adventures.

To do this work you must have good relations or must have friendship with those who also have same hobbies. This helps in exchanging stamps which would help in increasing your collection. You can also contact the Post Office regularly. From there you can have a new one very fast but this kind of facility is very expensive. A person who pursues this hobby is called a Philatelist. By collecting stamps we can learn a lot about history and Geography of other countries.

This is a kind of hobby which can be enjoyed without having any special ability. I myself have great interest in my hobby. I remember the moments when I was filled with joy whenever I got any stamp by any source I am also helped by my father and sister as they let me collect different types of stamps which they obtain from different sources. I think now you must have understood the method of collecting and the excitement, adventures and also the value of it. This is a kind of collection that lasts till death.

Now, before I stop my pen I am sure, you must have realized the importance of having a hobby.

❋ ❋ ❋

POSITION OF WOMEN IN ANCIENT AND MODERN INDIA

Gaurav Katiyar, XI-A

Napolean once said :

"Give us good women, we will have a great civilization,

Give us good mothers, we will have a great nation".

Man and woman are two wheels of the cart of life. One cannot exist without the other. Men make society and women make men. It is the women on whom depends the progress of any country.

In the Vedic Age, women, enjoyed a place of eminence in society and participated in social and religious activities. Gargi, Apala, Maitreyi were some of the famous scholars of their times.

During the epic period, women in India were held in high esteem. The glorious names of Kaushalya, Anusuiya, Sita, will always be remembered for nobility and strength of character.

The position of women began to decline during the Buddha Age. They came to be considered inferior to men.

In the medieval period, due to the invasions of Arabs and Turks the condition of women became more pitiable. Purdah system; early marriage, blind faith, illiteracy and superstituons confined her within the four walls of the houses. She was kept away from the main stream of public life.

In modern India, the condition is rapidly changings. Owing to the efforts of Raja Ram Mohan Roy, Jyotiba Phule, Ishwar Chandra Vidyasagar, Swami Dayanand etc. In the freedom struggle women played an active role. She fought for the country and made great sacrifices.

Today, women have made a mark in all walks of life. Education among women is spreading rapidly girls are not behind boys in political, social and technical fields. Women have proved their excellence. They are adopting challenging careers. They are active as police officers, army officers, pilots, scientists, business women and the list is endless. Recently, Kalpana Chawla emerged as the proud face of Indian Woman.

We owe, our existence to our mothers and they are the builders of society .

It has been rightly said -

"The hands that rock the cradle, Rule the world."

❋ ❋ ❋

INFLUENCE OF THE CINEMA ON INDIAN SOCIAL LIFE

Shobhit Awasthi, VII-A

"A film must reflect the basic truths of our day to day life. It should be the mirror of our social and moral activities." - Pt. Nehru

The cinema has a very important place in modern life. It is the cheapest and the most popular form of amusement. In every large city, there are several cinema houses. They are mostly full. Young and old, men and women, all like to enjoy it.

Different people have different views about the cinema. Young people think that cinema is a pleasure garden. The married couple think it is the best source of recreation. The very old and the moralists dislike it. They think it as an evil.

The cinema is an important means of recreation. Men, women, old, young and children

are equally interested in seeing films. After hard work in the day, a visit to a movie removes our dullness.

The cinema has also great educative value. Its share in shaping and educating the public mind in different branches of learning, is certainly great. There are indeed many educational films. In the Western countries, the school-going children are taught many practical lessons in History, Geography, Chemistry and other branches of learning through them. In the same way, art, literature and religion can also be taught through the cinema. It is the best audio-visual aid.

The cinema is also an important means of publicity and propaganda. We are living in the age of science. There is a rapid progress in trade and industry. Much of the development work in the country is shown through the cinema.

The cinema suffers from many evils. All the pictures are not educative. Some pictures are obscene. Regular seeing of films makes an adverse effect on our mind, health, purse and time. It weakens our eyes. It has effect on public morals.

The other evil of the cinema is that it increases crime. People learn from it new methods of committing crime. The criminal films make an adverse effect on the young and undeveloped minds. Children learn many crimes from the films.

The standard of the Indian films is generally low. Modern films ignore high ideals and corrupt our taste. Every effort should be made to improve the quality of films. Greater attention should be given to enhance their educative value.

❋ ❋ ❋

TRUE HUMANITY

Saurabh & Vivek, X

Life is a hidden message,
Life is an unsolved mystery,
Life is a brief beauty,
Life is a daring adventure,
Life is an incomplete journey,
Life is an unextracted honey,
Life is a golden opportunity,
Life is a wide sense,
Life Stands for True humanity

❋ ❋ ❋

EFFECT OF COLOURS ON OUR MIND

- Compiled by Abhinav Omar, IX-B

Many scientific researches proved that colours affect our mind and colours control our personal attributes. Thus before choosing any colour, we should know about its effect.

The effect of various colours on our life is as follows :

S.No.	Colour	Effect on mind
1.	Dark red	Affection and sociability
2.	Medium red	Health
3.	Shining red	Wishing and yearning
4.	Medium pink	Softness of nature
6.	Dark Orange	Desirous
7.	Medium orange	Struggle and zeal
8.	Light Orange	Speed
9.	Dark Brown	Suitability
10.	Medium Brown	Maturity
11.	Medium Yellow	Goodness
12.	Light Yellow	Wisdom
13.	Dark Yellow	Inspiration
14.	Dark Medium Yellow	Kindness
15.	Light Golden	Charm
16.	Medium Golden	Prosperity
17.	Dark Gold	Luxury
18.	Medium green	Freedom loving
19.	Dark Green	Simple hearted
20.	Dark Medium Blue	Idealist
21.	Dark Blue	Honesty
22.	Light Blue	Peace loving
23.	Light Medium Blue	Kindness
24.	Light Purple	Softness
25.	Dark Purple	Prosperity

We can make our personal life much attractive and effective by choosing the suitable colour.

❋ ❋ ❋

H.I.N.D.U.

H - Humanity

I - Individuality

N - Nationality

D - Dignity

U - Unity

"Life is no brief candle - it's a splendid torch."

* * *

BHARAT MATA IS GREATER THAN MY MOTHER

Amit Mayank, VIII-A

The word 'Bharat Mata' means the mother of those people who live in India. But the word mother means the mother of some children. The duty of a mother is to bear and nurture, but our development depends greatly on our Motherland. The motherland bore our mothers and then we came into the world. Therefore my motherland is greater than my mother.

The essential thing for a human beings to be alive is food, shelter and clothing. All these things are not possible without our motherland. We can not do anything without land. For food we need land. Factories for making clothes need land. Houses can be built only on land. In every aspect of our life our motherland plays a vital role. From birth to death we get all support by Bharat Mata. We earn knowledge and become praise worthy in the society. This shows that the duties of Bharat Mata are greater than those of a mother.

In the epic Ramayana lord Ram had said :

"जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी ।"

This sentence means that the place where we are born is greater than the heaven of God.

Any person who comes in the world has two mothers. On the one hand is the mother who bears us and on the other hand is the mother who protects us. The second mother is called Bharat Mata. There is a sentence in our morning prayer and that is :

विष्णु पत्नी ! नमस्तुभ्यम् पादर्स्पं क्षमस्व में ।

This sentence means that we request our motherland to forgive us for standing over her and touching her by our feet.

We respect our mother. We can sacrifice everything to save her honour. In the same way we should also protect Bharat Mata. Mother gives us birth. She serves us and she may die but Bharat Mata is immortal. Indeed Bharat Mata is greater than my mother.

* * *

FAILURE PRECEDES SUCCESS

Nitin Pratap Singh Somvanshi, IX-A

The title may appear strange to you but I chose it after giving it a proper thought.

One day when my friends were writing their articles for the school magazine.

They told me to write an article.

I wanted to write an article but I could not think of a topic to write on. At last I decided to write about 'Farewell of a daughter.' This story is given in my Hindi book. I translated it in two hours. Having completed the translation I gave this article to my English teacher as my original composition. Next day my English teacher called me and reprimanded me. She said that I had copied that article and hence it was rejected. When I heard these words I has shocked and I felt very disappointed. I thought that my two hours had been wasted. I decided not to give any article in future. The same day in the English period my teacher told us that we should never be disappointed if we do not get success in spite of hard work. Later at home I thought that she was right. If I do not write an article in future I would lose my talent. So I changed my decision and decided to write another article.

In this way when my first article was rejected, I became very angry but when she encouraged me, I wrote this article.

***

N.C.C.

Surendra Mohan Singh, XI-B (N.C.C. Cadet)

The aim of N.C.C. is to keep us mentally and physically fit. It tells us the ways to maintain discipline. It gives us information about our day to day life.

We can get information about various guns such as .22, .303, L.M.G., S.L.R. etc. we also know about the range and the maximum bullets that can be used in them. We can get information about the various parts of each gun and to open and assemble them.

We are told how to control our temper. We are given a new energy to fight the enemies which are hidden in the society. It makes us alert and with this quality we are always ready to deal with the enemies and we are never afraid of any body.

I was very happy and overjoyed to join and become a cadet of N.C.C. But I was a little afraid to see my seniors working hard and the punishment by the instructors were intimidating. But keeping all these ideas aside I joined it whole-heartedly.

My A.N.O. Lieutenant Shri Prakash Ojha is a very jovial person. He is a very practical man. He is also our Physics Lecturer. We all respect him, we really enjoy his company. He plays both the roles with full excellence.

Really the role of N.C.C. is immense. It is very useful for our career. If we complete an N.C.C. training and get A, B and C certificates, we get 15 marks in any competitive exam such as A.F.M.C., I.I.T., N.D.A., IAS, Merchant Navy etc. Each A, B and C certificate consists of 5 marks.

Once I went to a camp in Chakeri (Kanpur). It was for 10 days. We got up at 4 O'Clock and we were made to exercise till 8 O'Clock. We got a special chance to see the Aeroplanes and we enjoyed the camp.

Another enjoyable thing which I like is the distribution of refreshments which we get after each Parade. We get somasa's, sweets, and Rasgollas etc.

Really I joined this because the gate of all defence services are wide open for cadets who have completed C certificate. I will get a golden chance to work for my loving mother land.

"It is sweet and glorious thing to die for one's country." - **Horace**

❋ ❋ ❋

STUDENTS & SOCIAL WELFARE

Arpan Awasthi, IX-B

Students worship the goddess of learning. They should devote all their time & energy to obtain knowledge so that they may be well equipped to perform, their duties and fulfill their obligations. But no student can study for all of the twenty four hours a day. He has to have some leisure. This he can spend in various productive ways. Students are youthful people full of energy & idealism. If their energy is channelized properly and they take to social service they can do quite a lot for the upliftment & welfare of the poor, the backward & the unfortunate.

If the students are interested in social work, they can devote an hour or so everyday to help & educate the poor people, on principles of health, hygiene & sanitation. An example is better than precept. They can clean dirty & unhealthy places in villages. They can hold night classes for adult education.

The condition of our hospitals is very bad. Patients are not properly attended to, & their relatives attending on them have no place to live & cook their food. The hospital premises are not properly cleaned. Students can do quite a lot to improve hospital, and school compounds & their surroundings.

We have floods & droughts in our country. During floods millions of people lose their homes & property. They become homeless & poor. Their village are marooned & cut off

from the rest of the country. They have to be saved by means of boats & food has to be sent to them. In epidemics like malaria, small pox & Cholera people die in thousands for want of proper health & proper treatment.

Students are a mighty force in our country if they are organised & inspired by worthy & noble leadership, they can do miracles, they can do a lot for the betterment of the poor & the down trodden.

"Crafty men condemn studies; simple men admire them; and wise men use them."

-Francis Bacon

❋ ❋ ❋

DEFINITION OF DISCIPLINE

Saurabh Katiyar, IX-B

What is Discipline?

It is very difficult to Answer this question. In a simple way we can say that Discipline is the back bone of good education. There can be no education without discipline.

Discipline means doing whatever We are told to do in a very systematic manner. There are some examples of Discipline, the sun always rises in the east and sets in the west. The moon rises at night. The season come and go at the proper time. Definition of discipline is essential in student life; student will also not simply believe this fact because this is an abstract fact and we are students of maths and science, we donot understand the language of fable or speech. So, I will give you an example that will give you a complete definition of discipline. Let's see :

That is a magic of alphabets and numbers.

A, B, C, D, E, F, G, H, I, J, K, L, M, N, O, P. Q, R. S, T, U, V, W, X, Y, Z

1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9, 10, 11, 12, 13, 14, 15, 16, 17, 18, 19, 20, 21, 22, 23, 24, 25, 26

See here minutely,

D + I + S + C + I + P + L + I + N + E = DISCIPLINE

and yet put the value of these alphabets.

4 + 9 + 19 + 3 + 9 + 16 + 12 + 9 + 14 + 5 = 100%

so, Discipline = 100% success

so, Discipline is that thing which gives us '100% success.'

❋ ❋ ❋

1947 A RETROSPECTION ... DOWN THE MEMORY LANE

Sharda Rao, Teacher-Deptt. of English

We look before and after
And pine for what is not
Our sincerest laughter with some
pain is fraught
Our sweetest songs are those that tell
of saddest thought.

Indeed the above lines of Shelley sum up the reality of our lives. Dear readers through this article I wish to take you down the memory lane where I am reminded of my childhood reminiscenes of my doting grandfather LATE SRI SHIV SHARAN SHARMA. I vividly remember him sitting forlorn thinking about his homeland - BHAUN a town in West Punjab now a part of Pakistan. Born on 13 December, 1909, to Pt. Gauri Shanker and Mathura Devi, he joined National College Lahore in 1926 where Bakshi Tej Singh and he were the only two students who passed out with honours in graduation. He often narrated to me the incident of the brutal attack by the British on Lala Lajpat Rai and his legendry speech at Mori Darwaza, just a few hours before his death; a speech that was heard by dadaji in person.

In the year 1930 my grandpa came to Kanpur at the behest of the renowned Lawyer Babu Vikramajit Singh Ji and joined as a teacher in B.N.S.D. College Kanpur. His parents and other members of the family continued to stay in West Punjab, now a part of Pakistan. It was the year 1931, the month of March-Bhagat Singh, Rajguru and Sukhdev were sentenced to death and the date of execution was 24 March but the brutal British government carried out the execution on the night of 23 March Babuji was present in Lahore at that time. The ghastly act of the British Stunned the entire nation; the newspapers of Lahore condemned the act by leaving the front pages Black and Blank. Punjab was immensely shaken. The Congress Leaders were interested more in serving their vested interests rather than in striving for independence. Riots were breaking out in various parts of the country but Ghandhiji completely failed to judge the disruptive moves of the Muslim League. Punjab began to burn; people began to look at the other communities with doubt and suspicion. Punjab the fertile land, the land of great warriors, the land which was the first to face any external invasion was facing the threat of disintegration. What was in store for the nation? Already the demand for a separate nation for Muslims was in the air. Tension was mounting day by day but the pseudo-secularists, the so called non-violent leaders were suffering from an Ostrich Syndrome.

The congress eventually failed to convince the Muslim League to withdraw its demand

for a separate nation. The nation was doomed for partition. The picture was very hazy. People did not know how the partition of their motherland would take place? They could not digest the fact that they would have to leave the land where they were born, where they had been nurtured; where lay their fond memories of life. Dear readers, it would be very difficult for me to recount to you the sense of irreparable loss felt by the people who lived in the areas that were to be transformed into a new country named PAKISTAN friends ! the birth of PAKISTAN was not just a political decision by the British in collusion with the Congress and the Muslim League. It was the trampling under foot of the tender feelings of Lakhs and Lakhs of innocent Indians, who could never understand as to why they were deprived of their right to live in the place of their birth-the place where their ancestors had lived for centuries. But the power-hungry politicians were hell bent upon dividing this glorious land-Our India.

The tragedy of the PARTITION OF INDIA could not be averted. Suddenly people living in the areas of West Punjab and East Bengal were ordered to vacate their houses, lands and properties. The shocking news came as a deathblow; many people died of the shock and the rest fell victims to the most horrifying riots that ever broke out in the history of India.

Many members of my family had to flee for their lives. I heard the horrifying tales of the torture that the Hindus and Sikhs had to undergo from my grandparents. The rioters compelled the non-muslims to embrace Islam failing which they were beheaded. Infants were snatched from their parents and put to death in front of them, in some cases the parents were forced to eat the flesh of their own children. Friends, it is a true description of the atrocities committed on the Hindus not in the medieval period but in the year 1947 described as the year of independence. Is it not a shame that when Lakhs and lakhs of Hindus and Sikhs were struggling for their lives and the honour of their womenfolk; the leaders in DELHI were celebrating the independence of the nation and the irony is that the so called freedom struggle of the CONGRESS was proudly proclaimed as a bloodless revolution. How could the leaders and even the Indian citizens be so heartless as to forget the blood-curdling and traumatic carnage that took place in the name of Partition. In its festivities the nation forgot that for some Indians Independence Day meant the day of exile from their own motherland. Our country was brutally hacked into two parts....

EAST PAKISTAN & WEST PAKISTAN. How could the CONGRESS ever agree to the partition of our nation?

Who gave them a right to desecrate our motherland? Why was the nation not taken into confidence before agreeing to the shameful partition of India. I am sure the readers of this article will join me in the vehement criticism of the stand taken by our leaders regarding the fate of the nation. It seems they were too hungry to grab power even if it meant the fragmentation of the nation. History will never forgive the power hungry politicians for their

treacherous act and the souls of the victims of partition shall never rest in peace. I belong to the third generation of the people who were the unfortunate victims of the great national tragedy of 1947. The bitterness exists in my mind and shall persist forever because never in my life shall I be able to see the place where my ancestors belonged. Though my paternal family has been in Kanpur since 1931 the memories of our homeland Bhaun a district near LAHORE continues to haunt us and shall ever be treasured by us. But never shall we be able to forget the unforgettable blunder of a few heady politicians who pawned their own motherland.

❋ ❋ ❋

INDIA OF MY DREAMS

Navneet Kumar, VII-A

We all have dreams. I also have a dream. I dream about my motherland, India. I want India to be the most powerful country of the world. For this we will have to get rid of superstitions and adopt new and progressive ideas.

I want leaders like Tilak, Subhash Chandra Bose and Pt. Deen Dayal ji to guide us. The present day leaders are very selfish. They think of earning money by hook or crook. They are greedy and scheming. They have no time to think about the problems of our nation. I want India to be led by leaders who are selfless and genuine, leaders who do not indulge in corrupt practices.

The country should be made free from corruption and terrorism. Our leaders must take decisions in the interest of the public. The public should be educated so that democracy can function well. Employment opportunities should be increased so that people do not tend to become corrupt.

Villages should be linked through information technology and Green Revulation should be made a reality. I have a feeling that one day my dream will come true with the rising sun of the morning, a new hope will make India a great nation.

❋ ❋ ❋

KALPANA WE ARE PROUD OF YOU

Vaibhav Dwivedi, IX-A

She was going to space,
To see that place.
She was keen,
To see the scene.

I am very disappointed by her death.
I am in awe of this fact.
Great grief is hidden in my heart,
Is her death a real fact?

Scientists never die,
They are always alive,
They and their acts,
Will forever in our memories abide.

❋ ❋ ❋

FRIENDSHIP AND FRIENDS

Jeet Singh Arya, IX-A

Friends are our life's part,
Friendship rises from our heart,
Heart's answer is never wrong;
Friendship is life's beautiful song.

Story of the friends is very old,
friends are precious than gold,
friendship never looks for gains,
friendship is just for true friends.

❋ ❋ ❋

THE INVINCIBLE INDIAN ARMY

Pratush Pranjal, VII-A

Some Pakistani dragons,
sneak across the border
to disturb the peace
of my dear country.

But Indian army is great
It is strong, powerful and alert
They fight on Border with
Courage, devotion and dedication

Kargil is the testimony
to our brave fight
We showed the Pakistanis
the way to their rout

My Country stands strong and united,
with brave soldiers and citizens alike
this land is our and will remain so
And we shall protect its dignity and honour

❋ ❋ ❋

THE GIFT OF MAGI

Nikhil Suman, IX-B

Who were the Magi everyone asks,
They were three wisemen who did a great task,
They gave wise gifts to the little angel,
Who gave the world his famous gospel.

Gifts are not given from the brain,
They originate from the heart.
Feeling of sacrifice is a must.
Because gifts are the token of your trust.

❋ ❋ ❋

OUR PT. DEEN DAYAL COLLEGE

Ashutosh Gupta, IX-A

So bright so great is our Pt. Deen Dayal College,
A seat of learning, the temple of knowledge,
Thoroughout renowned for its glorious name,
from times immemorial at the peak of fame.

Our principal is great,
He loves the students and moulds their fate,
Acclaimed for his wisdom and humility
Long live, long live O ! symbol of ability.

Our English teachers.
Makes us live in the world of Shakespeare,
All of us say that they are dictionary of knowledge,
Sure they are splendour and Glory of college.

Our Hindi teachers,
Take us deep into the world of literature,
Poetry at heart, prose in action, they
Teach the mother tongue with motherly affection.

Our Science teachers, are
pure and clear as distilled water,
Soft as snow and strict as steel,
They transmit knowledge with Zest and Zeal.

Oh College my dear Alma-Mater,
We shall long for you forever and forever,
Thou Gives us progress and honour,
So that we may bear national Glory on our shoulders.

❋ ❋ ❋

MY PLEDGE

Prateek Singh 'Bhartiya', XI-A

One day I was passing through a street.
The road was empty and it was cold in moon-light.
It was the time of winter and midnight.
Suddenly, I saw an old woman haggard and woe-begone,
who was poor, who was needy
who was suffering, who was pitiable
Seeing her I began to ponder and sank into the world of imagination.
I compared her sufferings to the sufferings of my motherland,
our India once the "Golden Bird",
Invaders came, attacked and robbed it,
The Greeks, the Arabs the Turks the French, The British....
All came and plundered our land.
But India could not be crushed
Million gave up their lives to make India free.
But is our India really free?
Now a days, there is ulter chaos, corruption, terrorism,
Regionalism, Poverty, dirty politics and much more.....,
So India is wounded and is wailing, India is crying for help.,
We are free politically but our souls have been enslaved.
Don't you worry mother !
Hold your head high,
We shall uphold your dignity and honour,
We shall look after you carefully.
This is our promise and we should fulfill it.

"He who loves not his country can love nothing." - Byron

OUR VIDYALAYA

Rohit Katiyar, IX-D

In the Kanpur city,
At the Nawabganj location,
Our college stands,
To teach us good lesson
A good looking building
A garden with flowers
A beautiful field it has
Where students breathe fresh air.
Pt. Deen Dayal Vidyalaya is the name
Discipline is its real fame,
Presence in the college is important
Result is always hundred percent

***

A FLY

Romil Kapoor, IX-C

I want to become a fly
like the fly in this poem
which has the wings of golden sheet
And roles of Silver-sheet
But I want more to have
A pair of diamond eyes
Which shine like a star,
The hair of golden colour
Which look like a swift flowing current
A fly which can fly like
A kite in the sky of world.

"Poetry is the language in which man explores his own amazement."
— Christopher Fry

THE LABOUR

Snehdeep Mishra, IX-A

In summer, winter and rainy season
The rich live in their mansion
We enjoy our life
No one cares for the labourer's strife

They work day and night
Sweating and toiling
But the rich who are full of might
can never know their plight

They are also human beings
But who cares for their well-being ?
They also need love and care
Which in this world is very rare !

***

"Education has for its object the formation of character."

– Herbert Spencer

विद्यालय - प्रबन्ध - समिति

अध्यक्ष	-	श्री इन्द्रजीत जैन, अधिवक्ता	कानपुर
उपाध्यक्ष	-	डॉ० ज्ञानचन्द्र अग्रवाल, अ०प्रा० प्राध्यापक	कानपुर
मंत्री	-	श्री वीरेन्द्रजीत सिंह, चार्टर्ड एकाउन्टेंट	कानपुर
सहमंत्री	-	श्री इन्द्र प्रकाश रस्तोगी, अ०प्रा० प्राचार्य	कानपुर
सदस्य	-	प्रो० राजेन्द्र सिंह उपाख्य "रज्जू भैया" सामाजिक कार्यकर्ता	पुणे
		श्री जयगोपाल, सामाजिक कार्यकर्ता	लखनऊ
		डॉ० जगमोहन गर्ग , उद्योगपति	गाजियाबाद
		श्री राम बालक मिश्र, अधिवक्ता	कानपुर
		श्री प्रेमचन्द्र गुप्त, व्यवसायी	कानपुर
		श्री कृष्ण गोपाल लाहोटी, व्यवसायी	कानपुर
		कर्नल (डा०) देवेन्दु बहादुर सिंह	कानपुर
		श्री यतीन्द्रजीत सिंह, व्यवसायी	कानपुर
		श्री ओम शंकर त्रिपाठी, प्रधानाचार्य	कानपुर
		श्री कैलाशचन्द्र जोशी (शिक्षक प्रतिनिधि)	कानपुर
		श्री बिहारीलाल मिश्र (शिक्षक प्रतिनिधि)	कानपुर

Website : www.geocities.com/pddusdv
email-pddusdv @ hotmail. com
नवीन प्रिन्टर्स, कानपुर, दूरभाष : 2645966

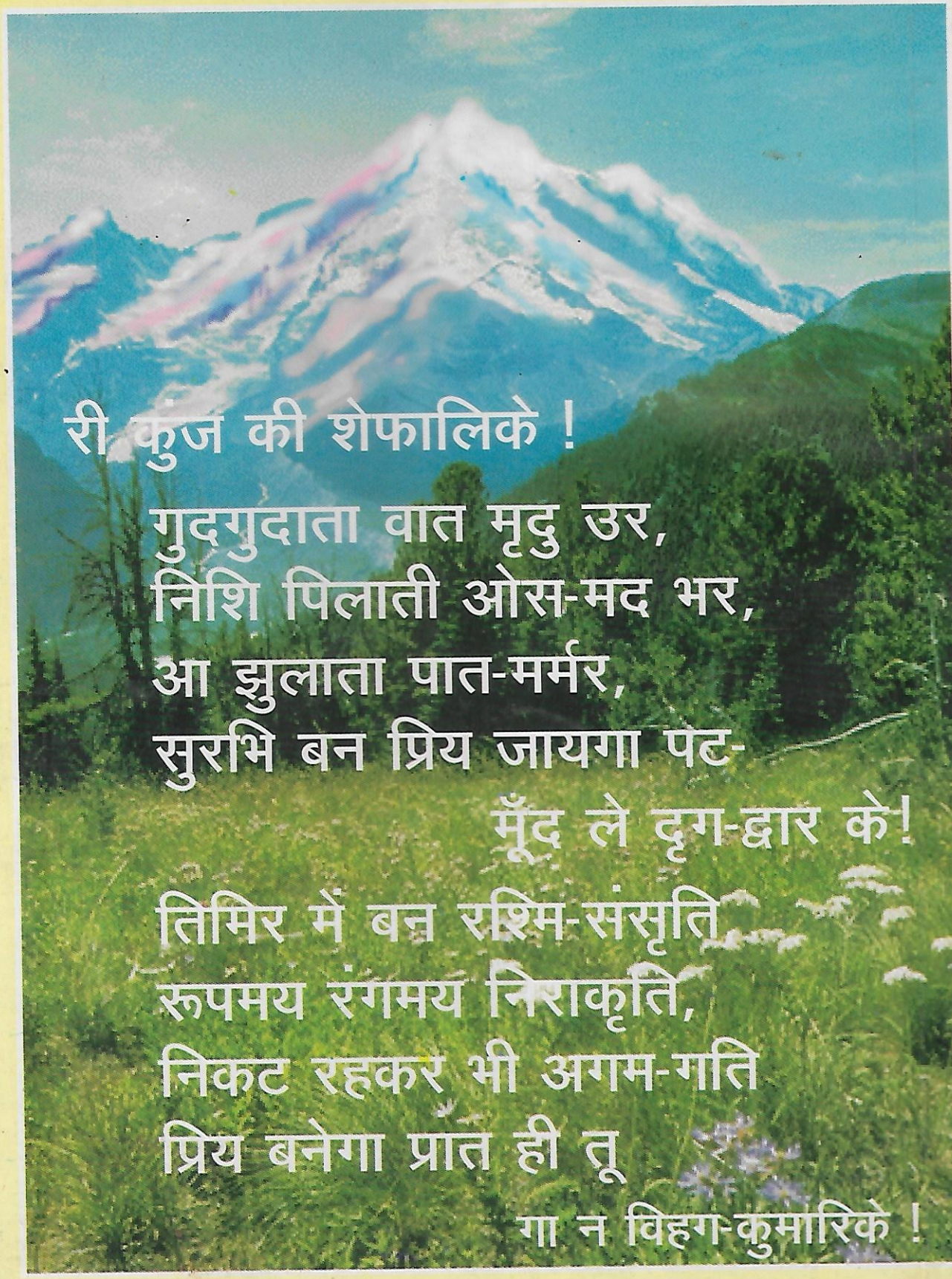
री कुंज की शेफालिके !
गुदगुदाता वात मृदु उर,
निशि पिलाती ओस-मद भर,
आ झुलाता पात-मर्मर,
सुरभि बन प्रिय जायगा पट-
मूँद ले दृग-द्वार के!
तिमिर में बन रश्मि-संसृति
रूपमय रंगमय निराकृति,
निकट रहकर भी अगम-गति
प्रिय बनेगा प्रात ही तू
गा न विहग-कुमारिके !